

[REDACTED]

Book No.

नाम रामामा

रामामात्य कृत

स्वरमेलकलानिधि



(भारद्वाज शर्मा के मराठी अनुवाद से अनूदित)



अनुवादक

पं० विश्वम्भरनाथ भट्ट, एम० ए०, एल—एल० बी० 'संगीत विशारद'

(सम्पादक 'संगीत')



प्रकाशक—

प्रभूलाल गर्ग

संगीत कार्यालय, हाथरस ।

(सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन हैं)

मई १९५०	संगीत प्रकाशक कार्यालय में अनूदित	मूल्य १) रुपया
------------	-----------------------------------	-------------------

प्राक्कथन

रामामात्य कृत “स्वरमेल कलानिधि” की गणना दक्षिणात्य पद्धति के मध्यकालीन आधारभूत ग्रन्थों में की जाती है। यद्यपि उत्तर भारत की सङ्गीत पद्धति से इस पुस्तक का सीधा सम्बन्ध नहीं, तथापि ऐतिहासिक दृष्टि से स्वरमेल कलानिधि का अध्ययन सङ्गीत के जिज्ञासुओं के लिये आवश्यक समझा जाता है। उत्तर-भारत विदेशियों के आक्रमणों से पदाक्रान्त होता रहा है, अतः यावनिक संस्कृति के सम्मिश्रण के कारण उत्तर भारत के सङ्गीत का मूल रूप परिवर्तित हो जाना सर्वथा स्वाभाविक है। दक्षिण भारत विदेशी संस्कृति के प्रभाव से बहुत कुछ मुक्त रहा है। फलतः दक्षिणात्य सङ्गीत पद्धति अभी तक अपनी प्राचीनता को बहुतांश में अक्षुण्ण बनाये हुये है।

रामामात्य के कथनानुसार स्वरमेल कलानिधि का रचनाकाल शक संवत् १४७२ अर्थात् ईसवी सन् १५५० है। निम्नलिखित पंक्तियां उपरोक्त कथन के प्रमाण में उद्धृत की जा सकती हैं:—

शाके नेत्रधराधराब्धिधरणीगणयेऽथसाधारणे ।

वर्षे श्रावणमासि निर्मलतरे षष्ठे दशम्यां तिथौ ॥

इस प्रमाण के अनुसार ‘स्वर-मेल-कलानिधि’ को लगभग ४०० वर्ष पुरानी पुस्तक कहा जा सकता है। रामामात्य ने इस पुस्तक को पांच परिच्छेदों में विभक्त किया है। अर्थात्:—

(१) उपोद्घात प्रकरण, (२) स्वर प्रकरण, (३) वीणा प्रकरण, (४) मेल प्रकरण तथा (५) राग प्रकरण। उपोद्घात प्रकरण, पुस्तक की प्रारम्भिक भूमिका मात्र है। शेष प्रकरण प्रतिपाद्य विषयों के अनुसार नामांकित हैं।

‘स्वरप्रकरण’ में रामामात्य ने सङ्गीत को ‘गान्धर्व’ तथा ‘गान’ इन दो भागों में विभाजित करके इन दोनों पारिभाषिक शब्दोंका स्पष्टीकरण किया है। रामामात्य ने ‘गान्धर्व’ तथा ‘गान’ का पारस्परिक भेद ‘रत्नाकर’ के समान ही माना है। ‘गान्धर्व’ की व्याख्या करते हुये रामामात्य कहते हैं:—

अनादिसंप्रदायं यद्गांधर्वैः संप्रयुज्यते ।
 नियतं श्रेयसो हेतुस्तद्गांधर्वं प्रचक्षते ॥
 यत्तु वाग्गेयकारेण रचितं लक्षणांन्वितम् ।
 देशीरागादिभिः प्राक्तं तद्गानं जनरंजनम् ॥

इस कथन से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि आज कल भी जो राग प्रचलित हैं, उन्हें 'देशी' सङ्गीत के ही अन्तर्गत रखा जा सकता है। मार्गी सङ्गीत से प्रचलित रागों का सम्बन्ध नहीं है। गान्धर्व सङ्गीत में निग्रमों का कठोरतापूर्वक पालन करना पड़ता था। संभवतः इसी प्रतिबन्ध के कारण शनैः-शनैः गान्धर्व सङ्गीत लुप्त हो गया। देशी सङ्गीत में मुख्य हेतु जनरंजन होने से नियमों का वैसा कठोर प्रतिबन्ध नहीं है। स्वरमेल कलानिधि में 'गान' की व्याख्या इन शब्दों में की गई है,

तत्र लक्ष्मानुरोधेन गांधर्वं संप्रयुज्यते ।
 यत्र लक्ष्मपरित्यागे प्रत्यवायो न विद्यते ॥
 तस्माल्लक्ष्यप्रधानं तन्नतु लक्ष्मप्रधानकम् ।
 परित्यागेऽत्र लक्ष्यस्य रंजनं नैव जायते ॥
 तस्माल्लक्ष्यानुरोधेन गानं लोके प्रवर्तते ॥

रामामात्य के इस कथन को शाङ्गदेव के मार्गी तथा देशी सङ्गीत के विवेचन से सम्बन्धित किया जा सकता है। 'रत्नाकर' की निम्नलिखित पंक्तियों को देखिये:—

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं सङ्गीतमुच्यते ।
 मार्गदेशीविभागेन सङ्गीतं द्विविधं मतम् ॥
 मार्गो देशीति तद्द्वेधा तत्र मार्गः स उच्यते ।
 यो मार्गितो विरिञ्चाद्यैः प्रयुक्तो भरतादिभिः ॥
 देवस्य पुरतः शंभोर्नियताभ्युदयप्रदः ।
 देशे-देशे जनानां यद्रुच्या हृदयरंजकम् ॥
 गानं च वादनं नृत्यं तद्देशीत्यभिधीयते ।”

इस उद्धरण से यह स्पष्ट विदित हो जाता है कि रामामात्य ने शाङ्गदेव कृत सङ्गीतरत्नाकर का अध्ययन अवश्य किया था, तथा वे 'रत्नाकर' से विशेष प्रभावित भी थे। सच तो यह है कि 'रत्नाकर' के परवर्ती सभी लेखकों पर शाङ्गदेव का स्पष्ट प्रभाव है। रामामात्य की विचारधारा पर भी 'रत्नाकर' की अमिट छाप स्पष्टनया परिलक्षित होती है।

'स्वरमेल कलानिधि' के स्वर प्रकरण में सात शुद्ध तथा सात विकृत स्वर माने गये हैं। इस प्रकार कुल स्वर संख्या १४ हो जाती है। स्वर श्रुति का विभाजन भी परंपरागत है, परन्तु रामामात्य ने श्रुतियों के नामों की सूची नहीं दी है। ध्यान रखना चाहिये कि "रत्नाकर" में पारह विकृत स्वरों का उल्लेख है। परन्तु स्वर-मेल-कलानिधि में विकृत स्वरों की संख्या सात ही है। इस प्रकार 'रत्नाकर' तथा 'कलानिधि' में पांच विकृत स्वरों का अन्तर दिखाई देता है। इस 'अन्तर' के कारण का उल्लेख करते हुए रामामात्य कहते हैं: -

सत्यं लक्षणतो भेदो द्वादशानामपीष्यते ।

शुद्धेभ्यस्तत्र भेदस्तु सप्तानामेष लक्षितः ॥

इस उद्धरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि रामामात्य ने अवशिष्ट पांच स्वर नामों को रत्नाकर के कुछ शुद्ध स्वरों के पर्यायवाची नाम माना है, अतः 'पुनरुक्ति' समझकर, उन पांच स्वर नामों को छोड़ दिया है।

रामामात्य के चौदह स्वर ये हैं:—

(१) शुद्ध षड्ज, (२) शुद्ध ऋषभ, (३) शुद्ध गांधार अथवा पंचश्रुति ऋषभ (४) साधारण गांधार अथवा षड्श्रुति ऋषभ, (५) अन्तर गान्धार, (६) च्युत मध्यम गांधार, (७) शुद्ध मध्यम, (८) च्युत पंचम मध्यम, (९) शुद्ध पंचम, (१०) शुद्ध धैवत, (११) शुद्ध निषाद अथवा पंचश्रुति धैवत, (१२) कैशिक निषाद अथवा षट्श्रुति धः, (१३) काकली निषाद, (१४) च्युत षड्ज निषाद।

उपरोक्त नामावली में रामामात्य ने चार नवीन संज्ञाओं का प्रयोग किया है। अर्थात् (१) पंच श्रुति ऋषभ, (२) षट्श्रुति ऋषभ,

(३) पंच श्रुति धैवत तथा (४) षट्श्रुति धैवत । तात्पर्य यह है कि रामामात्य ने (१) शुद्ध गांधार, (२) साधारण गांधार, (३) शुद्ध निषाद तथा (४) कैशिक निषाद, इन चार स्वरों के कमशः दो-दो नाम माने हैं। अतः नाम संख्या बढ़ जाने पर भी स्वर संख्या में वृद्धि नहीं होती।

शुद्ध तथा विकृत स्वरों का उल्लेख करके रामामात्य वीणा प्रकरण में उपरोक्त चौदह स्वरों को वीणा दण्ड पर स्थापित करके उन स्वरों के नाद स्वरूप को व्यक्त करते हैं। आचार्य भातखण्डे जी ने रामामात्य की वीणा के चार तारों पर, छः परदों (Frets) की सहायता से स्थापित होने वाले शुद्ध तथा विकृत स्वरों को इस प्रकार व्यक्त किया है*—

शु० म	शु० सा	शु० प	शुद्ध सा	मेरुorBridge
च्युतपंचम म	शु० रे	शु० ध	शु० रे	प्रथम सारी
शु० प	शु० ग	शु० नि	शु० ग	द्वितीय सारी
शु० ध	साधारण ग	कैशिक नि	साधारण ग	तृतीय सारी
शु० नि	च्युत मध्यम ग	च्युत षड्ज नि	च्युत मध्यम ग	चतुर्थ सारी
कैशिक नि	शुद्ध म	शु० सा	शु० म	पंचम सारी
च्युतषड्ज नि	च्युत पंचम म	शु० रे	च्युतपंचम म	षष्ठी सारी
मन्द्र म तंत्री	मन्द्र सा तंत्री	अ.मन्द्र प तंत्री	अनुमन्द्र सा तंत्री	
(४)	(३)	(२)	(१)	

“स्वरमेलकलानिधि” के “मेल प्रकरण” में बीस थाटों का वर्णन है। थाटों के शुद्ध तथा विकृत स्वरों का भी स्पष्ट उल्लेख है। इन बीसों थाटों की नामावली यह है—

* ‘ A Comparative study of some of the Leading music systems of the 15 th, 16 th, 17 th, and 18 th, Centuries’ Page 83,

१—मुखारी	६—शुद्धरामक्रिया	११ नादरामक्री	१६-हिजुंजी
२—मालवगौल	७—देशाक्षी	१२-शुद्धवराली	१७-सामवराली
३—श्री	८—कनड़गौल	१३-रीतिगौड़	१८-रंजगुप्ती
४-सारंगनाट	९—शुद्धनाट	१४-वसंत भैरवी	१९-सामंत
५—हिंदोल	१०—आहरी	१५-केदार गौड़	२०-कांभोजी

‘राग प्रकरण’ में उपरोक्त बीस थाटों के अन्तर्गत ६३ अन्य रागों का उल्लेख है। सबसे अधिक विस्तृत क्षेत्र मालवगौड़ मेल का है। इस मेल के अन्तर्गत १४ राग हैं। विस्तार की दृष्टि से श्री, सारंगनाट, तथा कनड़गौल इन तीनों थाटों का क्रमशः दूसरा, तीसरा, तथा चौथा स्थान है। श्री मेल में ११, सारङ्गनाट मेल में ९, तथा कनड़गौल मेल में ७, रागों का वर्गीकरण किया गया है। शुद्धरामक्री मेल में ४, हिंदोल मेल में ३, केदारगौल मेल में २, तथा शेष थाटों के अन्तर्गत एक-एक राग है। प्रत्येक मेल का पहला आश्रय राग, अथवा थाट वाचक राग है।

रामामात्य ने जिन थाटों का, तथा जिन रागों का उल्लेख किया है, वे प्रचलित हिन्दुस्तानी सङ्गीत-पद्धति में अपने मूल रूप में विद्यमान नहीं हैं। कहीं थाटों के नाम बदल गये हैं, तो कहीं रागों के स्वर ही परिवर्तित हो गये हैं। ‘स्वरमेलकलानिधि’ के मालवगौल मेल को हम अपनी पद्धति के स्वरों में इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं:—

सा रे ग म प ध नि सां।

उपरोक्त स्वर समुदाय को देख कर यही कहा जायगा कि रामामात्य ने जिसे मालवगौल मेल कहा है। वही मेल हमारे यहां भैरव थाट के नाम से प्रचलित है। इसी प्रकार रामामात्य के शुद्धरामक्रिया मेल को हम अपने यहां का पूर्वी थाट कह सकते हैं। शुद्धरामक्रिया मेल में जिन स्वरों का उल्लेख किया गया है, उन्हें प्रचलित हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति के स्वरों में इस प्रकार लिखा जा सकता है:—

सा रे ग म प ध नि सां।

अतः हमारा पूर्वी थाट ‘स्वरमेलकलानिधि’ के शुद्धरामक्रिया मेल से भिन्न नहीं है।

रामामात्य के श्री मेल, अथवा हिंदोल मेल का हमारे यहां के प्रचलित श्री राग, तथा हिंदोल राग से लेखमात्र भी सम्बन्ध नहीं है। स्वरमेलकलानिधि के (१) श्री मेल, तथा (२) हिंदोल मेल के स्वर क्रमशः ये हैं:—

(१) सा रे गु म प ध नि सां।

(२) सा रे गु म प ध नि सां।

स्पष्ट है कि रामामात्य का श्री मेल हमारे यहां के काफी थाट के अनुसार है, तथा हिंदोल मेल का नाद स्वरूप आसावरी थाट के अनुरूप है। अन्य थाटों तथा रागों के विषय में भी यही कहा जा सकता है कि कहीं उनके नाम बदल गये हैं, तो कहीं स्वर। इन्हीं कारणों से हम अपने प्रचलित रागों को संस्कृत ग्रन्थों के आधार से सिद्ध नहीं कर सकते। इस दृष्टि से प्राचीन अथवा मध्यकालीन संस्कृत ग्रन्थ हमारे लिये निरूपयोगी हो जाते हैं। तथापि सङ्गीत के ऐतिहासिक अध्ययन के लिये संस्कृत ग्रन्थ बड़े महत्व पूर्ण है। इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर प्रचलित सङ्गीत को परम्पराभुक्त तथा सुव्यवस्थित पद्धति का रूप दिया जा सकता है। आचार्य भातखण्डे जी इन्हीं ग्रन्थों के अध्ययन से प्रचलित हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति को सुव्यवस्थित रूप प्रदान कर सके थे। रागों के नाम, अथवा उनके स्वर आज अवश्य बदल गए हैं, परन्तु सङ्गीत कला के अनेक प्राचीन सिद्धान्त अभी तक अपने मूल रूप में व्यवहृत हैं। सङ्गीत के क्रमिक विकास को समझे बिना, सङ्गीत शास्त्र का अध्ययन अधूरा ही रह जाता है, इसी दृष्टि से हिन्दी भाषी सङ्गीतज्ञों के सन्मुख यह अनुवाद उपस्थित किया जा रहा है।

विश्वम्भरनाथ भट्ट



॥ श्रीगणेशायनमः ॥

स्वरमेलकलानिधि विलिख्यते



रामामात्यप्रणीतेऽस्मिन् स्वरमेलकलानिधौ ।
 उपोद्घातप्रकरणं स्वरप्रकरणं ततः ॥
 वीणाप्रकरणं चातो मेलप्रकरणं परम् ।
 रागप्रकरणं चेति पंच प्रकरणानि हि ॥
 उपोद्घातप्रकरणानंतरं राममंत्रिणा ।
 तत्र स्वरप्रकरणे द्वितीये प्रतिपाद्यन्ते ॥
 गीतप्रशंसा गंधर्वगानभेदा स्ततःपरम् ।
 स्थानानि श्रुतयः शुद्धाः स्वराश्च विकृता अपि ॥

भावार्थः--रामामात्य पंडित कृत इस स्वरमेलकलानिधि में पाँच प्रकरण हैं । पहला उपोद्घात प्रकरण, दूसरा स्वर प्रकरण, तीसरा वीणा प्रकरण, चौथा मेल प्रकरण तथा पाँचवां राग प्रकरण । उपोद्घात प्रकरण के पश्चात् आने वाले स्वर प्रकरण में रामामात्य ने गीत प्रशंसा, गंधर्व वा गान भेद, स्थानों, श्रुति, शुद्ध तथा विकृत स्वर इत्यादि विषयों का निरूपण किया है ।

[इस ग्रन्थ की जो प्रतिलिपि प्राप्त हुई है, उसमें अनेक स्थल अशुद्ध दृष्टिगोचर हुए । कई स्थलों पर-परन्तु ऐसे स्थल अधिक नहीं हैं--कुछ श्लोक ही त्रुटि-युक्त दिखाई दिये । कहीं कहीं संदर्भ का अनुसरण करके कुछ शब्दों का अर्थ लगाया गया है ।]

अथ वीणाप्रकरणे तृतीये प्रतिपाद्यन्ते ।
 वीणाप्रशंसा वीणाया मेलनप्रक्रिया ततः ॥
 प्रमाणकरणं शुद्धविकृतस्वरसंहतेः ॥

भावार्थः--तीसरे, वीणा प्रकरण में, वीणामेलनप्रक्रिया अर्थात् वीणा के स्वरों को मिलाने की रीति इत्यादि,—शुद्ध वा विकृत

स्वरों का प्रमाण करण (उन्हें सिद्ध करना) इत्यादि विषयों का उल्लेख हुआ है ।

शुद्धमेलाख्यवीणादौ मध्यमेलाव्हया ततः ।

तृतीयाच्युतराजेंद्रमेलवीणेति लक्षिता ॥

भावार्थः—प्रथमतः शुद्ध मेल वीणा का उल्लेख किया है । तदनंतर मध्यमेल वीणा का वर्णन किया है । इसके आगे अच्युत-राजेंद्रमेल वीणा के विषय में कहा गया है ।

[टिप्पणीः—इस ग्रन्थ में हमने वीणा प्रकरण छोड़ दिया है । राग विबोध के दूसरे विवेक में उसका उत्तम वर्णन पठनीय है । वह ग्रन्थ अब छप गया है]

अथमेलप्रकरणे तुरीये प्रतिपाद्यन्ते ।

मेलानां विंशति भेदा रागास्तन्मेलसंभवाः ॥

भावार्थः—चौथे, मेलप्रकरण में थाटों के बीस भेद तथा उनसे उत्पन्न होने वाले रागों का वर्णन किया है ।

उत्तरेतु प्रकरणे पंचमे प्रतिपाद्यन्ते ।

रागाणांच त्रयो भेदा उत्तमाधममध्यमाः ॥

अन्तिम पांचवे प्रकरण में रागों के उत्तम मध्यम, तथा अधम, - ये तीन भेद प्रतिपादित हैं ।

उत्तमानां मध्यमानां रागाणां लक्षणं ततः ।

अधमानां तु केषांचिदेतावान् वस्तुसंग्रहः ॥

भावार्थः—इसके अनंतर उत्तम वा मध्यम रागों के लक्षण दिये हैं । इसी प्रकार कुछ अधम रागों के लक्षण भी बताये गए हैं । इस ग्रन्थ का यही वस्तु संग्रह है ।

इति श्रीमदभिनवभरताचार्यवाग्गेयकारतोडरमल्लतिम्मामात्य-

नंदनरामामात्यनिर्मिते स्वरमेलकलानिधौ

उपोद्घातप्रकरणं संपूर्णम्

स्वरप्रकरण

सामवेदादिदं गीतं सञ्जग्राह पितामहः ।
गीतेन प्रीयते देवः सर्वज्ञः पार्वतीपतिः ॥

भावार्थः—ब्रह्मा जी ने सामवेद से संगीत उत्पन्न किया ।
पार्वतीपति महादेव गीत से अनन्त सन्तुष्ट होते हैं ।

गोपीपतिरनंतोऽपि गीतध्वनिवशंगतः ।
सामगीतरतां ब्रह्मा वीणासक्ता सरस्वती ॥

भावार्थः—गोपीपति (भगवान् कृष्ण) जो अनन्त हैं, वे भी
गीत-ध्वनि के वशीभूत हैं । ब्रह्मा जी सामगीत-रत हैं; अर्थात्
उन्हें सामगान अतीव प्रिय है । सरस्वती देवी वीणा पर
आसक्त हैं ।

किमन्ये यत्तगंधर्वदेवदानवमानवाः ।

भावार्थः—फिर भला, इतर यत्त, गंधर्व, देव, दानव, तथा
मानव इत्यादि की तो कथा ही क्या है ?

अज्ञातविषयास्वादो बालः पर्यंकिकातले ।
रुदन् गीतामृतं पीत्वा हर्षोत्कर्षं प्रपद्यते ॥

भावार्थः—जिसने अभी तक किसी भी प्रकार का विषयास्वादन
नहीं किया है; ऐसा छोटा सा बालक भी जब पर्यंक के ऊपर पड़ा
हुआ रो रहा होता है, वह भी गीतामृत को पीकर हर्षोत्कर्ष को
प्राप्त होता है ।

वनेचरस्तृणाहारश्चित्रमृगशिशुः पशुः ।
लुब्धो लुब्धकसंगीते गीते यच्छति जीवतम् ॥

भावार्थः—चित्रमृग का शिशु, यद्यपि जंगलों में विचरण करने वाला तथा तृणहारी पशु है, परन्तु वह भी लुब्धक के सङ्गीत पर लुब्ध होकर अपने प्राण अर्पण कर देता है ।

कृष्णसर्पोऽपि तद्गीतं श्रुत्वा हर्षं प्रपद्यते ।

तस्य गीतस्य माहात्म्यं के प्रशंसितु मीशते ॥

भावार्थः—कृष्ण सर्प भी गीत सुनकर हर्ष प्राप्त करता है । ऐसे गीत के माहात्म्य को भला कौन वर्णन कर सकता है ?

गांधर्वस्वरसंदर्भो गीतमित्यभिधीयते ।

गांधर्वं गानमित्यस्य भेदद्वयमुदीरितम् ॥

भावार्थः—गांधर्व स्वर समुदाय को गीत कहते हैं । गीतों के दो भेद हैं । १ ला गांधर्व, २ रा गान ।

[टिप्पणीः—यह श्लोक रत्नाकर से ले लिया गया है, उसमें “रंजकः स्वरसंदर्भः” यह कहा गया है]

अनादिसंप्रदायं यद्गंधर्वः संप्रयुज्यते ।

नियतं श्रेयसो हेतु स्तद्गांधर्वं प्रचक्षते ॥

भावार्थः—जो अनादिसंप्रदाय (आपौरुषेय) है, जिसका प्रयोग गंधर्व करते हैं, ऐसा सतत मोक्षहेतु भूत गीत “गांधर्व” होता है ।

यत्तु वाग्गेयकारेण रचितं लक्ष्णान्वितम् ।

देशीरागादिभिः प्रोक्तं तद्गानं जनरंजनम् ॥

भावार्थः—जिसे वाग्गेयकारों ने (पंडितों ने) नाना प्रकार के लक्षणों से रचकर तैयार किया है, जिसमें देशी रागादिकों का समावेश होता है, तथा जो जनरंजक है, उसे “गान” कहते हैं ।

तत्र लक्ष्मानुरोधेन गांधर्वं संप्रयुज्यते ॥

भावार्थः—गांधर्व गीत सदैव लक्षणों के अनुसार ही होना चाहिये, ऐसा नियम है ?

यत्र लक्ष्मपरित्यागे प्रत्यवायो न विद्यते ।
तस्माल्लक्ष्यप्रधानं तन्नतु लक्ष्मप्रधानकम् ॥
परित्यागेऽत्र लक्ष्यस्य रंजनं नैव जायते ।
तस्माल्लक्ष्यानुरोधेन गानं लोके प्रवर्तते ॥

भावार्थः—गीतों में लक्षणों का कुछ त्याग होने से विशेष दोष नहीं है। उसे भी लोक में “गान” मान लिया है। गान लक्ष्य प्रधान है, लक्ष्म प्रधान नहीं, अतः लक्ष्य की ओर दुर्लक्ष्य होने से उसके रक्तिगुण में कमी होती है। इसलिये ऐसा मानते हैं कि “गान” को सदैव लक्ष्य के अनुरोध से होना चाहिये।

सर्वसंगीतशास्त्रार्थवेदिना शाङ्गसूरिणा ।
गीते लक्ष्यप्रधानत्वं वाद्याध्याये निरूपितम् ॥

भावार्थः—सर्व सङ्गीत-शास्त्र-पारंगत शाङ्गदेव पंडित ने अपने (गुत्ताकर के) वाद्याध्याय में यह प्रतिपादन किया है कि गीत मुख्यतः लक्ष्य प्रधान है।

यद्वा लक्ष्यप्रधानानि शास्त्राण्येतानि मन्वते ।
तस्माल्लक्ष्यविरुद्धं यत्तच्छास्त्रं नेयमन्यथा ॥

भावार्थः—इन (देशी सङ्गीत विषयक) शास्त्रों को लक्ष्य प्रधान ही माना है, इसलिये जहाँ जहाँ शास्त्रवाक्य लक्ष्य विरुद्ध होते हों, वहाँ वहाँ ऐसा करना चाहिये, जिससे वे लक्ष्य के वाचक न हों (उनका अर्थ लक्ष्य साधक करना चाहिये)

आत्मा विवक्षमाणोऽयं मनः प्रेरयते मनः ।
देहस्थं वन्दिमाहन्ति सप्रेरयति मारुतम् ॥
ब्रह्मग्रन्थिस्थितः सोऽथ क्रमादूर्ध्वपथे चरन् ।
नाभिहृत्कंठमूर्धास्येष्वविर्भावयते ध्वनिम् ॥

भावार्थः--आत्मा को भाषण करने की इच्छा होने पर वह मन को प्रेरित करता है। वह मन शरीर में अग्नि को प्रेरित करता है। अग्नि, वायु को चलायमान करता है। ब्रह्मग्रन्थ में स्थित वायु क्रम के ऊपर चढ़ता हुआ नाभि, हृदय, कंठ, मूर्धा, मुख, इन स्थानों में नाद का आविर्भाव करता है।

नादोऽतिसूक्ष्मः सूक्ष्मश्च पुष्टोऽपुष्टश्च कृत्रिमः ।

इति पंचाभिधां धत्ते पंचस्थानस्थितः क्रमात् ॥

भावार्थः--नाद इन पाँच स्थानों पर पाँच नाम प्राप्त करता है। वे नाम क्रम से ये हैंः--(१) अतिसूक्ष्म, (२) सूक्ष्म, (३) पुष्ट, (४) अपुष्ट, तथा (५) कृत्रिम ।

व्यवहारं त्वसौ त्रेधा हृदि मंद्रोऽभिधीयते ।

कंठे मध्यो मूर्ध्नि तारो द्विगुणश्चात्तरोत्तरः ॥

भावार्थः--व्यवहार में नाद तीन ही प्रकार का माना गया है। हृदय का नाद "मन्द्र", कंठ का "मध्य", तथा मस्तक का "तार" जानना चाहिये। यह नाद एक से दूसरा दूना (ऊँचा) समझना चाहिये।

तस्य द्वाविंशतिर्मेदाः श्रयणात् श्रुतयो मताः ।

हृदभ्यंतरसंलग्ना नाड्या द्वाविंशतिर्मताः ॥

तिरश्चस्तासु तावत्यः श्रुतयो मारुताहताः ।

उच्चोच्चतरतायुक्ताः प्रभवन्त्युत्तरोत्तरम् ॥

भावार्थः--नाद के बाईस भेद माने गए हैं। वे सभी नाद स्पष्ट सुने जा सकते हैं, अतः उन्हें "श्रुति" कहते हैं। हृदय स्थान में बाईस नाड़ियाँ लगी हुई हैं। वे आड़ी हैं। उन्हीं से मारुत अर्थात् वायु के आघात से बाईस श्रुतियों--एक से दूसरी ऊँची इस प्रकार से उत्पन्न होती हैं।

एवं कंठे तथा शीर्षे हृदि द्वाविंशति मताः ।

एवं कंठे तथा शीर्षे हृदि द्वाविंशति मताः ।

भावार्थः--हृदय, कंठ, तथा शीर्ष ये जो तीन स्थान माने गए हैं उनमें से प्रत्येक स्थान में वाईस श्रुतियाँ हैं ।

श्रुतिभ्यः स्युः स्वराः षड्जर्षभगांधारमध्यमाः ।

पंचमो धैवतश्चाथ निषाद इति सप्त ते ॥

तेषां संज्ञाः स रि ग म प ध नीस्यपरा मताः ॥

भावार्थः--इन वाईस श्रुतियाँ से षड्ज, ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत, तथा निषाद ये सात स्वर उत्पन्न होते हैं । उनके दूसरे (संज्ञित) नाम सा, रि, ग, म, प, ध, नि, हैं ।

श्रुत्यनंतरभावी यः स्निग्धोऽनुरणनात्मकः ।

स्वतो रंजयति श्रोतृचित्तं स स्वर उच्यते ॥

भावार्थः--श्रुति के पश्चात् तुरन्त उत्पन्न होने वाला जो अनु-रणनात्मक है, जो सुनने वालों के चित्त का स्वतः रंजन कर सकता है । ऐसा जो स्निग्ध (नाद) है, वही “स्वर” कहलाता है । (कुछ लोग “श्रुत्यभ्यंतर” कहते हैं)

[टिप्पणीः--यह श्लोक ‘रत्नाकर’ का है । कल्लिनाथ पंडित ने उपरोक्त श्लोक के विशेषणों को इस प्रकार समझाया है “श्रुत्यनंतर-भावी=श्रुतेश्रुतुर्थादिर्माकृताद्याहृत्युत्पन्नप्रथमध्वनेरनन्तरं भावीः स्निग्धः=सन्दूरध्राव्यः; अनुरणनात्मक=अनुस्वाररूपः; स्वतः=सह-कारिकारिणनिरपेक्षम्;”

संगीत दर्पण में इस श्लोक पर यह टीका है, “श्रुतेरनन्तरं भवतीति श्रुत्यनन्तरभावी; अनुरणनात्मकः=प्रथमतया माहृतायां तद्देशावच्छेदेन यः प्रथमो ध्वनिरुत्पद्यते सा श्रुतिः, यस्तु प्रथमध्व-निव्यापको ध्वनिप्रवाहस्तदनन्तरं श्रूयते तदनुरणनं, तदेव आत्मा स्वरूपं यस्य सः; स्निग्धः=श्रोत्राभिरामः; स्वतः स्वयं, अन्यानपेक्षया;”

श्रुति के विषय में Capt. Day साहब कहते हैं कि, "The exact definition of what constituted a "Shruti" is difficult to determine, but it is thus vaguely given by the Sangeet Ratnavali:—"A Shruti is formed by the smallest intervals of sound, and is perceivable by the ear; it is of twenty-two kinds; every distinct audible sound is a Shruti; it is a Shruti because it is to be heard by the ear."

"The scales are formed from the Shrutis, four Shrutis being allotted to a major tone, three to a minor (which would appear to have been of a pitch somewhat flatter than the tone and sharper than the semitone; doubts however, exist as to whether the intervals of the Shrutis were equal or not), and two to a semitone (p. 15).

The peculiar division of the octave into twenty two parts or Shrutis exists no longer in practice and the employment of Shrutis or intervals less than semitones is *limited to grace*.

The ragas in present use in most respects differ from those previously mentioned, and, in fact, the whole system has undergone complete change and gradual refinement, until between the ancient and modern music there exists a difference as clearly marked and perceivable to even the most casual observer, as between the modern Anglican chant and the ancient Gregorian tones"

श्रुतियों के विषय पर, पाठकों को राजा सुरेन्द्रमोहन टागोर की एक छोटी सी पुस्तक, "The twenty-two Musical Shrutis of the Hindus." को पढ़ना चाहिये। उस पुस्तक में संस्कृत

ग्रन्थों का शुद्ध स्वर मेल 'शंकरा भरण (European c Scale) निर्धारित करने का प्रयत्न किया गया है। यह प्राचीन ग्रन्थ संमत नहीं है, यह ध्यान रखना चाहिये]

सुव्यक्तमेव वीणायामस्यार्थस्य निदर्शनम् ॥

भावार्थः--इस अर्थ का स्पष्टीकरण वीणा पर उत्तम प्रकार से हो सकता है।

तत्र तुर्यश्रुतौ षड्जः सप्तम्यामृषभा मतः ।

ततो नवम्यां गांधार स्त्रयोदश्यां तु मध्यमः ॥

पंचमः सप्तदश्यां तु धैवतो त्रिंशतिश्रुतौ ।

द्वाविंश्यां तु निषादः स्यात् श्रुतिष्वित्थं स्वरोद्भवः ॥

भावार्थः--(रत्नाकर में कहे अनुसार बाईस श्रुति-युक्त वीणा पर) चौथी श्रुति पर षड्ज स्वर उत्पन्न होता है, सातवीं पर ऋषभ, नवमीं पर गांधार, तेरहवीं पर मध्यम, सत्रहवीं पर पंचम बीसवीं पर निषाद, इस प्रकार स्वरों की उत्पत्ति समझनी चाहिये।

ननु श्रुतिश्चतुर्थ्यादिरस्त्वेवं स्वरकारणम् ।

व्यादीनां तत्र पूर्वासां श्रुतीनां हेतुता कथम् ॥

भावार्थः--(कोई शंकाकार विचार करता है कि) अरे ! चौथी, सातवीं, नवमीं, इत्यादि प्रत्यक्ष स्वरोत्पादक श्रुतियों को स्वर-कारण माना गया, परन्तु तीसरी दूसरी इत्यादि जो पूर्व श्रुति हैं उन्हें श्रुति का कारण कैसे माना जायेगा ?

ब्रूम स्तुर्यातृतीयादिः श्रुतिः पूर्वाभिकांक्षया ।

तिर्धार्यतेऽतः श्रुतयः पूर्वा अप्यत्र हेतवः ॥

भावार्थः--(इस शंका के निवारणार्थ) मैं कहता हूं कि स्वर उत्पन्न करने वाली जो चौथी, तीसरी, इत्यादि श्रुतियां हैं वे

अपनी पिछली श्रुतियाँ की अभिकांक्षा से ही हैं । (यदि पहली दूसरी इत्यादि न हों) तो चौथी इत्यादि कहाँ से होंगी ?) इसलिये पूर्व श्रुतियों को ही स्वर-करण मानना ठीक है ।

एते षड्जादयः सप्त स्वराः शुद्धाः प्रकीर्तिताः ।

विकृताश्चैव सप्तैवेत्येवं सर्वे चतुर्दश ॥

भावार्थः--इस प्रकार ये षड्जादिक सात स्वर कहे गए, ये शुद्ध स्वर हुए । विकृत स्वर भी सात ही हैं । अतः कुल (गीतांपदोंगी स्वर) चौदह हुए ।

[टिप्पणीः--स्वरमेलकलानिधि के सब स्वरों का नक्शा लक्ष्य-संगीत में स्पष्ट रूप से दिया हुआ है । उस ग्रन्थ में स्वरमेलान्तर्गत स्वरों की हिन्दुस्तानी संगीत के स्वरों से स्पष्ट तुलना भी की गई है ।

ननु रत्नाकर शाङ्गदेवन विकृताः स्वराः ।

द्वादशोक्ताः कथं तेतु सप्तैव कथितास्त्वया ॥

भावार्थः--(शंका करने वाला सोचना है कि) अहो ! शाङ्गदेव पण्डित ने (रत्नाकर में) विकृत स्वर बारह माने हैं और तुम विकृत स्वर सात ही मानते हो यह क्या बात है ?

[टिप्पणीः--यह शंका ठीक है । रत्नाकर में शुद्ध स्वर सात तथा विकृत स्वर बारह माने गए हैं, यह बात सत्य है । पाठकों को प्रथम दर्शन में ऐसा प्रतीत होना संभव है कि एक सतक में बाईस नाद अथवा श्रुति मानकर, शाङ्गदेव ने उनमें से उन्नीस श्रुतियों को स्वर मान लिया है । परन्तु वस्तुतः शाङ्गदेव के स्वर इस प्रकार न थे । उसके कुछ विकृत स्वरों का स्थान शुद्ध स्वरों के स्थान से लेश मात्र भी भिन्न नहीं है । ऐसी परिस्थिति में उसने उन्हें विकृत क्यों कहा ? अब रामामात्य इस प्रश्न का उत्तर देता है !

सत्यं लक्षणतो भेदो द्वादशानामपीष्यते ।

शुद्धेभ्यस्तत्र भेदस्तु समानामेव लक्षितः ॥

भावार्थः--(तुम्हांगी शंका) यथार्थ है । केवल लक्षणों की दृष्टि से विचार करें तो निश्चय ही विकृत स्वर वारह होंगे । परन्तु जिसकी जगह (ध्वनि-स्थान) शुद्ध स्वरों की जगह से भिन्न हो वे ही वास्तव में विकृत हैं । इस दृष्टि से देखें तो विकृत स्वर सात ही ठहरेंगे ।

[टिप्पणीः--लक्ष्यसङ्कीर्त के पृ० १० वा १३ पर दिये हुए नकशे को देखो । सत्रहवें पृष्ठ पर रत्नाकर के शुद्ध तथा विकृत स्वरों का स्पष्टीकरण किया गया है । उसमें अच्युतपङ्कज, विकृत ग्निपत्र अच्युत मध्यम, विकृत पञ्चम, तथा विकृत धैवत स्वरों के स्थान ध्यान पूर्वक देखने से गामामात्य के कथन का अर्थ स्पष्ट समझ में आ जायेगा]

आधारश्रुतिसंन्यागात् ध्वनिभेदः प्रकीर्तितः ।

पञ्चानां परिशिष्टानां स्वराणां विकृतात्मनाम् ॥

पूर्वस्वरश्रुतिग्राहत्वा पूर्वश्रुतिवर्जनात् ।

अपिलक्षणतो भेदे पूर्वोक्तस्वरसंहतेः ।

आधारश्रुतिनिष्ठत्वा लक्ष्यभेदो न विद्यते ॥

भावार्थः—आधार श्रुति (जिस पर प्रत्येक शुद्ध स्वर प्रथम कायम किया गया था उसे) स्वरों ने छोड़ा नहीं कि स्पष्ट ध्वनि-भेद (विकृत स्वर) उत्पन्न होता है । (रत्नाकर के वारह विकृत स्वरों में से मैंने सात ही स्वीकार किये हैं, कारण यह है कि) बाकी के पांच विकृत नाम के स्वरों में पिछले स्वर की एक आध श्रुति मिलाने से अथवा स्वनः की पूर्व श्रुति छूट जाने से लक्षण की दृष्टि से उन्हें विकृत कहा जायगा, परन्तु जब तक उनकी आधार श्रुति नहीं छूटती, तब तक स्पष्ट विकृतत्व (ध्वनि भेद) नहीं माना जा सकता । ।

कथं न भेद इति चेत् सलक्ष्यं तन्निरूप्यते ॥

भावार्थः—“क्यों नहीं माना जा सकता” ? अगर कोई यह कहे, तो प्रत्यक्ष उदाहरण से ही उसे समझाता हूं (नकशा देखो)

शुद्धपङ्जादच्युतस्तु स पङ्जो नैव भिद्यते ।

अच्युतो मध्यमः शुद्धान्मध्यमान्न भिदां भजंत ॥

शुद्धर्षभाच्च विकृतो रिपभो न पृथग्भवेत् ।

विकृतो धैवतः शुद्धाद्धैवतान्नातिरिच्यते ॥

मध्यमश्रुत्युपादाने विकृतः पञ्चमस्तु यः ।

विकृताच्चैव पञ्चमान्नभेदं चाश्नुते ध्रुवम् ॥

तस्माच्चतुर्दशस्वेवं पूर्वोक्तेष्वेव पञ्चकः ।

अंतर्भूतो यतस्तस्मान्न पृथक् कथितो मया ॥

भावार्थः—(लक्ष्यसंगीत पृष्ठ १७ पर जो नकशा है उसे यदि तुम ध्यान पूर्वक देखो तो यह दिखाई देगा कि) “अच्युत पङ्ज” यह विकृत माना हुआ स्वर, शुद्ध पङ्ज से लेशमात्र भी भिन्न नहीं है । (दोनों की ध्वनि एक ही है) इसी प्रकार अच्युत मध्यम वा शुद्ध मध्यम, इनमें भी ध्वनि भेद नहीं है ।

विकृत रिपभ स्वर शुद्ध से अलग नहीं है, वा विकृत धैवत स्वर शुद्ध धैवत से पृथक् नहीं है । (संगीत दर्पण का भाषांतर देखिए)

मध्यम की (बेकार पड़ी हुई) एक श्रुति को लेकर जो विकृत पञ्चम (चतुःश्रुतिक) होता है, वह विकृत पञ्चम से (मध्यम ग्राम में तीन श्रुतियों का पञ्चम होता है) भिन्न नहीं है ।

इस प्रकार मेरे कहे हुए चौदह स्वरों में (गतनाकर के उन) पाँच स्वरों का अंतर्भाव हो जाता है, इससे मैं उन्हें अलग नहीं मानता ।

समानां विकृतानां तु सोद्देशं लक्ष्म चक्ष्महे ।

च्युतः पड्जश्च्युतोमश्च च्युतः स्यात् पंचमस्तथा ॥

स्यात् साधारणगांधारोऽन्तरगांधार एवच ।

स्यात् कैशिकनिषादोऽथान्यः काकलीनिषादकः ॥

भावार्थः—अब उन सात विकृत स्वरों के नाम तथा लक्षण कहता हूं। (१) च्युत पड्ज, (२) च्युतमध्यम, (३) च्युत पंचम, (४) साधारण गांधार, (५) अन्तरगांधार, (६) कैशिक निषाद, (७) काकली निषाद !

[टिप्पणीः—पाठकों को रामामात्य के विकृत स्वरों की उत्तम कल्पना हो गई होगी, अतः हम यह बताते हैं कि ये स्वर हमारी प्रचलित हिन्दुस्थानी पद्धति के किन स्वरों के समान होंगे। साधारण गांधार तथा कैशिक निषाद ये कम से हिन्दुस्थानी कोमल गांधार वा कोमल निषाद समझने चाहिये। अन्तर गांधार, वा काकली निषाद ये हिन्दुस्थानी (पद्धति) के तीव्र ग तथा तीव्र नी होते हैं। च्युत पंचम को हिन्दुस्थानी तीव्र मध्यम समझना चाहिये। च्युत मध्यम की जगह अन्तर “ग” के ऊपर तथा शुद्ध मध्यम के नीचे है, अतः उसे हिन्दुस्थानी गायक अति तीव्र ग कहते हैं। इसी प्रकार से “च्युत पड्ज” स्वर को अति तीव्र निषाद माना जायेगा। इन “च्युत” स्वरों के विषय में मुख्यतः च्युत सा वा च्युत म इन स्वरों के विषय में—दो पक्ष अथवा मत हैं। रामामात्य ने इसका आगे उल्लेख किया है। कुछ लोग कहते हैं कि च्युत म वा अन्तर ग स्वर ये अत्यधिक निकटवर्ती, एक श्रुति के अन्तर के, होने से उन्हें भिन्न न मानना चाहिये। च्युत म को अन्तर ग का प्रतिनिधि मान लेना चाहिये। यह मत रामामात्य का भी पसंद है। कुछ अन्य लोगों का कहना है कि, यह ठीक है कि इन दोनों स्वरों को भिन्न-भिन्न न माना जाय, परन्तु अन्तर गान्धार को च्युत म का प्रतिनिधि मानना चाहिये, इस पक्ष के लोग यह विधान उपस्थित करते हैं, कि अन्तर “ग” व च्युत “म” इन स्वरों के भिन्न २ परदे वीण पर नहीं बांधे गए हैं। इस तथ्य में कोई मर्म न हो यह बात नहीं है, अपनी हिन्दुस्थानी पद्धति को ही

देखें (तो उसमें भी) अति तीव्र “ग” अथवा अति तीव्र “नि” ये स्वर वीणा पर नहीं बांधे जाते । काकली नि तथा च्युत सा के विषय में विशेष कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है ।

हित्वा चतुर्थीं स्वाधारश्रुतिं पट्जो यदा श्रुतिम् ।

तृतीयामाश्रयेदप च्युतपट्जोऽभिधीयते ॥

एवं लक्षणमाभ्येन च्युतमध्यमपंचमो ।

शुद्धस्य मध्यमस्याथ गांधारः श्रुतिमाश्रितः ॥

स साधारणगांधारोऽन्तरगांधार उच्यते ।

यो मध्यमस्य शुद्धस्य श्रुतिद्वयममाश्रितः ॥

भावार्थः—पट्ज स्वर जब अपनी चौथी अर्थात् आध्याश्रुति को छोड़ कर तीसरी अर्थात् पर आता है, तब उसे च्युत पट्ज संज्ञा प्राप्त होती है । इसी लक्षण को लगाकर च्युत मध्यम व च्युत पंचम इन स्वरों की जगह समझ लेनी चाहिए । गन्धार जब मध्यम की पहली अर्थात् लेता है, तब उसे साधारण गन्धार कहते हैं, ऐसे ही जब वह शुद्ध “म” की दो अर्थात् लेता है, तब वह अन्तर गन्धार कहलाता है ।

[टिप्पणी—ऐतिहासिक दृष्टि से रामामात्य का ग्रन्थ हमें रत्नाकर के (समय) अर्थात् आगे ले आता है । रत्नाकर के मूर्च्छना ग्राम जाति इत्यादि के विषय में रामामात्य ने कहीं कुछ नहीं कहा है । ऐसा दिखाई देता है कि उसने दो एक जगह नवीन सङ्गीत तथा पुराने सङ्गीत का किसी न किसी तरह से सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न किया है, परन्तु हमारे विद्वानों को तो यह बड़ा ही असन्तोषजनक प्रतीत होगा । अगर कुछ लोग यह कहें कि रामामात्य ने रत्नाकर को भली भाँति नहीं समझा तो भी अनुचित न होगा । पट्ज अपनी चौथी अर्थात् से तीसरी पर उतरता ही क्यों है ? इस प्रश्न के उत्तर में रामामात्य क्या कहता है ? एक अक्षर भी नहीं । उसने यह व्याख्या रत्नाकर से ले ली है । पट्ज साधारण प्रसङ्गी, यह प्रकार बनता है, ऐसा उसमें कहा गया है,

लेकिन ऐसा क्यों और किन रागों में होता है ? यह जब रामामान्य ने समझाया ही नहीं है, तब वह इसके विषय में क्या लिखता ? ऐसा होने पर भी उसने कहीं २ रत्नाकर को समझ लेने के प्रमाण रख दिए हैं; यह देखकर प्रसन्नता होती है। रामामान्य के राग तथा उनके स्वरमेल समझना कठिन नहीं है। परन्तु रत्नाकर के रागों से उसके रागों का सामंजस्य हो सकेगा या नहीं, यह प्रश्न विवादप्रसूत ही रहेगा।

प्रथमां शुद्धपङ्जस्य निपादश्चेत् श्रुतिं श्रितः ।

स कैशिकनिपादाख्यः कथितो गीतवेदिभिः ॥

निपादः शुद्धपङ्जस्याश्रयते चञ्च्तिद्वयम् ।

स काकलीनिपादः स्यादेवं समापि लक्षिताः ॥

भावार्थः—निपाद स्वर जब पङ्ज की पहली श्रुति लेता है, तब वह कैशिक मन्थ्या प्राप्त करता है। वही निपाद जब पङ्ज की पहली दो श्रुतियाँ लेता है तब काकली होता है, इस प्रकार से सात ही विद्वत स्वरों के लक्षण हुए।

चतुर्दशस्वरेष्वेव वक्ष्ये लक्ष्यानुसारतः ।

नामांतराणि केषांचिद् व्यवहारप्रसिद्धये ॥

भावार्थः—अब व्यवहार, अथवा प्रचार की दृष्टि से इन चौदह स्वरों में से कुछ स्वरों के जो अन्य नाम प्रचलित हो गए हैं वह कहता हूँ।

[टिप्पणीः—ये नाम महत्व के हैं। आगे चलकर रामामान्य ने मेल प्रकरण में इनका उपयोग किया है। उसने इस ग्रन्थ में कुल २० मेल (दक्षिण की ओर मेल कहते हैं) बताए हैं। पहले पन्द्रह मेल कहते समय उसने च्युत संग्रह स्वरों का उपयोग किया है। अन्त के पाँच में काकली व अन्तर यह नाम व्यवहृत किए हैं। याद रखने लायक मुख्य बात यह है, कि ग्रन्थकार के कहे हुए सङ्गीत में पञ्चम उपयोगी स्वर हमारे ही (हिन्दुस्थानी पद्धति के) बागह

स्वर थे। यह तो स्पष्ट ही है। उनके नाम उस समय के थे। दक्षिणि पद्धति में अभी तक वे नाम हमें दिखाई देंगे।

च्युतषड्जस्वरो लक्ष्ये निपादत्वेन कीर्तितः ।

च्युतषड्जनिपादाभिधानं तस्य विधीयते ॥

च्युतस्य मध्यमस्यापि गांधारव्यवहारतः ।

च्युतमध्यमगांधारसंज्ञाऽस्य क्रियते मया ॥

च्युतपंचममाचष्टे लोका मध्यमसंज्ञया ।

अस्माभिः कथ्यते सोऽतश्च्युतपंचममध्यमः ॥

भावार्थः—च्युत षड्ज स्वर को एक प्रकार का निपाद मानते हैं, इसलिये उसका नाम यहाँ “च्युतषड्जनिपाद” रखा गया है। च्युत मध्यम स्वर को प्रचार में गंधार मानते हैं। इसलिये हमने उसका नाम “च्युतमध्यम गंधार” रखा है। “च्युत पंचम” को लोग मध्यम समझते हैं, इसलिये उसे हम “च्युतपंचम-मध्यम” कहते हैं।

लक्ष्येऽत्र कुत्रचिच्छुद्धगांधारस्थानमाश्रयन् ।

ऋषभः कीर्त्यतेऽस्माभिः पंचश्रुत्यृषभाच्छ्रयः ॥

म साधारणगांधारस्थानस्थो रिषभा यदि ।

लक्ष्यानुसारतः प्रोक्तस्तत्तत्पट्श्रुतिरेव मः ॥

भावार्थः—प्रचार में शुद्ध गांधार को ऋषभ का नाम दिया जाता है इसलिये हम शुद्ध गांधार को “पंचम श्रुति ऋषभ” कहते हैं। साधारण गांधार का ही कहीं ऋषभ मानने का प्रचार है, अतः लक्ष्यानुसंध से हम उसे “पट्श्रुति रिषभ” कहते हैं।

[निष्पत्तीः—ये स्वर भली भाँति याद रहें, इस हेतु से हिन्दु-स्तानी पद्धति में उनके नाम पुनः कहता हूँ। “च्युतषड्जनिपाद”= तीव्र नी; “च्युतमध्यमगांधार”= तीव्र ग; “च्युत पंचम मध्यम”= तीव्र म; शुद्ध गांधार=पंचश्रुति री=तीव्र री; साधारण ग=पट्श्रुति रि=कोमल ग; कंशिक नी=पट्श्रुति ध=कोमल नी; शुद्ध नी=पंचश्रुति ध=तीव्र ध। रामामात्य के शुद्ध रि, शुद्ध ध, ये हिन्दुस्तानी पद्धति के कोमल रि व कोमल ध हैं।

अथानुवादः क्रियते क्रमादुक्तस्वरावलेः ।

वक्ष्यमाणोऽग्रतो रागमेलने सुखबुद्धये ॥

भावार्थः—अब हम जो स्वर पीछे देख चुके हैं, उनके नाम क्रम से पुनः कहते हैं । उन के योग से आगं आने वाले राग मेल-के प्रकरण सुबोध हो जायेंगे ।

शुद्धाः सप्तस्वराः शुद्धपूर्वया तत्तदाख्यया ।

विज्ञेयाः क्रमशः शुद्धषड्जः शुद्धर्षभस्ततः ॥

शुद्धगांधार इत्युक्तः शुद्धमध्यम इत्यपि ।

शुद्धपंचम इत्येवं शुद्धधैवत इत्यपि ॥

ततः शुद्धनिषादश्चेत्येवं सप्तस्वराभिधाः ।

विकृताः सप्त कथ्यन्ते च्युतषड्जनिषादकः ॥

च्युतमध्यमगांधारश्च्युतपंचममध्यमः ।

स साधारणगांधारः स्यात्कैशिकनिषादकः ॥

स्यात् काकलीनिषादश्चांतरगांधार इत्यपि ।

शुद्धगांधारके तत्र पंचश्रुत्यृषभोऽभिधा ॥

साधारणोऽपि गांधारे षट्श्रुत्यृषभनामच ।

अस्ति क्वचित् क्वचिद्रागमेलने गानसंमतम् ॥

शुद्धनिषादनामान्यत् स्यात् पंचश्रुतिधैवतः ।

स्यात् कैशिकनिषादेऽन्यत्नाम षट्श्रुतिधैवतः ॥

चतुर्दशस्वराह्येते रागे रागे भवंत्यमी ।

पर्यायेण स्वराःसप्त त्रिस्थाने नधिकाः क्वचित् ॥

भावार्थः—शुद्ध स्वर सात ही हैं । उनके नामों के पहले 'शुद्ध' यह उपपद लगा दिया जाता है । जैसे शुद्ध षड्ज, शुद्ध ऋषभ, शुद्ध गांधार, शुद्ध मध्यम, शुद्ध पंचम, शुद्ध धैवत तथा शुद्ध निषाद । अब सात विकृत स्वर कहता हूँ ।

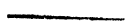
१ च्युत षड्ज निषाद, २ च्युत मध्यम गांधार, ३ च्युत पंचम मध्यम, ४ साधारण गांधार, ५ कैशिक निषाद, ६ काकली निषाद, ७ अन्तर गांधार ।

शुद्ध गांधार का दूसरा नाम पंच श्रुति ऋषभ भी है, साधारण गांधार का दूसरा नाम पट्श्रुति ऋषभ है । ये नाम किसी-किसी 'मेल' में व्यवहृत होते हैं । शुद्ध निषाद को पंचश्रुति धैवत भी कहते हैं, तथा कैशिक निषाद को पट्श्रुति धैवत कहते हैं, इसप्रकार ये चांदह स्वर पर्याय से विभिन्न रागों के तीनों ही स्थानों में आते हैं । प्रत्येक 'मेल' में सात से अधिक स्वर नहीं आते हैं ।

इति श्रीमदभिनवभरताचार्यवाग्गेयकारतोडरमल्लतिग्मामात्य-

नन्दनरामामात्यनिर्मिते स्वरमेलकलानिधौ

स्वरप्रकरणं द्वितीयम्



मेल प्रकरण

एवं प्रपंचितं लक्ष्म वीणानां तिसृणामपि ।
अनंतरं प्रवक्ष्यामो रागमेलान् यथाक्रमम् ॥

भावार्थः—इसप्रकार से (शुद्ध मेल, मध्यमेल, वा अच्युत राजेन्द्रमेल) इन (तीनों वीणाओं के लक्षण कह कर) अब मैं क्रम से राग मेल कहता हूँ ।

देशभाषाप्रसिद्धेन रागनाम्ना विशंपितान् ।
तत्तद्रागप्रधानत्वान्मेलान् वक्ष्ये क्रमादिमान् ॥

भावार्थः—देशभाषा प्रसिद्ध जो राग नाम हैं, वे ही उन मेलों को दिये गए हैं; क्योंकि उन मेलों के जन्य रागों में वे प्रधान राग हैं । वे मेल क्रम से इस प्रकार हैं ।

लक्ष्णं लक्ष्यते पश्चादुद्देशः क्रियतेऽधुना ।
सर्वेषु रागमेलेषु मुखारिमेल आदिमः ॥

भावार्थः—अभी मैं मेलों के नाम कहता हूँ । लक्षण आगे कहे जायेंगे । सभी राग मेलों में “मुखारी” मेल पहला माना गया है ।

ततो मालवगौलस्य मेलः श्रीरागमेलकः ।
सारंगनाटमेलश्च मेलो हिंदोलकस्यच ॥
शुद्धरामक्रियामेलो देशाक्षीमेलकोऽपरः ।
मेलः कन्नडगौलस्य शुद्धनाटयाश्च मेलकः ॥
आहरीमेलकश्चैव नादरामक्रियापरः ।
मेलः शुद्धवरालयाश्च रीतिगौलस्य मेलकः ॥
वसंतभैरवीसंज्ञो मेलकस्तु प्रकीर्तितः ।
केदारगौलमेलश्च हेजुज्जीमेलकस्ततः ॥

मेलः सामवरालयाश्च रेवगुप्तेश्च मेलकः
सामंतनाममेलश्च कांभोजीमेलकस्ततः ॥

भावार्थः—२ मालवगौलमेल, ३ श्रीरागमेल, ४ सारंगनाट
५ हिंदोलमेल ६ शुद्धरामक्रियामेल, ७ देशाक्षीमेल, ८ कंनडगौलमेल
९ शुद्धनाटीमेल १० आहरीमेल ११ नादरामक्रियामेल, १२ शुद्धवराली
मेल १३ रीतिगौल, १४ वसंतभैरवी १५ केदारगौल १६ द्वेजुज्जीमेल
१७ सामवरालीमेल १८ रेवगुप्ति १९ सामंतमेल, २० कांभोजीमेल,

[टिप्पणीः—ये रामामात्य के मुख्य जनक थाट हुए ।
दक्षिणत्य पद्धति में “ड” अक्षर की जगह अनेक स्थलों पर “ल”
दिखाई देगा]

मेला विंशतिरेवैते तेषां लक्षणमुच्यते ।

भावार्थः—ये बीस मेल हुए अब उनके लक्षण कहता हूँ ।

शुद्धसप्तस्वरैर्युक्तो मुखारीमेलको भवेत् ।

अस्मिन् मेले मुखारी च ग्रामरागाश्च केचन ।

संमतः शुद्ध इत्येष शार्ङ्गदेवविपश्चितः ॥

भावार्थः—मुखारी मेल में सातों ही स्वर शुद्ध लगते हैं । इसी
से मुखारी राग तथा कुछ अन्य ग्राम राग निकलते हैं । शार्ङ्गदेव
पंडित का शुद्धस्वर मेल भी यही समझना चाहिये ।

[टिप्पणीः—यह श्लोक महत्वपूर्ण है । यह ग्रन्थ दक्षिण का है,
तथा लगभग ४०० वर्ष से अधिक पुराना है, इसलिये रत्नाकर के
शुद्ध थाट का इसमें उल्लेख तथा विचार करना उचित ही है]

शुद्धाः सरिमपाः शुद्धधैवतश्च ततः परम् ।

च्युतमध्यमगांधारश्च्युतषड्जनिषादकः ॥

एतैः सप्तस्वरैर्युक्तः संमतो रागवेदिनाम् ।

मेलो मालवगोडस्य रामामात्येन लक्षितः ॥

भावार्थः—जिस मेल में सा रे म प ध ये स्वर शुद्ध हैं ।
च्युत मध्यम गांधार वा च्युत षड्ज निषाद ये स्वर भी हैं,
उम पंडित संमत मेल को रामामात्य ने “मालव गौड” कहा है,

[टिप्पणीः—हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति का यह भैरव थाट होगा ।
रत्नाकर के चाद्याध्याय में इसे “तुरुष्कगौड” कहा है । पृष्ठ
५६१ देखिए]

अस्मिन्मेले संभवन्ति ये रागास्तानथब्रुवे ।

रागो मालवगौलाख्यो ललिता बौलिका तथा ॥

सौराष्ट्रोगुर्जरी मेचबौली च फलमंजरी ।

गुण्डकी सिंधुरामक्री छायागौलः कुरंज्यपि ॥

रागः कंनडबंगाल स्तथा मंगलकौशिकः ।

मलहरीत्यादिकास्ते रागाः केचिद्भवंत्यतः ॥

भावार्थः— इस मेल से उत्पन्न होने वाले रागों के नाम ये हैंः—
१ मालवगौड २ ललिता ३ बहुली ४ सौराष्ट्र ५ गुर्जरी, ६ मेचबौली
७ फल मंजरी ८ गुण्डकी ९ सिंधुरामक्री १० छायागौल ११ कुरंजी
१२ कंनड बंगाल, १३ मंगल कौशिक १४ मलहरी ।

शुद्धषड्जः पंचश्रुतीरिषभश्च तथापरः ।

स्यात्साधारणगांधारः शुद्धौ पंचममच्यमौ ॥

पंचश्रुति धैवतश्च कैशिक्याख्यनिषादकः ।

एतैः सप्तस्वरैर्युक्तः श्रीरागस्यचमेलकः ॥

अस्मिन्मेले संभवन्ति ये रागास्तानथब्रुवे ।

श्रीरागो भैरवी गौली धन्यासी शुद्ध भैरवी ॥

वेलावली मालवश्रीः शंकराभरणौऽपिवा ।

आंदोली देवगांधारी मध्यमादि स्तथापरा ॥

एवमाद्याश्च कतिचिद्रागा मेलोद्भवा स्ततः ॥

श्रीरागमेल के स्वर इस प्रकार हैंः—

१ शुद्ध षड्ज, २ पंच श्रुतिक ऋषभ, ३ साधारण गांधार ४ शुद्ध
मध्यम ५ शुद्ध पंचम ६ पंच श्रुतिक धैवत, ७ कैशिक निषाद ।

श्रीरागमेल से जो राग उत्पन्न होते हैं उनके नाम ये हैं :—

१ श्रीराग, २ भैरवी, ३ गौली, ४ धन्यासी, ५ शुद्धभैरवी, ६ वेलावली ७ मालवश्री ८ शंकराभरण, ९ आंदोली, (आंधाली) १० देवगंधारी ११ मध्यमादि ।

[टिप्पणी:— यह हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति का काफी थाट होगा । उस पद्धति में अब श्री राग पूर्वा मेल में गाते हैं । ध्यान रखना चाहिये कि दक्षिण में अभी तक उसे काफी थाट में ही गाते हैं । यह कहा ही जा चुका है कि साधारण ग व कैशिक नी स्वर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के कोमल ग तथा कोमल नी हैं । यह भी स्मरण रखना चाहिये कि वेलावली, भैरवी, शंकराभरण ये ही राग रामामान्य ने इस थाट में रखे हैं]

पंचश्रुत्युपमः शुद्धपङ्जमध्यमपंचमाः ।

पंचश्रुतिर्धैवतश्च च्युतपङ्जनिपादकः ॥

च्युतमध्यमगांधार एतः सप्तस्वरैर्युतः ।

सारंगनाटमेलोऽयं रामामान्येन लक्षितः ॥

तन्मेलकसमुद्भूतान् रागान् वक्ष्यामि कान्धन ।

मारंगनाटः सावेरी तथा सारंगभैरवी ॥

नटनारायणी शुद्धवसंतः पूर्वगौलकः ।

स्यात्कुन्तलवराली सा भिन्नपङ्जस्तथैवच ॥

नारायणीत्येवमाद्याः केचिद्रागा भवन्त्यतः ॥

भावार्थः— रामामान्य के कहे हुये “सारंग-नाट” (कुछ ग्रंथों में सारङ्ग-नाट कहा है) मेल में शुद्ध-पङ्ज, पंच श्रुतिऋपम, च्युतमध्यमगांधार शुद्धमध्यम, शुद्धपंचम, पंचश्रुति धैवत च्युतपङ्जनिपाद ये स्वर लगते हैं । इस मेल से जो जन्य राग निकलते हैं वे ये हैं :—

१-सारङ्गनाट, २-सावेरी, ३-सारङ्ग भैरवी, ४-नटनारायणी ५-शुद्ध-वसंत, ६-पूर्व-गौल, ७-कुन्तलवराली, ८-भिन्न पङ्ज ९-नारायणी । ये राग इस मेल के अन्तरगत हैं ।

[टिप्पणी:—यह थाट हमारी हिन्दुस्थानी पद्धति का 'विलावल' थाट होगा। रागविबोध में 'सालङ्क-नाट' नाम आया है। वहां 'सालङ्क-नाट' मल्लारी मेल में है। मल्लारी मेल के स्वर ऊपर कहे हुये अनुसार ही हैं। राग-विबोधकार सोमनाथ च्युतमध्यमगांधार वा च्युतषड्जनिपाद इन स्वरों को "मृदुम" तथा "मृदुस्" कहता है। इसी प्रकार से यह भी याद रखना चाहिये कि वह पञ्चश्रुति री. व इन्हें तीव्रतर री, व कहता है। रामामात्य का च्युतपञ्चम मध्यम सोमनाथ का मृदु प होगा।]

श्रीरागमेलं यल्लक्ष्म तत्स्या द्विदोलमेलके ।

धैवतः शुद्ध एवात्र विशेषोऽयं प्रदर्शितः ॥

काञ्चित्तत्रोद्भवान् रागान् वक्ष्ये लक्षणसंगतान् ।

हिंदोलो मार्गहिंदोलो भूपालादिभिरित्यमी ॥

अन्येच कतिचिद्रागाः संभवन्त्यत्रमेलके ॥

भावार्थ:—ऊपर श्री राग मेल के जो लक्षण कहे गये हैं, बहुत कुछ वे ही हिन्दोल मेल के भी हैं, परन्तु हिन्दोल मेल में धैवत शुद्ध है। उन्हें लक्षणों सहित कहते हैं, वे राग ये हैं :—

१-हिन्दोल, २-मार्ग-हिन्दोल, ३-भूपाल, तथा कुछ अन्य ।

[टिप्पणी:—काफी थाट में धैवत तीव्र है, यह हम जानते ही हैं। इस हिन्दोल थाट में उसे शुद्ध रखना है। तात्पर्य यह है कि वह हिन्दुस्तानी पद्धति में कोमल हो ही जायगा। ऐसा करने से रामामात्य का हिन्दोल-थाट हिन्दुस्तानी 'आसावरी' थाट होगा।]

शुद्धाःसरिपधाश्चैव च्युतपञ्चममध्यमः ।

च्युतमध्यमगांधारश्च्युतषड्जनिपादकः ॥

शुद्धरामक्रियामेलः स्यादेभिस्सप्तभिः स्वरैः ।

अत्रमेले संभवन्ति ये रागास्तानथ ब्रुवे ॥

शुद्धरामक्रिया बौली ह्यार्द्रदेशीच दीपकः ।

इत्याद्याः संभवन्त्यत्र मेले रागाश्च केचन ॥

भावार्थः—जिसमें स रि प ध ये स्वर शुद्ध हैं, च्युतपंचममध्यम, च्युतमध्यमगांधार तथा च्युतषड्जनिषाद ये स्वर भी लगते हैं। इसे “शुद्धरामकिया” मेल समझना चाहिये। इस मेल के राग ये हैं।

१-शुद्धरामकी, २-बौली, ३-आर्द्रदेशी, ४-दीपक इत्यादि राग इस मेल से उत्पन्न होते हैं।

[टिप्पणीः—यह मेल अपनी हिन्दुस्तानी पद्धति का ‘पूर्वी’ मेल होगा। दीपक इस थाट का राग है, यह याद रखना चाहिये।]

षट्श्रुत्यृषभकः शुद्धषड्जमध्यमपंचमाः ।

पंचश्रुतिर्धैवतश्च च्युतषड्जनिषादकः ॥

च्युतमध्यमगांधार श्चेत्येतत्स्वरसंयुतः ।

देशाक्षीमेलकः प्रोक्तो रामामात्येन धीमता ॥

देशाक्षीप्रमुखा रागा भवंत्यत्र क्वचित् क्वचित् ॥

भावार्थः—जिस मेल में षट्श्रुतिक ऋषभ, षड्जशुद्ध, मध्यम व पंचम शुद्ध, पंचश्रुति धैवत, च्युतषड्जनिषाद च्युतमध्यमगांधार, ये स्वर लगते हैं। उसे रामामात्य पंडित “देशाक्षी” मेल कहता है। इस मेल से देशाक्षी प्रभृति राग निकलते।

देशाक्षी रागमेलस्य लक्षणं यदुदाहृतम् ।

मेलः कंनडगौलस्य तस्माद्भेदोऽस्ति कश्चन ॥

कैशिक्याख्यनिषादोऽत्र प्रयोज्यो लक्ष्यवेदिभिः ।

अस्मिन्स्तु मेले संजातान् रागाल्लक्षणतो ब्रुवे ॥

एकः कंनडगौलाख्य स्तथा घण्टारवोऽपि च ।

शुद्धबंगालनामाच छायानाटस्ततः परः ॥

तथा तुरुष्कतोडीच नागध्वनिरतः परम् ।

देवक्रिया ह्येवमाद्या रागाः केचिद्भवन्त्यतः ॥

भावार्थः—देशाक्षी मेल के जो लक्षण कहे हैं, बहुत कुछ वे ही कंनड-गौल के समझने चाहिये। परन्तु कंनड-गौल में पण्डित कैशिक-निषाद का प्रयोग करते हैं। इस मेल से निकलने वाले रागों के नाम व लक्षण ये हैं :—

१-कन्नड़-गौल २-घण्टा-रव ३-शुद्ध वंगाल, ४-छायाणट,
५-तुरुष्क तांडी ६ नागध्वनि ७-देवक्रिया इत्यादि कुछ राग
इस मेल के अन्तर्गत हैं ।

शुद्धस्वरास्तु समपाः षट्श्रुत्यृषभधैवता ।

च्युतमध्यमगांधार श्च्युतषड्जनिपादकः ॥

स्वरैरमीभिः संयुक्तः शुद्धनाट्याश्चमेलकः ।

शुद्धनाटप्रभृतयो रागा अतो भवन्ति च ॥

भावार्थः—जिस मेल में न, म, प, शुद्ध हों, षट्श्रुतिकृषभ है,
षट्श्रुतिधैवत है, इसी प्रकार च्युतमध्यमगांधार वा च्युतषड्जनिपाद
ये स्वर भी हैं, उसे 'शुद्धनाट' मेल माना गया है । इस मेल से
शुद्ध-नाट इत्यादि राग निकलते हैं ।

शुद्धाः समपधाश्चैव पंचश्रुत्यृषभस्तथा ।

साधारणोऽपि गांधार श्च्युतषड्जनिपादकः ॥

स्वरैरमीभिः संयुक्त आहरीमेलको भवेत् ।

आहरीप्रमुखारागा भवयुरिहमेलके ॥

भावार्थः—जिस मेल में स, म, प, ध ये स्वर शुद्ध हों, पंचश्रुति-
कृषभ, साधारण-गांधार, च्युतषड्जनिपाद ये स्वर भी हों, उसे
'आहरी' मेल कहते हैं । उससे आहरी इत्यादि राग निकलते हैं ।

शुद्धाः समपधा रिश्च च्युतषड्जनिपादकः ।

साधारणोऽथ गांधारः स्वरैरेभिः समन्वितः ॥

नादरामक्रियामेल स्तस्मिन् रागाश्चकेचन ।

नादरामक्रियामुख्याः संभवन्ति कश्चित् कश्चित् ॥

भावार्थः— जिस मेल में स, म, प, ध री ये सभी स्वर शुद्ध हैं,
साधारण-गांधार तथा च्युतषड्जनिपाद ये स्वर भी लगते हैं, उसे

नादरामकी मेल कहते हैं । उससे नादरामक्रिया इत्यादि राग उत्पन्न होते हैं ।

शुद्धाः सरिपधा यत्र शुद्धगांधारसंचितः ।

च्युतपङ्जनिपादोऽपि च्युतपंचममध्यमः ॥

मेलः शुद्धवरालयाश्च तत्र शुद्धवरालिका ।

अन्येच संभविष्यन्ति रागा देशविभेदतः ॥

भावार्थः—जिस मेल में स री, प, ध, ग ये स्वर शुद्ध हैं, च्युतपङ्जनिपाद, तथा च्युतपंचममध्यम ये स्वर भी लगते हैं, उसे 'शुद्धवराली' मेल कहते हैं । इस मेल से शुद्धवराली तथा कुछ देशी रागों की उत्पत्ति कही गई है ।

शुद्धाः सरिगमाः पश्च पंचश्रुतिकधैवतः ।

कैशिक्याख्यनिपादश्चैतैर् युक्तः स्वरैस्तु यः ॥

स रीतिगौलमेलः स्याद्रीतिगौलादयोऽत्र च ।

रागाः केचिद्भवंतीति संमतं गानवेदिनाम् ॥

भावार्थः—जिसमें सा री ग म प ये स्वर शुद्ध हैं, पंचश्रुतिधैवत तथा कैशिक निपाद ये स्वर भी हैं उसे 'रीतिगौल' मेल—यह संज्ञा प्राप्त हुई है । इस मेल से रीतिगौल इत्यादि राग निकलते हैं, ऐसा पंडितों का मत है ।

च्युतमध्यमगांधारः कैशिक्याख्यनिपादकः ।

शुद्धाः सरिमधा धश्च स्वरैरेभिः समन्वितः ॥

वसंतभैरवीमेल स्वस्मिन् रागाश्च केचन ।

वसंतभैरवीसोमरागप्रभृतयो मताः ॥

भावार्थः—जिसमें सा री ग म प ध ये स्वर शुद्ध हैं, च्युतमध्यमगांधार तथा कैशिक-निपाद ये स्वर भी हैं उसे 'वसन्त-भैरवी' मेल समझना चाहिये । इस मेल से वसन्त-भैरवी, सोम, इत्यादि राग उत्पन्न होते हैं ।

शुद्धाश्च समपाः पञ्चश्रुती चर्पभधैवर्तौ ।
 च्युतमध्यमगांधार श्युतपड्जनिपादकः ॥
 केदारगौलमेलः स्यात् स्वरैरभिः समन्वितः ।
 तस्मिन् केदारगौलश्च स्यान्नारायण गौलकः ॥
 एवमाद्याः भवन्ति मेले रागाः क्वचित् क्वचित् ॥

भावार्थः—जिसमें स म प शुद्ध हैं, पञ्च श्रुतिक रि ध है, च्युतमध्यमगांधार तथा च्युतपड्जनिपाद ये स्वर भी हैं। उसे 'केदार-गौल' मेल समझना चाहिये, उससे केदार-गौल, नारायण-गौल, इत्यादि कुछ राग उत्पन्न होते हैं।

मेलाः पञ्चदश प्रोक्ताः काकल्यन्तरवर्जिताः ।
 काकल्यन्तरसंयुक्तान् पञ्चमेलान् प्रचक्ष्महे ॥

भावार्थः—इस प्रकार ये पन्द्रह मेल कहे गये हैं। इनमें काकली तथा अन्तर स्वर नहीं हैं, अतः अब उन मेलों को कहते हैं जिनमें ये दोनों स्वर हैं।

शुद्धौ च पड्जरिपभौ शुद्धाश्चमपधास्तथा ।
 गांधारोऽन्तरसंज्ञश्च काकल्याख्यनिपादकः ॥
 एतावत्स्वरसंयुक्तो हिज्जूमीलको भवेत् ।
 हिज्जूयाद्या भवन्त्यत्र ग्रामरागाश्च केचन ॥
 इत्येव शाङ्गदेवस्य संमतो मार्गवेदिनः ।

भावार्थः—जिसमें सा री म प ध ये स्वर शुद्ध हैं, अन्तर-गांधार तथा काकली निपाद ये स्वर भी हैं, उसे 'हिज्जूमी' मेल कहा है। इस मेल से हिज्जूमी, तथा कुछ ग्राम, राग उत्पन्न होते हैं। मार्ग सङ्गीत निष्णात, शाङ्गदेव का हिज्जूमी मेल इसी को समझना चाहिये।

[टिप्पणी:—यह श्लोक महत्व पूर्ण है। इसमें रामामात्य ने रत्नाकर के हिजुजी राग के स्वरूप का उल्लेख किया है। यह विचित्र बात है कि उसने अपने विधान का आधार अथवा प्रमाण कहीं नहीं दिया है। परन्तु अब इसका इलाज ही क्या है? इस उल्लेख से केवल इतना ही पता चल सकता है कि उस ग्रन्थकार के समय में रत्नाकर के हेजुजी के स्वरूप के विषय में प्रचलित धारणा क्या थी। रामामात्य के पश्चात् कुछ वर्षों बाद व्यङ्कटमुखी पंडित हुआ। उसने रामामात्य के मेलों पर कठोर टीका की है।]

शुद्धाः सरिगमाश्चाथ शुद्धौ पंचमधैवतौ ।

निपादः काकलीसंज्ञो धैतैः सप्तस्वरैर्युतः ॥

मेलः सामवरान्याख्य स्तस्मिन् सामवरालिका ।

अन्येच संभविष्यन्ति रागा इति विदां मतम् ॥

भावार्थः—जिसमें स री ग म प ध ये स्वर शुद्ध हैं, तथा जिसमें निपादकाकली है उसे 'सामवराली' मेल कहा है, उससे सामवराली इत्यादि राग निकलते हैं, ऐसा पंडित कहते हैं।

शुद्धाः सरिमपाः शुद्धधनी गांधारकोंऽन्तरः ।

एतैः सप्तस्वरै रेवगुप्तिमेल उदाहृतः ॥

तस्मिन् रागो रेवगुप्तिः शुद्धरागाश्च केचन ।

रत्नाकरीयमेलोत्थाः शाङ्गदेवेन लक्षिताः ॥

भावार्थः—जिसमें स री म प ध नि ये स्वर शुद्ध हैं, तथा जिसमें गांधार अन्तर नाम का है, उसे 'रेव-गुप्ति' मेल मानना चाहिये। इससे रेव गुप्ति राग तथा शाङ्गदेव के रत्नाकर के कुछ अन्य राग निकलते हैं।

रिधौ पट्श्रुतिकौचैव काकल्यन्तरनामकौ ।

शुद्धाः षड्जमपा एतैः स्वरैर्युक्तोभवेद्यदा ॥

तदा सामंतमेलः स्यात् तत्र रागास्तदादयः ॥

भावार्थः—जिसमें स म प ये शुद्ध हैं, गी, ध, पञ्चश्रुतिक हैं, काकली तथा अन्तर-स्वर ये हो हैं, उसे 'सामन्त' मेल कहा है, उससे सामन्तादिक राग उत्पन्न होते हैं ।

गनीचांतरकाकल्यौ रिधौ पंचश्रुती तथा ।
शुद्धास्तुसमपाश्चैव ह्येतैः कांभोजिमेलकः ॥
कांभोजीप्रमुखा रागा मेलोऽस्मिन् भंभवन्तिहि ॥

भावार्थः—कांभोजी मेल में स म प शुद्ध हैं, गांधार तथा निषाद अन्तर तथा काकली हैं, ऋषभ तथा धैवत पंच श्रुतिक हैं । इस मेल से कांभोजी इत्यादि राग निकलते हैं ।

लक्षिता विंशतिर्मेला गात्रे स्युर्नियता अमी ।
पक्षद्वयं तु वीणायां वक्ष्यते लक्ष्यसंमतम् ॥

भावार्थः—इस प्रकार इस समुदाय में गायें जाने वाले २० मेल निकलते हैं । प्रचार में वीणा-वादकों के दो पक्ष हैं, उन्हें भी कहता हूँ ।

ग्राहादंतरकाकल्योः स्वररूपे पृथक् पृथक् ।
पक्षोऽयं प्रथमस्तत्र मेलाः स्युर्विंशति र्ध्रुवम्

भावार्थः—अन्तर तथा काकली ये दो स्वर (च्युत गा व च्युत नी इन स्वरों से भी) प्रत्यक्ष संगीत में भिन्न मानने से कुल बीस मेल होते हैं, यह पहला पक्ष है ।

अन्तरस्य च काकल्याः स्थाने प्रतिनिधिः क्रमात् ।
च्युतमध्यमगांधारश्च्युतपण्डजनिषादकः ॥
अयं द्वितीयः पक्षोऽत्र मेलाः पंचदश स्मृताः ॥

भावार्थः—दूसरा पक्ष यह कहता है कि अन्तर व काकली इन स्वरों को भिन्न न मान कर, उन्हें च्युतमध्यमगांधार तथा

च्युतपङ्क्तिनिषाद इन स्वरों का ही अन्तर्भाव समझना चाहिये । इस दृष्टि से देखने पर अर्थात् (रामामात्य के अन्तिम पाँच मेल, भिन्न न मानने की आवश्यकता न पड़ने से) मेल पन्द्रह ही होंगे ।

[टिप्पणी:—रामामात्य को भी यह अन्तर्भाव तत्त्व पसन्द था, उसने अपने मत को दृढ़ करने के लिये शाङ्गदेव के साधारण प्रकरण के दो एक श्लोकों का आधार लिया है । वह कहता है ।

“एतदेवाभिसंधाय कथितं शाङ्गसूरिणा ।

अल्पप्रयोगः सर्वत्र काकली चांतरस्वरः ॥

शाङ्गदेव ने अन्तर तथा काकली इन स्वरों का उपयोग स्वतः रागाध्याय में समुचित स्थलों पर किया है । इससे इतना ही कहा जा सकता है कि रामामात्य ने रत्नाकर के श्लोकों का अर्थ ठीक ठीक किया है या नहीं ? यह प्रश्न ही निगला है ! अभी तो हम ‘स्वरमेल कलानिधि’ का स्पष्टीकरण कर रहे हैं । प्रत्येक संस्कृत-भाषा जानने वाला पंडित प्राचीन संस्कृत-ग्रन्थों के संगीत-विषय को देख कर उसे भली-भांति समझ ही लेगा यह बात मानने के लिये हम तैयार ही कहाँ हैं ? अस्तु ।]

अत्र प्रतिनिधेः पक्षे मुखारीमेलपूर्वकाः ।

केदारगौलमेलान्ता मेलाः पंचदश स्मृताः ॥

भावार्थः—(इसलिये) यहां प्रतिनिधि पक्ष प्रमाण से ‘मुखारी’ से लेकर ‘केदार गौल’ तक पन्द्रह मेल कहे हैं ।

इति श्रीमदभिनवभरतान्चार्यवाङ्मयकारतोडरमल्लनिग्मामात्य-
नन्दनरामामात्यनिर्मितस्वरमेलकलानिधौ
मेलप्रकरणं चतुर्थम्

राग प्रकरणम्

एतेषु वा मता रागा उत्तमा मध्यमा अपि ।

अधमाश्चापि सकलाः कथ्यन्ते ते चिन्कृतः ॥

भावार्थः—मेरे कहे हुए इन मेलों में से जो जन्म राग निकलते हैं उनके उत्तम, मध्यम, तथा अधम ये तीन वर्ग माने गए हैं, व राग अब सविस्तार कहे जाने हैं ।

मुखारी शुद्धनाटीच तथा मालवरागकः ।

ततः शुद्धवरालीच गुर्जरी ललितस्तथा ॥

शुद्धरामक्रियाशुद्धवसन्तौ भैरवी तथा ।

हिंदोलरागश्रीरागौ रागः कन्नडगौलकः ॥

सामन्तरागो देशाक्षी धन्यासी बौलिकेतिच ।

आहरीचापि मल्लारी मालवश्री स्ततःपरम् ॥

सारंगनाटीतिरागाः कथिताश्चोत्तमोत्तमाः ।

असंकीर्णतया लोके रागा विंशतिरन्वच ॥

गीतप्रबंधकालापयोग्या एते भवन्ति हि ॥

भावार्थः—१ मुखारी, २ शुद्धनाटी, ३ मालव ४ शुद्धवराली, ५ गुर्जरी ६ ललित, ७ शुद्धरामक्रिया, ८ शुद्धवसन्त ९ भैरवी, १० हिंदोल, ११ श्रीराग, १२ कन्नडगौल, १३ सामन्त, १४ देशाक्षी, १५ धन्यासी, १६ बौली, १७ आहरी, १८ मल्लारी, १९ मालवश्री, २० सारंगनाटी, ये बीस राग उत्तम वर्ग में रखे गए हैं । ये सभी संकीर्ण न होने से गीत, प्रबंध, आलाप, इत्यादि गाने के योग्य माने गए हैं ।

[टिप्पणीः—सोमनाथ पंडित का “राग विबोध” नामक ग्रन्थ अब छप कर प्रकाशित हो चुका है । उस ग्रन्थ के चौथे विवेक में

पृष्ठ ५ पर जो टीका है, उसमें रामामात्य का यह वर्गीकरण दिया है। उसमें दिए हुए उत्तम, मध्यम, अधम राग पूर्ण रूपेण रामामात्य के ही कम से कहे गए हैं]

कंदारगौलः कांभोजी वंगालः कन्नडाव्हयः ।
 वेलाख्या मध्यमादि नारायणी रीतिगौलकः ॥
 नादरामक्रिया पाडि भूपाली रेवगुप्तिकः ।
 गुन्डक्रिया हिज्जीच वसंतादिश्च भैरवी ॥
 रागः सामवरालिश्चैत्येते पंचदर्शव च ।
 लोकेऽबहुव्यवहाराः कीर्तिता मध्यमा बुधैः ॥

भावार्थः--कंदारगौल, कांभोजी, वंगाल, (कन्नडवंगाल) वेलावली, मध्यमादि, नारायणी, रीतिगौड, नादरामक्रिया, पाडी, भूपाली, रेवगुप्ति गुन्डक्रिया, हिज्जी, वसंत भैरवी, सामवगली इन पंद्रह रागों को पंडित ने "मध्यम" नामक वर्ग में माना है। (ये राग आलापदिक के योग्य न होने से, ये लोक में अन्यन्त प्रचलित न होने से इस वर्ग में रखे गए हैं ।

सौराष्ट्रो मेचवौलीच छायागौलः कुरंजिका ।
 मिथुरामक्रिया गौडी देशी मंगलकौशिकः ॥
 पूर्वगौल स्मोमराग आंधाली फलमंजरी ।
 शंकराभरणो देवगांधारी दीपकस्तथा ॥
 नटनारायणी शुद्धभैरवी भिन्नपड्जकः ।
 स्यात् कुन्तलवरालीच रागः सारंगभैरवी ॥
 शुद्धवंगालको नागध्वनि धं टारवस्तथा ।
 मार्गहिंदोलक शच्छायानाटी देवक्रियापिच ॥
 नारायणी गौलराग स्ततस्तोडी वरालिका ।
 तुरुष्कतोडीरागश्च रागः सावेरिका तथा ॥
 आर्द्रदेशीत्यादयश्च रागाः स्युरधमाः क्रमात् ॥

सर्वेष्वेतत्पुरोक्तेषु मध्यमेषूत्तमेषु च ।
अन्तर्भूताश्च संकीर्णाः पामरभ्रामकाश्चते ॥
रागास्तावत् प्रबंधानामयोग्या बहुलाश्चते ।
तस्मान्नते परिग्राह्या रागाःसंगीतकोविदैः ॥

भावार्थः—ये आगे के राग ‘अधम’ माने गए हैं । १ सौरष्ट्र, २ मेचवौली, ३ छायागौल, ४ कुरंजी, ५ सिंधुरामक्रिया, ६ गौडी, ७ देशी, ८ मंगलकौशिक, ९ पूर्वगौड, १० सोमराग, ११ आंधाली, १२ फलमंजरी, १३ शंकरा भरण, १४ देवगांधारी, १५ दीपक, १६ नटनारायणी, १७ शुद्ध भैरवी, १८ भिन्नपडुज, १९ कुन्तलवराली, २० सारंगभैरवी, २१ शुद्ध वंगाल, २२ नागध्वनि, २३ घंटारव, २४ मार्गहिंदोल, २५ छायानाटी, २६ देवक्रिया, २७ नारायणी, २८ गौलराग, २९ तोडी, ३० वराली, ३१ तुरुक्तोडी ३२ सावेरी ३३ आर्द्रदेशी । ये सभी राग अधम माने गए हैं । ऊपर जो “उत्तम, मध्यम, तथा अधम” राग कहे गए हैं उनमें साधारण लोगों का भ्रम में डालने वाले जो संकीर्ण राग हैं, उनका भी समावेश है । प्रबंधादिकों के लिये अयोग्य ऐसे असंख्यराग हैं अतः पंडित जन बहुधा उनका विचार नहीं करते । उनका सविस्तार निरूपण दुःसाध्य ही है ।

देशीरागाश्च सकलाः षड्जग्रामसमुद्भवाः ।
ग्रहांशन्यासमंद्रादिषाडवौडवपूर्णताः ॥
देशीत्वात्सर्वरागेषु भवंति न भवंति वा ।
तथापि लक्ष्यमाश्रित्य लक्ष्यज्ञाननुसृत्य च ॥
विंशत्युत्तमरागाणां मसंकीर्णस्वरूपिणाम् ।
मध्यमानां तथा पंचदशानां च ततः परम् ॥
अधमानां च केषांचिद्वक्षणं लक्ष्यतेऽधुना ॥

भावार्थः—सभी देशी राग षड्ज ग्राम से ही उत्पन्न होते हैं, अतः उनके ग्रह, अंश, न्यास, मन्द्र षाडवत्व, ओडवत्व, सम्पूर्णत्व इत्यादि प्राचीन ग्रन्थोक्त राग लक्षण यथा शास्त्र दृष्टि पड़ेगे ही ऐसा

नियम नहीं है। तथापि लक्ष्य एवम् लक्ष्यस्य इनका अनुसरण करके उत्तम माने गए असंकीर्ण बीस राग “मध्यम” वर्ग के पंद्रह राग, तथा “अधम” वर्ग के कुछ रागों के ही लक्षण, अब मैं कहूँगा।

संपूर्णस्वरसंयुक्तः षड्जन्यासग्रहांशकः ।

यो गेयः पश्चिमे यामे नाटीरागः स उच्यते ॥

भावार्थः—नाट राग में ग्रह, अन्श, न्यास षड्ज है। यह राग संपूर्ण होकर अन्तिम प्रहर में गाने योग्य है।

षड्जांशा सग्रहा षड्जन्यामा संपूर्णतांगता ।

सर्वगामेषु या गेया सा वरालीतिकीर्तिता ॥

भावार्थः—वराली में षड्ज ग्रह अन्श न्यास है, तथा वह संपूर्ण है। यह सभी प्रहरों में गाया जाता है।

सारंगनाटी संपूर्णा सन्यामा सग्रहापिच ।

षड्जांशा पश्चिमे यामे गातव्या कथिता बुधैः ॥

भावार्थः—सारंगनाट संपूर्ण है तथा इसमें षड्ज, ग्रह, अन्श न्यास है। पंडितों का कथन है कि इसे अन्तिम प्रहर में गाना चाहिये।

शुद्धरामक्रियारागः संपूर्णः सग्रहोऽपिच ।

षड्जांशान्याससंयुक्तो गेयो मध्यदिनात्परम् ॥

भावार्थः—शुद्धरामक्रिया राग संपूर्ण है। इसमें षड्ज, ग्रह, अन्श न्यास है। इसे दोपहर के अनंतर गाना चाहिये।

सग्रहा सांशिका षड्जन्यासा संपूर्णतांगता ।

मुखारी सर्वकालेषु गानयोग्या प्रकीर्तिता ॥

भावार्थः—मुखारी में षड्ज ग्रह, अन्श, न्यास है। यह राग संपूर्ण है तथा सार्वकालिक है।

संपूर्णो भैरवीरागः सन्यासः सांशको मतः ।
पड्जग्रहस्तथा गेयो यामे यः पश्चिमे च सः ॥

भावार्थः—भैरवी राग संपूर्ण है । इसमें ग्रह, अन्श, न्यास पड्ज है । इसे अन्तिम प्रहर में गाते हैं ।

सन्यास आहरीरागः सांशः पड्जग्रहोऽपिच ।
संपूर्ण श्रमं यामे गातव्योऽर्धो विचक्षणैः ॥

भावार्थः—आहरी राग संपूर्ण है । इसमें पड्ज, ग्रह अन्श न्यास है । पंडित इसे अन्तिम प्रहर में गाते हैं ।

सामंतरागः पड्जांशः पड्जन्यासश्च सग्रहः ।
दिनस्य चरमे यामे गेयः संपूर्णतायुतः ॥

भावार्थः—सामंतराग संपूर्ण है । इसमें पड्ज, ग्रह, अन्श न्यास है । इसे सायंकाल में गाते हैं ।

निधांशकग्रहोपेतो रागः कन्नडगौलकः ।
संपूर्णोऽपि कदाचित् स्यादारोहे त्यक्तमध्यमः ॥
गेयोहनः पश्चिमे यामे उत्कलानामतिप्रियः ॥

भावार्थः—कन्नडगौल राग में निषाद तथा धैवत अन्श तथा ग्रह हैं । यह संपूर्ण है । कुछ लोग आरोह में मध्यम वर्जित करते हैं । इसे अन्तिम प्रहर में गाते हैं । यह राग उत्कल (उड़ीसा प्रांत के लोगों को) अतीव प्रिय है ।

सन्यासः सग्रहः पूर्णो देशाक्षीराग उच्यते ।
आरोहे मनिवर्जोऽसौ पूर्वयामे च गीयते ॥

भावार्थः—देशाक्षी राग संपूर्ण है तथा इसमें पड्ज, ग्रह और न्यास है । आरोह में म, नि वर्जित किया जाता है । इसे पहले प्रहर में गाते हैं ।

मध्यमांशग्रहन्यासा पंचमेनविवर्जिता ।

बौलिका स्यात् षाडवा सा गातव्या पूर्वयामके ॥

भावार्थः--बौलिका राग षाडव है । इसमें पंचम वर्जित है, तथा इसे पहले प्रहर में गाते हैं ।

[टिप्पणीः--इतर ग्रन्थों में इस राग में "मध्यम" वर्जित करने का आदेश है]

रागः शुद्धवर्मन्ताख्यः सन्यासः सग्रहोऽपिच ।

गीयते सर्वयामेषु सर्वदा मंगलप्रदः ॥

भावार्थः--शुद्धवसत राग सार्वकालिक हैं । यह अन्यधिक शुभ प्रद है । इसमें षड्ज स्वर ग्रह न्यास है ।

पवर्जिता रिग्रहांशन्यासा षाडविका स्मृता ।

कदाचिदवरोहे सा पयुता गुर्जरी भवेत् ॥

दिनस्य प्रथमे यामे गेया सा गानकोविदैः ॥

भावार्थः--गुर्जरी षाडव है । इसमें ऋषभस्वर ग्रह अंश न्यास है । तथा पंचम वर्जित है । कुछ लोग अवरोह में पंचम का प्रयोग करते हैं । पंडितों को यह राग दिन के पहले प्रहर में गाना चाहिये ।

सग्रहसन्यासयुक्ता ललिता पंचमोज्झिता ।

षाडवा प्रथमे यामे गेया सा शोभनप्रदा ॥

भावार्थः--ललित राग षाडव है । इसमें पंचम वर्जित है । षड्ज, ग्रह वा न्यास है । यह पहले प्रहर में गाने से सुशोभित होता है । यह राग शुभ प्रद माना जाता है ।

हिंदोलको रिधत्त्यक्त औडवः सग्रहांशकः ।

सन्यासः शुभयोगेऽपि सरागः सार्वकालिकः ॥

भावार्थः—हिंदोल राग औडव है। इसमें रि, ध, स्वर वर्जित हैं। पड्ज ग्रह अन्श न्यास है। इसे सदैव शुभ प्रसंग में गाना चाहिये।

धैवतांशग्रहन्यासो रागो मल्लारिसंज्ञकः ।

औडवो गनिवर्जोऽर्मा प्रभाते गीयते बुधैः ॥

भावार्थः—मल्लारि राग औडव है। इसमें ग, नि, स्वर वर्जित है। पंडित इसे प्रातःकाल में गाते हैं।

रागो धन्यासिसंज्ञोऽसौ बहुशो रिधवर्जितः ।

गेयः प्रातरर्सां तज्ज्ञैः सन्यामांशग्रहौडवः ॥

भावार्थः—धन्यासी नामक राग में बहुधा रि, ध, वर्जित होते हैं, इससे पड्ज ग्रह अन्श न्यास है। इसे पंडित लोग प्रातःकाल में गाते हैं।

रागो मालवगौलथ निन्यासांशग्रहो मतः ।

औडवो रिपवर्जश्च कदाचिद्रिपसंयुतः ॥

भावार्थः—मालवगौड राग औडव है, अतः इसमें री प वर्जित होते हैं। इसमें निषाद स्वर ग्रह अन्श न्यास माना गया है। कहीं कहीं 'री प' ये स्वर भी लगाकर कुछ लोग गाते हैं।

गेयः सायाह्नसमये रागाणामुत्तमोत्तमः ॥

भावार्थः—यह मालव-गौड राग सब रागों में अत्युत्तम है, तथा इसका समय संध्याकाल का माना गया है।

श्रीरागः सग्रहः सांशः सन्यासो गधवर्जितः ।

औडवोऽपि भवेद्रागः कदाचित् गधसंयुतः ।

सायान्हे गीयतामेष सर्वसंपत्प्रदायकः ॥

भावार्थः—श्री राग औड़व है। इसमें षड्ज, ग्रह अंश न्यास है तथा ग ध ये स्वर वर्जित हैं। कुछ लोग ग ध लेकर भी इस राग को गाते हैं। इसका समय संध्याकाल का है तथा यह शुभदायक माना गया है।

[टिप्पणीः—यहां तक ग्रन्थकार ने “उत्तम” राग कहे हैं। उत्तम राग कुल २० (बीस) कहे जाने चाहिये थे, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यहां “मालव-श्री” राग का उल्लेख करना बाकी रह गया है।]

मध्यम राग

कंदारगौलः सम्पूर्णो निन्यासो निग्रहोऽपि च ।

निषादांशश्चतुर्थेऽहि ग्रहं गीयते बुधैः ॥

भावार्थः—कंदार-गौल राग सम्पूर्ण है। इसमें निषाद यह स्वर ग्रह, अंश, न्यास है। पंडित लोग इसे दिन के चौथे ग्रह में गाते हैं।

नादरामक्रियारागः षड्जन्यासस्तु सग्रहः ।

षड्जांशकस्तु सम्पूर्णो गेयो यामे तुरीयके ॥

भावार्थः—नादराम क्रिया राग सम्पूर्ण है। इसमें षड्ज ग्रह, अंश, न्यास है तथा इसे दिन के चौथे ग्रह में गाते हैं।

सन्यासा सग्रहा सांशा सम्पूर्णोऽपि क्वचित् क्वचित् ।

आरोहे मनिवर्जाऽसौ काम्भोजी सायमीरिता ॥

भावार्थः—काम्भोजी में षड्ज ग्रह, अंश, न्यास, है। आरोह में म, नि वर्जित हैं। कुछ लोग इस राग को सम्पूर्ण मानते हैं। इस राग का समय संध्या-काल है।

पड्जांशा सग्रहा पड्जन्यासा सामवरालिका ।

संपूर्णा सर्वदा गेया सामवेदसमुद्भवा ॥

भावार्थः—सामवराली राग में पड्ज अंश, ग्रह, न्यास है । यह सम्पूर्ण है, इसे चाहे जब गाया जा सकता है । इस राग की उत्पत्ति सामवेद से है ।

रीतिगौलो निषादांशो निन्यासग्रह एवच ।

संपूर्णो गीयते सायं मुखारीमेलमाश्रितः ॥

भावार्थः—रीति-गौल राग में निषाद अंश, ग्रह, न्यास है । यह राग सम्पूर्ण है तथा मुखारी-मेल से निकला है । इसका समय सायंकाल है ।

हिज्जूजीरागः संपूर्णो मन्यासो मग्रहांशकः ।

गेयोऽहः पश्चिमे यामे काकन्यंतरभूषितः ॥

भावार्थः—हिज्जूजी-राग सम्पूर्ण है । इसमें मध्यम अंश, ग्रह, न्यास है । इस राग में काकली तथा अन्तर-स्वर अन्यन्त सुन्दर दिखाई देते हैं । इसे दिवस के अन्तिम-प्रहर में गाते हैं ।

गांशो नारायणीरागो गांधारन्यासकग्रहः ।

संपूर्णः प्रातरुदेयोऽवरोहे रिच्युतः क्वचित् ॥

भावार्थः—नारायणी-राग सम्पूर्ण है । इसमें गांधार ग्रह, अंश, न्यास है । कुछ लोग अवरोह में रिषभ वर्जित करते हैं । यह राग प्रातः काल में गाया जाता है ।

पूर्णा वेलावलीरागो धन्यासस्तुचधग्रहः ।

क्वचिद्रिषाभ्यां न्यूनः स्यादवरोहे प्रभातजः ॥

भावार्थः—वेलावली-राग सम्पूर्ण है । इसमें धैवत न्यास वा ग्रह है । इसका समय प्रातः काल का है । कुछ लोग अवरोह में रे प स्वरों को नहीं लगाते

(यह आठ सम्पूर्ण राग “मध्यम” वर्ग के अन्दर हुये)

रागः कन्नडवंगालो गांधार ग्रहकांशकः ।

गन्यासरिषभन्यूनः प्रातर्गेयः स पाडवः ॥

भावार्थः—कन्नड-वंगाल राग पाडव है । इसमें रिषभ वर्जित है गांधार अन्श, ग्रह, न्यास हैं । यह प्रातर्गेय है ।

पाडीरागस्तु सन्यासः सांशः षड्जग्रहः स्मृतः ।

तुरीययामे गेयोऽसौ निहीनः पाडवो मतः ॥

भावार्थः—पाडी राग पाडव है तथा इसमें निषाद वर्जित है । (इतर ग्रन्थों में ग वर्जित कहा है) षड्ज-स्वर अन्श, ग्रह, न्यास है । इसे दिन के चौथे प्रहर में गाते हैं ।

वसंतभैरवीरागः सन्यासः पंचमोज्झितः ।

सग्रहः षड्जकन्यासः प्रातर्गेयः स पाडवः ॥

भावार्थः—वसंत-भैरवी राग में षड्ज ग्रह, अन्श, न्यास है । इसमें पंचम वर्जित है । यह राग प्रातर्गेय है ।

सांशो गुण्डक्रियारागः सग्रहन्यासपाडवः ।

धवर्जितः पूर्वयामे गेयो धैवतयुक् क्वचित् ॥

भावार्थः—गुण्ड-क्रिया राग में षड्ज-ग्रह, न्यास है, धैवत वर्जित है इसे प्रथम प्रहर में गाते हैं । कुछ लोग धैवत् वर्जित नहीं करते हैं ।

(यह मध्यम रागों में से चार ‘पाडव राग हुये ।)

मध्यमादि मर्ग्रहांशो मन्यासो रिधवर्जितः ।

औडवः पश्चिमे यामे दिनस्य परिगीयते ॥

भावार्थः—मध्यमादि राग में मध्यम ग्रह, अन्श, न्यास है। इसमें री, ध वर्जित होने से यह औडव है। इसे दिवस के अन्तिम प्रहर में गाते हैं।

भूपालीरागः सन्यासः सांशः सग्रहएवच ।

मनिलोपादौडवः स्यात् प्रातः कालेच गीयते ॥

भावार्थः—भूपाली में षड्ज अन्श, ग्रह, न्यास है। इस राग का समय प्रातः काल है।

रिग्रहो रेवगुप्तिः स्याद्रिन्यासो मनिवर्जितः ।

औडवश्चरमे यामे दिवसस्य च गीयते ॥

भावार्थः—रेवगुप्ति राग में री स्वर ग्रह तथा न्यास है। इसमें म, नि वर्जित है। इस राग को दिवस के अन्तिम प्रहर में गाते हैं। यह औडव है।

(ये “मध्यम” रागों में से तीन औडव प्रकार हुये)

अथाधमानां रागाणां केषांचिल्लक्ष्म कथ्यते ।

सावेरीरागो धन्यासो धांशो धग्रह एवच ॥

औडवो गनिलोपेन प्रगे गेयो विचक्षणैः ॥

भावार्थः—अब कुछ अधम रागों के लक्षण कहता हूं। ‘सावेरी’ राग औडव है। इसमें ग, नि वर्जित करते हैं। धैवत् अन्श, ग्रह, तथा न्यास है। इसे पंडित प्रातः काल में गाते हैं।

घंटारवो धैवतांशौ धग्रहन्यास एवच ।

गलोपात् षाडवः प्रोक्तः सर्वकाले प्रगीयते ॥

भावार्थः—घण्टारव राग में धैवत अन्श, ग्रह, न्यास है। इसमें गांधार वर्जित है। इसलिये यह राग षाडव है। यह सार्वकालिक राग है।

रागो नागध्वनिः पूर्णः षड्जांशः सग्रहोऽपिच ।

षड्जन्यासो गीयतेऽसौ सर्वदा गीतकोविदैः ॥

भावार्थः—रागध्वनि राग सम्पूर्ण है । इसमें पड्ज अन्श, ग्रह, न्यास है । इसे गायक जब चाहें तब गाते हैं ।

सन्यासः सग्रहश्चैव सांशः संपूर्ण एवच ।

सोमरागः सदा गेयो मन्द्रमध्यमभूषितः ॥

भावार्थः—मन्द्रमध्यमभूषित राग (सोम राग) सम्पूर्ण है । इसमें पड्ज अन्श, ग्रह, न्यास है । यह राग सार्वकालिक है ।

पंचमांशग्रहन्यास आंदोलीराग ईरितः ।

निगलोपादौडवोऽयं सर्वकाले प्रगीयते ॥

भावार्थः—आन्दोली राग (आन्धाली राग) में ग, नि यह स्वर वर्जित हैं तथा यह औडव है । इसमें पंचम ग्रह, अन्श, न्यास है । यह सार्वकालिक है ।

शंकराभरणो रागः संपूर्णः सांशकः स्मृतः ।

पड्जन्यासग्रहः सोऽयं सामंतच्छायमाश्रितः ॥

भावार्थः—शंकराभरण राग सम्पूर्ण है । इसमें पड्ज अन्श, ग्रह, न्यास है । इसमें सामंत की छाया दिखाई देती है ।

भिन्नपड्जाख्यरागोऽयं सग्रहः परिकीर्तितः ।

पड्जन्यासः पाडवोऽयं मलोपागद्दीयते सदा ॥

एवंप्रकारंणोन्नेया रागाः शेषा विचक्षणैः ।

अतिसंकीर्णभावेन नास्माभिर्लक्षिताः क्वचित् ॥

भावार्थः—भिन्न पड्ज राग में पड्ज स्वर ग्रह, न्यास है । इसमें मध्यम को वर्जित कर के गाते हैं । यह राग सार्वकालिक है । इसी प्रकार बाकी के राग समझने चाहिये । वे बहुत संकीर्ण हैं, इसलिये मैंने उन्हें यहाँ नहीं कहा है ।

(इस प्रकार ये अद्यम राग हुये ।)

गानोपयोगिनां त्वन्तत्प्रबंधानां तु लक्षणम् ।
रत्नाकरे शाङ्गदेवसूरिणा कथितं स्फुटम् ॥
गान्धर्वमखिलंचापि तत्रैव स्पष्टमीरितम् ।
तत एवायगतव्यं तस्मान्नकथितं मया ॥

भावार्थः— गानोपयोगी ग्रन्थों के लक्षण रत्नाकर में शाङ्गदेव
‘डित ने स्पष्ट दिये हैं । गान्धर्व-गीत प्रपञ्च उसमें सविस्तार
कहा है । यह विषय पाठकों को वहाँ मिल जायेगा, इसलिये उसे
मैंने यहाँ नहीं दिया है ।

शाकेनेत्रधराधराब्धिधरणीगणयेथसाधारणं ।
वर्षे श्रावणनामि निर्मलतरं श्ले दशम्यां तिथौ ॥
रामामात्यविनिर्मिते स्वरतते संगीतरत्नाकरात् ।
सोऽयं मेलकलानिधिर्मतिमतामाकल्पमाल्यताम् ॥

[टिप्पणीः—उपरोक्त श्लोकानुसार इस ग्रन्थ की तिथि
“श्रावण-शुद्ध दशमी शके १४७२ साधारण संवत्सर निश्चित
होती है ।”]

इति श्रीमदभिनवभारताचार्यवाग्गेयकारतोडरमल्लतिस्मामात्य-

नन्दनरामामात्यनिर्मिते स्वरमेलकलानिधौ

रागप्रकरणं पंचमम्

श्रीरस्तु

रामामात्य पंडित के बीस मेल तथा उनके स्वर

मेल नाम	स्वर
१ मुखारी	इसमें सब स्वर शुद्ध हैं दक्षिण में इस मेल को कनकांगी कहते हैं ।
२ मालवगौड़	सा रि म प ध शुद्ध, च्युतमध्यमगांधार, च्युत-पड्जनिषाद (हिन्दुस्तानी भैरव थाट)
३ श्रीराग	सा, पंचश्रुति रि ध, म प शुद्ध, साधारण ग, कैशिक नि, (हिन्दुस्तानी काफी थाट)
४ सारंगनाट	सा म प शुद्ध, रि ध पंचश्रुतिक, च्युतमध्यम-गांधार च्युतपड्जनिषाद (हिन्दुस्तानी विलावल थाट)
५ हिंदोल	सब स्वर श्री मेल के परन्तु धैवत शुद्ध (यानी हिन्दुस्तानी कोमलध) (आसावरी थाट)
६ शुद्धरामक्रिया	स रि प ध शुद्ध, च्युतमध्यमगांधार, च्युत-पंचममध्यम, च्युतपड्जनिषाद (हिन्दुस्तानी पूर्वी थाट)
७ देशात्मी	स म प शुद्ध, षट्श्रुति रि पंचश्रुति ध, च्युत-मध्यमगांधार, च्युतपड्जनिषाद ।
८ कंठगौल	देशात्मी के ही बहुत से स्वर हैं केवल कैशिक निषाद ।
९ शुद्धनाट	स म प शुद्ध, षट्श्रुति रि ध, च्युतमध्यमगांधार, च्युतपड्जनिषाद ।
१० आहरी	स म प ध शुद्ध, पंचश्रुति रि, साधारण ग, च्युतपड्जनिषाद ।
११ नादरामक्री	स रि म प ध शुद्ध, साधारणगांधार, च्युत-पड्जनिषाद ।
१२ शुद्धवराली	स रि ग प ध शुद्ध, च्युतपड्जनिषाद, च्युतपंच-ममध्यम ।

मल नाम	स्वर
१३ रीतिगौल	स रि ग म प शुद्ध, पंचश्रुति ध, कैशिक निषाद
१४ वसंतभैरवी	स रि म प ध शुद्ध, च्युतमध्यमगांधार, कैशिक निषाद ।
१५ केदारगौल	स म प शुद्ध, पंचश्रुति रि ध, च्युतमध्यमगांधार, च्युतपङ्कजनिषाद (कैशिक नी असावा)
१६ द्विजुजी	स रि म प ध शुद्ध, अंतरगांधार, काकली निषाद
१७ सामवराली	स रि ग म प ध शुद्ध, काकली निषाद
१८ रेवगुप्ति	स रि म प ध नि शुद्ध, अन्तरगांधार
१९ सामंत	स म प शुद्ध, रि ध पट्श्रुतिक, अन्तरगांधार, काकली निषाद
२० कांभोजी	स म प शुद्ध, अन्तरगांधार, काकली निषाद रि ध पंचश्रुतिक

कलानिधि के मेल तथा उसके जन्यराग (लक्ष्यसंगीत से)

१ मुखारी

१ मुखारी

२ मालवगौड

१ मालवगौड २ ललिता ३ बौली ४ सौराष्ट्र

५ गुर्जरी ६ मेचबौली ७ फलमंजरी = गुंडकी

८ सिंधुगामकी १० छायागौल ११ कुरंजी १२ कंन-

डवंगाल १३ मंगलकैशिक १४ मलहरी

३ श्रीराग

१ श्रीराग २ भैरवी ३ गौली ४ धन्यासी ५

शुद्धभैरवी ६ वेलावली ७ मालवश्री = शंकराभरण

८ आंधाली १० देवगांधार ११ मध्यमादि

४ सारंगनाट

१ सारंगनाट २ भावेरी ३ मालवभैरवी ४ नट-

नागायणी ५ शुद्धवसंत ६ पूर्वगौड ७ कुन्तलवराली

= भिन्नपट्ट ८ नागायणी

५ हिंदोल

१ हिंदोल, २ मार्गहिंदोल, ३ भूपाल

६ शुद्धरामक्रिया

१ शुद्धरामक्रिया, २ बौली, ३ आर्द्रदेशी ४ दीपक

७ देशाज्ञी

१ देशाज्ञी

= कंनडगौल

१ कंनडगौल, २ घंटागव, ३ शुद्धवंगाल, ४ छाया-

नाट, ५ तुल्यक नोडी, ६ नागध्वनि, ७ देवक्रिया

८ शुद्धनाट

१ शुद्धनाट

१० अहीरी

१ अहीरी

११ नादरामक्रिया

१ नादरामक्रिया

१२ शुद्धवराली

१ शुद्धवराली

१३ गौल

१ रीतिगौल

१४ वसंतभैरवी

१ वसंतभैरवी, २ सोम

१५ केदार गौल

१ केदारगौड २ नारायण गौड

१६ हेजूजी	१ हेजूजी
१७ सामवराली	१ सामवराली
१८ रेवगुनि	१ रेवगुनि
१९ सामंत	१ सामंत
२० कांभोजी	१ कांभोजी



प्रस्तावना.

यह क्रमिक पुस्तक मालिका की चौथी पुस्तक पाठकों के सम्मुख उपस्थित है। इस पुस्तक के शुरु में शास्त्रीय विवेचन दिया है। उस विवेचन में मुख्य बारह स्वरों के ग्रंथाधार कैसे और कौन से हैं स्पष्ट कर दिखलाया है। आलाप का तथा तानों का प्रांथिक ज्ञान और प्रचलित प्रकार विस्तृत रूप से बतलाये गये हैं। प्रचलित गायन के ध्रुवपद ख्यालादि प्रबंधों का भी वर्णन किया है। इसके बाद दक्षिण के स्वर तथा तालपद्धति, हिंदुस्तानी संगीत पद्धति के विद्यार्थियों के लिये आवश्यक और पठनयोग्य ग्रन्थ, इत्यादि बातें संक्षेप में लिखी गई हैं। अन्त में प्रसिद्ध २० राग ^{संग} उनके ग्रंथाधार, वर्णन, तथा सरगम, लक्षणगीत, ख्याल, ध्रुवपद इत्यादि लगभग ४०० चीजें दी हैं। इस पुस्तक मालिकामें अधिक तर उन्हीं चीजों का समावेश किया है जो रामपूर, जयपूर, ग्वालियर इत्यादि स्थानों के अखिल उत्तर भारत प्रसिद्ध घरानों के गायक और उनकी शिष्य परंपरा आज तक गाती है। इससे उन चीजों के शुद्धता तथा उच्चता के विषय में कोई संदेह नहीं रहेगा।

गणित के विद्यार्थिको केवल शास्त्रीयज्ञान चाहे जितना दिया जाय, पर अभ्यास के लिये भिन्न भिन्न प्रकार के उदाहरण देना आवश्यक होता है। ऐसे उदाहरण दियेबिना उनका ज्ञान दृढ़ और पूर्ण नहीं होता। इसी कारण यहाँ हर एक राग के अनेक ढंग की चीजें दी हैं। इन चीजों को उत्तम प्रकार से गाने पर विद्यार्थि का रागज्ञान दृढ़ और पूर्ण होगा। यह सत्य है कि चीजों की संख्या बढ़नेसे पुस्तक का आकार मर्यादासे बढ़ गया; परन्तु हमें प्रबल आशा है कि पाठक हमें क्षमा करेंगे। चीजें अधिक देने में और यह एक लाभ दिखाई दिया कि हर साल नई नई चीजें सिखाने के लिये अवकाश मिलने से गुरु शिष्य सिखाने सीखने में तत्पर होते हैं।

इन पुस्तकों में दी हुई चीजों की भाषा प्राचीन ग्रंथों और विद्वानों की सहायता से जहाँ तक हो सका ठीक की गई है, तथापि इस समय भी कहीं कहीं भाषा दोष रह गये होंगे। परन्तु इस डर से की चीजें कुल निर्दोष होने तक न छपाने से संगीताभिलाषी पाठकों की हानि होगी, वे ज्यों की त्यों छपाई गई हैं। आगे चल कर उन के शुद्ध बोल

यदि पाठकों की ओर से अथवा उनके इष्टमित्रों की ओर से मिल जाय तो दूसरी आवृत्ति में उनका कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार होगा ।

इस मालिका में छपाने के लिये यह घरानेदार (परंपरागत) चीजें जिन संगीत विद्वानों ने मेरे मित्र पंडित विष्णुनारायण भातखंडेजी को उदार बुद्धि से सिखाई और प्रसिद्ध करने के लिये अनुमोदन भी दिया उनके नाम नीचे दिये गये हैं:—

(१) हिज हायनेस दी नवाब साहब हामिद अलीखाँ बहादुर रामपूर के अधिपती और प्रसिद्ध मियाँ तानसेन के परंपरा के अनुयायी ।

(२) साहब ज़ादा सादतअलीखाँ साहेब बहादुर, तानसेन परंपरा के अनुयायी, रामपूर ।

(३) खाँसाहब महम्मदअली व० बासितखाँ मियाँ तानसेन के वंशज और अनुयायी रामपूर ।

(४) खाँ साहब महम्मदवज़ीर खाँ व० अमल खाँ मियाँ तानसेन के वंशज और नवाब साहब के पूज्य गुरु, रामपूर ।

(५) खाँ साहब महम्मदअली खाँ, कोठीवाल, जयपूर, प्रसिद्ध मनरङ्ग घराने के वंशज और परंपरानुयायी ।

(६) खाँ साहब आशिकअली खाँ, जयपूर, महम्मदअली खाँ के पुत्र ।

(७) खाँ साहब अहमदअली खाँ, जयपूर, महम्मदअली खाँ के द्वितीय पुत्र ।

(८) खाँ साहब हैदर खाँ, प्रसिद्ध बहराम खाँ के शिष्य, धार ।

(९) खाँ साहब फैयाजखाँ, बडोदा, रंगीले घराने के वंशज ।

(१०) खाँ साहब अमीर खाँ गुलाबसागर, बडोदा जलतरङ्ग नवाज ।

(११) श्री रावजीबुवा बेलबागकर, बम्बई, अबदुल्लाखाँ के परंपरा के अनुयायी, ध्रुवपदी ।

(१२) श्री एकनाथ पंडित, ग्वालियर, नथनपीरबक्ष परंपरानुयायी और प्रसिद्ध ख्यालिया शङ्कर पंडित के बन्धु ।

(१३) श्री विष्णुबुवा वामन देशपांडे, ग्वालियर, प्रसिद्ध ध्रुवपदी वामन बुवा के पुत्र ।

(१४) श्री राजामैया पूछवाले, ग्वालियर, माधव संगीत विद्यालय के अध्यापक और सुप्रसिद्ध शङ्कर पंडित के शिष्य ।

(१५) श्री कृष्णराव गोपाल दाते, ग्वालियर, माधव संगीत विद्यालय के अध्यापक ।

(१६) श्री कृष्णबुवा गोखले, मिरज अमीनखॉ परम्परा के अनुयायी ।

(१७) श्री गणपतिबुवा भिलवडीकर सातारा । ग्वालियर के वासुदेवराव जोशी के शिष्य कृष्ण शास्त्री शुक्ल उज्जैन वाले, इनके शिष्य ।

इन में से जयपुर के विद्वानों ने तो पंडित भातखंडेजी को अपनी सैकड़ों चीजें जवानी सिखाई और उनके फ़ोनोग्राफ़ में भी उतारने दी, उन चीजों के रेकार्ड्स अभी कुछ दिनों तक उत्तम स्थिति में थे । ग्वालियर के संगीत विद्यालय के अध्यापकों ने अपने चीजों का स्वयम् नोटेशन करके इस पुस्तकमें छपाने के लिये सम्मति दी । इन दोनों स्थानों के विद्वानों के उपकार अवर्णनीय हैं ।

आजकल समाज में ख्याल गायन लोकप्रिय है । इस पुस्तक में इसलिये ख्याल अधिक दिये हैं । उत्तम ख्याल गाने के लिये कुशलता की जरूरत है । उसमें दो प्रकार होते हैं । गायकी और नायकी, गुरु परम्परा की मुख्य सीधी और शुद्ध तालीम को 'नायकी' कहते हैं । नायकी के अलंकारों से सजाकर अधिक सुशोभित किये हुए स्वरूप को 'गायकी' कहते हैं । अच्छे गुणी लोगों को बार बार सुनकर गायकी साध्य होती है, परंतु नायकी उत्तम गुरु से सीखकर ही प्राप्त करना पड़ती है । इस मालिका में मुख्यतः नायकी याने तालीम दी है ।

बड़े बड़े संगीत विद्वान् अपने गायकी में अलंकारों की योजना निम्नलिखित प्रकारों से करते हैं ।

(१) गीतका पहला भाग यदि चार मात्रा का हो तो वे उसके अक्षर जल्द कहकर दो ही मात्रा में समाप्त करते हैं । और पहली सम जोरदार रखते हैं ।

(२) चार मात्रा के भाग के अन्तिम दो अक्षर एक अथवा आधी मात्रा में कहते हैं । इससे अगले भाग को शोभा प्राप्त होती है ।

(३) जहाँ निसा, गम, मप, पेसा प्रकार है वहाँ वे

नि ग म

सा, म, प, पेसा उच्चार भी कभी कभी करते हैं, और कभी उस के विरुद्ध प्रकार करते हैं ।

(४) जहां (स), (म), (प), है वहाँ सा (सा), म (म), प (प), कहते हैं । और कभी कभी तो, रे रे सा नि सा, ध ध प म प, प प म ग म, ऐसा भी कहते हैं ।

(५) गीत भाग में हरएक मात्रा पर एक एक अक्षर अलग न कह कर दो दो तीन तीन अक्षर एकदम कहते हैं और अन्तिम स्वर दीर्घ करते हैं ।

(६) स्थायी अथवा अन्तरा के अन्तिम एक दो भागों के अक्षर जल्द कहकर बचे हुए मात्राओं में उस राग की एक सुन्दर तान लेते हैं और फिर स्थायी के मुख से उसका संयोग करते हैं ।

(७) अकारान्त अक्षर एकारान्त और उकारान्त अक्षर ओकारान्त कहते हैं ।

ऐसे कुछ अलंकारिक प्रकार ख्याल गायक करते हैं । इससे नायकी के स्वरूप को अधिक विचित्रता प्राप्त होती है । शिक्षक को चाहिये कि नायकी (तालीम) उत्तम रीति से तैयार होने पर और विद्यार्थी के स्वर-स्थान उत्तम रीति से स्थिर होने पर यह प्रकार स्वयम् करके दिखलायें और विद्यार्थियों से तैयार करवा लें ।

हमें बहुत हर्ष है कि यह मालिका दिन बदिन अधिक लोकप्रिय हो रही है । परमेश्वर से हमारी नम्र प्रार्थना है कि यह मालिका इसी प्रकार निर्विघ्न रूप में समाप्त हो ।

इस पुस्तक में दिये हुए चिन्हों का स्पष्टीकरण.

रि, ग, ध, नि, इन स्वरों के नीचे-पेसी रेखा देने पर वे कोमल समझना चाहिये। रेखा के अभाव में उन्हें तीव्र मानना चाहिये।

म, इस प्रकार लिखे हुए म को शुद्ध अथवा कोमल समझना चाहिये।

म, इस प्रकार लिखे हुए म को तीव्र समझना चाहिये।

जिन स्वरों के नीचे बिंदु है वे मंद्रस्थान के, और जिनके सिर पर बिंदु है वे तारस्थान के हैं। बाकी स्वर मध्य सप्तक के हैं।

— इस चिन्ह में लिखे हुए स्वर एक मात्रा के काल में गाना चाहिये।

— यह चिन्ह दिखाता है कि मींड कौन से स्वर से कौन से स्वर तक है।

— स्वर के आगे यह चिन्ह हो तो अगला स्वर एक मात्रा दीर्घ करना चाहिये अथवा उतनी विश्रांति समझना चाहिये।

5 गीत के शब्दों में जहाँ अवग्रह चिन्ह होगा वहाँ पिछले अक्षर का अन्तिम स्वर एक मात्रा दीर्घ करना।

() जहाँ स्वर को इस प्रकार कंस में लिखा होगा वहाँ उस के आगे का स्वर, वह स्वर, पिछला स्वर, और पुनः वह स्वर, इन चारों का एक मात्रा में उच्चार करना चाहिये।

जैसे:—(प)=धपमप, (म)=पमगम, (सा)=रेसानिसा।

कहीं कहीं स्वरों के सिर पर बाई ओर छोटे टाईप में स्वर दिये हैं। उन्हें अलंकारिक स्वर कहते हैं। नूतन विद्यार्थी यदि इन स्वरों को गा न सके तो कोई हानि नहीं होगी, परन्तु इनके उपयोग से गायन अधिक रंजक होगा।

× यह चिन्ह ताल की सम दिखाता है। सम को पहली ताली मान कर आगे चलना चाहिये।

o यह चिन्ह ताल का खाली स्थान दिखाता है।



श्री
चौथी पुस्तक.



मंगलाचरण.



शारदामिन्दिरां चापि वन्दे ज्ञानधनाप्तये ।
भवंतु तत्प्रसादेन सकला मे मनोरथाः ॥



शास्त्रीय माहिती.



विषय प्रवेश.

इस माला के तीसरी पुस्तक में पहले बारह स्वरों से ७२ मेलों की किस प्रकार उत्पत्ति होती है यह बतलाया गया है, उसके बाद हर एक मेल से उत्पन्न होनेवाली शक्य राग संख्या बतलाई गई है। फिर पूर्व राग, उत्तर राग और संधि प्रकाश राग की व्याख्याएँ गायकों के गुणावगुण, तथा ग्रहन्यासादिक पारिभाषिक शब्दों की योग्यायोग्यता पर विचार किया गया है। उसके बाद दूसरी क्रमिक पुस्तक में दिये हुए दस ठाठों से उत्पन्न होनेवाले लोकप्रिय पंद्रह जन्य रागों की अनेक प्रसिद्ध और घरानेदार चीजें दी हैं। यह सब पाठकों के ध्यान में होगा।

संगीत विद्यार्थियों को कौन कौन से विषयों का ज्ञान देना चाहिये, इस सम्बन्ध में अभिनवरागमंजरी नाम के हिन्दुस्थानी संगीत पद्धति पर लिखे हुए ग्रंथ में उद्देश इस शीर्षक के नीचे दिया हुआ वस्तु संग्रह ध्यान में रखने योग्य है। उसमें इस प्रकार लिखा है:—

संगीतं ध्वनिसंभूतिः श्रुतयस्तद्व्यवस्थितिः ।

शुद्धाः स्वरा विकाराद्याः स्वरस्थानानि तत्त्वतः ॥

संवाद्यादिस्वराणां च लक्षणानि सविस्तरम् ।

वर्णालंकारगमका यथोक्ताः पूर्वस्मरिभिः ॥

ग्रामस्य लक्षणं तद्वन्मूर्छनालक्षणं तथा ।
 रागमेलाश्च सर्वेऽपि संपूर्णत्वादिभेदतः ॥
 तत्तन्मेलस्थरागाणाम् भेदकारणलक्षणम् ।
 आलापलक्षणं गातुर्गुणदोषानुदर्शनम् ॥
 ताना उद्ग्राहभूताश्च स्वयं रागांगदर्शकाः ।
 एतावन्ति च वस्तूनि ग्रन्थेऽस्मिन् कथितानि हि ॥

अभिनवरागमंजरी अपने आधार ग्रन्थों में से एक है। इसलिये इस मालिका में बहुत से स्थानों पर उसी के अनुसार चलने का विचार है। उपर्युक्त श्लोक में दिये हुए वस्तुसंग्रह में से बहुत सी बातें पहले तीन पुस्तकों में आ चुकी हैं। अब इस पुस्तक में श्रुतिस्वर स्थान, आलाप, तान इत्यादि विषयों का आवश्यक शास्त्रीय ज्ञान पहले देने का विचार है। उसके बाद दस ठाटों में से उत्पन्न होनेवाले बीस (२०) जन्यरागों की तीन चार सौ अच्छी प्रसिद्ध चीजें देने की योजना की है। यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि यह चार क्रमिक पुस्तक उत्तम प्रकार से तैयार हो जाँय तो विद्यार्थियों को अति प्रसिद्ध और लोकप्रिय राग अधिकतर मालूम हो जायेंगे। इन चार पुस्तकों में दिये हुए ४५ रागों में और भी बहुत से ख्याल ध्रुवपद दिये जा सकते हैं। आगे किसी दूसरे स्थान पर उन्हें बतलाने का सम्पादक का उद्देश भी है। पर यदि इन पुस्तकों में दी हुई हजार चीजें विद्यार्थी उत्तम प्रकार से तैयार करे, तो भी उसका बहुत सा कार्यभाग सिद्ध हो जायगा।

अभिनवरागमंजरी कर्ता ने अपने ग्रन्थ में लगभग सवासौ रागों का बहुत सुव्यवस्थित परन्तु संक्षिप्त विवरण दिया है। यद्यपि यह सब राग इस मालिका में सम्मिलित न हो सकेंगे, तो भी हम को प्रबल आशा है कि छः क्रमिक पुस्तकों में कम से कम सौ राग और उनकी हजारपंद्रहसौ प्रसिद्ध चीजें बतलाई जाएँगी। यदि गत सौ वर्ष के संगीत का इतिहास हम देखने लगे तो एक विशेष बात यह दिखाई देगी कि उस समय के प्रसिद्ध और उत्तमोत्तम गायकों के हमेशा गाने के राग वेही थे, जो इन चार क्रमिक पुस्तकों में बतलाये गये हैं। हम हमेशा सुनते हैं कि गत शताब्दि के उत्तरार्ध में हिंदुस्थानी संगीत के उत्कर्ष की परमावधि हुई। उस समय रामपुर, जयपुर और ग्वालियर हिन्दु-

स्थानी संगीत के मुख्य केन्द्र बन गये थे। ऐसा कहा जाता है कि इन नगरों के बड़े बड़े गायकवादकों ने जो अपूर्व कौशल्य दिखलाया वह इस मालिका में आनेवाले सौ रागों में ही दिखलाया। ग्वालियर के प्रसिद्ध ख्याल गायक नत्थूखाँ, हस्सूखाँ, महम्मदखाँ इत्यादि के बारे में सुनते हैं कि उनके हमेशा गाने के राग तो बहुशः इस मालिका के पहले चार पुस्तकों में आनेवाले राग रहते थे। ग्वालियर मराठी रियासत होने के कारण वहाँ महाराष्ट्रियों की बस्ती बहुत काफी है। इन लोगों ने, मुख्यतः ब्राह्मणों ने वहाँ के प्रसिद्ध ख्यालगायकों के ज्ञान से अच्छा लाभ उठाया। कोई ऐसा भी कहते हैं कि इन गायकों के शिष्यवर्ग में ब्राह्मणों की ही संख्या अधिक थी। खैर कुछ भी हो इतना तो कह सकते हैं कि आज ग्वालियर में हद्दू हस्सूखाँ इत्यादि बड़े गायकों का थोड़ा बहुत गायन बाकी बचा है वह वहाँ के महाराष्ट्रियों में ही है। महाराष्ट्र में जो ख्याल गायन आजकल दिखाई देता है उसमें से अधिकतर ग्वालियर के गायकों से इधर आया हुआ है।

श्रुति और स्वर स्थान.

अपने देश के प्राचीन संगीत विद्वान् संगीत शास्त्र पर ग्रन्थ लिखते समय पहले श्रुति और स्वर का विस्तृत वर्णन करते थे। और फिर मेल और राग का विचार करते थे। उन के सब उपलब्ध ग्रन्थों में यही क्रम दिखाई देता है। एक दृष्टि से संगीत पर शास्त्रग्रन्थ लिखने की उनकी यह रीति ठीक ही थी। अब यहां एक प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि क्या वे लोग प्रत्यक्ष व्यवहार में एक दूसरे से ऊँचा इस क्रम से सब २२ नाद पहले कायम करते थे और फिर उनमें से नियमित नादों को स्वर मानते थे? कोई यह कहेगा कि पहले, मुख्य २ स्वरांतर निश्चित हुए होंगे परन्तु इस स्थान पर हमें इस प्रश्न से कोई सम्बन्ध नहीं, हमें केवल यही देखना है कि हमारे प्राचीन ग्रन्थकारों के श्रुति स्वर स्थान कौन से थे और आज कल बेही व्यवहार में कौन से हैं। मुख्यतः इस ग्रन्थ मालिका में हमें प्रचलित श्रुति स्वरस्थानों का विचार करना अधिक हितकारक होगा। जो थोड़ा बहुत विचार हम प्राचीन ग्रन्थकारों के स्थानों का यहाँ करेंगे, वह केवल ऐतिहासिक दृष्टि से करेंगे। हमारा विषय हिन्दुस्थानी संगीत है इसलिये हमें उत्तर के ग्रन्थों की ओर अधिक

लक्ष देना पड़गा । इन श्रुतिस्वर स्थानों के विषय में हम जिन पंडितों के मतों का विचार करने वाले हैं उनके नाम इस प्रकार हैं:—भरत, शार्ङ्गदेव, लोचन, अहोबल, हृदयनारायणदेव, और श्रीनिवास । इन पंडितों के ग्रन्थों के नाम क्रमानुसार इस प्रकार हैं:—नाट्यशास्त्र, संगीत रत्नाकर, रागतरंगिणी, संगीतपारिजात, हृदयप्रकाश, और रागतत्त्वविबोध । उसी प्रकार लक्ष्यसंगीत और अभिनवरागमंजरी नाम के हिन्दुस्थानी संगीत पद्धति पर खास लिखे हुए प्रसिद्ध ग्रन्थों का भी हम विचार करेंगे । यह सर्व विश्रुत है कि भरत और शार्ङ्गदेव बहुत प्राचीन ग्रन्थकार हैं । लोचन, अहोबल, हृदय और श्रीनिवास यह मध्य कालीन ग्रन्थकार माने जाते हैं । लक्ष्यसंगीत और अभिनवरागमंजरी यह दो ग्रन्थ वर्तमान संगीत पद्धति पर लिखे गये हैं । भरत का काल पांचवें शताब्दि के पूर्व माना जाता है । यह सर्व मान्य है कि शार्ङ्गदेव तेरहवें शताब्दि में हुआ । लोचन, अहोबल, हृदय और श्रीनिवास इनका समय क्रमानुसार पन्द्रह, सोलह, सत्तरह और अठारहवीं शताब्दि माना जाता है ।

अपने प्राचीन ग्रन्थकार श्रुति की व्याख्या बहुत सरल और सुबोध रीति से करते हैं । “श्रूयते इति श्रुतिः ।” उनके मत के अनुसार जो संगीतोपयोगी नाद कानों से स्पष्ट सुना जा सकता है, याने पहचाना जा सकता है, उसे श्रुति की कक्षा में रख सकते हैं । यही कल्पना अभिनवरागमंजरी कर्ता ने अपने शब्दों में अधिक स्पष्ट की है; वह कहता है:—

नित्यं गीतोपयोगित्वमभिज्ञेयत्वमप्युत ।

लक्ष्ये प्रोक्तं सुपर्याप्तं सङ्गीतश्रुतिलक्षणम् ॥

अब आगे बढ़ने पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि ऐसे नाद अथवा श्रुति ग्रन्थकार कितने और कैसे मानते थे ? हमारे सुभाग्य से श्रुतियों की संख्या के विषयमें नये और पुराने ग्रन्थकारों में एकमत दिखाई देता है । एक षड्ज से उसके ऊपर के षड्ज तक—एक सप्तक में वे ऐसे संगीतोपयोगी नाद २२ (बाईस) मानते थे । और उन पर फिर अपने शुद्ध और विकृत स्वरों की स्थापना करते थे । इतना ही नहीं बल्कि और एक महत्व के विषय में भी यह शास्त्रकार एकमत थे । इन बाईस (२२) श्रुतियों को सात शुद्ध स्वरों में बांटते समय वे सब

एक परंपरागत नियम का आदर से स्वीकार करते थे। वह नियम इस प्रकार है:—

चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्जमध्यमपंचमाः ।

द्वे निषादगांधारौ त्रिस्त्री ऋषभधैवतौ ॥

अर्थ:—षड्ज, मध्यम और पंचम इन स्वरों को चार चार श्रुति, गांधार और निषाद इन स्वरों को दो दो श्रुति तथा ऋषभ और धैवत को तीन तीन श्रुति है।

यह प्राचीन नियम आजकल भी अपने संगीत विद्वान् मान्य करते हैं। परन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि अपने शुद्ध और विकृत स्वर प्राचीन पंडितों के समान हैं। आजकल के अपने शुद्ध और विकृत स्वर इन पुराने ग्रन्थकारों के स्वरों से कुछ भिन्न हुए हैं इसका कारण सहज में समझ सकते हैं। प्राचीन ग्रन्थकार अपना हर एक शुद्ध स्वर उस स्वर के शास्त्रोक्त अन्तिम श्रुति पर रखते थे। अर्थात् उनके सा, री, ग, म, प, ध, नि यह शुद्ध स्वर ४, ७, ९, १३, १७, २०, २२ इन श्रुतियों पर रखे जाते थे। इस विषय में एक दो ग्रन्थमत देखिए:—

वेदाचलांकश्रुतिषु त्रयोदश्यां श्रुतौ तथा ।

सप्तदश्यां च विंश्यां च द्वाविंश्यां च श्रुतौ क्रमात् ॥

रागमंजर्याम्

अपने आधुनिक संगीत विद्वान् शुद्ध स्वर इस नियम के अनुसार नहीं रखते। वे उलटे क्रम से अपना हर एक शुद्ध स्वर उसके शास्त्रोक्त पहले श्रुति पर रखते हैं। अभिनवरागमंजरीकार कहते हैं:—

वेदाचलांकश्रुतिषु त्रयोदश्यां श्रुतौ तथा ।

सप्तदश्यां च विंश्यां च द्वाविंश्यां च श्रुतौ क्रमात् ॥

पद्मजादीनां स्थितिः प्रोक्ता शुद्धाख्या भरतादिभिः ।

हिन्दुस्थानीयसंगीते श्रुतिक्रमविपर्यतः ।

एते शुद्धस्वराः सप्त स्वस्वाद्यश्रुतिसंस्थिताः ॥

यह विवरण निम्नलिखित दो तुलनात्मक कोष्ठकों से स्पष्ट होगा। श्रुति स्वरों के नाम हम प्राचीन ही रखेंगे:—

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार

श्रुतिस्वर व्यवस्था

१. तीव्रा
२. कुमुद्वती
३. मन्दा
४. छन्दोवती— षड्ज (शुद्ध)
५. दयावती
६. रंजनी
७. रक्तिका— ऋषभ (,,)
८. रौद्री
९. क्रोधी— गांधार (,,)
१०. वज्रिका
११. प्रसारिणी
१२. प्रीति
१३. मार्जनी— मध्यम (,,)
१४. क्षिति
१५. रक्ता
१६. संदीपिनी
१७. आलापिनी—पंचम (,,)
१८. मदन्ती
१९. रोहिणी
२०. रम्या— धैवत (,,)
२१. उग्रा
२२. क्षोभिणी—निषाद (,,)
१. तीव्रा
२. कुमुद्वती
३. मन्दा
४. छन्दोवती—षड्ज (,,)

हिंदुस्थानी ग्रंथकारों की

आधुनिक श्रुतिस्वर व्यवस्था

१. तीव्रा— षड्ज (शुद्ध)
२. कुमुद्वती
३. मन्दा
४. छन्दोवती
५. दयावती— ऋषभ (,,)
६. रंजनी
७. रक्तिका
८. रौद्री— गांधार (,,)
९. क्रोधी
१०. वज्रिका— मध्यम (,,)
११. प्रसारिणी
१२. प्रीति
१३. मार्जनी
१४. क्षिति— पंचम (,,)
१५. रक्ता
१६. संदीपिनी
१७. आलापिनी
१८. मदन्ती— धैवत (,,)
१९. रोहिणी
२०. रम्या
२१. उग्रा— निषाद (,,)
२२. क्षोभिणी
१. तीव्रा— षड्ज (,,)
२. कुमुद्वती
३. मन्दा
४. छन्दोवती

यहां तक प्राचीन ग्रन्थकारों के श्रुतिस्वरों का शाब्दिक वर्णन हुआ । केवल इससे विद्यार्थियों का समाधान नहीं हो सकता । विद्यार्थियों को

उन श्रुतिस्वरों का ध्वनिदृष्टि से स्पर्शिकरण अधिक लाभदायक मालूम होगा। इस लिये हम अब इस दृष्टि से श्रुति स्वरों का विचार करेंगे। ध्वनि दृष्टि से विचार करने के लिये पहले प्राचीन ग्रंथकारों के दो वर्ग करना ठीक होगा। पहले वर्ग में हम बहुत प्राचीन (भरत, शार्ङ्गदेव तथा उनके मत के अनुयायी पंडित) ग्रन्थकार रखेंगे। और दूसरे वर्ग में मध्य कालीन ग्रन्थकार अर्थात् लोचन, अहोबल, हृदय, श्रीनिवास इत्यादि पंडित रखेंगे। भरत और शार्ङ्गदेव यह पंडित श्रुति को एक नियतप्रमाणस्वीकार कर अपनी २२ (बाईस) श्रुति समान मानते थे। उनके ग्रन्थों से यही मालूम होता है इसलिये इस मालिका में यदि हम उनके श्रुतिस्वर स्थानों का विवरण न दें तो कोई हर्ज न होगा। इसके कारण दो हैं, पहला उन ग्रन्थकारों के वे स्थान अपने आधुनिक संगीत के लिये उपयोगी नहीं हैं। दूसरा सन् १९१६ में बड़ोदा में एकत्रित हुई अखिल भारतीय संगीत परिषद् के सामने एक दो पंडितों ने उन स्थानों का स्पर्शिकरण निबन्धरूप से किया था। ऊपर बतलाये हुए दूसरे वर्ग के-लोचन अहोबलादि, पंडितों के श्रुतिस्वरस्थान हमारे उपयोगी हैं। इस लिये उनका विचार करना अधिक उपयुक्त होगा। उन पंडितों ने अपने स्वरस्थान बहुत ही स्पष्ट रीति से बतलाये हैं। अतः उनके और अपने आधुनिक स्वरस्थानोंकी तुलना हम आसानी से कर सकते हैं। यह हम पहले ही कह चुके हैं कि लोचन अहोबलादिकों का काल १५ वें शताब्दि से १८ वें शताब्दि तक माना जाता है। यह पंडित अपनी पद्धति बारह मुख्य स्वरों की सहायता से बतलाते हैं। हम लोग भी आज कल यही करते हैं। अहोबलादिकों के स्वर स्थान देखने पर यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि वे अपनी सब श्रुतियां समान नहीं मानते थे। उनके ग्रंथों से यही अनुमान होता है कि उन्होंने परंपरागत बारह स्वरों को ज्यों कि त्यों स्वीकार किया, और फिर उन स्वरों में शास्त्रोक्त संख्या के अनुसार श्रुतियों को बांट दिया। स्वयम् उनकी पद्धति बारह स्वरों के आधार पर स्थापित हुई थी; अतः उन्हें मध्यवर्ती श्रुतियों की बहस करने की कोई आवश्यकता न रही। भावभट्ट पंडित कृत अनूपविलास के निम्नलिखित पंक्तियों से यह स्पष्ट होगा कि पिछले चार पांच शताब्दियों के ग्रन्थकार सब श्रुति समान नहीं मानते थे।

उत्तरोत्तरसंकोचस्त्वाकाशे भवति ध्रुवम् ।

समभागप्रकल्पोऽत्र न साधु मन्यते बुधैः ॥

तस्माद्भागास्तु विषमाः कल्पिता भरतादिभिः ॥

यहां ध्यान में रखना होगा कि भावभट्ट का भरत नाट्यशास्त्रकार भरत नहीं है। अस्तु। अब लोचन अहोबलादिकों के श्रुति स्वरों का विचार करें। इन चारों पंडितों की श्रुति स्वर रचना बिलकुल एकसी है; अतः यदि हम अकेले श्रीनिवास के रचना का विचार करें तो काफी होगा। श्रीनिवास का नाम अन्तिम है और उत्तर के मध्यकालीन ग्रन्थकारों का उसे उत्तम प्रतिनिधि मान सकते हैं। आधुनिक हिंदुस्थानी संगीत का प्रतिनिधित्व अभिनवरागमंजरीकार को देना ठीक होगा।

श्रुति स्वर स्थानों का ध्वनिदृष्टि से पूरा स्पष्टीकरण कर दिखलाने के लिये दो साधन प्रचलित हैं। पहिला वीणा के बजने वाले तार के भिन्न भिन्न लम्बाई से ध्वनि बतलाना। दूसरा हर एक ध्वनि के एक सेकंड में हाने-वाले तुलनात्मक आंदोलन (Vibration) बतलाना। यह सब ही मानते हैं कि प्राचीन ग्रन्थकारों को यह दूसरा साधन ज्ञात नहीं था। पहला साधन मध्यकालीन ग्रन्थकारों को अवश्य परिचित था, और उन्होंने उस साधन का उत्तम उपयोग करके दिखलाया है। भरत और शार्ङ्गदेव ने इन साधनों का उपयोग किया हुआ कहीं नहीं दिखाई देता। यह कह सकते हैं कि वे श्रुति का निश्चित नाप मानकर सब श्रुतियों को समान समझते थे, और उन पर अपने स्वरों की स्थापना करते थे; इसलिए उन्हें इन साधनों को उपयोग में लाने की आवश्यकता नहीं मालूम पड़ी, या यों भी कह सकते हैं कि इन साधनों का विचार उनके मन में नहीं आया। खैर इतना तो सत्य है कि अपने स्थानों का उन ग्रन्थकारों ने इस प्रकार वर्णन नहीं किया। विद्वानों का मत है कि अहोबलादिकों ने स्वरस्थान तार के लम्बाई से बतला कर देश पर महदुपकार किये हैं। इन पंडितों के अधिकतर स्वर स्थान अपने आधुनिक स्वर स्थानों से उत्तम प्रकार से मिलते जुलते हैं। अपने स्वर रचना को परम्परा का और शास्त्रोक्तता का इस कारण कितना भारी गौरव तथा प्रौढत्व प्राप्त हुआ है !

श्रीनिवास के रागतत्त्वविबोध में दिए हुए स्वर स्थानों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए यदि हम वीणा की तार ३६ इंच लम्बी लें और फिर पंडित के वर्णन के अनुसार उसके भाग करें, तो सहल होगा। सुशिक्षित विद्या-

थियों के लिए यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यदि तार के टुकड़े की लम्बाई मालूम हो जाय तो गणित से आंदोलन शीघ्र ही निश्चित हो सकते हैं । श्रीनिवास कहता है:—

स्वरस्य हेतुभूताया वीणायाश्चाक्षुषत्वतः ।

तत्र स्वरविबोधार्थं स्थानलक्षणमीर्यते ॥

अर्थ:—स्वरोत्पादक वीणा प्रत्यक्ष नेत्रों से देख सकते हैं । इसी लिए उस पर स्वर स्थानोंका स्पष्टीकरण दिखलाया जाता है तथापि यहां याद रखना होगा कि:—

स्वरज्ञानविहीनेभ्यो मार्गोऽयं दर्शितोमया ।

स्वरसंवादिताज्ञानं स्वरस्थापनकारणम् ॥

भावार्थ:—मैंने यह मार्ग उन लोगों के लिए स्वीकार किया है, जिनका स्वर ज्ञान अच्छा नहीं है । यह स्वर स्थापना करने में स्वर संवादिता ज्ञान यह तत्व स्वीकार किया गया है ।

षड्जपंचमभावेन षड्जे ज्ञेयाः स्वरा बुधैः ।

अर्थ:—सारे स्वर रचना का तत्व यही है कि षड्ज ग्राम के (शुद्ध स्वर सप्तक के) स्वरों में षड्ज पंचम भाव ठीक रखना है ।

सपयो रिधयोश्चैव तथैव गनिषादयोः ।

संवादः संमतो लोके मसयोः स्वरयोर्मिथः । ।

अर्थ:—सा-प, रि-ध, ग-नि, म-सां यह संवाद लोगों में प्रसिद्ध ही है । वीणा पर उत्तरांग में बांधे हुए स्वर पूर्वांग के स्वरों के क्रम से पंचम हो ।

पूर्वात्ययोश्च मेवोश्च मध्ये तारकसः स्थितः ।

तदर्धे त्वातितारस्य सस्वरस्य स्थितिर्भवेत् ॥

मध्यस्थानादिमषड्जमारम्यातारषड्जगम् ।

सूत्रं कुर्यात्तदर्धे तु स्वरम् मध्यममाचरेत् ॥

भागत्रयसमायुक्तं तत्सूत्रं कारितम् भवेत् ।

पूर्वभागद्वयादग्रे स्थापनीयोऽथ पंचमः ॥

षड्जपंचममध्ये तु गांधारस्थानमाचरेत् ।
 षड्जपंचमं सूत्रमंशत्रयसमन्वितम् ॥
 तत्रांशद्वयसंत्यागात् पूर्वभागे तु रिर्भवेत् ।
 पंचमोत्तरषड्जाख्यमध्ये धैवतमाचरेत् ॥
 पसयोर्मध्यभागे स्यात् भागत्रयसमन्विते ।
 पूर्वभागद्वयं त्यक्त्वा निषादो राजते स्वरः ॥

इति शुद्धस्वराः

अब देखिए कि ऊपर वर्णन किये हुए गीति से पंडित के शुद्ध स्वर-स्थान कहां रखे जाते हैं:—

षड्ज....तार की लम्बाई...३६ इञ्च (मानी हुई)

तार षड्ज....	”	”	१८	”
अति तार षड्ज...	”	”	... ९	”
मध्यम...	”	”	...२७	”
पंचम...	”	”	... २४	”
गांधार...	”	”	...३०	”
ऋषभ...	”	”	...३२	”
धैवत...	”	”	...२१ $\frac{१}{३}$	”
निषाद...	”	”	...२०	”

इन स्वरस्थानों में से धैवत के स्थान के सम्बन्ध में कभी कभी मतभेद दिखाई देता है। दूसरा मत माननेवाले सज्जन कहते हैं कि पंडित का “पंचमोत्तरषड्जाख्यमध्ये” विधान संदिग्ध है। “मध्ये” शब्द के दो अर्थ हो सकते हैं। (१) क्षेत्र में (२) मध्य भाग में। उनके कथनानुसार इन दोनों अर्थों से समाधान नहीं होता। परन्तु इस आक्षेप को पंडित ने पहले ही यह उत्तर दे रख्खा है कि ‘स्वरसंवादिताज्ञानं स्वर-स्थापन कारणम्’ इसका अर्थ यह है कि ऋषभ का स्थान अच्छी तरह से स्थिर होने पर धैवत का स्थान ‘षड्जपंचम भाव’ से कायम हो ही जाएगा; ‘मध्ये,’ इस पद का अर्थ ‘क्षेत्रे’ मान कर आगे ‘षड्ज पंचम भावेन’ कहा जाय तो सब ठीक बैठता है। पंडित की ऐसी भी सूचना है कि:—

संवादिनौ न चेदुक्तस्थानगौ शुद्धकोमलौ ।

तौ यवार्धयवाभ्यां हि कार्यौ न्यूनौ विचक्षणौ ॥

श्रीनिवास पंडित के यह शुद्ध स्वर स्थान, नये आन्दोलन पद्धति से इस प्रकार रखे जायेंगे:—

षड्ज	...	आंदोलन	...	२४०	(मानेहुए)
तार षड्ज	...	"	...	४८०	
अति तार षड्ज	...	"	...	९६०	
मध्यम		"	...	३२०	
पंचम	...	"	...	३६०	
गांधार	...	"	...	२८८	
ऋषभ	...	"	...	२७०	
धैवत	...	"	...	४०५	
निषाद	...	"		४३२	

यहां एक बात याद रखना होगा कि लांचन, अहोबल, हृदय और श्रीनिवास, इन पंडितों का शुद्ध स्वर मेल अपने आधुनिक काफी मेल के सदृश है; और यह विधान आज सब लोग मानते हैं। पंडित के विकृत स्वर ऐसे हैं:—

अथ विकृतस्वराः

भागत्रयोदिते मध्ये मेगेर्कषभसंज्ञितात् ।

भागद्वयोत्तरं मेरोःकुर्यात् कोमलरिस्वरम् ॥

मेरुधैवतयोर्मध्ये तीव्रगांधारमाचरेत् ।

भागत्रयविशिष्टेस्मिन् तीव्रगांधारषड्जयोः ॥

पूर्वभागोत्तरं मध्ये मं तीव्रतरमाचरेत् ।

भागत्रयान्विते मध्ये पंचमोत्तरषड्जयोः ॥

कोमलो धैवतः स्थाप्यः पूर्वभागे विवेकिभिः ।

तथैव धसयोर्मध्ये भागत्रयसमन्विते ॥

पूर्वभागद्वयादूर्ध्वं निषादं तीव्रमाचरेत् ॥

इन श्लोकों के अनुसार श्रीनिवास के पांच विकृत स्वरों के स्थान तार की लम्बाई से तथा आंदोलनों से यों निश्चित होंगे ।

विकृत स्वर	तार की लम्बाई	आंदोलन संख्या
कोमल ऋषभ	३३ $\frac{1}{3}$	२५९ $\frac{8}{11}$
तीव्र गांधार	२८ $\frac{2}{3}$	३०१ $\frac{1}{2}$
तीव्रतर मध्यम	२५ $\frac{1}{2}$	३४४ $\frac{4}{5}$
कोमल धैवत	२२ $\frac{2}{3}$	३८८ $\frac{8}{9}$
तीव्र निषाद	१६ $\frac{1}{2}$	४५२ $\frac{8}{5}$

यह पांच स्थान आज कल के संगीत विद्वान नहीं मानते । उनके स्थान पर वे उन स्थानों को पसंद करते हैं जो पाश्चिमात्य पंडितों ने अपनी नई खोज से निश्चित किये हैं; वे इस प्रकार हैं:—

श्रीनिवास के स्वर — आधुनिक हिन्दु — उन के पाश्चात्यों ने
स्थानी स्वर निश्चित किये हुए आन्दोलन

१. कोमल ऋषभ ...	कोमल ऋषभ ...	२५६
२. तीव्र गांधार ...	शुद्ध गांधार ...	३००
३. तीव्रतर मध्यम ...	तीव्र मध्यम ...	३३७ $\frac{1}{2}$
४. कोमल धैवत ...	कोमल धैवत ...	३८४
५. तीव्र निषाद ...	शुद्ध निषाद ...	४५०

श्रीनिवास के सब शुद्ध स्वरस्थान आज भी सर्वमान्य हैं । मात्र पाश्चात्य पंडित अपने धैवत के आन्दोलन ४०० मानते हैं । और हिन्दुस्थानी विद्वान् वे ४०५ मानते हैं ।

अभिनवरागमंजरी के कर्ता ने श्रीनिवास के सब शुद्ध स्वरस्थान मान लिये हैं । और बचे हुए पांच स्थानों के लिये एक बड़ी सरल युक्ति बता दी है:—

पूर्वात्ययोश्च मेवोश्च मध्ये तारकसः स्थितः ।

तदर्धे त्वतितारस्य सस्वरस्य स्थितिर्भवेत् ॥

मध्यस्थानादिमषड्जमारभ्यातारषड्जगम् ।

सूत्रं कुर्यात्तदर्धे तु स्वरं मध्यममाचरेत् ॥

भागत्रयसमायुक्तं तत्सूत्रं कारितम् भवेत् ।
 पूर्वभागद्वयादग्रे स्थापनीयोऽथ पंचमः ॥
 षड्जपंचमगं सूत्रमंशत्रयसमन्वितम् ।
 तत्रांशद्वयसंत्यागात् पूर्वभागे तु रिर्भवेत् ॥
 पंचमोत्तरषड्जाग्न्यमध्ये धैवतमाचरेत् ।
 यथा शुद्धर्षभस्यासौ प्रस्फुटः पंचमो भवेत् ॥
 मेरुधैवतयोर्मध्ये तीव्रगांधारमाचरेत् ।
 तत्संवादिनिषादाग्न्यं षड्जधैवतयोः क्षिपेत् ॥
 मध्ये षड्जर्षभकयोः संस्थितः कोमलर्षभः ।
 षड्जपंचमभावेन तत्संवादी धकोमलः ॥
 षड्जपंचमयोर्मध्ये गांधारः कोमलो भवेत् ।
 मध्यपंचमयोर्मध्ये तीव्रमध्यममाचरेत् ॥
 सपयोर्मध्यभागे स्याद्भागत्रयसमन्विते ।
 पूर्वभागद्वयादग्रे निषादः कोमलो भवेत् ॥

(पृ. ४-५; श्रु. ३२-३८).

—:०:—

अपना शुद्धस्वरमेल विलावल है। यह स्पष्ट ही है कि मंजरीकार के कोमल ग और कोमल नि श्रीनिवास के शुद्ध ग और शुद्ध नि हैं। मंजरीकार के द्वादश स्वरस्थान आन्दोलन पद्धति से इस प्रकार रखे जायेंगे।

मंजरीकार के स्वर.	आन्दोलन.	पाश्चिमीय पंडितों के आन्दोलन.
सा	 २४० (मानेहुए) ...	२४० (मानेहुए)
कोमल रि	 २५४ $\frac{२}{३}$...	२५६
तीव्र रि	 २७० ...	२७०
कोमल ग	 २८८ ...	२९९
तीव्र ग	 ३०१ $\frac{१}{३}$...	३००
शुद्ध म	 ३२० ...	३२०

तीव्र म	...	...	३३८ ^{३४} / _४	...	३३७ ^३ / _३
प	...		३६०		३६०
कोमल ध	...		३९१ ^३ / _४	...	३९४
तीव्र ध	...	...	४०५	...	४००
कोमल नि	...	...	४३२		४३२
तीव्र नि	...	...	४५२ ^४ / _३	...	४५०
तार सा	...	...	४८०		४८०

यहां एक बात कहना होगा । मंजरीकार के कोमल गी, कोमल ध, और तीव्र म, इन तीन स्वर्गों को प्राचीन ग्रन्थों का आधार नहीं है । उसी प्रकार पाश्चात्यों के कोमल गी, तीव्र ग, कोमल ध, और तीव्र नी इन स्वर्गों को हमारे शास्त्रग्रन्थों में बिल्कुल आधार नहीं । अर्थात् यह दोनों नए रचे हुए हैं । यह मानना होगा कि प्राचीन आधार के अभाव में यदि व्यापक तथा सर्वमान्य निर्णय करना हो, तो वह अपना प्रचार न बिगाड़ते हुए, देश के सुप्रसिद्ध गुणी लोगों के सम्मति से होना ही हितकर होगा । गुणी लोगों के संमुख ऐसे विषय में सूचनायें रखने का अधिकार सब को समान है ।

संस्कृत ग्रन्थकारों ने अपनी पद्धति हमेशा बारह स्वर्गों पर स्थापन की है । अतः बचे हुए दस श्रुतियों का वे विशेष रूप से विवेचन नहीं करते थे । पर, यदि कोई उद्योगी सज्जन इन दस श्रुतियों का खोज करने लगे, तो उन्हें इस आविष्करण में सहायता करने के लिये कुछ ग्रन्थों में इस प्रकार उल्लेख मिलते हैं :—

मेरुपकंठगं शुद्धर्षभक्षेत्रांतरं त्रिधा ।

विभज्यर्षभपर्वेदुदृश्यमानं विनान्तरे ॥

पर्वद्वयनिवेशे स्युस्तिस्त्रोपि श्रुतयः स्फुटाः ।

शुद्धर्षभे तथा शुद्धगांधारक्षेत्रकं द्विधा ॥

विभज्याथ यथावस्थं पर्व गांधारभासकम् ।

व्यपेक्ष्य मध्ये पर्वौकम् यथा परिनिविश्यते ॥

गांधारस्य तदानीं स्यात् श्रुतिद्वयमतिस्फुटम् ॥

चतुर्दंडिप्रकाशिकायाम्

वक्ष्यते स्वरवीणात्र तस्यामपि विचक्षणाः ।

अंकित्वा स्वरदेशानां भागानुदभिंदते श्रुतीः ॥

रत्नाकरे

अर्थात् उनके मतानुसार हर एक स्वरांतर के शास्त्रोक्त श्रुति संख्या के अन्दाजे से समान भाग करके श्रुति निश्चित करना चाहिये । उनकी परिस्थिति ध्यान में लाई जाय तो उन की कल्पना सरल और विचारणीय दिखाई देती है । यह याद रखना होगा कि कामल रि बतलते समय अहो-बल और श्रीनिवास ने ऋषभ क्षेत्र के तीन समान भाग किये हैं । उन्हें अच्छी तरह से मालूम था कि यदि पूर्वांग के स्वर—सा, री, ग, म, तार की लम्बाई से निश्चित किये गये तो उत्तरांग के स्वर षड्ज पंचम भाव से सहज में निश्चित हो सकते हैं ।

मध्ये पूर्वोत्तरावद्वीणायां गात्र एव वा ।

षड्जपंचमभावेन श्रुतीर्द्वाविंशतीं जगुः ॥

इस श्लोक का अर्थ सहज में समझ सकते हैं । प्राचीन ग्रन्थकारों का श्रुति कायम करने का यह मार्ग अपने आधुनिक विद्वान् पसंद नहीं करते । वे पाश्चिमियों के नई खोज के बाद निश्चित किये हुए बारह स्वर सर्वथा योग्य मानते हैं । और उनकी सहायता से मध्यवर्ती दस श्रुतियों के स्थान निश्चित करने का प्रयत्न करते हैं । यहां उनकी एक भारी भूल हो जाती है । वे अपने प्राचीन ग्रन्थकारों के चतुःश्रुतिक, त्रिश्रुतिक और द्विश्रुतिक स्वरांतरों को पाश्चात्यों के मेजरटोन, मायनरटोन और सेमीटोन इन स्वरांतरों के समान मान कर आगे बढ़ते हैं । वास्तव में ऐसा मानने के लिये प्राचीन ग्रन्थों में किसी प्रकार का आधार नहीं है । उनके इस भ्रान्तिमूलक श्रुतिस्वर पंक्ति से प्राचीन ग्रन्थकारों के रागों का स्पष्टीकरण अधिक कठिन हो जाता है । ऐसी स्थिति में यदि कोई यह प्रतिपादन करने लग कि यह हमारी नई श्रुतियाँ प्राचीन ग्रन्थकारों की ही हैं तो समाज में निरर्थक वाद उत्पन्न होगा । और यह उलझन और भी बढ़ जाएगी । प्राचीन ग्रन्थों का सच्चा अभिमान ही रखना हो तो कोई ऐसा भी कहेगा कि तार की लम्बाई से कायम किये हुए श्रुतिस्वरों के परम्परागत स्थान ही क्यों न माने जाय ? लोचन पंडित से श्रीनिवास पंडित तक येही प्रचलित थे । अब नई श्रुतियाँ आधुनिक संगीत के लिये हितकर

तथा योग्य हों तो उनको स्वीकार करना चाहिये। परन्तु पहले इस नई सूचना को अखिलभारतीय संगीत परिषद् के सदस्य सर्वमान्य विद्वत्सभा के सामने पेश करके उसकी योग्यायोग्यता प्रत्यक्ष प्रयोग से निश्चित करना होगा। ऐसा हो तो इस सूचना से कुछ हित होने का संभव है।

इस मालिका में हमने प्राचीन शास्त्रकारों का अनुकरण किया है और अपनी पद्धति प्रचार के अनुसार बारह मुख्य स्वरों पर स्थापन की है। इस लिये हमें इन बचे हुए दस श्रुतियों की उलझन में फँसने की कोई आवश्यकता नहीं है। श्रीनिवास पंडित के निम्नलिखित श्लोकों से दिखाई देगा कि हमारे पंडित संगीत पद्धति में बारह स्वर मुख्य मानकर चलने पर बड़ा जोर देते थे:—

श्रुतयो द्वादशैवात्र स्वरस्थानतयोदिताः ।

तथोक्तवारिताः सर्वाऽस्वरस्थानतयादिशेत् ॥

न श्रुतिस्थस्वरोत्पन्नप्रस्तारप्राप्तमेलजान् ।

युक्तोद्ग्राहयुजोरागान् कल्पयन्तु मनस्विनः ॥

संगीत के वर्तमान स्थिति की ओर देखते हुए इस पुस्तक के संपादक को भी यही ठीक जँचता है। मेल और तज्जन्यराग की सुगम पद्धति से हिन्दुस्थानी संगीत को सुव्यवस्थित करने के लिये प्राचीन पंडितों के अनुसार मुख्य बारह स्वर मान कर चलना ही हितावह होगा।

गीत.

रंजकः स्वरसंदर्भो गीतमित्यभिधीयते ।

गांधर्व गानमित्यस्य भेदद्वयमुदीरितम् ॥

रत्नाकरे

गांधर्व.

अनादिसंप्रदायं यद्गांधर्वैः संप्रयुज्यते ।

नियतं श्रेयसो हेतुस्तद्गांधर्वं जगुर्बुधाः ॥

रत्नाकरे

गान.

यत्तु वाग्गेयकारेण रचितं लक्षणान्वितम् ।

देशीरागादिषु प्रोक्तम् तद्गानं जनरंजनम् ॥

रत्नाकरे

अर्थ:—मनका रंजन करनेवाला स्वर समुदाय गीत; उसके दो भेद हैं; गांधर्व और गान। जो संगीत अनादि संप्रदाय यानी वेदों के समान अपौरुषेय और शब्दप्रधान है। जिसका उपयोग गांधर्व करते थे और जिसका उद्देश हमेशा मोक्ष प्राप्ति रहता था। वह गांधर्व; जो संगीत वाग्गेयकारों ने (विद्वानों ने) अपने बुद्धिसामर्थ्य से उत्पन्न किया तथा लक्षणबद्ध करके देशी रागादिकों में प्रत्यक्ष उपयोग में लाया, और जिसका मुख्य उद्देश लोकरंजन था, वह गान।

रत्नाकर का टीकाकार कल्लिनाथ कहता है कि गांधर्व और गान को यदि क्रमसे मार्ग और देशी माना जाए तो कोई हर्ज नहीं। मार्ग संगीत अब बिलकुल प्रचार में नहीं है, इस लिये उसके विषयमें यहाँ कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। शार्ङ्गदेव के समय में भी सर्वत्र देशी संगीत ही प्रचलित था। शार्ङ्गदेव के समय का देशी संगीत अपने आधुनिक हिंदु-स्थानी संगीत से बिलकुल भिन्न था। यह सब ही मानते हैं कि देशी संगीत परिवर्तनशील है। उसका उद्देश जनरंजन है। इस लिये वह सर्वदा लोक रुचिपर अवलंबित रहता है।

देशी संगीत.

देशे देशे जनानां यदरूच्या हृदयरंजकम् ।

गानं च वादनं नृत्यं तद्देशीत्यभिधीयते ॥

रत्नाकरे

निबद्ध और अनिबद्ध गान.

निबद्धमनिबद्धं तद्द्वेधा निगदितं बुधैः ।

बद्धं धातुभिरंगैश्च निबद्धमभिधीयते ॥

आलसिर्बद्धहीनत्वादनिवद्धमितीरितम् ।

संज्ञात्रयं निबद्धस्य प्रबंधो वस्तु रूपकम् ॥

रत्नाकरे

शार्ङ्गदेव के समय में अपना ख्याल ध्रुवपदादि गायन प्रचलित नहीं था । उस समय प्रबंध, वस्तु, रूपक इत्यादि चीजें गाते थे । प्रबंध के भिन्न भिन्न भाग अथवा अवयव रहते थे जिन्हें धातु कहते थे । इन धातुओं के नाम रत्नाकर में इस प्रकार दिये हैं :—उद्ग्राह, मेलापक, ध्रुव, अन्तरा और आभोग; आजकल प्रबन्धों का गायन कहीं दिखाई नहीं देता । अतः इन प्राचीन धातुओं की चर्चा करने से हमें कोई प्रयोजन नहीं है । जिस प्रकार हमारे आधुनिक गीतों में स्थायी, अन्तरा, संचारी और आभोग इत्यादि धातु रहते हैं उसी प्रकार प्रबन्धों के यह प्राचीन धातु समझना चाहिये । रत्नाकर में सैंकड़ों प्रकार के प्रबन्धों का वर्णन है । प्रबन्धों का गायन सब निबद्धगीत में सम्मिलित होता है । शार्ङ्गदेव ने अनिवद्धगान की कक्षा में आलसिगान को रक्खा है । इस आलसिगान को ही हम आलाप कहेंगे । हमारे आलाप और आलसि में थोड़ा भेद माना जाता था । परन्तु इस में कोई संदेह नहीं कि यह दोनों अनिवद्धगान ही के उदाहरण हैं ।

रागालाप.

ग्रहांशमंद्रताराणां न्यासापन्यासयोस्तथा ।

अल्पत्वस्य बहुत्वस्य षाड्वौडुवयोरपि ॥

अभिव्यक्तिर्यत्र दृष्टा स रागालाप उच्यते ।

रत्नाकरे

अर्थ :—जिस गान में राग के बारे में, ग्रह, अंश, मन्द्र, तार, न्यास, अपन्यास, अल्पत्व, बहुत्व, षाड्वत्त्व, और औडुवत्त्व इन दस बातों का प्रकाशन (स्पष्टरूप से प्रकटन) किया जाता है, उसे रागालाप कहते हैं ।

राग लक्षण.

रंजयन्ति मनांसीति रागास्ते दशलक्षणाः

लक्षणानि दशोक्तानि लक्ष्यंते तावदादितः ॥

ग्रहांशौ मंद्रतारौ च न्यासापन्यासकौ तथा ।
 अथ सन्यासविन्यासौ बहुत्वं चाल्पता तथा ॥
 लक्षणानि दर्शयानि रागाणां मुनयोऽब्रुवन् ॥

चतुर्दंडिप्रकाशिकायाम्

ऊपर दिये हुए लक्षणों का अर्थ इस प्रकार है :—

येनादौ गीयते गीतं स्वरेण स भवेद्ग्रहः ।
 बहुशो गीयते येन स्वरेणांशः स कथ्यते ॥
 अंशस्वरस्त्वसावेव जीवस्वर इति स्मृतः ।
 नीचैः स्वरेण यद्गानं स मंद्रस्वर उच्यते ॥
 उच्चैः स्वरेण यद्गानं स तारस्वर उच्यते ।
 न्यासस्वरः स कथितो येन गीतं समाप्यते ॥
 अवांतरसमाप्तिं यो रागस्यापि तनोति सः ।
 अपन्यासः स स्मृतोऽन्यस्त्वात्यंतिक्रममाप्तिं कृत् ॥
 इति भेदो भवेन्न्यासापन्यासस्वरयोर्द्वयोः ।
 संन्यासो नाम गीताद्यखण्डभागसमाप्तिं कृत् ॥
 गीतखंडाद्यवयवस्यान्ते तिष्ठति स स्वरः ।
 विन्यास एतौ सन्यासविन्यासौ भरतादिभिः ॥
 अंतर्भूतावपन्यासस्वर एवेति कीर्तितौ ॥
 अलंघनं तथाभ्यासो बहुत्वं द्विविधं मतम् ।
 स्वरस्यास्पर्शनं यत्र लंघनं तत्र कीर्तितम् ॥
 साकल्येन स्वरस्पर्शस्त्वलंघनमिति स्मृतम् ।
 यदेकस्य स्वरस्यैव नैरंतर्येण वाथवा ॥
 व्यवधानेन भूयोऽपि भूयोप्युच्चारणं हि तत् ।
 अभ्यास इति शंसन्ति बहुत्वं द्विविधं ततः ॥

अल्पत्वं च द्विधा प्रोक्तमनभ्यामाच्चलंघनात् ।
 पूर्वोक्ताभ्यामराहित्यमनभ्यामः प्रकीर्तितः ॥
 पूर्वोक्तलंघनाभावो लंघनं परिकीर्तितम् ॥
 लक्षणानि दशाप्येवं लक्षितानि मया स्फुटम् ।

चतुर्दशप्रकाशकायाम्

इस से स्पष्ट होगा कि जो उपयोगी बातें प्राचीन रागलक्षणों में राग पहचानने के लिये दी हैं वे ही गायक को श्रोताओं के सम्मुख रखना था । इन बातों में से ग्रह, अंश, न्यास, षाडवत्व तथा औडुवत्वका अर्थ इस माला के दूसरे और तीसरे पुस्तकों में दिया गया है । मंद्र और तार, यह हर एक राग की अवधि यानी मर्यादा रहती थी । अमुक राग मंद्र और तार सप्तकों में इतना ही जा सकता था । इस प्रकार के निर्बंध प्राचीन काल में रहते थे । अपन्यास, संन्यास, विन्यास यह गीत के भिन्न भिन्न भागों के अन्तिम स्वर थे । इस भागों को विदारी कहते थे । गीत के धातु विदारी की कक्षा में आते हैं । आगे चल कर संन्यास और विन्यास का अपन्यास में समावेश किया जाने लगा । इस लिये रागलक्षण में केवल अपन्यास नियम सम्हालना पड़ता था । अल्पत्व और बहुत्व का राग के षाडवत्व या औडुवत्व से संबंध न जोड़ना चाहिये । षाडवत्व और औडुवत्व का संबंध राग मेल से था । यानी राग के वर्ज्यावर्ज्य स्वरों से था । इसी लिये यह चारों लक्षण अलग बतलाये गये हैं । इस दृष्टि से देखें तो सहज ही स्पष्ट होगा कि जो भिन्न भिन्न क्रियायें राग के अनुसार जानबूझ कर गायक स्वरों पर कर दिखलाते थे उन्हें अल्पत्व कहते थे ।

बहुत्व.

अलंघनात्तथाऽभ्यासाद्बहुत्वं द्विविधं मतम् ।

पर्यायांशे स्थितं तच्च वादिसंवादिनोरपि ॥

रत्नाकरे

कलिनाथ की टीका:—

“लंघनमीषत्स्पर्शस्वरस्य स्थानप्रयत्नकृतस्वरूप न्यूनता तदभावोऽलंघनम् । साकल्येन स्पर्श इति यावत् । इदमेकं बहुत्वं ।

अभ्यामादावृत्तेनैरन्तर्येण वा सांतरत्वेन वा स्वरस्य पुनः पुनरुच्चारण-
मावृत्तिः । तच्च द्विविधं बहुत्वं पर्यायांशे वादिभूतांशाद्व्यतिरिक्तांशे,
वादिसंवादिनोरपि । प्रयोक्तव्यमिति शेषः ॥”

अर्थः—स्वरों को दो प्रकार से बहुत्व देते थे । (१) अलंघन से और (२) अभ्यास से । लंघन का अभाव अलंघन जहां किसी स्वर का लंघन बतलाया गया हो, वहां उस स्वर का बिलकुल थोड़ा स्पर्श करके उस दूसरे स्वरों की अपेक्षा गौण या कम महत्व का ठहराना पड़ता था । यह गौणता उसे खास प्रयत्नों से दी जाती थी । अभ्यास का अर्थ उस स्वर की आवृत्ति दो प्रकारों से होती थी । (१) उस स्वर का एकही स्थान पर पुनः पुनः उच्चार करना, या (२) दूसरे स्वरों के व्यवधान से (यानी दूसरे स्वरों को बीच में लाकर फिर मूल स्वर पर आना) यह बहुत्व राग के निश्चित वादि संवादि स्वरों को हमेशा रहता थाही; परन्तु यदि निश्चित वादि संवादि के अतिरिक्त दूसरे किसी स्वर को वादित्व दिया गया तो ऐसे पर्याय अंश स्वर को भी बहुत्व दिया जाता था । यह प्रश्न अलग है कि ऐसे पर्यायांश कितने और कहां तक मानते थे ? हमें केवल यहां अल्पत्व बहुत्व के अर्थ से मतलब है ।

अल्पत्वं च द्विधा प्राक्तेमनभ्यासाच्च लंघनात् ।

अनभ्यामस्त्वनंशेषु प्रायो लोप्येष्वपीष्यते ॥

अल्पत्व दो प्रकारों से बतला सकते थे; (१) लंघन और (२) अनभ्यास । लंघन और अभ्यास का अर्थ ऊपर बतलाया गया है । अतः यहां अल्पत्व की अलग चर्चा करने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

यह याद रहे कि इस श्लोक में ‘लोप्येष्वपीष्यते’ कहा है । ग्रंथकार का उद्देश यही दिखाई देता है कि गायन में विवादी स्वर का अल्प प्रयोग किया जाय तो उसे अल्पत्व प्राप्त होता है । गायन में विवादी स्वर थोड़े प्रमाण पर और योग्य स्थान में लेने के लिये पहिले ही सम्मति दी गई है ।

विवादी विपरीतत्वाद्धीरैरुक्तो रिपूपमः ।

स्वरूपमर्दनं तेन प्रयोगे स्याद्विवादिना ॥

स्वरूपमर्दनाभावे गीते रक्तिर्न लभ्यते ।

शत्रूपमर्दने हि स्याद्राज्ञां लोके प्रकाशनम् ॥

नृपामात्यानुसारीत्वादनुवादी तु भृत्यवत् ॥

चतुर्दाडप्रकाशकायाम्

सुप्रमाणयुतोरोगे विवादी रक्तिवर्धकः ।

यथेषत्कृष्णवर्णेन शुभ्रस्यातिविचित्रता ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ।

विवादी तु सदा त्याज्यः क्वचित्तानक्रियात्मकः ॥

रागमंजर्याम्

प्रच्छादनीयो लोप्यो वा मनाक्स्पर्शः स्वगम्य यः ।

प्रच्छादनं तदेवाहुर्लोपः स्वगम्य निवृत्तिः ॥

समयसारे

विवादी स्वरों का प्रयोग राग का तिरोभाव याने स्वरूपमर्दन करने की ओर भी हो सकता था; और ऐसी स्थिति में उसका अल्पत्व रहना ठीक ही था । यहाँ तक प्राचीन ग्रन्थकारों के उक्तियों का थोड़ा बहुत विचार किया गया है । उसका उद्देश यही था कि पाठकों को प्राचीन समय के रागालाप के लक्षण अच्छी प्रकार से ज्ञात हो जाँय । पाठक यह जान गये होंगे कि आलाप लक्षण में दिखलाई हुई सब बातें प्राचीन रागलक्षणों में से ली गई हैं । बहुत से विद्वानों का मत है कि रागों के गायन के पहले जातियों का गायन प्रचलित था ।

जाति का लक्षण.

ग्रहांशतारमंद्राश्च न्यासापन्यासकौ तथा ।

अपि संन्यासविन्यासौ बहुत्वं चाल्पता ततः ॥

एतान्यंतरमार्गेण सह लक्ष्माणि जातिषु ।

षाड्वौडुविते क्वापीत्येवमाहुस्त्रयोदश ॥

रत्नाकरे

जब जाति का गायन पीछे हटकर राग गायन प्रचार में आया, तब यही लक्षण राग को प्राप्त हुए ।

रूपकालाप.

प्राचीन आलाप का दूसरा एक प्रकार माना जाता था उसे रूपकालाप कहते थे। रूपकालाप आलाप का ही एक प्रकार है, अतः रागालाप की व्याख्या में दी हुई सब बातें उसे आवश्यक हैं, परन्तु इनके अतिरिक्त उसे और एक महत्व की बात चाहिये। वह इस प्रकार है:—

रूपकं तु तद्वदेव पृथग्भूतविदारिकम् ।

रूपकालाप में गायक को प्रबंध के धातु के समान आलाप के भिन्न भिन्न भाग कर दिखलाना पड़ता था। ऐसे भागों के अंतिम स्वरों को अपन्यास स्वर कहते थे। रूपक और रागालापका आपसका भेद कल्लिनाथ पंडित इस प्रकार वर्णन करता है:—

“पृथग्भूतविदारिकम्”—पृथग्भूता विच्छिद्य विच्छिद्य प्रयुक्तविदार्यो गीतखंडानी यस्मिन्निति । अपन्यासेषु अविरम्य एकाकारेण प्रवृत्त आलापः । स एव अपन्यासेषु विरम्य विरम्य प्रवृत्तं रूपकम् ।

इस वर्णन से सहज ही ध्यान में आएगा कि उस समय के श्रोताओं को रूपक किसी शब्दहीन चीज़ के सदृश एक प्रकार दिखाई देता होगा; रागालाप में गायक को आलाप की व्याख्या में दी हुई सब बातें श्रोताओं के सन्मुख रख कर हम कौन सा राग गा रहें हैं यह स्पष्ट रूप से दिखलाना था। रूपकालाप श्रोताओं को प्रत्यक्ष प्रबंध के सदृश ही दिखाई देता था, परन्तु उसमें शब्द, ताल इत्यादि का अभाव रहता था, रागालाप की अपेक्षा रूपकालाप अधिक विस्तृत था, या यों कह सकते हैं कि रागालाप की अगली सीढ़ी रूपक है।

आलप्ति ।

इन दोनों से भी आगे बढ़ी हुई एक सीढ़ी थी। उसे आलप्ति कहते थे। आलप्ति में राग का संपूर्ण रीति से प्रदर्शन किया जाता था। उसमें राग के आविर्भाव और तिरोभाव दिखाये जाते थे। आविर्भाव और तिरोभाव का अर्थ निम्नलिखित पंक्तियों में स्पष्ट किया गया है।

आविर्भाव और तिरोभाव ।

यह हम पहले ही बतला चुके हैं कि एक मेल से अनेक राग उत्पन्न हो सकते हैं। जब कोई गायक गाते समय भिन्न भिन्न स्वर समुदायों से

अपने राग का विस्तार कर रहा हैं, तब बहुत संभव है कि श्रोताओं को दूसरे समप्रकृतिक रागों के थोड़े थोड़े टुकड़े बीच दिखाई दें; क्यों कि समप्रकृतिक रागों के कुछ स्वरसमुदाय सर्वसाधारण होते ही हैं, और उन्हें सुनने पर श्रोताओं को भिन्न भिन्न रागों की छाया अवश्य दिखाई देगी। तथापि, गायक कुशल हो तो वह समय समय पर अपने राग के विशेष अथवा स्वतंत्र अंग योग्य स्थान में रखकर श्रोताओं के मनका संदेह बड़ी कुशलता से दूर करना है; और ऐसे कृत्य में कहीं विसंगति (बेमेल) नहीं होने देते। ऐसे गायन में जब जब राग थोड़ा छिप या ढँक जाता है, तब ऐसा कहते हैं कि उसका तिराभाव हुआ, और राग पुनः स्पष्ट रूप से दिखाई देने पर उसका आविर्भाव हुआ समझा जाता है। यह भाव सचमुच बड़े मनोरंजक होते हैं। इस विषय पर शार्ङ्गदेव पंडित और कल्लिनाथ का कथन इस प्रकार है।

स्तोकस्तोकैस्ततः स्थायैः प्रसन्नैर्वहुभंगिभिः

जीवस्वरव्याप्तिमुखै रागस्य स्थापना भवेत् ॥

रत्नाकरे

जीवस्वरः । अंशस्वरः । उक्तस्वस्थानचतुष्टयप्रयुक्तायाम् आलसौ उक्तलक्षणैः स्वल्पै रागावयवैः विस्तार्यमाणायामापाततोऽभिव्यक्तस्य रागस्य रागांतरसाधारणस्थायादिप्रयोगात् स्वरूपतिरोभावे सति किञ्चित्प्रतीयमानता भवेदित्यभिप्रायः । यथा लोके सभां प्रत्यागच्छतो देवदत्तस्य रूपेणाभिव्यक्तस्य ततः सभां प्रविश्योपविष्टस्य तस्य स्वसदृशरूपवेषभाषादिसांकर्यात्स्वरूपतिरोभावे सति यथा तस्य किञ्चित् प्रतीयमानत्वम् । यथा वा पृथगानीय भिन्नवर्णेषु मणिषु प्रोतस्य मुक्तामणेर्मण्यन्तरच्छायोपरागात् स्वरूपतिरोभावे सति यथा तस्य किञ्चित् प्रतीयमानत्वं तद्वदिति ।

स्थाय.

छोटे छोटे स्वर समुदायों को ग्रन्थकार स्थाय कहते थे ।

स्वस्थान.

प्राचीन काल में आलाप का और भी एक सुंदर नियम था। उसे स्वस्थान नियम कहते थे। निम्नलिखित श्लोकों में स्वस्थानों का पूर्णरूप से वर्णन किया है:-

यत्रोवेपश्यते रागः स्वरे स्थायी स कथ्यते ।
 ततश्चतुर्थो द्व्यर्धः स्यात् स्वरे तस्मादधस्तने ॥
 चालनं मुखचालः स्यात् स्वस्थानं प्रथमं च तत् ।
 द्व्यर्धस्वरे चालयित्वा न्यमनं तद्द्वितीयकम् ॥
 स्थायिस्वरादष्टमस्तु द्विगुणः परिकीर्तितः ।
 द्व्यर्धद्विगुणयोर्मध्ये स्थिता अर्धस्थितस्वराः ।
 अर्धस्थिते चालयित्वा न्यसनं तु तृतीयकम् ॥
 द्विगुणे चालयित्वा तु स्थायिन्यासाच्चतुर्थकम् ।
 एभिश्चतुर्भिः स्वस्थानै रागालप्तिर्मता मताम् ।

रत्नाकरे

भावार्थः—अंशस्वर पर माग राग निर्भर रहता है। उसी को स्थायी स्वर कहते हैं। स्थायी स्वर से चौथा स्वर द्व्यर्ध समझना चाहिए। स्थायी से आठवां द्विगुण स्वर है। द्व्यर्ध और द्विगुण इन दो स्वर्गों के बीच के सब अर्धस्थित मानना चाहिए। हर एक आलाप गायक को उपर्युक्त श्लोकों में दिए हुए स्वस्थान क्रम से गाना पड़ता था। मनमाने स्थान से प्रारम्भ करके चाहे जहाँ वह न्यास नहीं कर सकता था। प्रथम स्वस्थान में गायक को हमेशा अपना आलाप द्व्यर्ध स्वर के नीचे रखना पड़ता था। मन्द्र सप्तक में वह मनमाना विस्तार कर सकता था।

मुखचालन.

रागोचित विविध गमकादिक अलङ्कारों का यथोक्त प्रयोग करके गायन वादन करना—इसे मुखचालन कहते हैं।

आक्षिप्तिका.

ताल, स्वर और बोल, इन तीनों की सम्पूर्ण सहायता से होने वाले प्रयोग को प्राचीन पण्डित आक्षिप्तिका कहते थे । यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि आक्षिप्तिका निबद्ध गान है । क्रमिक पुस्तकों की ताल स्वरों में दी हुई चीजें आक्षिप्तिका ही हैं ।

इन सब ग्रन्थोक्त वर्णनों से स्पष्ट होगा कि प्राचीन काल में आलाप गायन का दर्जा बहुत ऊँचा था; परन्तु वह गायन उत्तम स्वरज्ञानी और रागज्ञानी गायकों को ही साध्य था । इस दृष्टि से देखा जाय, तो यह एक प्रश्न ही है कि आज कल उत्तरभाग में उच्च प्रती का आलाप गान है या नहीं ? इसका अर्थ यह नहीं कि इस समय आलाप गान करने वाले नहीं हैं । आज कल हमारे यहां रामपूर, जयपूर, उदेपूर इत्यादि कुछ प्रसिद्ध शहरों में आलाप गान करने वाले हैं । परन्तु यह हम नहीं कह सकते कि उनका गान सर्वस्वी शास्त्रांक और सुनियमित है । इस पर कोई यह प्रश्न पूछ सकता है कि आज कल के परिवर्तित संगीत को प्राचीन नियम कैसे ठीक लग सकते हैं ? यह प्रश्न भी ठीक है परन्तु यह हठ कोई भी न करेगा कि उन नियमों को लगाना ही चाहिए । कमसे कम नए संगीत को नए सुबोध और समझने योग्य नियम तो देना चाहिए ? ऐसे नियमों का आलाप गान अभी समाज में अवतीर्ण नहीं हुआ है । अब हम अपने उत्तमोत्तम आलाप गायकों के गायन के विषय में विचार करें ।

प्रचलित आलाप गान ।

हिंदुस्थानी गायक आलापों में त, ना, न, री, रेन तो, नौं, नारे, नेनेरी, तनाना, नेतों, नना, इत्यादि शब्दों का उपयोग करते हैं । केवल आकार से गाने की अपेक्षा इन शब्दों का उपयोग करने से गायन सुलभ होता है और उसका परिणाम उत्तम होता है । गायकों को रूपक, आलाप, आलसि, आक्षिप्तिका इत्यादि के भेद बिल्कुल अज्ञात रहते हैं । जो अधिक कुशल होते हैं वह रागों के आविर्भाव और तिरोभाव करने का प्रयत्न करते हैं; परन्तु इस प्रयत्न में नियमबद्धता अथवा सुव्यवस्था विशेष रूपसे दिखाई नहीं देती । साधारणतः वे आलापके अस्ताई, अंतरा, संचारी, और आभोग ऐसे चार विभाग करते हैं । उन्हें स्वस्थान नियमों का ज्ञान नहीं रहता, परन्तु परंपरागत संस्कारों से वे चलते हैं । स्थायी का भाग

गाते समय, एक एक नया स्वर अपने स्वर समुदायों को जोड़कर, वे मध्य-स्थान के पंचम, धैवत और निषाद तक भी गाते हुए जाते हैं। फिर तार षड्ज को थोड़ा स्पर्श करते हुए नीचे आते हैं और स्थायी समाप्त करते हैं। इसके बाद मध्यस्थान के गांधार अथवा पंचम स्वर से वे अंतरा का भाग शुरू करते हैं। इस कृति में तार सप्तक के षड्ज पर अनेक तान अनेक प्रकार से समाप्त की जाती हैं, और अन्त में धीरे धीरे उतरते हुए मध्य षड्ज को आकर मिलते हैं। इसके बाद संचारी का भाग आता है। संचारी बहुशः सा, म, प, इन में किसी एक स्वर से शुरू करते हैं। उसमें गमकों का प्रयोग अधिक दिखाई देता है। दूसरे भागों में मींड एक स्वर से दूसरे स्वर तक घर्षण से जाना, और कंपन का अधिक प्रयोग दिखाई देता है। संचारी बहुशः तार स्थानों तक नहीं जाती। वह मध्य पंचम अथवा मध्य षड्ज पर ही समाप्त की जाती है। संचारी के बाद फिर स्थायी नहीं लाते; एकदम आभोग शुरू करते हैं। आभोग में गायक चाहे जितना ऊँचा जा सकता है। आभोग का विस्तार अधिकतर अंतरा के विस्तार के सदृश होता है। राग का सब मंडन मंद्र और मध्यस्थानों में ही उत्तम होता है। अंतरा का विस्तार तारस्थान में अधिक होता है और वहाँ के स्वर ऊँचे और श्रमसाध्य होते हैं; इस लिये अंतरा का विस्तार स्थायी से बहुत कम होता है। तारस्थान का काम मंद्र और मध्यस्थानों में किये हुये काम की पुनरुक्ति ही है, इस लिये उस में अधिक विस्तार-शोभा भी नहीं देगा। पूर्वांगवादी रागोंका आलाप गायक बहुत बार वादी स्वर से शुरू करते हैं। परन्तु इस प्रकार शुरू करने के पहले वे, सा, या निसा स्वर उत्तम रीति से गाकर श्रोताओं का ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं। आलाप के शुरू में वे बहुत छोटे छोटे स्वर समुदाय अथवा तान लेते हैं, और बार बार आकर षड्ज को मिलते हैं। षड्ज से मिलने के लिये उनकी एक निश्चित छोटी सी तान होती है। उस में बहुशः तान तोम् इत्यादि शब्द होते हैं। इस तान को आलाप की सम कहते हैं। कुशल गायक अपने राग के मार्मिक स्थान पहले ही निश्चित कर रखते हैं, और उन स्थानों के अनुसार अपने भिन्न भिन्न स्वर समुदाय रचते हैं। उदाहरणार्थ यमन राग गाते समय ग, प, नि, सा इन स्वरों पर वे अनेक स्वर समुदाय समाप्त करते हैं। यह कृत्य बहुत ही सुंदर दिखाई देता है। आलाप उन गायकों के बहुत ही मनोहर होते हैं, जिनके कंठ कसे हुए और मधुर होते हैं। और जिनका स्वरज्ञान तथा रागज्ञान उत्तम होता है। सभी राग आलाप योग्य नहीं होते। आलाप गान करने वाले गायक बहुशः ध्रुपदिये

होते हैं। इस पुस्तक के संपादक का दृढ़मत है कि आलाप गायन पुनः सभ्य समाज में लोकप्रिय हो जाय तो संगीत का बहुत हित होगा।

तान.

“तान” शब्द तन् (तानना) धातु से उत्पन्न हुआ है। यह प्रसिद्ध ही है कि गायन में तान लेने से उसका विस्तार होता है। तानों का मुख्य उद्देश गायन का वैचित्र्य अधिकाधिक बढ़ाना है। यदि तान योग्य प्रमाण में और योग्य रीति से ली जाय तो सुनने वाले को सचमुच बड़ा आनन्द होता है। जिस प्रकार कोई प्रसिद्ध वक्ता एक ही कल्पना भिन्न भिन्न शब्दों से और ध्वनि से अपने श्रोताओं के मन पर उत्तम रीति से प्रतिबिंबित करता है, ठीक उसी प्रकार उत्तम गायक भिन्न भिन्न स्वरसमुदायों से और शब्दरचना से अपने चीजों का भाव श्रोताओं के मनपर प्रतिबिंबित करता है। मुख्य चीज को शोभा देने वाली तान ली जाय तो सचमुच बड़ा आनन्द होता है।

तानों का प्रयोग बहुशः ख्याल नामक गीतों में होता है। ख्याल गायन का महत्त्व गत सौ डेढ़ सौ वर्षों में बहुत ही बढ़ गया है। क्योंकि उस गायन में तान लेने की स्वतन्त्रता दी गई है। ध्रुवपद गायन में ऐसी स्वतन्त्रता नहीं है, अतः वह गायन आज कम लोकप्रिय हुआ है। ऊपर कहा गया है कि गत सौ डेढ़ सौ वर्ष में ख्याल गायन अधिक लोकप्रिय हुआ है; परन्तु इसका यह अर्थ न करना चाहिये कि उस गायन की सर्वरूप से उन्नति हो रही है। जानकार लोगों के मतानुसार उस गायन की गत सौ वर्षों में बहुत ही अवनति हुई है। हम देखते हैं कि आज कल गायकों का सब ध्येय, गला चाहे जैसा घुमाना हो बैठा है। गला मधुर हो या न हो, स्वरज्ञान और रागज्ञान हो या न हो, चीज का अर्थ समझ में आयें या न आयें, तान ठीक रहें या न रहें, इससे कोई मतलब नहीं। जिस गायक का गला अधिक तेजी से घुमेगा वह अधिक श्रेष्ठ। आज कल ऐसा अजब प्रकार सब स्थानों में दिखाई देता है। यह हम नहीं कहते कि सभी गायकों की ऐसी शोचनीय स्थिति है। हम यह मानते हैं कि अभी हमारे यहां कुछ पुराने गायक बहुत अच्छे हैं; परन्तु आज कल के तरुण गायक वर्ग की निस्संदेह दिशा भूल हो रही है। यदि उन पर लोकमत का दबाव इसी समय न बैठा तो संभव है कि ख्याल गायन कुछ काल के बाद बहुतही हीन स्थिति को प्राप्त होगा। ऐसे परिस्थिति का एक मुख्य कारण यह

दिखाई देता है कि गायक और श्रोतृसमूह इन दोनों को गाई जाने वाली चीज़ का अर्थ अथवा भाव बिल्कुल मालूम नहीं रहता, या समझते हुए भी उसकी ओर वे ध्यान नहीं देते । उन गायकों को अधिक ऊँचा स्थान दिया जाता है जिन्हें परम्परागत अथवा खानदानी चीज़ें अधिक आती हैं । यदि चीज़ों को इतना महत्त्व देना है तो यह देखना चाहिये कि उनमें कौन सा रस प्रधान है और उस रस के लिए कौन सी तान या अलङ्कार ठीक होगा ? प्रचार में हमें अनेक बार दिखाई देगा कि चीज़ में चाहे जिस रस का प्राधान्य हुआ तो भी गायक के तानों में या अलङ्कारों में बिल्कुल फर्क नहीं पड़ता । यह बड़े आश्चर्य की बात है । इस प्रकार के गायन की कोई भी तारीफ़ नहीं कर सकता । सदारंग, अदारंग, मनरंग इत्यादि महान् गुणी लोगों की सैकड़ों चीज़ें अभी उपलब्ध हैं; परन्तु बड़े दुःख से कहना पड़ता है कि आज कल के अशिक्षित गायकों के हाथ में जाने से उनकी स्थिति सचमुच दयाजनक हुई है । ज्यों ज्यों सुशिक्षित लोग इधर अधिक ध्यान देंगे, त्यों त्यों ख्याल गान की स्थिति सुधरना अधिक सम्भव होगा ।

ख्यालों के दो भेद किए जाते हैं; (१) बड़े ख्याल (२) छोटे ख्याल । ग्वालियर में यह भेद अब तक माना जाता है । जो ख्याल तिल-वाड़ा, एकताल, झूमरा और आड़ा चौताल इन तालों में गाये जाते हैं, वे सब बड़े ख्याल और जो धीमे (त्रिताल) ताल में गाये जाते हैं वे छोटे ख्याल माने जाते हैं । बड़े ख्याल ध्रुवपद के अनुसार रचे हुए रहते हैं, इस लिए उनकी गति बहुत धीमी और अलंकृत होती है । ऐसे ख्यालों में प्रौढ़ता और गम्भीरता अधिक होती है । छोटे ख्यालों की प्रकृति बहुत चपल होती है । वे भी सुन्दर होते हैं । परन्तु उनमें बड़े ख्यालों की प्रौढ़ता और मनोरंजकता नहीं होती । इन दो प्रकार के ख्यालों के तानों में भी भेद होना स्वाभाविक है । ग्वालियर के प्रसिद्ध गायक बड़े ख्यालों में पहले बेहेलावे यानी आलाप के सदृश तान लेते हैं । इन तानों की लय (गति) फिर धीरे धीरे बढ़ाई जाती है । और उनमें से बराबरी की तान उत्पन्न की जाती है । गायक उन तानों को बढ़त कहते हैं जो एक एक दो दो नये स्वर लेते हुए छोटे स्वर समुदायों से रची जाती हैं । प्रथम तानें लय के अनुसार गाई जाती हैं । बढ़त के बाद फिर बोल तान, गमक तान और फिरत का प्रयोग करते हैं । बोल तान में चीज़ के बोलों के लय में उत्तम प्रकार से बैठाये हुए भाग गाये जाते हैं । कहा जाता है कि यह प्रकार ध्रुवपदियों का अनुकरण है । फिरत में पहले निश्चित स्वरसंख्या रहती

हैं। और उन तानों का उठाव तथा समाप्ति निश्चित स्थानों पर रहती है। फिरत की अन्तिम स्थिति उसे लय और ताल से स्वतन्त्र रखना है। उसमें भी दो बातों की अपेक्षा रहती है। एक मधुर रचना और दूसरी स्थायी के प्रारम्भ से उसका उत्तम योग।

छोटे ख्यालों की गति चपल होती है; इसलिए उनकी तानें भी जल्द होती हैं। परन्तु इन तानों के विषय में भी उत्तम गायकों का एक अच्छा काम रहता है। पहले, तान थोड़े स्वरों की रहती है और निश्चित स्थान से शुरू होकर निश्चित स्थान पर समाप्त होती है। फिर धीरे धीरे स्वर-संख्या बढ़ती जाती है और लयमें भिन्न भिन्न रीति से जान बूझकर फरक किया जाता है। प्रचार में छोटे ख्यालों में भी बोल तान लेते हैं। बोल तान अच्छी तरह से लेना बड़ी कुशलता का काम है। उत्तम पदच्छेद करना, उन्हें उत्तम स्वरों में बिठाना, उन तानों से पुनः स्थायी को उत्तम रीति से जोड़कर इस सब प्रकार को सुसंगत और मनोहर बनाना, इत्यादि बातें बहुत अभ्यास से सधनी हैं। असली मर्म यही है कि तानों के स्वर गगन-नियमों के अनुसार होना चाहिये और वे श्रोताओं को स्पष्ट रूप से दिखाई देना चाहिये। इसके अतिरिक्त गायक को इस बात की सावधानी रखना आवश्यक है कि चीज़ के भाव से तानें सुसंगत हों।

उत्तर हिंदुस्थानी संगीत के गीत.

उत्तर हिंदुस्थान के गायक निम्नलिखित प्रकारों के गीत गाते हैं:—
ध्रुवपद, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, गज़ल, होगी, तगाना, चतरंग, सरगम इत्यादि। महाराष्ट्र भी संगीत की दृष्टिसे उत्तर हिंदुस्थान में गिना जाता है। अतः यह सब गीत यहाँ के गायक गाते हैं। इन गीतों का थोड़ा थोड़ा वर्णन हम यहाँ दे रहे हैं।

ध्रुवपद.

भावभट्ट पंडित ने अपने अनूप संगीत रत्नाकर में ध्रुवपद की व्याख्या इस प्रकार की है:—

गीर्वाणमध्यदेशीयभाषासाहित्यराजितम् ।
द्विचतुर्वाक्यसंपन्नं नरनारीकथाश्रयम् ॥

श्रृंगाररसभावाद्यं रागालापपदात्मकम् ।
 पादांतानुप्रासयुक्तं पादांतयुगलं च वा ॥
 प्रतिपादं यत्र बद्धमेवं पादचतुष्टयम् ।
 उद्ग्राहध्रुवकाभोगांतरं ध्रुवपदं स्मृतम् ॥

ध्रुवपद का यह अच्छा वर्णन है । आज कल संस्कृत ध्रुवपद कहीं नहीं सुनाई देते । यदि कोई नयं रचकर गाना चाहें तो अवश्य गा सकता है । उसमें कोई हर्ज नहीं है । प्रचार में अधिकतर ध्रुवपद हिंदी, उर्दू तथा ब्रजभाषा में होते हैं । यद्यपि यह आज निश्चित रूपसे नहीं कह सकते कि ध्रुवपद का गायन कब से शुरू हुआ, तो भी इस बात के लिये ऐतिहासिक आधार है कि ध्रुवपद पाँच सौ वर्ष से लोकप्रिय है । अकबर बादशाह के दरबार के सब सुप्रसिद्ध गायक ध्रुवपदिये यानी ध्रुवपद गाने वाले थे । उन सबों में तानसेन एक अपूर्व गायक-रत्न हो गया । तानसेन वृंदावन के हरिदास स्वामी डागुर का शिष्य था । हरिदास स्वामी तथा नायक गोपाल, नायक वैजू, मियाँ तानसेन, चिंतामणि मिश्र इत्यादि गायकों के ध्रुवपद आज भी हम सुनते हैं । तानसेन के वंशज वज़ीर खाँ और महम्मद अली खाँ आज रामपूर में नौकर हैं । उन्हें अपने परंपरा के सैंकड़ों ध्रुवपद याद हैं ।

गत शताब्दि के प्रारम्भ तक ध्रुवपद गायन बहुत ही लोकप्रिय था । आज भी वह शुद्ध और आदर-योग्य ही माना जाता है; परन्तु गत सौ डेढ़ सौ सालों में ख्यालों का गायन अधिक लोकप्रिय हो रहा है; इस कारण ध्रुवपद गायन पीछे हट रहा है । इस पुस्तक के संपादक की प्रबल इच्छा है कि ध्रुवपद गायन का पुनः प्रचार हो और वह ख्याल गायन के समान लोकप्रिय हो जाय ।

ध्रुवपद, ख्याल की अपेक्षा अधिक विस्तृत रहता है । उसके स्थायी, अंतरा, संचारी, और आभोग ऐसे चार भाग रहते हैं । कुछ ध्रुवपदों को स्थायी और अन्तरा ऐसे दोही भाग रहते हैं । प्राचीन प्रसिद्ध ध्रुवपदों को चारों भाग रहते थे, और हर एक भाग को तीन तीन चार चार चरण रहते थे । 'संगीत कल्पद्रुम' में हम हजारों प्राचीन ध्रुवपद देखते हैं; परन्तु स्वरताललिपि में न लिखे हुए होने से वे नष्टप्राय हो बैठे हैं । जो घरानेवाले गायक अभी जीवित हैं उन्हें इस संग्रह में से अनेक गीत आते हैं; परन्तु वे गायक अशिक्षित होते हैं, इस लिये उनके गीतों में स्वर और

शब्द बहुत झट्ट हुए मिलते हैं। ध्रुवपद गान को हिंदुस्थान का जोरदार और मर्दानी गायन कहते हैं। उस में वीर, शृंगार और शांत यह रस प्रधान रहते हैं। उसकी भाषा भी उच्च प्रतीकी होती है। ध्रुवपद अधिकतर चौताल, सूलफाक, झंपा, तीव्रा, ब्रह्म, रुद्र इत्यादि तालों में गाये जाते हैं। ध्रुवपद गायकों को कलावंत की संज्ञा दी जाती है। इन कलावंतों के खंडार, नोहार, डागुर और गोबरहार ऐसे भेद उनके वाणी के अनुसार किये जाते थे। इन वाणियों के विषय में अभी कुछ निश्चित मत नहीं दिया जा सकता। तथापि बहुत से विद्वानों का मत है कि प्राचीन काल में शुद्धा, भिन्ना, वेसरा, गौड़ी, साधारणी इत्यादि जो गीति यानी गाने की भिन्न भिन्न रीति प्रसिद्ध थी, उन्हीं से वाणियों की उत्पत्ति हुई। हर एक घराने के गायक, अपने पूर्वजों के वाणी के गीतों का अभ्यास करते थे। प्राचीन गीतियों का वर्णन रत्नाकर में इस प्रकार है:—

गीतयः पंच शुद्धाद्या भिन्ना गौड़ी च वेसरा ।
 साधारणीति शुद्धा स्यादवक्रललितैः स्वरैः ॥
 भिन्ना सूक्ष्मैः स्वरैर्वर्कैर्मधुरैर्मर्मैर्युता ।
 गाढैस्त्रिस्थानगमकैरुहाटीललितैः स्वरैः ॥
 अखंडितस्थितिः स्थानत्रये गौड़ी मता सताम् ।
 उहाटी कंषितैर्मर्द्रैर्द्रुतद्रुततरैः स्वरैः ।
 हकारोकारयोगेन हृन्न्यस्ते चिबुके भवेत् ।
 वेगवद्भिः स्वरैर्वर्णचतुष्केऽप्यतिरक्तितः ॥
 वेगस्वरा रागगीतिर्वेसरा चोच्यते बुधैः ॥

आज कल वाणी का रहस्य जानने वाले गायक शायद ही मिलेंगे। यह कह सकते हैं कि ख्याल गायन लोकप्रिय होने से पुरानी नई सब ही वाणी नष्ट हुई। ध्रुवपद में तानों का प्रयोग नहीं होता। उसमें दुगुन, चौगुन, बोलतान, गमक इत्यादि प्रकार हो सकते हैं। रामपुर के तानसेन परम्परा के ध्रुवपद गायक तो कहते हैं कि प्राचीन काल में दुगुन, चौगुन, बोलतान इत्यादि प्रकार ध्रुवपदों में निषिद्ध माने जाते थे। केवल धमार गीत में (धमार नामक ताल में गाये जाने वाले होरी नामक गीत में) यह सब प्रकार उपयोग में लाये जाते थे। परन्तु आज कल ध्रुवपद में भी दुगुन, चौगुन इत्यादि प्रकार होते हैं।

ख्याल.

ख्याल फ़ारसी भाषा का एक शब्द है। उसका अर्थ विचार या कल्पना करते हैं। कोई इसका अर्थ स्वेच्छाचार भी करते हैं। प्राचीन सभ्य समाज में ख्यालों का स्थान ऊँचा नहीं था। बड़े बड़े गुणी लोग सभ्य समाज में ध्रुवपद गाते थे। कहा जाता है कि ख्यालों का गायन पहले जौनपुर के सुलतान हुसेन शर्की ने इस उच्च स्थिती को लाकर लोक-प्रिय किया। मुगल बादशाह मुहम्मदशाह (सन् १७१९) के दरबार में सदारंग और अदारंग नाम के गुणी थे। उन्होंने हज़ारों ख्याल रच कर अपने शिष्यों को सिखाये। आज हिंदुस्थान में उन्हीं के ख्याल सर्वत्र गाए जाते हैं। यहाँ एक आश्चर्यजनक बात कहना ठीक होगा। यद्यपि सदारंग अदारंग ने अपने शिष्यों को हज़ारों ख्याल सिखाए, तो भी स्वयम् अपने वंशजों को बिलकुल नहीं सिखाये, न गाने दिए। रामपुर के वज़ीर खाँ सदारंग ही के (सदारंग का नाम न्यामत खाँ था) वंशज हैं। वे ख्याल नहीं गाते: वं हमेशा ध्रुवपद ही गाते हैं। रामपुर में मुहम्मद अली खाँ नामक तानसेन के वंशज हैं, वे भी ध्रुवपद ही गाते हैं। ऐसा माना जाता है कि गत सौ डेढ़ सौ वर्षों में गायन का जो प्रचार हुआ है, वह, सदारंग अदारंग के शिष्यानुशिष्यों ने किया है। ग्वालियर के हद्दू खाँ हस्मू खाँ और नत्थू खाँ के पूर्वज नत्थन पीरबख्श अपनी परम्परा सदारंग अदारंग तक पहुँचाते थे। गत दो सौ वर्षों में सदारंग अदारंग के अतिरिक्त दूसरे अनेक ख्याल गायक हो गये हैं और उनके बहुत से ख्याल प्रसिद्ध हैं।

कव्वाल वाणी के ख्यालिया अपनी परम्परा हज़रत अमीर खुशक तक पहुँचाते हैं। लोग समझते हैं कि आज कल प्रचार में जो जल्द लय के ख्याल हैं उनमें से बहुत बड़ा भाग कव्वालों ने लोकप्रिय किया है। स्वरलिपि के अभाव से जिस प्रकार पुराने ध्रुवपदों में उलझन मची हुई दिखाई देती है उसी प्रकार ख्यालों में भी दिखाई देती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज अपने समाज में ध्रुवपद और ख्याल का गायन उच्च माना जाता है। ख्यालों में शृंगार रस का प्रयोग अधिक होता है। ध्रुवपद की गंभीरता, शब्दविचित्रता और शुद्धता उसमें बहुत कम रहती है। ख्याल में अधिकतर स्थायी और अन्तरा ऐसे दो ही भाग रहते हैं। ख्याल गायक अधिकतर धीमा (त्रिताल), तिलवाड़ा (विलम्बित त्रिताल), एकताल, झूमरा, आड़ा चौताल इत्यादि ताल उपयोग में लाते हैं। ख्यालों में जल्द तान, गिट्ठकड़ी इत्यादि प्रकार हैं और वे शोभा भी देते हैं।

टप्पा.

कहा जाता है कि टप्पा एक हिन्दी शब्द है। टप्पा ख्याल और ध्रुवपद से भी संक्षिप्त होता है। अर्थात् उसके गीतमें शब्द बहुत थोड़े होते हैं। टप्पा में स्थायी और अन्तरा ऐसे दोही भाग अथवा तुक होते हैं। टप्पा गाने वाले वही ताल उपयोग में लाते हैं जो ख्यालिया इस्तेमाल करते हैं। टप्पा की प्रकृति क्षुद्र है। उसमें हमेशा श्रृंगार रस रहता है। सभी रागों में टप्पा नहीं गाया जाता। टप्पा अधिकतर काफ़ी, झिझोटी, पीलू, बरवा, मांझ, भैरवी, खमाज इत्यादि रागों में, गाया जाता है। ऐसे रागों में गायक ध्रुवपद शायद ही गाते हैं। ऐसा मानते हैं, कि टप्पा का गायन सभ्य समाज में शौरीमियाँ ने पचलित किया। टप्पा में अधिकतर पंजाबी भाषा के शब्द होते हैं। इस लिये कुछ लोगों का अनुमान है कि इस गीत का उगमस्थान पंजाब है। टप्पा गाने का ढंग ख्याल ध्रुवपदों से बिल्कुल भिन्न रहता है। उसकी तान छोटे छोटे टुकड़ों की बनी हुई होती है। टप्पा की गति हमेशा बहुत चपल होती है। कुछ विद्वानों का मत है कि प्राचीन वेसरा गीति से इस गान की उत्पत्ति हुई है। पूर्वकाल में ध्रुवपद, ख्याल और टप्पा गाने वाले भिन्न भिन्न घराने के होते थे। क्यों कि इन तीन प्रकारों के लिये गला भिन्न भिन्न रीति से तयार करना पड़ता था। यह कोई भी मानेगा कि गांभीर्यपरिप्लुत गीत गाने वाले के लिये क्षुद्र प्रकृति का और चपलगति का गायन बहुत कठिन पड़ेगा; परन्तु आज हमारे यहाँ एकही गायक ध्रुवपद, टप्पा, ख्याल, ठुमरी, गज़ल इत्यादि सब गीत गाने के लिये तयार हो जाता है।

ठुमरी.

यह भी एक क्षुद्र गीत माना जाता है। इस का प्रधान रस श्रृंगार होता है। ठुमरी की शब्दरचना बिल्कुल संक्षिप्त होती है। वह अधिकतर पंजाबी ताल में गायी जाती है। पंजाबी त्रिताल ही का एक प्रकार है। उसकी गति बहुत जल्द नहीं होती। जिन रागों में टप्पा गाया जाता है उन्हीं में बहुशः ठुमरी गाई जाती है। उच्च प्रती के गायक ठुमरी क्षुद्र समझते हैं। बड़े मैफ़िलों में प्रसिद्ध गायक ठुमरी नहीं गाते; उत्तर की संगीत व्यवसायी स्त्रियाँ ही ठुमरी गाती हैं। ठुमरी का गायन क्षुद्र हो या न हो वह निःसंदेह बहुत लोकप्रिय है। संयुक्त प्रांत में ठुमरी बहुत उत्तम रीति से गाई जाती है। लखनऊ और बनारस यह दो शहर ठुमरी

के लिए प्रसिद्ध हैं। ठुमरी में कई बार राग के शुद्धता की ओर ध्यान नहीं देते। कोई कोई गायक तो जान बूझ कर भिन्न भिन्न रागों को अपने गायन में मिलाते हैं और वह मिश्रण सुन्दर कर दिखलाने का प्रयत्न करते हैं। महाराष्ट्र में ठुमरी के विषय में बहुत कम आदर या प्रेम दिखाई देता है। वहाँ ख्याल ध्रुवपदियों का गायन अधिक पसन्द किया जाता है। महाराष्ट्र में राग और उसके शास्त्र की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है। शायद इसी लिए ठुमरी का महत्त्व नहीं है। ठुमरी का गायन किसी प्रकार घृणित नहीं है। इतना ही है कि ठुमरी उत्तम रीति से गाना चाहिए।

होरी.

यह गीत बहुशः ध्रुवपद गाने वाले कलावंत ही गाते हैं। इस गीत के गाते समय जो ताल उपयोग में लाया जाता है उसे धमार कहते हैं। होरी में अधिकतर कृष्ण और गोपियों के फाल्गुन मास के लीलाओं का वर्णन होता है। होरी की शब्दरचना उच्च प्रती की नहीं होती। उसे धमार नाम से भी पहचानते हैं। धमार में ख्याल के सदृश तान नहीं ले सकते। उसमें ठाय, दुगुन, चौगुन, बोलतान, गमक इत्यादि प्रकार चलते हैं। धमार गायन कठिन समझा जाता है। उसके लिए आवाज़ बड़ी और मधुर चाहिए, तथा उत्तम स्वरज्ञान और रागज्ञान चाहिए। ख्याल गायक भी कभी कभी होरी गाते हैं। उस समय वे दीपचन्दी नामक ताल का उपयोग करते हैं। ख्याल गायक धमार अच्छी प्रकार से नहीं गा सकते।

गज़ल.

गज़ल गीत अधिकतर उर्दू अथवा फ़ारसी भाषा में होते हैं। वे मुख्यतः पस्तु और दीपचन्दी तालों में गाये जाते हैं। मात्रा और तालियों के बारे में पस्तु रूपक ताल के सदृश है। गज़लों में प्रधान रस शृंगार ही होता है। आशिक और माशूक के प्रेमोद्गार इन गीतों में दिखाई देते हैं। हिन्दी और उर्दू भाषाभाषियों को यह गीत बहुत ही पसन्द पड़ते हैं। कुछ गज़लों की कल्पनाएँ बहुत गम्भीर और उदात्त होती हैं। गज़लों की शब्दरचना बहुत मनोहर होती है। इस गीत में बहुत से चरण रहते हैं और उन्हें अन्तरे कहते हैं। यह सब अन्तरे एक से गाए जाते हैं। वे ही गायक उत्तम गज़ल गा सकते हैं जिन्हें उत्तम भाषाज्ञान है। गायन की

दृष्टि से गज़ल श्रेष्ठ नहीं माना जाता। यह गीत अधिकतर अर्थप्रधान होते हैं। गज़ल बहुशः उन्ही रागों में गाई जाती है जिनमें टप्पा और ठुमरी गाये जाते हैं। उत्तर हिंदुस्थान में इन गीतों का प्रचार अधिक है।

तराना.

तराने बहुशः ख्याल गायक गाते हैं। वे भिन्न भिन्न तालों में होते हैं। उनमें शब्दों का अधिक महत्त्व नहीं रहता। ना, ना, ता, रे, दानि, ओदानि, तानोंम, यलली, यलुम्भ, तदरेदानी इत्यादि शब्द तराने में दिखाई देते हैं। तराने में सब आनन्द राग और लय का रहता है। कोई उद्योगी पण्डित उपर्युक्त शब्दों में से अर्थ निकालने का प्रयत्न करते हैं परन्तु बहुत लोगों का मत है कि यह शब्द उच्चार में सहूलियत करने के लिए रखे हैं। कभी कभी तरानों में मृदङ्ग के शब्द या फ़ारसी भाषा के एक दो शेर मिलाए हुए मिलते हैं। तरानों का गायन सारे देश में मनोरंजक माना जाता है। बहादुर हुसेन खां, तानरस खां और नत्थू खां के अनेक तराने प्रसिद्ध हैं।

चतुरंग.

इस गीत में चार अङ्ग अथवा भाग रहते हैं; अतः इसे चतुरङ्ग कहते हैं। इन चार अंगों के नाम इस प्रकार हैं (१) ख्याल, (२) तराना, (३) सरगम, (४) त्रिबट। पहले भाग में गीत के शब्द रहते हैं। दूसरे में तराने के शब्द रहते हैं। तीसरे में जिस राग का चतुरंग है उस राग की एक सरगम रहती है। अन्तिम भाग म मृदंग के शब्द, याने एक छोटी सी परन रहती है। चतुरंग प्राचीन गीत नहीं है। वह ख्याल के सदृश गाया जाता है।

सरगम.

इस मालिका में अनेक सरगम दिए हुए हैं, अतः उनके विषय में अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। किसी राग के स्वरों की मनोरंजक, तालबद्ध रचना को सरगम कहते हैं। सरगम भिन्न भिन्न तालों में होते हैं। सरगम का मुख्य उद्देश विद्यार्थियों को स्वरज्ञान और राग-ज्ञान करना है।

वाग्गयकार.

प्राचीन काल में उस संगीत विद्वान् को, जिसे स्वररचना और पद्य-रचना इन दोनों का ज्ञान था, वाग्गेयकार की संज्ञा दी जाती थी। पाश्चात्य

पंडित ऐसे विद्वान् को Composer कहते हैं । अर्थात् वाग्गेयकार को साहित्य और संगीत इन दोनों का ज्ञान आवश्यक है । इस शब्द की व्युत्पत्ति य़ै है :—वाक् और गेय का करने वाला वाग्गेयकार । वाक् याने पद्यरचना और गेय का अर्थ स्वररचना है । इन्हीं को कोई मातु और धातु कहत ह ।

धातुमातुसमायुक्तं गीतमित्युच्यते बुधैः ।

तत्र नादात्मको धातुर्मातुरक्षरसंभवः ॥

रागतरंगिण्याम् ।

वाङ् मातुरुच्यते गेयं धातुरित्यभिधीयते ।

वाचं गेयं च कुरुते यः स वाग्गेयकारकः ।

शब्दानुशासनज्ञानमभिधानप्रवीणता ।

छन्दः प्रभेदवेदित्वमलंकारेषु कौशलम् ॥

रसभावपरिज्ञानं देशस्थितिषु चातुरी ।

अशेषभाषाविज्ञानं कलाशास्त्रेषु कौशलम् ॥

तूर्यत्रितयचातुर्यं हृद्यशारीरशालिता ।

लयतालकलाज्ञानं विवेकोऽनेककाकुषु ॥

प्रभूतप्रतिभोद्भेदभाक्त्वं सुभगगेयता ।

देशी रागेष्वभिज्ञत्वं वाक्पटुत्वं सभाजये ॥

रागद्वेषपरित्यागः सार्द्रत्वमुचितज्ञता ।

अनुच्छिष्टोक्तिनिर्वधो नूतधातुविनिर्मितिः ॥

परचित्तपरिज्ञानं प्रभन्धेषुप्रगल्भता ।

द्रुतगीतविनिर्माणं पदांतरविदग्धता ॥

त्रिस्थानगमकप्रौढिर्विविधालप्तिनैपुणम् ।

अवधानं गुणैरेभिर्वरो वाग्गेयकारकः ॥

रत्नाकरे ।

भावार्थः— वाग्गेयकार में निम्नलिखित गुण होना चाहिएः—

१. शब्दानुशासन ज्ञान—व्याकरण शास्त्रज्ञान ।
२. अभिधान प्रवीणता—अमरकोशादि ग्रन्थों का ज्ञान ।
३. छन्दः प्रभेद वेदित्व—सब प्रकार के छन्दों का ज्ञान ।
४. अलंकार कौशल्य—साहित्य शास्त्र में बतलाए हुए उपमा-दिक अलंकारों का ज्ञान ।
५. रसभाव परिज्ञान—उसी शास्त्र में वर्णन किए हुए शृंगारा-दिक रसों का और विभावादिक भावों का उत्तम ज्ञान ।
६. देश स्थिति ज्ञान—भिन्न भिन्न देशों के रीति रिवाज का ज्ञान ।
७. अशेष भाषा ज्ञान—देश के सब भाषाओं का ज्ञान ।
८. कला शास्त्र कौशल—संगीतादि शास्त्रों में प्रवीणता ।
९. तूर्य त्रितय चातुर्य—गीत, वाद्य, और नृत्य इनमें चातुर्य ।
१०. हृद्य शारीर शालिता—जिसे हृद्य याने मनोहर शारीर प्राप्त हुआ है वह हृद्य शारीर । अधिक मेहनत या अभ्यास न करते हुए जिसे रागों की अभिव्यक्ति (प्रदर्शन या व्यक्त करना) सहज में आता है उसे, कहा जाता है कि उत्तम शारीर प्राप्त हुआ है । शारीर पारिभाषिक शब्द है ।
११. लय ताल कला ज्ञान—ताल लय और तालाध्याय में बतलाये हुए कलाओं का ज्ञान ।
१२. अनेक काकु ज्ञान—भिन्न भिन्न स्वरभेदों का ज्ञान । काकु भी एक पारिभाषिक शब्द है । प्राचीन संगीत में स्वर काकु, राग काकु, देश काकु, क्षेत्र काकु, अन्यराग काकु और यंत्र काकु ऐसे छः काकु भेद बतलाये हैं । कल्लिनाथ पंडित ने “काकुर्ध्वनेर्विकारः” ऐसी व्याख्या की है ।
१३. प्रभूत प्रतिभा भेद भाक्त्व—अपूर्व प्रतिभावान् बुद्धि (ऐसी बुद्धि अथवा प्रज्ञा कि जिसे नये नये प्रकार सूझते हैं ।)
१४. सुभग गेयता—सुखदायक गायन करने की शक्ति ।
१५. देशी राग ज्ञान—देशी रागों का ज्ञान ।
१६. वाक्पटुत्व—सभा में विजय प्राप्त करने योग्य वक्त्रत्व ।

१७. रागद्वेष परित्याग—राग द्वेष का अभाव ।
१८. सार्द्रत्व—सरसता ।
१९. उचितज्ञता—कौन से स्थान पर कौन सी चीज़ योग्य होगी—योग्यायोग्यता का ज्ञान ।
२०. अनुच्छिद्योक्तिनिर्बन्धः—स्वतंत्र रचना करने की शक्ति ।
२१. नूतनधातुविनिर्मितिज्ञान—नई नई स्वररचना करने का ज्ञान ।
२२. परचित्तपरिज्ञान—दूसरे मनुष्य के मन का भाव जानने की शक्ति ।
२३. प्रबन्धप्रगल्भता—प्रबन्धों का उत्तम ज्ञान ।
२४. द्रुतगीतविनिर्मिति—शीघ्र कवित्व ।
२५. पदांतरविदग्धता—भिन्न भिन्न गीतों के छायाओं का अनुकरण करने की शक्ति ।
२६. त्रिस्थान गमक प्रौढि—तीनों स्थानों में गमक लेने की शक्ति ।
२७. आलप्ति नैपुण—रागालप्ति और रूपकालप्ति का ज्ञान ।
२८. अवधान—चित्तकी एकाग्रता.

यह सब गुण जिसमें विद्यमान हैं वह उत्तम वाग्गेयकार कहा जाता था । मध्यम और अधम वाग्गेयकार का वर्णन इस प्रकार है :—

विदधानोऽधिकं धातुं मातुमंदस्तु मध्यमः ।

धातुमातुविदप्रौढः प्रबन्धेष्वपि मध्यमः ॥

रम्यमातुविनिर्माताऽप्यधमो मंदधातुकृत् ।

पंडित ।

जिसे गायनशास्त्र का पूर्ण ज्ञान है और गायनकला का साधारण ज्ञान है, उसे पंडित कहते हैं ।

दक्षिणोत्तर स्वर-तुलना ।

इस समय अपने देश में मुख्य दो संगीत पद्धति हैं । एक अपनी उत्तर की हिंदुस्थानी पद्धति, और दूसरी दक्षिण की कर्नाटकी पद्धति । इन दो पद्धतियों का बहुत सी बातों में साम्य है । अतः संभव है कि कुछ समय बीतने पर इन दोनों का बहुतांश मिश्रण हो जाय । यदि

ऐसा मिश्रण उत्तम अधिकारी विद्वानों की सहायता से किया जाय तो दोनों पद्धतियों का हित ही होगा ।

आज कल उत्तर पद्धति में बारह स्वर मुख्य मानते हैं । और उन में से थाट तथा थाटों में से राग उत्पन्न करते हैं । दक्षिण पद्धति में भी बिलकुल यही क्रम है । विद्यार्थियों को दोनों में एक मुख्य भेद दिखाई देगा । वह यह कि दक्षिण पद्धति के शुद्ध स्वरस्थानों से कहीं कहीं भिन्न हैं । उसी प्रकार दोनों पद्धतियों के स्वर नामों में भी थोड़ा फरक है । निम्नलिखित स्वर तुलना से यह बात ध्यान में आएगी :—

हिंदुस्थानी स्वरनाम दक्षिण के कर्नाटकी स्वरनाम

- | | |
|---------------------------------|----------------------------|
| (१) सा (शुद्ध)..... | सा (शुद्ध) |
| (२) कोमल री..... | शुद्ध री |
| (३) तीव्र अथवा शुद्ध री..... | चतुःश्रुति री अथवा शुद्ध ग |
| (४) कोमल ग..... | षट्श्रुति री अथवा साधारण ग |
| (५) तीव्र अथवा शुद्ध ग..... | अन्तर ग |
| (६) शुद्ध अथवा कोमल म..... | शुद्ध म |
| (७) तीव्र म..... | प्रति म |
| (८) प (शुद्ध)..... | प (शुद्ध) |
| (९) कोमल ध..... | शुद्ध ध |
| (१०) शुद्ध अथवा तीव्र ध..... | चतुःश्रुति ध अथवा शुद्ध नि |
| (११) कोमल नि..... | षट् श्रुति ध अथवा कैशिक नि |
| (१२) तीव्र अथवा शुद्ध नि..... | काकली नि |

दक्षिण की तालपद्धति.

दक्षिण की तालपद्धति अपने पद्धति से बहुत कुछ भिन्न है, उस पद्धति में मुख्य सात ताल मानते हैं, और हर एक ताल की पांच पांच जाति मानते हैं । मुख्य सात तालों के नाम इस प्रकार हैं :—

१. ध्रुव, २. मठ, ३. रूपक, ४. झंप, ५. त्रिपुट, ६. अठ, ७. एकताल ।

हर एक ताल की पांच जाति उनके मात्राओं के साथ इस प्रकार हैं :—

ताल नं०.	चतस्र जाति	तिस्र जाति.	मिश्र जाति.	खंड जाति.	संकीर्ण जाति.
१. ध्रुवताल.	४.२.४.४	३.२.३.३	७.२.७.७	५.२.५.५	९.२.९.९
२. मठताल.	४.२.४	३.२.३	७.२.७	५.२.५	९.२.९
३. रूपकताल.	४.२	३.२	७.२	५.२	९.२
४. झम्पताल.	४.१.२	३.१.२	७.१.२	५.१.२	९.१.२
५. त्रिपुटताल.	४.२.२	३.२.२	७.२.२	५.२.२	९.२.२
६. अठताल.	४.४.२.२	३.३.२.२	७.७.२.२	५.५.२.२	९.९.२.२
७. एकताल.	४.	३.	७.	५.	९.

दक्षिण पद्धति में तालों की मात्राएँ और थाप लिखने के लिए निम्न-लिखित चिन्हों का उपयोग करते हैं:—

- विराम—मात्रा १
 ०—द्रुत—मात्रा २
 ।—लघु—मात्रा ४
 5—गुरु—मात्रा ८
 ३—प्लुत—मात्रा १२
 +—काकपद—मात्रा १६

इन चिन्हों की सहायता से दक्षिण के विद्वान् अपने मुख्य सात ताल इस प्रकार लिखते हैं:—

- (१) ध्रुवताल । ० ॥ इसमें तीन लघु और एक द्रुत् मिलकर १४ मात्रा हैं ।
 (२) मठ । ० । इसमें दो लघु और एक द्रुत मिलकर १० मात्रा हैं ।
 (३) रूपक । ० इसमें एक लघु और एक द्रुत मिलकर ६ मात्रा हैं ।
 (४) झम्प । ० इसमें एक लघु, विराम और एक द्रुत मिलकर ७ मात्रा हैं ।
 (५) त्रिपुट । ० ० इसमें एक लघु और दो द्रुत मिलकर ८ मात्रा हैं ।
 (६) अठ ॥ ० ० इसमें दो लघु और दो द्रुत मिलकर १२ मात्रा हैं ।

(७) एकताल । इसमें एक लघु मिलकर ४ मात्रा हैं ।

उपर्युक्त पहले ध्रुवताल में चार चिह्न हैं, और उसमें लघु नाम के चिह्न का अर्थ ४ मात्रा माना है । जितने चिह्न उतनी ही ताल की थाप समझते हैं, और उतनेही मात्रा विभाग (बार) मानते हैं । इन चिह्नों में से लघुका अर्थताल वैचित्र्य के लिए बदल सकते हैं । लघु समयानुसार ४, ३, ५, ७, ९ मात्रा का कर सकते हैं, और उसी के परिवर्तन से एक एक ताल की चतस्र, तिस्र, खंड, मिश्र, और संकीर्ण ऐसी पांच जाति होती है । ताल की सम हमेशा पहले मात्रा पर रहती है । उदाहरणार्थ, हम ध्रुवताल लें जिसके चिह्न ॥०॥ इस प्रकार हैं । इसमें लघु, द्रुत, लघु, लघु ऐसे चार चिह्न हैं अतः चार थाप और विभाग (बार) होंगे । हिन्दुस्थानी रीति से यह ताल इस प्रकार लिख सकते हैं:—

१ २ ३ ४ । ५ ६ । ७ ८ ९ १० । ११ १२ १३ १४

× २ ३ ४

लघु का मूल्य यदि तीन मानें तो यह तिस्र जाति ध्रुव होगा । जैसा

१ २ ३ । ४ ५ । ६ ७ ८ । ९ १० ११

× २ ३ ४

जाति बदलने पर भी चिह्न ज्यों के त्यों रहने हैं, क्योंकि ताल नाम उसके चिह्नों पर निर्भर है ।

उत्तर के और दक्षिण के संगीत ग्रंथ.

अपने देश में प्राचीन संगीत शास्त्र पर गियासतों के पुस्तकालयों में बहुत से ग्रन्थ मिल सकते हैं । तज्जोर, म्हेसूर, त्रिवेन्द्रम् और बिकानेर में संगीत ग्रन्थों का बहुत अच्छा संग्रह है ।

हमारा मत है कि यदि हो सके तो हिन्दुस्थानी संगीतपद्धति के विद्यार्थी निम्नलिखित ग्रन्थों का अभ्यास करें ।

ग्रन्थ	ग्रन्थकार
१. रागतरंगिणी.....	लोचन
२. संगीतपारिजातः.....	अहोबल
३. हृदयकौतुकम्.....	हृदयनारायण देव
४. हृदयप्रकाशः.....	" "

५.	रागतत्त्वविबोधः		श्रानवास
६.	सद्भागचन्द्रोदयः		पुण्डरीक विट्ठल
७.	रागमाला		" "
८.	रागमञ्जरी		" "
९.	स्वरमेलकलानिधिः		रामामात्य
१०.	चतुर्दण्डिप्रकाशिका		व्यङ्कटमखी
११.	संगीतसारामृतम्		तुलजेन्द्र भोंसले
१२.	रागलक्षणम्		" "
१३.	अनूपविलासः		भावभट्ट
१४.	अनूपसंगीतरत्नाकरः		"
१५.	अनूपकुशः		"
१६.	रागविबोधः		सोमनाथ
१७.	अष्टोत्तरशतताललक्षणम्		"

यह सब ग्रन्थ अब छपकर प्रसिद्ध हुए हैं। उनमें से स्वरमेलकलानिधि, चतुर्दण्डिप्रकाशिका, संगीतसारामृतम्, रागलक्षण, रागविबोध, और अष्टोत्तरशतताललक्षणम्, यह ग्रन्थ कर्नाटकी पद्धति में आधार ग्रन्थ माने गये हैं।

राग शुद्ध कल्याण.

यह राग कल्याण थाट में से उत्पन्न होता है। इसके आरोह में मध्यम और निषाद वर्ज्य माने गये हैं। इसकी जाति औडुव संपूर्ण है। वादी स्वर गांधार है और संवादी धैवत है। इस राग की साधारण प्रकृति भूपाली राग के सदृश दिखाई देती है। इसका समय रात्रि का पहला प्रहर मानते हैं। प्रत्यक्ष व्यवहार में मध्यम और निषाद कई बार आरोह और अवरोह दोनों समय वर्ज्य किए हुए मिलते हैं। इसके लिए भी ग्रन्थाधार है। इस राग में मन्द्रस्थान का प्रयोग भूपाली की अपेक्षा अधिक होता है। यद्यपि इस राग के अवरोह में तीव्र मध्यम ले सकते हैं तो भी कुशल गायक वह स्वर पंचम से गांधार की ओर आते समय मीड में दिखाते हैं। जल्द तानों में तो यह स्वर बिलकुल छोड़ देते हैं। केवल निषाद अवरोह में कई बार लिया हुआ दिखाई देता है, और इसमें भूपाली की भिन्नता स्पष्ट दिखाई देती है। इस राग में पंचम

और ऋषभ का मिलाप बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। कुछ ख्याल गायक सहूलियत के लिए तानों के आरोह तथा अवरोह में थोड़े प्रमाण पर म और नि का प्रयोग करते हैं परन्तु यह स्वर विलकुल गौण रखने का वे प्रयत्न करते हैं, इसलिए उनके गाने में विसंगति (बेमेल) नहीं दिखाई देती। जान बूझकर विवादी स्वर का प्रयोग करने के लिए शास्त्रों में “प्रच्छादनीय” “तानक्रियात्मकः” इत्यादि आधार हैं। इस राग में धैवत भूपाली की अपेक्षा कम रखने में सावधानी से चलना पड़ता है।

राग कामोद.

कामोद कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इस राग में दोनों मध्यमों का प्रयोग करते हैं। छायानट के सट्ठश तीव्र मध्यम केवल आरोह में लिया जाता है। वादी स्वर पंचम और संवादी ऋषभ है। समय रात्रि का पहला प्रहर है। ऋषभ से एकदम पंचम पर जाने से कामोद स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगता है। इस राग में हमीर, केदार और छायानट के सट्ठश गांधार और निषाद स्वर वक्र होते हैं। वक्रत्व के इस नियम की ओर ध्यान न देने पर राग का थोड़ा तिरोभाव होता है, परन्तु आविर्भाव करते समय नियम ठीक सम्हाला जाय तो विशेष विसंगति नहीं दिखाई देती। कामोद में गांधार और निषाद स्वर दुर्बल रहते हैं। निषाद को तो बहुत ही अल्पत्व प्राप्त है। अवरोह में कभी कभी कोमल निषाद विवादी मानकर ले सकते हैं।

राग छायानट.

यह राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इसके प्रचार में दोनों मध्यमों का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है। तीव्र मध्यम यदि लेना हो तो केवल आरोह ही में लेते हैं। शुद्ध मध्यम आरोह और अवरोह दोनों में ले सकते हैं। वादी स्वर पंचम और संवादी ऋषभ है। समय रात्रि का पहला प्रहर है। इस राग में गायक पंचम और ऋषभ की संगत बीच बीच में करते हैं। और वह अच्छी भी दिखाई देती है। हमीर और केदार के सट्ठश इस राग में गांधार और निषाद इन दो स्वरों को क्रम से अवरोह में और आरोह में वक्रत्व प्राप्त होता है। इस नियम से जल्द तान लेते समय गायकों को असुविधा होती है। अतः वे इसकी ओर ज़रा ध्यान नहीं देते, परन्तु पुनः राग का आविर्भाव करते

समय वे इस नियम को श्रोताओं के सामने रखते हैं। अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग क्वचित् विवादी मानकर किया हुआ दिखाई देता है।

राग गौडसारंग.

गौडसारंग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। यह राग संपूर्ण है। इस राग में दोनों मध्यमों का प्रयोग सर्व संमत है। कल्याण थाट के दोनों मध्यम लेने वाले दूसरे रागों के सदृश इस राग में भी गांधार और निषाद वक्र होते हैं; परन्तु राग का मुख्य अंग 'गरे मग' इस स्वरसमुदाय पर अवलंबित है, इस लिये वक्रत्व नियम कई बार ढँक जाता है। तथापि बुद्धिमान् श्रोताओं को राग के विस्तृत चाल में वह नियम स्पष्ट रूपसे दिखाई देता है। वादी स्वर गांधार और संवादी धैवत है। तीव्र मध्यम का प्रयोग केवल आरोह में क्षम्य है। अवरोह में क्वचित् कोमल निषाद ले सकते हैं।

राग हिंडोल.

व्यवहार में इस राग को कल्याण थाट से उत्पन्न हुआ मानते हैं। इसमें ऋषभ और पंचम स्वर वर्ज्य हैं, अतः इसकी जाति औडुव-औडुव है। वादी स्वर धैवत और संवादी गांधार है। यह उत्तरांग प्रधान राग है, और इसका समय दिन का पहला प्रहर है। आरोह में निषाद वक्र है। इस राग में निषाद का प्रयोग जितना कम होगा उतना ही राग अधिक स्पष्ट दिखाई देगा। यदि निषाद का प्रयोग अधिक होगा तो सोहनी राग की छाया पड़ने का संभव है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। इस राग में गायक लोग क्वचित् ऋषभ और शुद्ध मध्यम का प्रयोग 'अवरोहेद्रत-गीतो न रक्तिहरः' इस न्याय से कर दिखलाते हैं। उत्तम गायक इस में गमकों का बहुत अच्छा प्रयोग करते हैं।

राग शंकरा.

शंकरा बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। उसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। वादी स्वर गांधार और संवादी निषाद है। कुछ गुणी लोग षड्ज और पंचमको वादी संवादी मान कर समय मध्यरात्रि मानते हैं। शंकरा के दो प्रकार सदा सुनाई देते हैं। एक में ऋषभ और मध्यम दोनों स्वर वर्ज्य करते हैं, और दूसरे में केवल मध्यम वर्ज्य होता है।

दोनों प्रकार सुंदर हैं। ऋषभ आरोह में अल्प रहता है। तिरोभाव करते समय गायक ऋषभ और धैवत का अधिक प्रयोग करके श्रोताओं के मन में कल्याण राग का आभास उत्पन्न करते हैं; तथापि प नि ध, सां नि, यह स्वरसमुदाय और मध्यम का लोप, इन दो लक्षणों से शंकरा झट्ट पहचान सकते हैं। शंकरा का स्वरूप थोड़ा बहुत बिहाग के सदृश है। बिहाग में मध्यम स्पष्ट है, अतः राग-भेद ध्यान में आ जाता है।

राग देशकार.

यह राग विलावल थाट से उत्पन्न होता है। समय दिन का पहला प्रहर है। वादी स्वर धैवत और संवादी गांधार हैं। इस में मध्यम और निषाद वर्ज्य हैं। अतः जाति औडुव है। इस राग में स्थान स्थान पर धैवत दिखाने में बड़ी कुशलता है। यदि यह कृत्य अच्छी तरह से न सध सका तो भूपाली की छाया उत्पन्न होती है। भूपाली पूर्वांग प्रबल और यह उत्तरांग प्रबल है। इस राग की प्रकृति गंभीर है।

राग जयजयवंती.

जयजयवंती खमाज थाट के जन्य रागों में से एक है। यह संपूर्ण राग है। इस में वादी स्वर ऋषभ और संवादी पंचम मानते हैं। समय रात्रि के दूसरे प्रहर का अन्तिम भाग मानते हैं। इस में दोनों गांधार तथा दोनों निषादों का प्रयोग होता है। आरोह में तीव्र ग, नि और अवरोह में कोमल ग, नि लेते हैं। तथापि अवरोह में तीव्र गांधार ले सकते हैं। कोमल गांधार केवल अवरोह में ले सकते हैं। तत्रापि वह दो ऋषभों में जकड़ा हुआ रहता है। प्रचार में इसे सोरठ के अंग का राग मानते हैं। यह मिश्रराग है। इसमें गौड़, विलावल और सोरठ ऐसे तीन राग मिलते हैं। इस राग में मंद्र पंचम और मध्य ऋषभ का मिलाप सुंदर दीखता है। इसे सोरठ से भिन्न रखने में सावधानी से चलना चाहिये। जयजयवंती में ऋषभ पर विशिष्ट रीति से आघात किया जाता है, यह कृत्य ठीक सुनकर सीखना चाहिये।

कुछ मर्मज्ञ कोमल गांधार के अस्तित्व कारण इसे 'परमेल प्रवेशक राग' कहते हैं। परमेल प्रवेशक का अर्थ अगले थाट में ले जाने वाला; तीव्र रि, ध, और ग लेने वाले राग गाने के बाद कोमल गांधार और निषाद लेने वाले रागों का वर्ग आता है। ऐसा मानते हैं कि उस मेल में यह राग-प्रवेश

कराने वाला है। यानी खमाज थाट के राग समाप्त कर के काफी थाट के रागों के प्रारंभ की यह राग सूचना देता है।

राग रामकली.

रामकली राग भैरव थाट से उत्पन्न होता है। उसका साधारण स्वरूप भैरव के सदृश है। समय प्रातःकाल सर्व संमत है। इस राग के दो तीन प्रकार सुने जाते हैं। एक प्रकार में मध्यम और निशाद आरोह में नहीं लेंते। इस प्रकार का शास्त्राधार है परन्तु वह प्रचार में बहुत ही कम दिखाई देता है। दूसरे प्रकार में आरोह और अवरोह संपूर्ण रहता है। परन्तु भैरव का भी आरोहावरोह इसी प्रकार है। अतः श्रोताओं के मन में संदेह उत्पन्न होना संभाव्य है। यहां गुणी लोग एक साधारण नियम इस प्रकार बतलाते हैं कि भैरव राग का मुख्य विस्तार मंद्र और मध्य स्थान में रहना चाहिये तथा रामकली का मध्य और तार स्थान में रहना चाहिये। तीसरे प्रकार में दोनों मध्यम और दोनों निषादों का प्रयोग होता है। प्रचार में ख्याल गायक रामकली बहुशः इसी प्रकार गाते हैं। तीव्र म और कोमल नि, इन दो स्वर्गों का प्रयोग विशिष्ट रीति से होता है। म प ध नि ध प, ग म रे सा, यह तान रामकली में हमेशा दिखाई देगी। रामकली में वादी कोई धैवत मानते हैं और कोई पंचम मानते हैं। ऋषभ सर्व सम्मति से संवादी है। संपादक के मतानुसार दोनों मध्यम और दोनों निषाद लेने-वाले प्रकार में वादी पंचम मानना चाहिये। धैवत और ऋषभ स्वर रामकली में आंदोलित होते हैं; परन्तु भैरव में ऋषभ पर अधिक आंदोलन रहता है। रामकली का और भी एक प्रकार है। उसमें दोनों गांधारों का प्रयोग होता है। यह प्रकार अप्रसिद्ध माना जाता है।

राग पूरिया धनाश्री.

इस राग की उत्पत्ति पूर्वी थाट से है। इसे पूर्वी से भिन्न रखना चाहिये। पूर्वी में दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। इस राग में केवल तीव्र मध्यम उपयोग में लाया जाता है; अतः दोनों रागों का भेद स्पष्ट है। पूरिया धनाश्री में वादी पंचम और संवादी ऋषभ है। पूर्वी में वादी गांधार और संवादी निषाद है। इसकी जाति संपूर्ण है और समय सायं काल का है। पूरिया धनाश्री में म रे ग, और रे नि ध प, यह स्वर-समुदाय रागदर्शक तथा वैचित्र्यदायक है।

राग बसंत.

इस राग की उत्पत्ति पूर्वी थाट से होती है। इस राग के दो प्रकार प्रसिद्ध हैं। एक में दोनों मध्यम और धैवत तीव्र लिया जाता है। तथा पंचम वर्ज्य किया जाता है। दूसरे में यह राग संपूर्ण माना है। उसका वादी तार षड्ज और संवादी बहुसम्मति से पंचम है। तीव्र धैवत लेने-वाले प्रकार में पंचम वर्ज्य होने से शुद्ध मध्यम संवादि मानत हैं। अपने यहां पूर्वी थाट जन्य प्रकार अधिक लोकप्रिय है। इस राग का गायन वसंत ऋतु में अधिक प्रिय होता है; क्योंकि उसके गीतों में वसंत का वर्णन बहुत रहता है। उस समय यह राग मौसमी अथवा ऋतु राग मानना चाहिये। शास्त्रदृष्टि से वसंत राग गाने का समय रात्रि का अन्तिम प्रहर ठीक है।

बसंत में दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। यह राग उत्तरांगप्रधान है अतः तार षड्ज पर बहुत जोर दिया जाता है। जब इस राग में गायक कभी कभी ललित का आंग दिखाते हैं तब बड़ा आनन्द आता है। ऐसा न समझना चाहिये कि ललित का आंग दिखाना आवश्यक है। इसके आरोह में पंचम टालने का प्रयत्न करते हैं, क्योंकि वह स्वर अधिक उपयोग में लाने से परज का आभास उत्पन्न होना संभव है। इस राग की गति परज की अपेक्षा अधिक मंद और गंभीर रहती है। मं ध्र, रे, सां, नि ध्र, प, यह स्वर धीरे से कहने से बसंत स्पष्ट रूप से दिखाई देगा। इस राग में मं ग, मं ग, तथा सां, नि, ध्र, नि ध्र, यह भाग बार बार दिखाई देंगे। इन भागों के तथा ललितान्ग के कारण कई श्रोता इस राग को झट पहचान लेते हैं। इस राग का कोमल गांधार लेने वाला प्रकार भी है, परन्तु वह बिल्कुल अप्रसिद्ध है।

राग परज.

इस राग की उत्पत्ति पूर्वी थाट से है। इसमें दोनों मध्यमों का स्पष्ट रूप से प्रयोग किया जाता है यह राग संपूर्ण है। वादी स्वर षड्ज और संवादी पंचम है। रात्रि के अन्तिम प्रहर में गाया जाता है। उत्तरांग प्रधान होने से तार षड्ज स्वर बहुत ही वैचित्र्यदायक होता है। इसकी गति ज़रा चपल होती है; इसलिए इसे बसन्त राग से अलग पहचानना

आसान है। इस राग के गायन में कुछ तानें जान बूझ कर निषाद पर समाप्त की जाती हैं। इस समय राग स्पष्ट हो जाता है। इस राग में सारें सारें, निधनि, यह भाग अनेक बार दिखाई देता है। उसी प्रकार धप गमग, मध निसां यह स्वरसमुदाय रागदर्शक हैं।

राग पूरिया.

इसकी उत्पत्ति मारवा थाट से है। इस राग में पंचम वर्ज्य है, अतः इसकी जाति षाडव है। वादी गांधार और संवादी निषाद है। इस राग का मुख्य चलन मंद्र और मध्य स्थानों में रहता है, और इसी कारण उस राग का उत्तरांगप्रधान सोहनी राग से भिन्नत्व स्पष्ट हो जाता है। ऋषभ कोमल और ग नि तीव्र है, अर्थात् समय संधिप्रकाश का स्पष्ट है। इस राग में निषाद और मध्यम की संगति बड़ी वैचित्र्यदायक है। मंद्र सप्तक में सा, नि ध नि मंग यह स्वर गाने पर राग का स्वरूप दिखाई देने लगता है।

राग ललित.

इस राग की उत्पत्ति मारवा थाट से है। उस में पंचम वर्ज्य है अतः जाति षाडव है। वादी स्वर शुद्ध मध्यम है, और संवादी षड्ज है। यह राग उत्तरांगप्रधान है और उसका समय रात्रिका अन्तिम प्रहर माना जाता है। इस में दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। इस रागमें धर्म धर्म यह स्वरसमुदाय बार बार दिखाई देता है। यह स्वर और नि रे ग म मं म ग, यह स्वरसमुदाय, इन दो बातों से यह राग झट पहचान सकते हैं। प्रातःकाल में यह एक बिलकुल स्वतंत्र रूप है। कुछ ग्रन्थों में धैवत कोमल बतलाया हुआ मिलता है। परन्तु अपने यहाँ वह तीव्र ही लिया जाता है।

राग गौड मल्लार.

इस राग के थाट के विषय में दो मत प्रसिद्ध हैं। एक मत के अनुसार इस राग का थाट काफी है। और दूसरे मत के अनुसार खमाज है। इस राग में दोनों निषादों का प्रयोग सर्वमान्य है। इस लिये मतभेद केवल गांधार स्वर के संबंध में रहता है। प्रचार में दोनों प्रकार मिलते हैं। इतना तो सच है कि दोनों प्रकार रंजक हैं; अतः दोनों का स्वीकार करने में कोई

हर्ज नहीं। ख्याल गायक तीव्र गांधार ही का प्रयोग करते हैं; और ध्रुवपद गायक कोमल गांधार उपयोग में लाते हुए मिलते हैं। तथापि कभी कभी प्रचार में दोनों गांधार लेने वाले ध्रुवपद भी दिखाई देते हैं। तीव्र गांधार के प्रयोग से मियाँ मल्लार और मेघ मल्लार झट्ट अलग होते हैं। यह राग संपूर्ण है। इस में वादी मध्यम और संवादी पड्ज है। आरोह में निषाद का अल्पत्व रहता है। यह मौसमी (ऋतुराग) राग है। इसके गीतों में अधिकतर वर्षाऋतुका वर्णन होता है। रीप, मप, धसां ध प, म; रे ग रे म ग रे सा; यह स्वरविन्यास राग में बार बार दिखाई देते हैं। इन स्वरों से यह राग झट्ट पहचान सकते हैं।

राग मियां मल्लार.

इस राग की उत्पत्ति काफी थोट से है। इस में कोई वादी सा और संवादी प मानते हैं, और कोई वादी म और संवादी सा मानते हैं। इस पुस्तक के संपादक को दूसरा मत अधिक पसंद है। इसकी जाति संपूर्ण-षाडव मानते हैं, क्योंकि इसके अवरोह में धैवत नहीं लेते। इसे मौसमी (ऋतुराग) राग की संज्ञा दी जाती है, क्योंकि गायक इसे वर्षाकाल में अधिक गाते हैं। शास्त्रानुसार इस राग का गाने का समय मध्यरात्रि है। इस राग में कानडा और मल्लार का बड़ा सुंदर योग है। रे म रे स, नि प म प नि ध्र, नि सा; म रे, प नि ध, नि, सां प ग म, रे सा; यह भाग इस राग में बार बार दिखाई देते हैं। और इन्हीं पर राग की पहचान है। इस में दोनों निषादों का प्रयोग होता है। कभी कभी तो गायक दोनों निषाद एक के बाद एक लेकर रागहानि नहीं होने देते। इस राग का आलाप विलंबित लय से करने पर, और मंद्र स्थानमें उसका उत्तम विस्तार करने पर, बहुत ही मनोहर दिखाई देता है। गौड मल्लार में जिस प्रकार सां, ध प, म प, ध सां, ध प, यह प्रयोग क्षम्य है, और कुछ अंश में रागदर्शक है, उस प्रकार इस राग में नहीं है। लोग समझते हैं कि यह राग पहले मियाँ तानसेन ने प्रचलित किया और वह अकबर बादशाह को बहुत प्रिय लगता था।

राग बहार.

बहार राग एक आधुनिक और यावनिक प्रकार माना जाता है। उसकी उत्पत्ति काफी थोट से होती है। उसका वादी मध्यम और संवादी

षड्ज है। समय मध्यरात्रि ठीक है। लोग ऐसा समझते हैं कि बसंत ऋतु में यह राग चाहे जब गा सकते हैं। इस राग के चीजों में बसंत का बहुत वर्णन आता है। आरोह में ऋषभ और अवरोह में धैवत वर्ज्य है। इसकी जाति षाडव-षाडव है ख्याल गायक कभी कभी जल्द तान लेते समय इस नियम को तोड़ते हैं। कहीं कहीं तो दोनों धैवत और दोनों गांधारों का प्रयोग ख्यालों में दिखाई देता है। तथापि विद्यार्थियों को ध्यान में रखना चाहिये कि सदा नियमानुसार चलना ही हितकर है। विवादी स्वर का कुशलता से प्रयोग करते हुए रागहानि न होने देना यह अनुभव से सिद्ध होता है। कुछ मर्मज्ञों की सूचना है कि इस राग के अवरोह में गांधार और धैवत दोनों स्वर वर्ज्य किये जाँय। यह भी मत ध्यान देने योग्य है। इस राग में मध्यम और धैवत की संगत बहुत अच्छी दिखाई देती है। इस राग में अनेक रागों से संयोग होता है। ऐसे समय उसे मिश्र राग के अनुसार बसंत बहार, हिंडोल, बहार, मालकंस बहार, भैरव बहार, अडाणा बहार इत्यादि नाम दिये जाते हैं। नि नि प म, प ग, म, ध, नि सां, यह भाग इस राग में बार बार दिखाई देता है।

राग दरबारी कानडा.

इसकी उत्पत्ति आसावरी थाट से है। इस में वादी ऋषभ और संवादी पंचम है। इस राग की जाति संपूर्ण-षाडव मानते हैं। समय मध्यरात्रि उत्तम है। इसकी प्रकृति गंभीर है। इस राग का मुख्य विस्तार मंद्र और मध्य स्थानों में है। आरोह में गांधार दुर्बल है। जल्द और सीधे तान में तो उसे बिलकुल छोड़ देते हैं। इस राग में गांधार पर आन्दोलन बड़ा वैचित्र्यदायक और मनोहर रहता है। अवरोह में धैवत वर्ज्य है। ऐसा समझते हैं कि यह राग मियाँ तानसेन ने प्रचलित करके अकबर बादशाह को प्रसन्न किया। इस राग में निषाद और पंचम की संगत बड़ी सुंदर दीखती है।

राग अडाना.

यह राग आसावरी थाट से उत्पन्न होता है। कुछ ग्रंथकार इस राग में तीव्र धैवत मानते हुए काफी थाट मानते हैं। परन्तु अपने यहाँ धैवत कोमल मानने का व्यवहार है। अतः इस का थाट आसावरी मानना ही ठीक होगा। वादी षड्ज और संवादी पंचम है। समय रात्रिका

तीसरा प्रहर गुणि सम्मत है। यह एक कानड़े ही का प्रकार माना जाता है। इस राग का आरोह सारंग अंगसे करते समय गांधार नहीं लेते। इसका अर्थ यह नहीं है कि गांधार आरोह में वर्ज्य है। गांधार स्वर अवरोह में वक्र होता है। अर्थात् ग म रे सा यह स्वर बार बार दिखाई देते हैं। आरोह में गांधार वर्ज्य और अवरोह में धैवत वर्ज्य मानने वाले इस राग की जाति षाडव मानते हैं। आरोह में गांधार “नि सा ग म” इस प्रकार लेते हैं। दरबारी स्पष्ट दिखाने वाला “ग, रे रे सा” स्वरसमुदाय इस राग में नहीं आता। गांधार और धैवत स्वर दुर्बल रहते हैं; क्योंकि इस का चलन मुख्यतः सारंग अंग से होता है। वे स्वर हिलते ही रहना चाहिए। सां धा, नि सां, नि प, म प, ग म रे सा, पेसा अवरोह जोरदार परन्तु मधुर आवाज़ से कहने पर यह राग स्पष्ट दिखाई देने लगता है। इस राग का विस्तार मध्य और तारस्थानों में अधिक है। दरबारी का विस्तार मंद्र और मध्यम में अधिक है। कुछ पंडितों का मत है कि कानड़ा और मेघ के संयोग से यह राग बनता है।

राग मुलतानी.

इस राग की उत्पत्ति तोड़ी थाट से है। वादी पंचम और संवादी षड्ज है। समय दिन का चौथा प्रहर ठीक है। इस राग में ऋषभ, धैवत और गांधार का प्रयोग बड़ी कुशलतासे करना पड़ता है। इन स्वरों के अयोग्य उपयोग से बहुत संभव है कि श्रोताओं को तोड़ी राग का आभास हो। मुलतानी में मध्यम और गांधार इस दो स्वरों की संगत और पुनरावृत्ति होती है। पाठकों को याद होगा कि इसी प्रकार की पुनरावृत्ति भीमपलासी और बसंत के रागवर्णन में बतलाई है। इस राग को “परमेल प्रवेशक” राग मानते हैं। काफी थाट से, आगे संधिप्रकाश रागों में प्रवेश करने के लिये मुलतानी राग बहुत सुविधाजनक होता है। मुलतानी में सा, प, नि, विधांतिस्थान माने जाते हैं; और भिन्न भिन्न प्रकार की तानें उन पर समाप्त की जाती हैं। कुछ संस्कृत ग्रंथों में मुलतानी का गांधार तीव्र बतलाया है; परन्तु प्रचलित पद्धति में तो वह कोमल ही माना जाता है।

मारवा थाट.

मारवा थाटांतील राग (११)

पूर्या किंवा पूरबा

पूर्व-कल्याण

मालीगौरा

जैत किंवा जेत

वराटी किंवा वरारी

विभास

पंचम

भट्टिहार किंवा भट्टियार किंवा

भट्टियारी

भंखार

साजगिरी

ललिता-गौरी

राग पूर्या अथवा पूरबा



पूर्या अथवा पूरबा हा राग मारवा थाटांतून उत्पन्न होतो. यांत पूर्वी, पूर्या व नारगा या रागांचा संयोग आहे. पंचम वर्ज्य आहे व दोन्ही धैवत आहेत. हा संध्याकाळी गाइला जातो. याचा विस्तार मन्द्र व मध्य सप्तकांत होतो.

७२

याचें स्वरूप असें आहे.

सा, निरेधसा, निरेग, मंग, निनि, धमधमंगरेगरेसा, रेनि,
मधसा, सारेसा, नि, रेगमधमंगरेसा । निधमंगरे
गरेनिरेनिमधसा, सारेसा, नि, रेगरेगमधमधगरे
गनिधमंगरे, सा ।



पूरबा—तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

नि सा सासा रीष सा निसा, री ग - गर्मम , ग म ग म ध
 एक पल हूं SS, न जा S नेSS S, द S हों S
 3 x 2

निनिधर्म धधमग मर्मगरी गगरीसा
 SSSS SSSS SSSS SSमि
 0

सा -नि री सासा निरी गरी निरी सा रीरीसानि सारीगरी गर्मम म, गर्म
 या SS को ओ होत दिन बीS ते मेSSS रेSSS SS S, SS
 3 x 2

री
 ग री गरी सा
 आ S SS ये ।
 0

अंतरा.

सां मं नि सा सां नि सा री सा रीरीसानि सारीगरी गर्मम म, गर्म
 निधर्म गरीसा निरीनिध धसासा सा SS S हा बिSSS कSSS मेSS S, SS
 3 x 2

री
 ग री गरी सा
 पा S SS ये ।
 0

अंतरा.

निधमं	गगरी	सा निरीनिधं	मधसासा	सासासानि	सासासा	री	सा
निजठि	गबैठ	तोऽमैसे	वाऽकरो	बाबुसऽ	दारंग	घ	र
३				३			
रीरीसानि	सारीगरी	ध गममं	गममं	री	ग	री	गरी
काऽऽऽ	जूऽऽऽ	बाऽऽ	ऽऽऽ	बू	ऽ	ऽऽ	का
२				०			
सा		री	सा				
नि	री	धमा	, निरी				
ऽ	ऽ	मौऽ	, दर				
३							

राग पूर्वकल्याण

हा राग मारवा थाटांतून उत्पन्न होतो. हा संपूर्ण आहे. यांत वादी
ऋषभ व संवादी धैवत आहे. अवरोहांत पंचम दुर्बल आहे. गाण्याचा वेळ
संध्याकाळ आहे.

याचें साधारण स्वरूप असें आहे.

रेग, मंपधनि, धप, रे, मंपधम, ग, रेसा । निरेनिध, निरे
गमप, मं, धम, निनिधमंगरेसा । ग, मंधमसां सांरेसां,
निरेनिधनिधप, गमपधनिसां, मंधमंग, निनिधमंगरेसा ।

स्थायी.

रिगमपधनि	धप	री	मपधम	ग	री	सा	सा	नि	री	नि	भु
हं SSSSS	वन	ला	गीSSS	सां	ॐ	ॐ	झ	चे	ॐ	तो	ज
३				x		०		२		०	

धानेरीग	मप--	धग	प	मधम	धनि	(प)	ध	म	ग	निनिधम	गरीसा-
रा SSS	SSSS	SS	S	मोSS,	मन	वा	S	S	S	रेSSS	SSSS
३				x		०		२		०	

अंतरा.

मं	ध	ध			सां	सां	नि	री	नि	ध
गग	म धमध	सां सांरी	सां निसां		नि	री	नि			
(अब)	तो SSS	या दक रो SS	ना S							
(उ)		x	०		२		०			
ध							म ध			
नि ध प मप	गमपध निसां--	म ध	म ग				निनिधम गरीसा-			
री S को SS	ध्याSSS SSSS S S	S S	न ध				रेSSS SSSS			
(उ)	४	५	०		२		०			

राग मालीगौरा



मगौ रिसौ निरी निपौ मगौ मधौ सनी रिगौ ।

रिसौ सायं भवेन्मालीगौरा ऋषभवादिनी ॥

~~अभिनवरंगिणी ॥ १२ ॥~~

गमधानि तीखे मृदु रिखव पंचमसुरहु लगाय ।

रिप बादी संवादितें मालीगौरा गाय ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ५२ ॥

मालीगौरः परमरुचिरो मारुसंस्थानजन्यः

संपूर्णोऽसाविह किल रिधौ वादिसंवादिनौ स्तः

श्रीसंमिश्रो विलसति सदा पूरियामिश्रितश्च

सायंगीतो मधुरनिनदैर्मद्रमध्यप्रचारः

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ५१ ॥

मालीगौरा राग मारवा थाटांतून उत्पन्न होतो. हा संपूर्ण आहे. यांत बादी स्वर ऋषभ व संवादी पंचम आहे. सायंकाळीं गातात. यांत श्री व पूरिया या दोन रागांचा संयोग असतो. याचा विस्तार विशेषकरून मन्द्र व मध्य सप्तकांतच होतो. पूरियांत पंचम स्वर दाखल केला असतां मालीगौरा होतो असेंहि कित्येक जाणते लोक म्हणतात. यांत बहुधा दोन्ही धैवत गायक लोक लावितात. “सप” संगति या रागांत श्रीरागाचें अंग दर्शविते.

“धनिसारेनिधप, मं, ग, मंधसा” इतके स्वर म्हटले म्हणजे मालीगौरा स्पष्ट होतो. हाहि एक अप्रसिद्ध रागांपैकींच आहे.

उठाव.

मंग, रेसा, नि, रेनि, प, मंग, मंध, सा, निरेग, रेसा ।

चलन.

नि ^ध धनिसारेनिध, निधप, मंग, मंगमंध, सा, निरेसा, निरेग,
 नि प ध रे ध
 निरेसा, साप, प, मंधमंग, मंधमंग, ग, रेसा । मंध
 सां, सां, निरेसां, निरेनिध, मनिधमंग, गरेसा,
 साध, मंग, ग, रेसा ।

मालीगौरा—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा प
म म
क र

ग - री सा	नि ध नि रीनि	(प) - - मंग	म ग - ग
या ऽ द प्र	भू ऽ को ऽ ऽ	आ ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
मं ग ग ग ग	मं - ध म	सा सा - सा	नि री सा सा
भ व भ य	भं ऽ ज न	अ ल ऽ खि	रं ऽ ज न
री नि - नि नि	नि री ग -	गप मप ग री	सा - - सा
पू ऽ र त	म न की ऽ	का ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ज।

अंतरा.

म ग - ग मं	- मं ध मं	सां - सां सां	नि सां रीं सां सां
ए ऽ क भा	ऽ व ध र	नि ऽ मं ल	अं ऽ त र
सां - सां सां	सां निरीं नि नि	(प) - - मंग	म - ग ग
छां ऽ ड त	स व ऽ अ भि	मा ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ न
सां - नि मं	- ध मं ग	ग - मं ग	री री सा सा
भू ऽ क्ति मू	ऽ क्ति के ऽ	दा ऽ य क	प्र भु व र

ध - नि नि	नि री ग -	गप मप ग री	सा - - सा
रा ऽ ख त	स ब की ऽ	ला ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ज
०	३	५ ५ ५ ५	२

मालीगौरा-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा
नि
मे

ध नि री सा	नि - ध प	म प प म	म ग - म
रे म ऽ न	ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ग ऽ	र ही ऽ मु
३	५	२	०
ध नि - सा	री - - -	ग - नि -	री सा - सा
र त ऽ पि	या ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ की ऽ को
३	५	२	०
- नि - री	ग - म ध	म ग - म	ग री सा नि
ऽ लों ऽ स	हु ऽ ऽ क	हो ए ऽ ति	पी ऽ र। मे
३	५	२	०

अंतरा.

नि
सा
उ
म

सा प - प	प - - प	प - प ध	प - - प
ठ च ऽ ल	रे ऽ ऽ तुं	सौं ऽ ग ऽ मै	का ऽ ऽ पि
३	५	२	०

धु म - ग	मे - री -	ग - री री	सा - - सा
या को ऽ मि	ला ऽ ऽ ऽ	व न	को ऽ ऽ प
नि धु नि री नि	नि - धु प	मे धु नि सा	री सा - मे
ल प ऽ ल	ला ऽ ऽ ऽ	ग त	जु ग ऽ अ
धु म - ग	मे - ग -	री री मे ग	री - सा
ब ना ऽ र	हे ऽ ऽ ऽ	मै का	धी ऽ र । मे

मालीगौरा—तीव्रा (मध्यलय)

स्थायी.

धु नि	सा री	री नि धु	प प	प प	पु धु -
ए ऽ	र स	रा ऽ ऽ	स र	सु र	सो ऽ ऽ
धु -	सां	नि रे -	सा -	सा सा	धु नि -
रे ऽ	, बि	सौ ऽ ऽ	रे ऽ	तुं व	कि यो ऽ
सा -	सा सा	नि री -	सा -	सा सा	धु नि -
आ ऽ	दु गु	सां ऽ ऽ	ई ऽ	पु न	कि र्पा ऽ
री ग	- मे	ग री सा	नि री	ग री	नि धु सा
क टा	ऽ ऽ	छे ऽ ऽ	हे ऽ	रे ऽ	ऽ ऽ ऽ

अंतरा.

सा -	प -	प प -	पे प	प प	प ^प म ध
ना ऽ	ना ऽ	प्र का ऽ	र न	र स	भ रो ऽ
२	३	१, ४	२	३	४
नि ध	म ग	ध म ग	री -	सा सा	री सा -
२	३	४	२	३	४
नि ऽ	ग म	ध म ग	री सा	नि री	ग री सा
२	३	४	२	३	४
नि री	ग म	ध म ग	री सा	नि री	ग री सा
२	३	४	२	३	४
नि री	ग म	ध म ग	री सा	नि री	ग री सा
२	३	४	२	३	४

मालीगौरा—एकताल (विलंबित)

स्थायी.

नि
सा
ते

नि री री ध	नि री री सा नि सा	नि ध	प -	म ध	सा सा नि ध नि
रा ऽ	ल ऽ	रा ऽ	०	२	०
३	४	४	०	२	०
म ध	म ग	सा सा नि	री सा	नि री ग	नि री सा
३	४	४	०	२	०
म ध	म ग	सा सा नि	री सा	नि री ग	नि री सा
३	४	४	०	२	०
म ध	म ग	सा सा नि	री सा	नि री ग	नि री सा
३	४	४	०	२	०

नि	सा (सा) नि	-री	ग	ध	म	धग	म ग, -म	ग	-	री	सा, सा
रा	SS	स्त	री	ब	SS	SS	न, SS	रा	S	S	SI, ते
३				x			०	२		०	

अंतरा.

नि	सा	प	मप	प	म	ध	प	ध	-	ध	-प
रा	S	ता, SS	मौं SS	ग	ल	चा	S	ल		मु	मु
३			x	०		२		०			
मं	प धधपमप	म	ग	ममरी	ग	म, ध म, गम	ग	नि	री	सा	
ना	SSSS	व	त	धSS	री	ध, SS	री, SS	प	ल	प	ल
३					०		२		०		
नि नि	सा सा (सा)	निध निध	नि सा निरी	गरी	सा	निरीगम	धनिरीमं	रीनिधमं	गरीसासा		
स	दाS	SरंS	गS	मौं SS	SS	द	साSSSS	SSSS	SSSS	SSSS	ते
३				x		०	२		०		

मालीगौरा—एकताल (विलंबित)

स्थायी.

नि
सासा
अहि

-	निध	नि सा	ध	नि	-	ध	प	सा सानि	री	सा
S	योS	S SS, मु	ने	S	S	S	पी SS	S	S	र
३			x		०		२		०	

सा	नि	री	ग	म	ग	-	-	सा	नि	री	-	सा	नि	सा
चे	ॐ	ॐ	री	ते	हा	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	री	ॐ	ॐ
नि	सा	री	सा	सा	नि	री	ग	री	ग	री	सा	सा	सा	सा
अ	ब	ब	मो	को	दी	ॐ	जे	फ	ल	नि	त	अहि	त	अहि

अंतरा.

नि	सा	सा	-	सा	प	प	प	प	प	म	ध	प	म	प
सा	हे	ॐ	ॐ	अ	स	र	फ	बा	ॐ	ॐ	हु	ली	क	क
म	प	ध	म	ग	ग	-	री	सा	नि	सा	नि	ध	नि	सा
प	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	दी	ॐ	जे	ॐ	सु	ख	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
री	नि	ध	प	म	ध	म	सा	नि	री	ग	नि	री	सा	र
ॐ	प	त	ॐ	सु	न	ली	ॐ	ॐ	ॐ	जे	पी	ॐ	ॐ	ॐ
सा	नि	री	ग	म	ध	म	ग	ग	ग	नि	री	सा	सा	सा
औ	ली	या	ॐ	अ	ज	ॐ	ॐ	मे	ॐ	ॐ	ॐ	री	अहि	अहि

मालीगौरा-चौताल (विलम्बित)

स्थायी.

ध
सा
रा

-	री सा	नि निध	रीनि सिरि	ध नि	ध	प	ध म	-	ग	-	नि सा
S	जा	SS	सिरि	रा	S	S	S	S	म	S	रा
3		५		X		०		२		०	
-	नि	-	री	री ग	-	-	री नि	री	सा	-	ध सा
S	S	S	म	चौ	S	S	S	S	द्र	S	रा
3		५		X		०		२		०	

मालीगौरा-धमार (विलंबित)

स्थायी.

नि	ध	नि	सा	री	नि	-	ध	नि	ध	प	प	म	-	ग
री	५	ढ	प	बा	५	५	५	५	ज	न	ला	५	५	५
ग	म	-	ग	५	ध	म	सा	-	नि	री	-	ग	-	-
गे	५	५	५	म	ब	५	५	५	५	५	बा	५	५	५
री	नि	री	सा	-	सा	-	प	-	प	म	-	ध		
५	५	जे	५	चौ	५	५	ग	५	५	मि	दौ	५	ग	
ध	म	-	ग	-	म	म	ध	म	ग	म	री	ग	री,	सा
झां	५	५	५	झ	न	५	का	५	५	५	५	५	५	री

अंतरा.

म	ध	-	सां	सां	सां	-	सां	सां	-	नि	रीं	सां	-
उ	ढ	५	त	गु	ला	५	ल	ला	५	ल	भ	ये	५
सां	नि	-	रीं	नि	ध	म	नि	ध	म	ग	ग	री	सा
बा	५	५	द	र	ब	र	ख	त	५	रौं	५	ग	५
नि	ध	नि	ध	म	ग	म	री	ग	री	सा			
छा	५	५	ये	५	पि	च	का	५	री				

राग जैत किंवा जेत.



जैतरागो मारुमेले कथितः पंचमांशकः ।
संसादिपङ्कज आरोहेऽवरोहे च विवर्जितौ ॥ २४४ ॥
निषादमध्यमावत्र तथा चौडुव एव च ।
गांधारधैवतौ तीव्रावृषभः कोमलो मतः ॥ २४५ ॥
केषांचिन्मत आदिष्टो जैत्रः कल्याणमेलजः ।
पूर्वरात्रे स गेयः स्यादयं सायं प्रगीयते ॥ २४६ ॥

संगीतसुधाकरे ॥ पृ. ३५ ॥

सगौ पगौ रिसौ गश्च पगौ रिगौ मधौ मगौ ।
रिसौ जैत्रो भवेत् पांशः पधगस्थायमंडितः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ ११९ ॥

जब मारुके मेलमें मनि सुरको तजि देत ।
पस वादी संवादितें राग होत है जैत ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ५४ ॥

जैत या रागाचीं दोन तीन स्वरूपें प्रचारांत आहे. एक औडुव-औडुव, ज्यांत मध्यम व निषाद मुळींच वर्ज्य आहेत. दुसरें ज्यांत तीव्र मध्यम किंचित् घेतला जातो, व तिसरें ज्यांत दोन्ही ऋषभ व दोन्ही धैवत येतात. हे सर्व प्रकार मारवा थाटांतच मानावे लागतील कारण त्यांची मांडणी त्याच थाटांतली आहे. जेतांत वादीस्वर पंचम व संवादी षड्ज आहे. गाण्याचा

वेळ सायंकाळ आहे. जेतांत “ पधग ” हा स्वरविन्यास रागवाचक आहे. तसेंच ‘ साग ’ व ‘ साप ’ या स्वरसंगतीही महत्वाच्या आहेत. जेत-कल्याण नांवाचा पूर्वी वर्णिलेला राग जेतपामून वेगळा आहे. कारण तो कल्याण थाटांतला राग आहे.

उठाव.

सा, रेसा, रेग, रेगप, प, पधग, रेगप, ग, रेसा ।

चलन.

सा, सा, रेरेसा, रेरेसा, रेग, प, प, धग, पधग, रेग,
धपग, रे, सा, सारेसा ।

प, प, सां, सां, सारिंसां, सांसां, रेसां, प, पग, रेगप, सां,
पधग, सागप, धपग, गरेसा, सारेसा ।

मध्यम घेणारा जेत प्रकारः—

उठाव.

सा, गप, ग, रीसा, ग, पग, रीग, मंधमंग, रीसा ।

चलन.

रेगेरेसा, गपप, पगप, पधग, रेग, मंधमं, ग, रेसा ।

पपसां, सां, सारिंसां, सांसारिंसां, पपग, सासागप, पसां,
पधग, रेगमंधमंग, रेसा ।

दोन्ही ऋषभ व दोन्ही धैवत घेणारा जेत प्रकार.

चलन.

प (नि मं) गपग, साग, पमं, धपग, पमंग, गसा, रेसा, सा, रेसा,
 पधप । गपसां, सां, सांरेसां, (प)ग, ग, रेसा, पगप
 मंध, प, पग, साग, पमंधप, ग, गरेसा ।

जैत-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

नि मं	मं प	गं	गं
सा ग प पग	सा ग प मप	प पम ध प	प (प) - ग
मो ऽ ऽ रेऽ	रा ऽ ऽ ऽऽ	जा ऽऽ ऽ ऽ	८ ८ ऽ ऽ
री ३	सा ×	नि ३	ध ३
ग री - -	सा - निसा	सा (सा) - सानि	प ध प -
जा नौ ऽ द	क रो ऽ ऽऽ	नि स ऽ दिऽ	न ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०

(अथवा)

नि	मं
सा सानि री सा	प ध प -
नि ऽऽ ऽ स	दी ऽ न ऽ
२	०

अंतरा.

प	नि	नि	गं
गप सांसां, सांसां सांसां	सां रीं सां सां	सां (सां) (प) ग	प ग री सा
अने कभा, तन रंग	तु मी स न	उ प जो ऽ	० ऽ ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
री सा	मं मं	नि मं	गं
सासा प पम धप	प प(प) प ग	सा ग प ग	पम ध प -
बहु भा ऽऽ तन	ब नेऽ गो ऽ	का ऽ ऽ ऽ	० ऽऽ ऽ जा ऽऽ
३	×	२	०

ग री - सा
आ नौ ऽ द
३

स्थायी प्रमाणें.

स्थायी (दुसरा प्रकार)

नि॑ मे॑	सा ग प ग	नि॑ प	सा ग प ग	ग	प मे॑ ध॒ प	मे॑	प - ग -
मो॑	ऽ ऽ रे	रा॑	ऽ ऽ ऽ	ऽ	ऽऽ ऽ ऽ	जा॑	ऽ ऽ ऽ
री॑	ग री - सा	री॑	सा - नि॑मा	नि॑	सा नि॑ री सा	ध॑	प ध॑ प -
आ॑	मौं॑ ऽ द॑	क॑	रो॑ ऽ ऽऽ	नि॑	ऽ स ऽ	दि॑	ऽ न॑ ऽ

अंतरा (दुसरा प्रकार)

मे॑	पप सांसां सांसां सांसां	नि॑	सां रीं सां सां	नि॑	सां सां मे॑ प ग	ग	प ग री सा
अने॑	कभा॑ तन॑ रंग॑	तु॑	मी स न	उ॑	प जो॑	ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि॑	सा	मे॑	प ध॒ प पग	नि॑	प	ग	प ध॒ प पग
सासा॑	प पग पग	ब॑	ने गो॑	का॑	ऽ ऽ ऽ	ऽ	ऽ जा॑
बहु॑	भा॑ ऽऽ तन॑	ब॑	ने गो॑	का॑	ऽ ऽ ऽ	ऽ	ऽ जा॑
सा॑	ग री - सा	आ॑	नों॑ ऽ द॑				

स्थायी प्रमाणें.

जेत-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

										नि सा क
सा	ग.	रि	-	सा	सा	-	प	ग	प	प
ल	स	ज्यो	५	त	ला	५		गी	५	र
०		३			×			२		
प	-	ग	री	सा	सा	-	प	ग	प	प
हे	५	ज्यो	५	त	ला	५		गी	५	र
०		३			×			२		
प	-	प	-	प	प	-		ध	ग	-
हे	५	खा	५	जे	मो	५		न	दी	५
०		३			×			२		
म री	ग	ध म	ध	म	ग	री		सा	-	नि सा
म	५	द	५	र	बा	५		रे	५,	क
०		३			×			२		

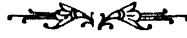
अंतरा.

म	-	सां	-	सां	सां	सां	सां	-	-
प	५	ल	५	धू	म	ट	के	५	५
धौ		२			०		३		
नि सां	सां	सां	-	रीं	सां	-	प	-	ग
ब	ल	ब	५	ल	जै	५	ये	५	५
×		२			०		३		

नि		प ग प			प		ध	म
सां	-	प	ग	प	सां	-	प	ध
जै	ऽ	ये	ऽ	ऽ	जू	ऽ	वा	द
x		रि	र	नि			३	
मं	ग	ग	रीसा	,सा				
र	स	के	SS	। क				
x		र						

(टीपः--कांहीं गवई ही चीज ' जेतश्री ' ची म्हणून गातात.)

राग वराटी अथवा बरारी.



पधौ गपौ धमौ गरी गमौ गरी पुनश्च सः ।
गांधारवादिनी ख्याता वराटी भूरिरक्तिदा ॥ १२२ ॥
पूर्वामेलगताप्यन्या वराटी श्रूयते कचित् ।
निरी गमौ मधौ ममौ गमौ धरी सरी निधौ ॥ १२३ ॥
अभिनवरागमंजर्याम् ॥

जब मारूके मेलमें पंचम दीन्ह लगाइ ।
धग संवादीवादितें तबहि वराटि कहाइ ॥
रागचंद्रिकासार ॥ ५३ ॥

वराटीति रागः स्मृतो मारुमेले ।
गवादी धसंवादियुक्तो विभाति ॥
सदा पंचमेनाभियुक्तः सुपूर्णः
स सायं बुधैर्गीयते मंजुगीतैः ॥
रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ५२ ॥

ग्रंथोक्त वराटीचेंच आधुनिक नांव ‘बरारी’ असें आहे. हा राग मारवा थाटांतून उत्पन्न होतो. हा संपूर्ण आहे. याचा वादीस्वर गांधार व संवादी धैवत आहे. हा सायंगेय आहे व मारव्याचे अंगानें गाइल जातो. पण पंचम स्वर लागत असल्यामुळें मारव्यापासून हा स्वतंत्र राखतां येतो. यांत “साप” व “गप” या स्वरसंगतीचा लाग आसतो. मध्यम यांत गौण ठेविणें इष्ट आहे. हा राग तोडी, त्रिवेणी व देशकार यांच्या संयोगानें

होतो असें जाणत्यांचें मत आहे. कोणी यांत कोमल धैवत घेऊन यात्रा पूर्वी थाटांत मानितात. वराटीचे पुष्कळ प्रकार जुन्या ग्रंथांत वर्णिलेले आढळतात.

उठाव.

पधग, प, ध, मंग, रीग, मंग, रीसा ।

चलन.

गरेग, रेसा, सा, रेसा, रेसा, साप, प, निधप, मंग, रेसा ।

पधप, सां सारिंसां, सांनिसारिंसां, मंधसां, सांरें, सां, निधप,
मंग, ग, रेसा ।

(अथवा)

पधग, पधमंग, गरे, रेग, धमंग, रेसा, सारे, रेग, रेसा, सा,
सानिरेग, पग, प, पध, सां, पधग ।

ध	म	-	ग	ग	-	री	सा, म
रा	५	५	५	५	२	व	रे । बि
x			०			०	

बरारी-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

सा	नि	री	ग	री	सा	नि	री	सा	-	नि	सा	प	-	ध	म
सु	म	र	न	क	र	ले	५	जि	या	५	र				
३		५		x		०		२		०					
ध	नि	प	-	म	ध	म	ग	ग	री	सा	-				
बा	५	को	५	ले	५	ले	५	ना	५	म	५				
३		५		x		२		२		०					

अंतरा.

म	प	-	ध	प	सां	-	सां	-	रीं	सां	-	सां
मे	५	री	क	ही	५	मा	५	न	ले	५	रे	
x		०		२		०		३		५		
नि	सां	नि	रीं	गं	रीं	सां	सां	नि	ध	प	ध	पग
छां	५	ड	दे	५	तूं	स	ब	५	लो	५	(भ५)	
x		०		२		०		३		५		
ध	म	ध	म	गरी	ग	री	सा	-				
का	५	५	(५५)	५	५	म	५					
x		०		२		०						

स्थायी.

मं	प	धग	-	पप	प	ध	मं	मं	ग	री	-	मं
तू ₃	तू ₃	(SS)	S _४	(अक)	झो	S	S _०	S	र	S	S _०	गमं
ग	ग	री	सा	-	नि सा	-	सा	सा	सा	री	ग	अक
झो	झो	S	र	S	आ	S	न	ज	गा	S	ई	प्या
ग	ग	री	सा	-	नि सा	सा	-	सा नि	-	री	ग	प
S _३	S _३	S	रे	S	मु	ख	S _०	प	S _२	र	अं	च
ग	ग	प	-	प	प	ध	सां	सां	ध	प	-	मं
र	र	डा	S _४	र	सो	व	त	ना	S _२	र	S _०	प
ध	ध	(ग)	-	पप	सो							तू
S _३	S _३	S	S _४	(अक)								

अंतरा.

मं - ध सां - सां सां सां - सां - सां
प - ऽ ग रा ऽ त मु स ऽ क्या ऽ त
अं
×

नि	सां	सां	सां	रीं	-	सां	सां	सां	नि	सां	रीं	सां	नि
उ	ठी	री	बा	ऽ	ल	ल	च	क	र	ही	ऽ		
x		०		२		०		३		४			
मं					मं			मं					
प	-	प	प	प	प	ध	ग	प	धग	-	पप		
बा	ऽ	र	न	के	भा	ऽ	र	तुं	ऽऽ	ऽ	झक		
x		०		२		०		३	(	४	(		

राग विभास.

(मारवामेलजन्य प्रकार)



निरी गमौ गरी सश्च गपौ गपौ धमौ गपौ ।
गरी सश्च विभासाख्यो धांशो रात्र्यंतयामके ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १२७ ॥

विभासाचा हा दुसरा प्रकार मारवा थाटांतून उत्पन्न होणारा आहे. हा संपूर्ण आहे. यांत धैवत वादी व गांधार संवादी आहे. हा प्रातःकाली गाडला जातो. 'गप' व 'मंध' या संगति यांत रक्तिदायक आहेत. पंचमावरचा मुक्काम या रागाचें गांधीर्य दर्शवितो. हा राग सावकाश गाडला असता चांगला वठतो. यात देशकार व गौरी यांचा संयोग आहे असे कांहीं लोकांचे मत आहे.

उठाव.

नि, रेग, मंग, रेसा, गप, गपध, मंग, पग, रेसा ।

चलन.

सा, नि, रेग, पग, रेसा, रेसा, निध, मंध, सा, रेसा, गप,
पध, पग, मंगरेसा । मंधसां, सां, रेसां, निरेगरेसां,
सांनिध, मंधसां, सांरेनिध, मंग, पग, रेसा ।



३३

विभास-त्रिताल (मध्यलय)

(मारवामेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

सा

र

नि री ग प	ग सा रीध ध	सा सा सा री	सा - - -
बा ऽ ऽ ऽ	को ना ऽ ऽ म	सु म र म	ना ऽ ऽ ऽ
	३	३	२
नि री ग -	प ग प -	प - ध प	ग री सा, सा
झू ऽ टी ऽ	ज ग की ऽ	बा ऽ ऽ स	ना ऽ ऽ । र
०	३	३	२

अंतरा.

प ग प प	ध - ध ध	ध नि ध निध	प ध प -
धु व पे हे	ला ऽ द अ	जा ऽ मि ऽ ल	ता ऽ रे ऽ
	३	३	२
नि नि	सां	प	
ध - ध सां	- ध - प	ग प ध प	ग री सा, सा
पू ऽ जी ऽ	ऽ म ऽ न	का ऽ ऽ म	ना ऽ ऽ । र
०	३	३	२

विभास-त्रिताल (मध्यलय)

(मारवामेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

प ग प प	प - - -	प - ध -	प ध प ग
हु रि भ ज	रे ऽ ऽ ऽ	तुं ऽ ऽ ऽ	म नु जा ऽ
३	३	३	०

मं	री	री	ग	प	ग	री	सा	सा	सा	प	प	ग	ग	ग	ग
रि	ध	सि	ध	दा	ऽ	य	क	भ	व	भ	य			पप	गरी
३				३				२						हा	३
ध	मं	ध	मं	सा	सा	-	री	सा	नि	री	ग	प	ग	री	सा
भा	ऽ	व	ध	रे	ऽ	ह	ह	अ	प	ने	ऽ	भी	ऽ	त	र।
३				३				२				०			

अंतरा.

मं	प	प	प	प	प	ध
प	प	ग	ग	प	- ध -	ध - ध मं ध नि प प
ग	म	न	सि	री	ऽ के	मे
सां				×		ल
ध	- सां	सां	(प)	- प	प	प
गा	ऽ य	बि	भा	ऽ स	म	नी
धं			×			दु
मं	धं	मं	सा	सा	- सा	- नि
धै	ऽ व	त	बा	ऽ दी	ऽ अ	त
					सूं	ऽ द
						र
						क
						र

विभास-त्रिताल (मध्यलय)

(मारवामेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

- ग - प | ग री सा - | सा - री ध | सा री सा -
 ऽ कां ऽ स्कुं | व र वा ऽ | जा ऽ इ ल ह म रा ऽ

री - नि ध	नि - ध -	सा - ग -	प ग प -
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	मो ऽ रे -	द र वा ऽ
मं ध	मं	×	ग मं ध
नि नि ध प	प प प ध	प ग - री	री ग मं ध
ना ऽ य न	घ र क ल	वा ऽ ऽ र	दे ऽ ऽ ऽ।
०	३	×	२
मं ग - प			
ऽ का ऽ स्कुं			

अंतरा.

ग - ग ग	प मं ध ध	मं सां - सां	सां - सां -
मौं ऽ म द	सा ऽ तु मी	स दा ऽ रं	गी ऽ ले ऽ
०	३	×	२
नि - रीं गं	गं रीं सां -	रीं रीं नि ध	नि ध मं -
प्रे ऽ ऽ म्पी	या ऽ ला ऽ	ना ऽ य न	अ प ने ऽ
०	३	×	२
मं सां सां सां	मं मं ध ध	ग - - री	री ग मं ध
ध	मं	मं	ग मं ध
ऊ ऽ प र	सु न भ र	वा ऽ ऽ र	दे ऽ ऽ ऽ।
०	३	×	२
ग ग - प			
ऽ का ऽ स्कुं			

विभास—त्रिताल (मध्यलय)

(मारवामेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

सा

सो

सा नि	री	ग	प	ग	सानि	री	ध	सा	सा	सा	री	सा	-	-	-
अ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	मो	ऽ	रे	सु	र	ज	न	वा	ऽ	ऽ	ऽ
सा				ग				×				२			
नि	री	ग	-	प	ग	प	-	म	ध	प	ग	ग	ग	री	सा, सा
म्हा	ऽ	रे	ऽ	हिं	ग	तें	ऽ	अ	न	त	ऽ	न	ऽ	जा	ऽ
०				३				×				२			। सो

अंतरा.

म	प	ग	प	-	प	ध	ध	ध	ध	नि	ध	नि	प	ध	प	-
ब	ल	रै	ऽ	न	के	स	भें	म	न	रं	ग	अ	ब	ही	ऽ	
०				३				×				२				
सां	सां	सां	(	प	-	प	प	ध	ग	प	ध	प	ग	री	सा, सा	
ध	ध	ध	सां	-	(प)	-	प	प	ध	ग	प	ध	प	ग	री	सा, सा
ग	र	वा	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ग	र	ही	ऽ	दु	ऽ	र	ज	न	वा । सो
०				३				×				२				

विभास—त्रिताल (मध्यलय)

(मारवामेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

प	ग	प	-	-	-	म	प	-	ध	-	म	-	ग	-
ऽ	ऽ	मो	रा	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
३				×			२				०			

ध मं री ग मं	ग री सा -	सा प प ग ग	पग गप पग रीसा
भी ऽ त पि	य र वा ऽ	सु र ज न	वाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
३	×	२	०
सारी सानि ध -	मं ध मं सा	सा सा सा -	सा सा सा -
३	×	२	०
३	३	३	३
नि	सा	मं	नि
सा री सा -	नि री ग मं	री - ग -	री - सा -
मै ऽ का ऽ	आ ऽ न दि	खा ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ ।
३	×	२	०
नि सा प ग			
ऽ ऽ मो रा			

अंतरा.

प प ग	प - ध ध ध ध - ध ध मं ध -
ऽ मं म द	सा ऽ क इ स दा ऽ रं गि ल रे ऽ
३	०
ध	ध
नि नि ध नि	प ध प - पप धध पप गरी गप पग रीसा निसा
ब र स भ	इ ल वा ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
३	०
प ध प सा	सा सा सा सा सा सा सा सा सा री सा -
इ त नि बि	न त को इ ह म रे मि ल न की ऽ

सा नि री ग मं री - ग - री सा, प ग
जा ऽ य सु ना ऽ ऽ ऽ वो ऽ। मो रा

विभास-आडाचौताल (विलंबित)

(मारवामेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

(सा)

मैं

नि	री	ग	-	प	ग	-	री	सा	-	सा(सा)	-	ध
५	तो	हे	५	५	धा	५	५	ऊं	५	अ	ब	५
		सा		सा ^x	री					अ ^३	ब	५
ध	सा	-	ध	सा	री	ग	-	प	-	ग	प	-
पी	५	रे	५	ज	ला	५	५	५	५	लु	दी	५
				ज ^x						लु ^३	दी	५
-	प	ध	-	म ^ध	ध	म ^१	ग	-	प	ग	री	सा,(सा)
५	न	५	५	है	५	५	५	५	द	र	५	५। मैं
४				है ^x						द ^३	र	

अंतरा.

मं प ध सां - नि सां - रीं सां नि - नि रीं गं पं
सु र की ऽ सौं ऽ ग त रा ऽ ग को ऽ ऽ

गं	रीं	सां	ध	मं	मं	ध	मं	-	ग	मं	ध	-	मं
म	र	म	ॐ	म	न	ॐ	ई	ॐ	ॐ	छा	ॐ	ॐ	फ
४		०		५	२		०			३		०	
ध	सां	-	निसां	मं	ध	मं	ग	-	प	ग	री	सा,(सा)	
ल	ॐ	ॐ	ॐ	पा	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ऊं	ॐ	ॐ	मैं
४		०	ॐ	५	२		०			३		०	

राग पंचम.



मधौ सनी धमौ धश्च मगौ मगौ रिसौ समौ ।
गमौ धनी धनी मधौ मांशः पंचम कस्त्वपः ॥ १२४ ॥

अपि च

गरी सनी रिगौ मपौ मधौ मगौ मगौ रिसौ ।
संपूर्णः पंचमोऽन्यः स्यात् मध्यमांशो निशीथगः ॥ १२५ ॥

अभिनवरागमंजर्याम्

रागः पंचम एष सर्वविदितो युक्तो वसंतस्वरैः ।
वादी मध्यम एव यत्र विलसत् संवादि षड्जो मतः ॥
आयेहे ऋषभं न संस्पृशति यो वर्ज्यर्षभोऽपि क्वचित् ।
रात्रावन्तिमयामके सुमतिभिर्मजुस्वरं गीयते ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ११६ ॥

सब वसंतके सुर जहां चढत रिखव नहिं लाग ।
सम संवादीबादितें कहियत पंचम राग ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ११६ ॥

पंचम राग मारवा थाटांतून उत्पन्न होतो. ह्याचे दोन प्रकार प्रचारांत आहेत. एक पंचम वर्जित (षाडव) व दुसरा संपूर्ण, हे दोन्ही प्रकार ललितांगाचे आहेत. अर्थात् दोन्ही मध्यमांचा प्रयोग दोहोंतहि संमत आहे. ह्या दोन्ही प्रकारांत वादीस्वर शुद्ध मध्यमच आहे व षड्ज संवादी आहे.

दोन्ही उत्तर राग असून ते उत्तर रात्रीत गातात. षाडव प्रकारांत हिंदोलंग असते. कोणी ह्या प्रकारांत ऋषभाचें दुर्बलत्व मानितात.

हा राग जुन्या ग्रंथांत वर्णिलेला आढळतो. पण तेथें तो भैरव थाटांत सांगितलेला आहे.

षाडव प्रकार

उठाव.

मं॒ध, सां॑, नि॒ध, मं॒ध, मं॒ग, रे॒सा, सा॒म, ग, मं॒ध, नि॒ध, नि॒मं॒ध ।

चलन.

मं॒धसां॑, सां॑, सां॑नि॒ध, मं॒धमं॒ग, मं॒गरे॒सा, नि॒सा॒म, म, म॒ग,
मं॒धसां॑, नि॒धनि॒मं॒ध ।

संपूर्ण प्रकार

उठाव.

ग, रे॒सा, नि॒रे॒ग, म, प, मं॒ध, मं॒ग, रे॒सा ।

चलन.

ग, मं॒ग, रे॒सा, म, म, म॒ग, प, मं॒धमं॒म, म॒ग, मं॒धसां॑, सां॑,
रे॒सां, रे॒नि॒ध, मं॒धमं॒गग, रे॒ग, मं॒गरे॒सा ।

पंचम-रूपताल (मध्यलय)

(प-वर्ज्य प्रकार)

स्थायी.

ध मं	ध	सां	सां	सां	सां	-	सां	ध	ध
मा x	ऽ	रु २	व	स	मा ०	ऽ	रुया ३	ऽ	त
ध मं	ध	मं	ग	मं	ग	-	सा	-	सा
मे x	ऽ	ल २	न	स	मू ०	ऽ	त्प ३	ऽ	न
नि सा	-	सा म	म	म	म	-	म ग	ग	ग
पौं x	ऽ	च २	म	गु	नी ०	ऽ	प्रि ३	य	क
ध मं	ध	सां	-	सां	सां नि	ध	नि	मं	ध
ह x	त	रा २	ऽ	ग	जा ०	ऽ	यो ३	ऽ	ऽ।

अंतरा.

ध मं	ध	सां	-	सां	सां	सां	सां	-	सां
हिं x	ऽ	दो २	ऽ	ल	रि ०	प	ही ३	ऽ	न
नि सां	-	मं गं	गं	मं	गं	मं	गं	-	सां
सो x	ऽ	ह २	नि	सु	ध ०	म	दी ३	ऽ	न

सां	मं	मं	गं	-	मं	गं	गं	सां	-	सां
ल	लि	तां	२	ऽ	ग	म	बि	ची	३	त्र
ध	मं	सां	-	सां	सां	ध	नि	मं	ध	
स	ब	को	२	ऽ	ब	चा	०	यो	३	ऽ।
×										

पंचम-सूलताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा
प्र

री	री	सा	सा	सां	सां	-	सां	सां	सां
थ	म	गु	न	बि	चा	०	र	क	रि
३		०		×		०		२	
नि	ध	मं	मं	ग	-	मं	-	ध	सां
ये	०	ध	री	ये	०	का	०	म	दो
३		०		×		०		२	
-	सां	री	री	नि	ध	मं	ग	री	सा
०	ख	बि	चा	०	०	०	०	र	प्र
३		०		×		०		२	

अंतरा.

म	ध	सां	-	सां	-	सां	-	सां	-
गु०	न	ते _x	ऽ	ही०	ऽ	ते _२	ऽ	ही _३	ऽ
सां	-	रीं	नि	ध	-	म	-	नि	ध
रा०	ऽ	खि _x	ये	ऽ०	ऽ	ओ _२	-	क्त _३	जु
म	ग	मं	ध	सां	-	सां	सां	सां	रीं
ग०	त	ति _x	न	हू०	ऽ	को _२	ब	चा _३	ऽ
नि	ध	मं	ग	री	-	सा, सा			
ऽ०	ऽ	ऽ _x	ऽ	ऽ०	ऽ	य । प्र			

पंचम—सूलताल (मध्यलय)

स्थायी.

सां	-	सां	सां	ध	ध	मं	ध	प	-
रा _x	ऽ	म०	ना	ऽ _२	म	ले _३	ऽ	ले०	ऽ
प	ग	प	मं	ध	-	नि	सां	सां	-
म _x	न	मे०	ऽ	ऽ _२	ऽ	ऽ _३	ऽ	रो०	ऽ

ग	म	ग	नि	ध	प	म	प	ग	प
गु x	प	त ०	प्र	ग २	ट	र ३	ट	ना ०	ऽ
ग	-	री	सा	नि	सा	ग	री	सा	-
ध्या x	ऽ	न ०	जो	क २	र	क ३	र	के ०	ऽ।

अंतरा.

म	म	ध	ध	नि	सां	सां	सां	नि	सां
घ x	डि	घ ०	डि	प २	ल	प ३	ल	प ०	ह
सां	नि	सां	सां	सां	सां	गं	-	सां	सां
र x	प	ह ०	र	नि २	स	बा ३	ऽ	स ०	र
प	-	सां	-	सां	-	म	-	ध	ऽ
ये x	ऽ	सो ०	ऽ	ई २	ऽ	च्छा ३	ऽ	आ ०	ऽ
म	म	ग	ग	प	ग	प	ग	री	सा
नं x	द	सु ०	ख	क २	र	क ३	र	के ०	ऽ।

पंचम-चौताल (मध्यलय)

स्थायी.

	सां नि	रीं	नि	ध मं	-	ध	सां नि	रीं	नि	ध मं	-
ॐ	मा	ॐ	ध	वा	ॐ	ॐ	मा	ॐ	ध	वा	ॐ
ग	ध मं	-	ध	रीं	सां	-	-	ध मं	मं	ग	ग
ॐ	मा	ॐ	ध	वा	ॐ	ॐ	ॐ	म	द	न	म
ग	ग	ध मं	ध	सां	-	सां	सां	सां नि	रीं	नि	-
थ	न	म	धु	सू	ॐ	द	न	म	न	मो	ॐ
ध मं	मं	ग	ग	मं	-	ग	ग	री	सा	-	सा
ह	न	म	द	ना	ॐ	न्त	क	मु	कूं	ॐ	द
सा	सा	म	-	म	म	म	म	मं	ग	ध मं	ध
मु	र	ली	ॐ	ध	र	मु	रा	ॐ	री	मा	ॐ
सां	-	सां	निरीं (तिॐ)	गं	-	रीं	सां	सां	सां	सां नि	मं
या	ॐ	प	ॐ	भ	ॐ	क्त	ब	त्स	ल	ह	रे।
ध	सां नि	रीं	नि								
ॐ	मा	ॐ	ध								

अंतरा.

नि	सां	-	सां	सां	-	सां	सां	-	नि	रीं	सां	सां
दी	५		न	बं	५	धु	दा	५	मो	५	दु	र
नि	सां	नि	सां	रीं	सां	-	सां	नि	रीं	नि	म	-
द	५	नु	जा	५	री	५	दी	५	ना	ना	५	थ
सां	-	सां	सां	नि	ध	नि	म	-	म	-	ग	
दा	५	लि	द्र	ह	र	द	या	५	सिं	५	धु	
ग	-	म	ध	म	ग	-	री	री	सा	सा	नि	
दी	५	नो	-	द्धा	५	५	र	न	द	या	५	
री	म	म	म	म	-	म	म	-	ग	नि	-	
५	नि	धि	द	या	५	नि	धा	५	न	ना	५	
रीं	गं	रीं	सां	नि	रीं	नि	म	ध	नि	रीं	नि	
रा	५	य	न	न	र	ह	र	५	मा	५	ध	
ध	म	-	ध	नि	रीं	नि	म	-	ग	म	-	ध
वा	५	५	मा	५	ध	वा	५	५	मा	५	ध	

पंचम-धमार (विलंबित)

स्थायी.

ग - म^ध धगो ऽ कु ल^३

सां - - ध सां	म	नि	ध	म	ग	री	सा -
गां ऽ ऽ व ऽ	के	ऽ	ब	सै	ऽ	या	ऽ ऽ ऽ
सा री - सा -	ग	म	ध	सां -	सां	सां	रीं सां
स खी ऽ री ऽ	मों	ऽ	ऽ	सों	ऽ	क	र त अ
म ^ध ध - सां -	ध	म	ग	री	सा		
ने ऽ ऽ क ऽ	ठ	कु	रा	ऽ	इ।		

अंतरा.

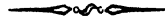
ग म ^ध ध सां -	सां	सां	सां - -	सां	रीं	सां -
मो ऽ ऽ र ऽ	मु	क	ट ऽ ऽ	मु	र	ली ऽ
सां सां सां ध ध	गं	-	सां सां सां	सां	रीं	सां -
क र सो ऽ हे	बा	ऽ	कि लं ग	रा	ऽ	ई ऽ
म ^ध ध सां सां -	ध	म	ग	री	सा	
क हूं ऽ ना ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	इ।	

संचारी.

सा म - म -	ग -	म ध सां	ध म ग री
के ऽ ऽ ण्ण ऽ	ऽ ऽ	र सि क	मां ऽ ग त
×	२	०	३
ग म ध सां सां	रीं नि	ध म ग	नि ध म ग
गो ऽ ऽ र स	ऐं ऽ	सो ऽ ऽ	ढीं ऽ ट ऽ
×	३	०	३
म सां			
री ग म ध सां	सां ध	नि म ध	म ग री सा
कुं व ऽ रे ऽ	क ऽ	न्हा ऽ ऽ	ईं ऽ ऽ ऽ।
	२	०	३

(अपूर्ण)

राग भट्टिहार. (भट्टियार किंवा भट्टियारी).



सधौ पधौ मपौ गश्च मधौ सरी निधौ च पः ।
मपौ गरी तथा सश्च भट्टियारस्तु मांशकः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १२६ ॥

मेलोद्वासंतिकाद्वै प्रभवति रूचिरो भट्टिहारोऽपि रागः ।
संपूर्णो मध्यमांशः परममधुरसंवादिषड्जस्वरो हि ॥
मिश्रा यस्मिन् त्रयोऽपी परजललितकालिंगका इत्यमूचू ।
रात्रौ यामे तृतीये सुकुशलमतिभिर्गीयते मंजुतानैः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ११४ ॥

मेल बसंत कलिंगडा परज ललत मिलि तीन ।
मध्यम वादी संपूरन भट्टियारा कहि दीन ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ११४ ॥

भट्टिहार अथवा भट्टियार हा राग मारवा मेलान्तून उत्पन्न होतो. यांत दोन्ही मध्यम लगतात. याचा वादी शुद्ध मध्यम आहे व संवादी षड्ज आहे. हा रात्रीच्या शेवटच्या प्रहरी गातात. शुद्ध मध्यमावर मुक्काम केला जातो. तीव्र मध्यम हा यांत रात्रिगेयत्वाचा दर्शक आहे. यांत “ पग ” व “ धर्म ” या स्वरसंगती रागाला गोडी आणतात. निषाद आरोहांत दुर्बल व अवरोहांत वक्र आहे. भट्टिहार हा एक जुना राग आहे व त्याचा उल्लेख ग्रंथांतून सांपडतो. पण हल्लीचें त्याचें स्वरूप ग्रंथोक्त स्वरूपापासून भिन्न

आहे. प्रचारांत खमाज थाटांतहि एक भट्टिहार गातात. पण तो अगदींच अप्रसिद्ध आहे. विशेष प्रचार वर वर्णिलेल्या भट्टिहाराचाच आहे.

उठाव.

सा, ध, प, धम, पग, मंध, सां, रेंनि, ध, प, म, पग, रेसा।

चलन.

साध, धप, म, म, पग, मंध, सां, सां, निधप, म, पग,
मंध, मंग, पग, रेसा । मंधसां, सां सां, निरेंसां,
रेंगं, रेंसां, सांम, मपग, मंधसां, रेंनिधमंग,
मंगरेसा ।

भट्टियार-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि	सा	ध	ध	ध	प	म	म	म	प	ग
सा	ध	ध	ध	प	म	म	म	प	ग	
नि	स	दि	न	न	बि	सु	म	र	त	
म	ध	सां	-	सां	रीं	नि	ध	प	प	
सु	र	त	ऽ	ते	हा	ऽ	ऽ	ऽ	रि	
प	सां	नि	ध	ध	ध	ध	ध	नि	प	
ध	न	ब	र	न	सुं	द	र	त	न	
ग	म	ध	ध	ध	प	म	(म)	री	-	सा
अ	त	सु	भ	ते	हा	ऽ	ऽ	ऽ	रि	

अंतरा.

म	ध	सां	-	सां	सां	सां	रीं	रीं	सां
मु	र	ली	ऽ	ग	म	न	सि	रि	ज
नि	रीं	गं	गं	रीं	सां	सां	नि	ध	ध
क	र	त	सु	र	अ	त	सु	र	स
सां	सां	नि	ध	ध	ध	ध	नि	प	प
अं	स	ग	त	म	ध	म	च	त	र

ग	म	ध	ध	प	म	(म)	री	-	सा
नि	य	त	म	न	हा	ऽ	ऽ	ऽ	रि।
x		२			०		३		

भटियारी-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

नि
सा
ब

नि नि	ग	ध	सि	नि
ध ध प ,म	म - (म) ग	मध सां - ,सां	नि ध प ,धनि	
र नी ऽ ,न	जा ऽ ये ऽ	मोऽ सें ऽ .ति	हा ऽ री ,उप	
३	x	२	०	
प - म -	ग (म) ग ,मध	प म ग पग	री - सा ,सा	नि
मा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ त ,मुख	चौं ऽ ऽ ऽद	की ऽ ऽ ।,ब	
३	x	२	०	

अंतरा.

ध	नि	सां	नि	सि
मध सां - ,सां	रीं सां - ,सां	निरीं गं रीं सां	सां नि ध प ,पध	
तैसा ही ऽ ,अ	त र ऽ ,अ	रा जा ऽ ऽ	ल गा ऽ ये,ऽऽ	
३	x	२	०	
ध प म ग	मध सांसां सां सां	सां नि - रीं गं	रीं - सां ,सां	नि
अं ऽ ऽ ग ऽ	धुध बिस र त	ऽ ऽ ऽ मुख	दे ऽ खो ,चा	
३	x	२	०	

$\overset{१}{\text{नि}} \text{ ध प पध, धरी}$ $\text{३ } \text{५ } \text{ल } \text{म५, घ५}$	$\overbrace{\text{सां नि ध प}}$ $\text{मौ } \text{५ } \text{५ } \text{५}$	$\overset{प}{\text{म}} - \text{ग पग}$ $\text{२ } \text{५ } \text{५ } \text{त५}$	$\overset{नि}{\text{री}} - \text{सा, सा}$ $\text{की } \text{५ } \text{५ } \text{।, ब}$
---	--	--	---

भटियारी-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

नि
सा
उ

$\text{सा } \text{ध } \text{ध प म, गम}$ $\text{३ } \text{५ } \text{ट } \text{५ } \text{५, ग५}$	$\overset{ग}{\text{म}} - (\text{म}) \text{ ग}$ $\text{३ } \text{ई } \text{५ } \text{५ } \text{५}$	$\overset{ध}{\text{म}} \text{ सां - निसां}$ $\text{२ } \text{मो री } \text{५ } \text{५५}$	$\overset{नि}{\text{सां}} \text{ नि ध प}$ $\text{० } \text{नीं } \text{५ } \text{५ } \text{द}$
$\overset{ध}{\text{प}} \text{ पध नि प}$ $\text{३ } \text{हो } \text{५५ } \text{ब ल}$	$\overset{ग}{\text{म}} - (\text{म}) \text{ ग}$ $\text{३ } \text{मा } \text{५ } \text{५ } \text{५}$	$\overset{ध}{\text{म}} \text{ ध प म}$ $\text{२ } \text{मो } \text{५ } \text{५ } \text{५}$	$\overset{प}{\text{ग}} \text{ पग री सा, सा}$ $\text{० } \text{५ } \text{रा रे } \text{५५}$

अंतरा.

$\overset{ध}{\text{म}} \text{ ध सां - सां}$ $\text{३ } \text{जो में जा } \text{५५}$	$\overset{ग}{\text{सां}} - \text{रीं सां}$ $\text{३ } \text{ती } \text{५ } \text{ऐ सो}$	$\overset{सां}{\text{नि रीं गं रीं सां}}$ $\text{२ } \text{पी } \text{५ } \text{त } \text{५५}$	$\overset{नि}{\text{सां}} \text{ नि ध प, पध}$ $\text{० } \text{क र ती } \text{५, ५५}$
$\overset{ध}{\text{नि}} \text{ प म -}$ $\text{३ } \text{बि न दे } \text{५}$	$\overset{ग}{\text{म}} - \text{प ग}$ $\text{३ } \text{खे } \text{५ } \text{न हिं}$	$\overset{ग}{\text{म}} \text{ ध पम पग}$ $\text{२ } \text{चै } \text{५ } \text{५५ } \text{५५}$	$\overset{प}{\text{ग}} \text{ पग री, सा, सा}$ $\text{० } \text{५ } \text{न हा। } \text{५, ५}$

ध	सांसां	सां	सांसां	नि	सां	नि	सां	नि	धप	म	पग
मध	कम	री	तब	सांसां	में	सां	म	न	रं	ग	SS
लन		४		श्रव	०			२		०	
३				३							
ध	सां	-	सांसां	नि	ध	प	म	म	प	ग	म
मध	ते	ऽ	कलु	ना	ऽ	ऽ	सो	हा	ऽ	ये	गमप
तब		४		३		०		२		०	मेSS
३				३							

राग भंखार.

अथ भंखाररागः स्यात्संपूर्णः पंचमांशकः ।
षड्जसंवादरुचिरो मध्यमद्वयसंयुतः ॥ ४८१ ॥
कोमलो मध्यमोऽवश्यमिष्यते भट्टिहारवत् ।
तृतीयप्रहरे रात्र्यां गानमस्यापि संमतम् ॥ ४८२ ॥
तीव्रा निषादगांधारधैवताः कोमलर्षभः ।
उभावप्युचितावत्र मध्यमौ तीव्रकोमलौ ॥ ४८३ ॥

संगीतसुधाकरे । पृ. ५५ ।

निसौ गमौ पमपगा मधौ मगौ पगौ रिसौ ।
भंखारः पंचमांशः स्याद्रात्र्यां चरमयामके ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १२८ ॥

भंखाररागस्तु वसंतमेले ।
संपूर्णरूपः खलु पंचमांशः ॥
द्विमध्यमोऽसौ मृदुलर्षभश्च ।
रात्रौ तृतीये प्रहरेऽभिगीयते ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ११५ ॥

जब वसंतके मेलमें पंचमहूं लग जाय ।
पस बादिसंवादीतें राग भंखार कहाय ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ११५ ॥

भंखार अथवा भस्खार राग मारवा थाटांतून उत्पन्न होतो. हा आधुनिक आहे असें कांहीं लोक म्हणतात. हा संपूर्ण आहे, व यांत वादी स्वर पंचम आहे. हा उत्तरांगप्रधान आहे, व तो रात्रीच्या शेवटच्या प्रहरी गातात. यांत दोन्ही मध्यमांचा प्रयोग आहे, व त्यामुळे याचा समप्रकृतिक अशा विभास रागापासून हा भिन्न राहतो. यांत मुक्त-मध्यम नसल्यामुळे भटिहारहि या पासून भिन्न होतो. भटिहाराप्रमाणें यांतहि “ पग ” व “ मंघ ” या स्वरसंगति महत्त्वाच्या आहेत. हा राग अप्रसिद्ध आहे, व त्यामुळे तो कमी ऐकण्यांत येतो.

उठाव.

नि॒सा, गमप, म, पग, मं॒ध, मंग, पग, रे॒सा ।

चलन.

गे॒सा, ग, मपमग, मं॒ध, मंग, पग, रे॒सा । नि॒सा, रे॒ग,
मग, मं॒धमंग, गे॒सा । नि॒सा, गमप, मप, मग,
ग, पमग, रे॒सा, नि॒, सा॒रेग, मग, धमंग,
पग, रे॒सा ।

भंखार-तीव्रा (मध्यलय)

स्थायी.

नि	सा	सा	ग	म	प	-	म	प	-	म	-	प	ग	ग
र	ब	गु	न	गा	५	५	रे	५	५	५	५	५	५	तुं
२		३		x			२		३			x		
ग	ग	ग	प	ग	री	सा	-	ग	-	म	ग	म	ध	म
स	म	झ	भ	ला	५	५	मा	५	न	व	दे	५	५	
२		३		x			२		३		x			
ध	म	ग	प	ग	री	सा								
५	५	ही	५	आ	ज	हुं।								
२		३		x										

स्थायीप्रमाणें.

अंतरा.

नि	सा	सा	ग	म	प	-	म	प	-	म	-	प	ग	-
ग	म	न	सि	री	५	५	के	५	५	५	५	५	५	५
२		३		x			२		३			x		
-	-	प	ग	री	-	सा	सा	-	नि	सा	ग	म	ग	
५	५	सु	र	नी	५	के	पं	५	च	म	वा	५	दि	
२		३		x			२		३		x			
ध	म	म	ध	म	ग	ग	ग	-	म	ग	सा	-	-	
स	म	झ	५	च	त	र	रे	५	५	भ	ला	५	५।	
२		३		x			२		३		x			

भंखार—त्रिताल (विलंबित)

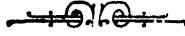
स्थायी.

म	ग, गमे	गरी	रीरीसानि	सा, गम	प	म	प	गमे, ग
ए, SS	रुठ	मा SSS	S, हे S	का	S	री	SS, क	
३				x				
रीसा	सारीगरी	, ग	मग	ध	म	ध	म	ग
तली	SSSS	, दा	वर	मै	नी	S	S।	
२				०				

अंतरा.

सासा	म	प	प प	ग	ग	प	सा(सा)
मन	, गम	पी	तम	मग	, मग	गपग	सा(सा)
३	, रंग			अब	, घर	जाडेन	दे S
				x			
सा(सा)	, री	गग	मम	ग	प	म	प
सा S	, स्न	नंद	कीS	प	प	S	ग
३				०	री	S	S

राग साजगिरी.



निरी गमौ गरी सश्च निधौ मधौ सरी सगौ ।
मनी धमौ धमौ गश्च पगौ रिसौ तथैव च ।
साजगिरी मता सायमप्रसिद्धाऽथ गांशिका ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १२१ ॥

अथ साजगिरीरागः प्रख्यातः सकलप्रियः ।
गांधारांश्च संपूर्णः स्यात्संवादिनिषादकः ॥ २६२ ॥
धैवतद्वयसंयुक्त ईषत्कोमलमध्यमः ।
तीव्रा निषादगांधारमध्यमाः कोमलर्षभा ॥ २६३ ॥
रुचिरात्र स्यान्निषादमध्यमस्वरसंगतिः ।
मंद्रमध्यप्रचारश्च सायंकाल मनोहरः ॥ २६४ ॥
समुद्धतः पूरियायाः पूर्विकायाश्च मिश्रणात् ।
विचित्रं रूपमेतत्स्यादपूर्वं लक्ष्यवर्त्मनि ॥ २६५ ॥

संगीतसुधाकरे । (पृ. ३७)

जबही गुनियन पूरबी द्वै धैवतसें गाइ ।
तबही सारे जगतमें साजगिरी कहिलाइ ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ५९ ॥

साजगिरी मारवा मेलंतून उत्पन्न होणारा एक आधुनिक प्रकार आहे.
हा संपूर्ण आहे, व यांत गांधारवादी आहे. यांत दोन्ही धैवत व दोन्ही

मध्यमांचा प्रयोग सांगितला आहे. निषाद व मध्यम यांची संगति यांत चांगली शोभते. हा राग सायंकाळीं गाइला जातो. पूरिया व पूर्वी यांचे संयोगाने हा राग होतो असें जाणत्यांचें मत आहे. याचें मंडन बहुतेक मन्द्र व मध्य सप्तकांतच शोभतें. शुद्ध मध्यमावर मुक्काम यांत अतिरंजक होतो; व त्यामुळे वर दिलेल्या दोन रागांपासून याचें स्वरूप स्वतंत्र होतें. हाहि एक अप्रसिद्धच राग आहे.

उठाव.

नि, रेग, मंग, रेसा, निध, मंघ, सा, रेसा, ग, म, निध,
मंघमंग, पग, रेसा ।

चलन.

सा, निरेगेरेमंग, रेसा, सा, निरेगेरेसा, सा, निध, सा,
सा, निरेग, निरेनिध, मंघ, सा, ग, म, नि, मंघम,

ग प

मंमंगेरेसा, मंग, मंघ, धप, सां, सां, सांनि

रेनिधप, पधग, प, प, ध, सां, निरेनि,

ग प

मंघग, मंमंगेरेसा ।

साजगिरी-एकताल (विलंबित)

स्थायो.

										नि
										सा
										ए
										सा
नि	री	ग	री	मे	मे	ग	नि	री	सा	- नि
५	५	५	५	५	आ	५	५	५	जे	५ आ
										सा
री	ग	री	सा	नि	-	री	नि	ध	-	मे ध
५	नौ	५	द	नौ	५	५	द	५	५	म ह
										मध
ध	मे	सा	सा	निरी	ग	री	सा	ग	-	म गम निनि
५	५	५	५	५	स	खी	५	सो	५	५ (हे५)
										सा
ध	मे	ध	ग	-	गमे	गमे	ग	नि	री	सा - नि
ला	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५ ए
										सा
री	ग	-	री							
५	५	५	५							

अंतरा.

ध मं	ग	मं प	धप	सां	-	सां	सांनि	रीं	रीं	सां	-
ज	सो	म	तां	रा	५	नि	को	५	स	खी	५
नि	सां	निध	निध	प	प	मं	ध	ग	प	ध	सांनि
नि	जा	५	यो	के	५	५	५	५	छ	बी	५
ध मं	-	ध	ग	गमं	गमं	ग	नि	री	सा	-	नि
रा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	ए
री	ग	-	री								
५	री	५	५								

साजगिरी-आढाचौताल (विलंबित)

स्थायी.

नि
सा
चं

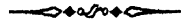
नि	री	ग	री	मं	मं	ग	री	-	सा	-	सा	नि	री
५	५	गे	५	५	का	५	५	५	म	५	हो	ये	५

ग	री	-	सा	नि	सा (सा)	ध	सा	सा	-	नि	सा	री	सा
आ	सा	५	०	५	०	५	०	५	०	५	०	५	०
सा	नि	री	ग	ग	नि	री	नि	ध	म	ध	म	सा	- सा
ही	५	०	५	०	५	०	५	०	५	०	५	०	५
म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म
ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग
प	न	आ	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५

अंतरा.

ग	म	ग	प	ध	प	सां	सां	रीं	सां	-	नि	सां	-	सां	निध
औ	लि	या	के	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
नि	ध	प	-	प	प	-	प	ध	ग	प	प	-	ध		
सा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
सां	नि	रीं	नि	म	ध	ग	ग	म	ग	री	सा	-	सा		
ली	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५

राग ललिता-गौरी.



मध्यमौ द्वौ यदा गौर्या संप्रयुक्तौ यथायथम् ।

ललिता पूर्विका गौरी भवेदिति सुसंमतम् ॥

श्रीमल्लक्ष्यसंगीति (द्वि. पृ. १२५)

ललितागौरी हा राग श्रीमल्लक्ष्यसंगीतांत पूर्वी थाटांत वातला आहे. यांत दोन्ही मध्यम लागतात. दोन्ही मध्यम घेऊन गौरी राग म्हटला म्हणजे ललिता-गौरी राग होतो, असें गुणि लोक समजतात. या रागांत उपलब्ध असलेली एकच चीज येथें दिली आहे. तीत दोन्ही धैवतांचा प्रयोग असून कोमल धैवत नांवापुरताच असल्यामुळें, ह्या चीजेचा मारवा थाटांतील चीजांत समावेश केला आहे. ही जवळजवळ भटियार रागाची दिसते. परंतु जयपूरचे आषकअलि खांसाहेबानी ती ललितागौरीची म्हणून सांगितली असल्यामुळें तें नांव दिलें आहे.

साधारण चलन.

ध नि रे प
म ध, नि, रे, गंरे, सां, निसां, सां, नि, ध, प, ध नि प

म प ग, रे ग, रे, सा । सा, नि ध, सा, रे सा, प, प ध नि
नि

प, ग, म प म, ध, सां, सां, सां रे सां, सां, नि रे

री
गं रे सां, सां नि ध प, प ध नि प, ग, मप ॥

ललितागौरी-धमार (विलंबित)

स्थायी.

मं ध नि -	रीं गं रीं सां -	नि	सां	नि रीं सां नि -
ए मु र ऽ	ली ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ	ऽ	वा ऽ ऽ
ध - प - ध	नि प - म - प	ग	री	ग -
ऽ ऽ ले ऽऽ	सां ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ	ऽ	व ऽ
रीं - सा -	सा - - नि ध	सा	-	री सा -
रे ऽ ऽ ऽ	ने ऽ ऽ क ऽ	मा	ऽ	र ग -
मं प - प ध	नि प - ग - -	म	प - -	
दे ऽ हो ब	ता ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ	य	रे ऽ ऽ।

अंतरा.

मं - ध सां सां सां	-	सां - -	नि सां रीं सां सां
हूं ऽ ऽ ढ कि री	ऽ	सौं ऽ ऽ	के ऽ त स
सां नि रीं गं रीं सां	-	सां सां -	नि ध प पध
क ल ऽ ब न हूं	ऽ	अ ब ऽ	ला ऽ ऽ कित
नि प - ग - -	म	प - -	
जा ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ	उ रे ऽ ऽ	

काफी थाट.

काफी थाटांतील राग (३५)

सैधवी अथवा सिंदूरा	सुधराई (कानडा)
सिंध	शहाना (कानडा)
बरवा	नायकी कानडा
पंजाबी बरवा	देशाख्य (देवसाख)
धनाश्री	कौशिककानडा किंवा कौंसी
धानी	मेघमल्लार किंवा मेघ
प्रदीपकी किंवा पटदीपकी	सुरमल्लार
हंसकंकणी	रामदासी मल्लार
पलासी	नट मल्लार
मध्यमादि सारंग	मैराबाईका मल्लार
शुद्ध सारंग	चरजूका मल्लार
बडहंस सारंग	चंचलसस मल्लार
सामंत सारंग	धूलिया मल्लार
मियांकी सारंग	रूपमंजरी मल्लार
लंकदहन (सारंग)	श्रीरंजनी
पटमजरा	आभोगी
सूहा (कानडा)	चद्रकास

गौड

सैधवी अथवा सिंदूरा



अथ रागः सिंधुरोऽत्र षड्जांशक उदीरितः ।
पंचमस्वर संवाद्यारोहे गांधार वर्जितः ॥ ४२५ ॥
कैश्चिद्वैवतसंवादी ऋषभांशो निगद्यते ।
अयं षाडवसंपूर्णः सर्वकालेषु गीयते ॥ ४२६ ॥
धैवतर्षभकौ तीव्रौ मृदूगांधारमध्यमौ ।
उभावपि निषादौ स्तस्तीव्रकोमल संज्ञकौ ॥ ४२७ ॥

संगीत सुधाकरे (पृ. ५१)

सरी मपौ धसौ रिश्च निधौ पमौ गरी च सः ।
सैधवी कीर्तिताशास्त्रे सपसंवाद शोभना ॥ १४८ ॥
मपौ निसौ रिगौ रिश्च सनी धपौ मगौ रिसौ ।
सिंदूरा गीयते लोके पांशाऽऽरोहे गवर्जिता ॥ १४९ ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ।

काफीकेही मेलमें चढत गनी नहीं होइ ।
पस संवादी वादि है राग सिंदूरा सोइ ॥

रागचंद्रिकासार ।

सैधवी अथवा सिंधुरा हा काफी थाटांतून उत्पन्न होणारा एक औडुव-संपूर्ण राग आहे. यांत आरोहांत गांधार व निषाद हे स्वर वर्ज्य आहेत. षड्ज वादी आहे व पंचम संवादी आहे. हा कोणत्याहि वेळीं गातां येतो. निषादाच्या वर्ज्यत्वाबद्दल मतभेद आहे. आरोहांत कधीं कधीं तो स्वर

घेतलेला आढळतो. प्रचारांत हा राग काफीमिश्रित असाच बहुतेक ऐकण्यांत येतो. व त्यामुळे तो सर्वसाधारण लोकांस प्रिय होतो. हा राग “सिंधोडा” या नावाने रागविबोधांत वर्णिलेला आहे. पारिजात व हृदयप्रकाश या ग्रंथांतहि या रागाचा उल्लेख आहे.

उठाव.

शुद्ध सिंदूरा

सा, रीमप, ध, सां, निधपमग, रीसा ।

काफीमिश्रित सिंदूरा

मप, निसां, रींगं, रीं, सां, निधपमग, रीसा ।

चलन.

मपनिसांरींगं, रीं, सां, सां, निध, मपगरे, मगरीसा,
धमप, निसांरींगंरींसां ।

सिंदूरा-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प म म प ध	सां (ध ध सां)	- नि ध प	प म ग री री
बि ध न बि ३	ना ऽ श ना ×	ऽ च तु र २	भु जा ऽ ए
- म ग -	री री - सा	- री सा सां	सां प नि - ध ध
ऽ क दं ऽ ३	त लं ऽ बो ×	ऽ द र ग २	जा ऽ न न।

अंतरा.

प म - प ध	सां ध सां -	मं रीं गं रीं सां	ध रीं रीं सां सां
सिं ऽ दु र ३	ब द ना - ×	मू ऽ श क २	ब ह ना रि
नि ध प ग ३	- ग - री ×	ग - री सा २	री - सा सा
ध सि ध के ३	ऽ दा ऽ य ×	क ऽ ग ण २	ना ऽ य क
सा रे म रे ३	म प ध म ×	प ध रें सां २	नि ध प ध।

सिंदूरा-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा सां नि ध ध	ध सां नि - प ध	म ग - री म	म सा ग री ग री सा
कौ ऽ न ह ३	रे ऽ ऽ दु ख ×	मो ऽ म न २	को ऽ स खी

री ग री म च तु र पि	म ग रीगु री सा या S बि न	म री म प ध त र स त	प रीं सां नि धध S जि या नित
------------------------	-----------------------------	-----------------------	--------------------------------

अंतरा.

प म - प ध घा S य ल ध सां नि ध ध का S सैं क	ध सां ध सां सां की S ग त ध सा रीरीं सां नि ध नि ध हुं S S S S ब	गं मं रीं गं रीं सां घा S य ल म - री म या S त न	नि रीं सां सां - जा S ने S म सा ग - री सा की S ग त
---	--	--	---

सिंदूरा-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

प सां (सां) नि नि ध उ न S बि न म ग री ग री सा कै S S से S	ध सां सां नि ध प क ल S न हि सा री नि सा सा, सा सा बी S S ते, दिन	प नि ध ध म प ध ध ए S S क ध म री म - , प ध रा S S , त स	म ग - री री री S S कहा सां नि सां री नि - ध म प खी S S S S S अबा
--	---	---	---

अंतरा.

प म - - प ध बे S S ग मि	ध सां सां ध सां - ल न की S	मं रीं गं रीं सां री S S त सु	सां रीं नि सां सां - धा S S रो S
----------------------------	-------------------------------	----------------------------------	-------------------------------------

नि	सां (सां) निध धनिपध	ध	सां - नि धध	ध	ध म पधध	म	सा
गि न	SS गिऽनऽ	रे	SS नबि	हा	SS तऽस	खी	SS अ ब
३		३		२		०	

सिंदुरा-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि	सां	-	रीं	नि	सां	नि	-	ध	प	ध
आ	SS		ज	नं	द	ला	SS	ल	मु	ख
म	३		२		०	०		३		
ग	-		री	री	म	ग	री	सा	री	सा
चं	SS		द	नै	SS	न	न	नि	र	ख
३			२		०	०		३		
सा	सा	सा	री	म	प	प	ध	म	प	
प	र	म	मौं	SS	ग	ल	भ	यो	SS	
म		२		०	०		३			
रीं	रीमं	रीं	सां	-	सां	-	नि	ध	ध	
मु	(वऽ	न	मे	SS	रे	SS	SS	SS	SS	SS
३		२		०	०		३			

अंतरा.

म	-	म	प	ध	सां	ध	सां	सां	-
को	SS	टि	कं	SS	द	SS	प	ला	SS
३		२		०	०		३		

गुं	मं	सां	सां	नि	सां	सां	नि	ध
रीं	गुं	रीं	सां	क	सां	त्र	क	र
व	ऽ	ण्य	ए	क	ऽ	त्र	क	र
नि ^x		ध	ध	म	म	ग	री	सा
सां	-	सां	नि	ग	गुम	ग	री	सा
बा	ऽ	रुं	ऽ	ब	हिऽ	ज	ब	हि
मं ^x		रुं	ऽ	ब	हिऽ	ज	ब	हि
रीं	मं	रीं	सां	-	रीं	सां	नि	ध
ने	ऽ	क	हे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
x		र		०	०	३		३।

सिंदूरा-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सां	सां	रीं	नि	सां	नि	-	ध	प	ध
नि	ऽ	च	न	बि	शा	ऽ	ल	ब	न
लो ^x		र	म	म	म				
म	-	री	री	म	ग	री	सा	री	सा
ग	ऽ	ल	उ	र	क	म	ल	मु	ख
मा ^x		ल	उ	र	क	म	ल	मु	ख
री	-	री	म	म	प	-	ध	म	प
सा	ऽ	ड	ल	न	की	ऽ	झ	ल	क
कुं ^x		ड	ल	न	की	ऽ	झ	ल	क

मं	मं	सां	सां	-	नि	ध	ध
रीं	रींमं	रीं	रीं	सां	सां	डा	डा
न	(यऽ)	न	सु	ख	डा	डा	डा
सां		सां					
नि	सां						
लो	ऽ						
×							

अंतरा.

प		म	प	ध	सां	सां	सां	सां
म	-	म	प	ध	सां	सां	सां	सां
पी	-	त	प	ट	शि	मु	कु	ट
×		त			०			
मं	मं	सां	सां	सां	सां	सां	नि	ध
रीं	गं	रीं	रीं	सां	नि	सां	नि	ध
शौं	ऽ	ख	च	ऽ	क्र	ऽ	ग	दा
×		२			०		३	ऽ
नि		ध		म	म	गम	ग	री
सां	-	सां	नि	ध	ग	ते	मु	र
प	ऽ	दा	अ	ध	र	ऽ	मु	ली
×		२			०			
मं	मं	सां	सां	सां	सां	-	नि	ध
रीं	मं	रीं	रीं	सां	सां		नि	ध
च	ऽ	त्र	म	न	भा	ऽ	ह	री
×		२			०		३	ऽ

सिंदूरा-झपताल (मध्यलय)
स्थायी.

म					म	प	ध		
ग	-	री	-	सा	री	म	प	ध	नि
पी	५	न	५	कि	री	५	त	५	न
×		२			०		३		
म									
ग	-	री	सा	-	म	ग	री	ग	सा
जा	५	नी	५		तु	म	तो	५	हो
×		२			०		३		
री	म	प	ध	ध	प	नि	धम	नि	ध
					सां				
मू	र	ख	५	अ	ना	५	५५	५	री।
×		२			०		३		

अंतरा.

सां					ध	सां	सां		
नि	-	ध	-	म	प	ध	ध	सां	सां
नं	५	द	५	ल	ल	न	तो	५	री
×		२			०		३		
मं									
रीं	गं	रीं	-	सां	नि	सां	नि	ध	प
बि	न	ती	५	क	र	त	हूं	५	५
×		२			०		३		
म									
ग	-	रि	ग	सा	री	म	प	-	ध
ला	५	ख	५	ज	त	न	क	५	र
×		२			०		३		
सां									
ध	नि	सां	-	नि	ध	म	नि	-	ध
मैं	५	तो	५	से	हा	५	५	५	री।
×		२			०		३		

सिंदूरा-धमार (विलंबित)

स्थायी.

म	प	नि	सां	रीं	गं	-	रीं	-	सां	-	नि	-	-
ए	रि	मे	रे	मु	ख	ऽ	प	ऽ	र	ऽ	डा	ऽ	ऽ
म				म					री		म	म	
ध	म	ध	प	ग	-	-	री	-	म	-	ग	ग	-
रो	ऽ	ऽ	गु	ला	ऽ	ऽ	ल	ऽ	सां	ऽ	व	रो	ऽ
सा				म					ध		रीं	सां	नि
री	-	सा	-	री	म	-	प	-	ध		रीं	सां	नि
वा	ऽ	के	ऽ	म	न	ऽ	में	ऽ	क	हु	औ	ऽ	रा

अंतरा.

प	सां			सां				सां	सां	-	नि	सां	-	रीं
म	-	प	नि	-	-	नि	सां	सां	-	नि	सां	-	रीं	
ला	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	स	कु	च	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	का	
मं						सां	रीं							
गं	-	-	रीं	-	सां	-	रीं	नि	-	सां	-	सां	सां	
हू	ऽ	ऽ	की	ऽ	ना	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	त	
सां														
नि	-	-	सां	-	-	रीं	सां	-	-	नि	-	सां	सां	
मू	ऽ	ऽ	ठ	ऽ	ऽ	च	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	व	त	
नि														
सां	-	नि	रीं	-	नि	-	ध	प	ध					
दौ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ					

सिंदूरा-धमार (विलंबित)

स्थायी.

प	म	प	-	सां	नि	-	सां	-	रीं	गुं	-	रीं	-	सां	-
	हो	५	५		री	५	५	५	खे	५	५	ले	५	५	५
नि	सां	-	-	प	नि	प	-	प	गु	-	-	री	-	सा	-
	सौं	५	५		त	५	५	सु	जा	५	५	ने	५	री	५
प	म	प	-	सां	नि	-	सां	-	नि	रीं	-	ध	प	म	प
	आ	त	५		मा	५	५	५	रा	५	५	म	५	सो	५।

अंतरा.

प	म	प	-	सां	नि	-	सां	नि	सां	-	-	सां	-	-	-
	जो	५	५	गी	५	५	५	जो	खे	५	५	ले	५	५	५
मं	रीं	गुं	-	रीं	-	-	-	सां	रीं	नि	-	सां	-	-	-
	जो	५	५	ग	५	५	५	जु	ग	त	५	सों	५	५	५
सां	नि	-	-	सां	-	-	-	सां	नि	सां	-	नि	सां	सां	सां
	सा	५	५	धू	५	५	५	खे	ले	५	५	५	५	ह	र
नि	सां	रीं	नि	नि	ध	प	ध	म	प	-	-	-	-	-	-
	ना	५	५	म	५	सो	५।	हो	५	५	-	-	-	-	-

सिंदूरा-धमार (विलंबित)

स्थायी.

म	प	नि	सां	रीं	गं	-	रीं	-	-	-	सां	नि	-	-
ए	रि	दै	या	अ	ब	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ
प				म							म			
ध	म	ध	प	ग	-	-	री	-	म	म	ग	-	-	-
उ	ऽ	ब्रि	ज	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	द	ध	बे	ऽ	ऽ	ऽ
सा				म							ध			
री	-	सा	-	री	म	-	प	प	ध	रीं	नि	नि	-	-
च	ऽ	न	ऽ	गो	ऽ	ऽ	र	स	के	ऽ	मि	स	ऽ	ऽ
प														
ध	म	ध	प	ग	री	ग	सा	-	री	म	प	-	ध	ध
स	ब	र	स	चा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ए	ए

अंतरा.

म	-	प	नि	-	-	नि	सां	-	-	नि	सां	रीं	गं
औ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	न	मों	ऽ	ऽ	पी	ऽ	या	ऽ
रीं	रीं	-	सां	-	, सां	रीं	नि	-	-	सां	-	-	-
हं	स	ऽ	के	ऽ	ऽ	बो	ल	त	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ
सां													
नि	-	-	सां	-	सां	सां	रीं	नि	-	सां	-	सां	सां
हं	ऽ	ऽ	से	ऽ	झ	ग	र	त	ऽ	हो	ऽ	अ	ब

सां - नि रीं -	नि -	ध - ध	म प नि सां
का ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ	हे ऽ। ए	ऽ रि दै या
x	२	०	३

सिंदूरा-धमार (होरी) (विलंबित)

स्थायी.

						म प -	नि - सां -
						ए री ऽ	मैं ऽ तो -
							३
रीं रीं गुं रीं -	- - सां - -	नि - प -					
ज ब ऽ जा ऽ	ऽ ऽ नू ऽ ऽ	ऐ ऽ सो ऽ					
x	२	३					
गु गु - गु -	म - री - -	सा - - -					
च त ऽ र ऽ	खे ऽ लै ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ					
x	२	३					
- - - री म	म - प - -	ध सां सां -					
ऽ ऽ ऽ हो ऽ	री ऽ खे ऽ ऽ	ल ऽ न ऽ					
x	२	३					
नि रीं नि - ध -	प ध म प -	नि - सां -					
आ ऽ ऽ वे ऽ	ऽ ऽ। ए री ऽ	मैं ऽ तो ऽ					
	२	३					

अंतरा.

नि नि - नि - नि - सां सां - सां - - -
 ह मा ऽ री ऽ चुं_२ ऽ न री ऽ यां_३ ऽ ऽ ऽ

नि सां - रीं - - - सां - - नि - ध -
 रं ग ऽ में ऽ ऽ ऽ बो ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ

ध रीं सां रीं - नि - - रीं
 अ प ऽ नी ऽ ऽ ऽ पा ऽ ऽ । ग ऽ ऽ ब

सां नि - ध - प ध म प - ांने - सां -
 चा ऽ ऽ वे ऽ ऽ ऽ । ए री ऽ मैं_३ ऽ तो ऽ



राग सिंध.

सिंध हा एक काफ़ी थाटांतलॆ क्षुद्रगीतार्ह राग आहे. यांत सतारीच्या गती फार असतात. यांत दोन्ही गांधार लागतात. ऋषभ यांत प्रबल असतो. हा केव्हांहि गातां येतो. याचें स्वरूप असें आहे.

साधारण चलन

नि॒ध॒नि॒, रे, ग॒म॒ग॒, रे, सा, म॒ग॒रे, नि॒सा॒नि॒, प॒ध॒नि॒,
सा। ग, ग, म, म, ग॒ग॒रे, सा, म॒ग॒रे, नि॒सा॒नि॒,
प॒ध॒नि॒, सा ।

सिंध-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि
सा
आ

प म - प	म ग म -	ग री सा नि	सा - नि सा
० ज ० स	लो ० ० ०	ने ० ० ०	ने ० , रा ०
री	प	×	
री सा - सा	नि - ध ध नि - सा -	नि सा - , सा	
त में ० पि	या ० पा ०	या ० नी ०	० ० ० । आ
०	३	×	०

अंतरा.

सा ।

नि नि	सा ध - नि	री - -, ग	री - - नि	री ग - म
० थ ० स	खी ० ०, मि	ल ० ०, मं	० ग ० ल	
म	३	×	२	०
ग - री सा	नि ध - सा	नि सा - नि	सा सा नि ध	
गा ० या ०	नी ० ० हां	स हां ० स	ग र वा ०	
३	×	२	०	
प				
, नि ध ध	नि - सा -	नि सा -		
० ल गा ०	या ० नी ०	० ० ० ,		
३	×	२		

राग बरवा.



बर्वेत्यपि च रागोऽस्ति क्षुद्रगीतसमाश्रयः ।

ऋषभांश्च संपूर्णः सवदत्पंचमस्वरः ॥ २३० ॥

द्वौ गांधारौ धैवता द्वौ निषादौ द्वौ समीरितौ ।

ऋषभस्तीव्र आख्यातो मध्यमः कोमलः स्मृतः ॥ २३१ ॥

इमावाधुनिकौ रागौ पीलुवर्वेतिनामकौ ।

मन्ये प्रसिद्धिमानितौ नूनं विशिखगायकैः ॥ २३२ ॥

संगीतसुधाकरे । (पृ. ३४)

दो दो है धगनीं जहां कोमल मध्यम जानि ।

परि संवादिबादितें बर्वा राग बखानि ॥ ५० ॥

रागचंद्रिकासार ।

हा एक काफी थायंतून उत्पन्न होणारा क्षुद्रगीतार्ह राग आहे. याचा वादीस्वर ऋषभ आहे व संवादी पंचम आहे. कोणी यांत दोन्ही ऋषभ, दोन्ही धैवत व दोन्ही निषाद घेण्याचें सांगतात. धुनवजा राग असल्यामुळें त्यांस विशेष नटवून गाण्यासाठीं असले स्वर दाखल करण्यास हरकत नाही. याची मांडणी काफी थाटाचीच आहे. पूर्वांगांत थोडासा देसीचा भाग यांत येतो. पण बाकी स्वर व चलन निराळें असल्यामुळें, देसी भिन्न होते.

याचें साधारण चलन असें आहे.

म
सा, रेग, रेसा, रेम, पधमप, रेग, रेसा, नि^मसामगरेसा;

सा, रेम, रेमप, ध, पधसां निधम, धपगरे, गरेग

सा । म, पधनि, सां, सांनिरेसां, निनिसां

निधप, सारेम, रेमप, ध, पधसां,

निध, म, पग, रेगसा ।

बरवा-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

ग री	ग	री	सा	म री	म	पध	मप	म री	ग	री	सा	री	निसा	सा -
गा	ऽ	व	त	रा	ऽ	ग	नि	गु	नि	ज	न	ब	र	वा ऽ
सा		ग	म	म		प	नि	ध	प	पध	मप	री	ग	रीनि सा
मे	ऽ	ल	क	र	त	क	र	हा	ऽ	र	सुं	द	र	वा ऽ।

अंतरा.

म -	प	ध	नि	सां	सां	सां	नि	सां	रीं	सां	सां	नि	धनि	ध	प
सैं	ऽ	ध	वि	का	ऽ	फि	मि	ला	ऽ	व	त	दे	ऽ	सी	ऽ
नि		म	म	प	नि	ध	प	पध	मप	री	ग	रीनि	सा		
रे	ऽ	ख	ब	अं	ऽ	श	ब	ना	ऽ	य	च	त	र	वा ऽ।	

बरवा-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

म ग	रीग	री	नि	सा	री	म	प	-	ध
सो	ऽऽ	च	ऽ	स	म	झ	म	ऽ	न
सां	रीं	नि	ध	म	री	म	प	ध	पमप
अ	ब	मा	ऽ	न	ले	ऽ	प्या	ऽ	रेऽऽ।

बरवा-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प प
न हीं

री म प	ग	नि	म
म ध म प	री ग री सा	री सा सा सा	री - म प
ऽ मा न त	ना ऽ रि गु	मा ऽ न भ	री ऽ न हीं
प	म	म ^x री	री _२
सां नि ध प	री म प ध ध	ग ग री सा	री ग म प
ला ऽ ख म	ना ऽ व त	कै ऽ सि रु	ठी ऽ न हीं।

म - प ध	नि - सां सां	सां नि - सां सां	रीं नि ध प
कौ ऽ न उ	पा ऽ व क	रैं ऽ स ज	नी ऽ अ ब
नि - सां सां	सां ध नि प -	गु रे गु री सा	री म प म
का ऽ स म	झा ऽ वैं ऽ	जो ऽ स म	झैं ऽ न हीं।

चरवा-एकताल (विलंबित)

अंतरा.

[illegible]

प	म	-	-	पध	सां	नि	सां	सां	सां	नि	सां	सां	रीं	सां
	सा	५	५	सन	नि	नं	द	मो	री	ज	न	म	की	
	रीं				नि	सा	-	-	री	म	म	प	ध	
	सां	नि	ध	प	सा	सैं	५	५	यां	५	सो	त	न	
	बै	५	५	र	न	सैं	५	५	यां	५	सो	त	न	
	सां	नि	ध	प	री	मे	५	५	५	५	५	५	५	
	के	५	५	र	स	मे	५	५	५	५	५	५	५	

बरवा-आडाचौताल (विलंबित)

स्थायी.

[illegible]

अंतरा.

-	मम	म	प	सां	नि	सां	-	सां	-	सां	नि	सां	-	नि	रीं	सां
५	मन	रं	ग	अ	ज	५	हूं	५	न	ही	५	आ	५	५	५	५
		०		री	म	२	०	०	०	३	५	०		५	०	०
नि	सां	नि	ध	प	सा	सा	री	म	री	म	-	प	-	ध		
५	५	५	५	५	अ	सु	व	न	ला	५	५	गी	५	झ		
		०			५	५	२	०	०	३	५	०		५	०	०
सां	नि	ध	प	री	म	-	प	-	ध	म	ग	री	री			
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		०		५	२	०	०	०	०	३	५	०		५	०	०

बरवा-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

म	ग	री	ग	सा	री	प	ग	री	ग	सा	-	नि	सा
आ	५	५	यो	सा	५	व	५	५	५	न	५	सो	५
५		०		२	०	०	३	५	५	५	५	५	५
नि	ध	प	प	प	नि	सा	सा	सा	नि	सा	सा	सा	सा
हा	५	व	न	सो	रं	ग	रं	ग	सो	५	हे	५	५
५		०		२	०	०	३	५	५	५	५	५	५
म	सा	म	म	प	-	प	ध	सां	-	रीं	नि	५	५
ग	री	५	सं	ग	झू	५	ल	त	बा	५	ल	मु	५
५		०		२	०	०	३	५	५	५	५	५	५
ध	प	म	प	ग	री	ग	सा	री	म	प	ध	नि	५
स	का	५	त	आ	५	५	ली	है	५	५	५	५	५
५		०		२	०	०	३	५	५	५	५	५	५

बरवा-धमार (विलंबित)

स्थायी.

म	ग	री	ग	सा	म	प	ध	नि	म	प	ग	री	ग	सा
मो ऽ ऽ पे					री म प ध प					ऽ - रो ऽ री				
३ सा नि					रं ग ऽ डा ऽ					२		०		
सा नि ध प					× सा सा					म				
अ ध क ऽ					नि नि सा सा -					सा सा री म -				
३ घ सां					सिलो ऽ री ऽ					इया म औ र ऽ				
प ध सां -					× सां					२		०		
आ प ना ऽ					सां - नि ध प					ध म म ग री				
३					भी ऽ ऽ ऽ ऽ					ऽ ऽ जे ऽ ऽ।				
					×					२		०		

अंतरा.

प	नि नि								
म	प - ध ध	सां	सां	सां - सां	सां - सां -				
म	ल ऽ त ऽ	ऽ	ऽगु	ला ऽ ल	औ ऽ रे ऽ				
मं ^x		२	०	०	३				
गं	गं - रीं -	गं	सां	सां - -	सां नि ध प				
कु	च ऽ मू ऽ	ऽ	ख	मीं ऽ ऽ	ऽ ऽ ड त				
५ ^x		२	०	०	३				
प	ध म ग -	री	-	री ग सा	री सा ग री म प				
क	हो ऽ री ऽ	ऽ	ऽ	स ऽ खी	का ऽ हा ऽ				
नि ^x	नि नि	नि	नि	म	म ग री	ग री ग सा			
ध	ध म प ध	ध	म	म ग री	ग री ग सा				
की	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ	ऽ	जे ऽ ऽ	मो ऽ ऽ पै।				
५ ^x		२	०	०	३				

पंजाबी बरवा-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

प	-	ध	म	-	गरी	ग	सा	नि	ध	-	प
जो	ऽ	गी	ज	ऽ	गऽ	त्या	ऽ	ग	ह	ऽ	म
५ ^x		०	२	०	०	०	३	३	४		
नि	-	नि	नि	सा	सा	प	ध	म	ग	री	सा
जो	ऽ	ग	ज	ग	त	दो	ऊ	ऽ	त	ऽ	ज
५ ^x		०	२	०	०	३	३	३	४		
म	री	-	री	म	-	प	प	प	प	-	ध
जो	ऽ	गी	पा	ऽ	छे	प	व	न	ह	ऽ	म
५ ^x		०	२	०	०	३	३	३	४		

सां	नि	धप	पध	ध	म	ग	गरी	गसा	रीनि	सा	सा
प	व	(नऽ)	(सेऽ)	ऽ _२	बि	ह	(टऽ)	ऽ _३	(ऽ)	ऽ _४	है।
x		०				०					

अंतरा.

म	-	प	नि	-	नि	सां	नि	सां	,	सां	-	सां
जो	ऽ	गि	छे	ऽ _२	दे	का	ऽ	ऽ _३	न	ऽ _४	न	
x		०			०							
प	नि	नि	सां	-	सां	सां	नि	सां	सां	ध	नि	प
ह	ऽ	मं	छे	ऽ _२	दे	प्रा	ऽ	ऽ _३	न	ऽ _४	ज	
x		०			०							
प	-	ध	म	-	री	री	म	म	प	प	प	
जो	ऽ	गी	दौं	ऽ _२	ड	धा	ऽ	रे	तो	ह	म	
x		०			०							
ध												
सां	-	नि	धप	ध	म	म	गरी	गसा	रीरि	सा	सा	
धा	ऽ	र	(दौंऽ)	ऽ _२	ड	न	(टऽ)	(ऽऽ)	(ऽऽ)	ऽ _४	है।	
x		०				०						

राग धनाश्री



धनाश्रीश्च प्रसिद्धोऽयं रागः स्यात्पंचमांशकः ।
षड्जसंवादिरुचिरो निषादग्रहशोभनः ॥ २०४ ॥
पंचमन्यास आरोहे वर्जितर्षभधैवतः ।
अवरोहे च संपूर्णोऽपराहसमये प्रियः ॥ २०५ ॥
अत औडुवसंपूर्णस्तीव्रावृषभधैवतौ ।
गांधारो मध्यमश्चैव निषादश्चापि कोमलाः ॥ २०६ ॥
प्रिया पंचमगांधारसंगतिश्चावरोहणे ।
इयं तु काफी मेलोक्ता धनाश्रीर्वर्णिता मया ॥ २०७ ॥
कुत्रचिद्भैरवीमेले पूर्वीमेलेऽपि कुत्रचित् ।
आरोहे रिधहीनैव कथितेयं विचक्षणैः ॥ २०८ ॥

संगीतसुधाकरे ॥ पृ. ३२ ॥

निसौ गमौ पधौ पश्च निधौ पगौ पगौ रिसौ ।
अपराहे धनाश्रीः स्यात् पांशाऽऽरोहे रिधोज्झिता ॥ १४४ ॥
अभिनवरागमंजर्याम् ।

स्वरास्तु मृदवोऽखिला ऋषभधौ च नारोहणे—
वरोहसमये भवेयुरथ यत्र सर्वेऽपि च ॥
समुल्लसति पंचमोऽ श इह षड्जसंवादिना—
पराहसमयेषु निग्रहयुता धनाश्रीर्मता ॥ ४४ ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ।

(भैरवीमेलजन्य धनाश्री)

निसौ गमौ पनीसश्च निधौ पमौ पगौ रिसौ ।

पांशाऽऽरोहे रिधत्यक्ता धनीश्रीरपराजने ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १९६ ॥

चढत रिखव धैवत नहीं सब कोमल सुरजान ।

सप संवादीवादिं धनासिरी पहिचान ।

रागचंद्रिकासार ॥ ४७ ॥

धनाश्री राग काफी थाटांतून उत्पन्न होतो. यांत ऋषभ व धैवत हे स्वर आरोहांत वर्ज्य आहेत.

काफी थाटांतून उत्पन्न होणाऱ्या रागांचे, विशिष्ट रागांगांवरून पांच वर्ग होतात. पैकीं धनाश्री हें एक आहे. दुसरीं अंगें काफी, सारंग, कानडा व मल्लार हीं होत. या अंगांचें विशेष त्या त्या वर्गांतील राग वर्णन करितांना समजाविले जातीलच. प्रस्तुत धनाश्री अंग म्हणजे ऋषभ व धैवत यांचें दौर्बल्य व षड्ज, पंचम व कचित् मध्यम यांचें प्राबल्य व “पगु” स्वरसंगति हेंच होय.

धनाश्रींत वादी पंचम व संवादी षड्ज आहे. गाण्याचा वेळ दिवसाचा तिसरा प्रहर आहे. याचा उठाव साधारणतः निषादावरून होतो. पंचमावर न्यास असतो. अवरोहांत “पगु” ही स्वर संगति श्रुतिमनोहर होते. तिसऱ्या प्रहरच्या रागांत आरोहांत ऋषभ व धैवत यांचे दौर्बल्य व त्यामुळे सा, म व प यांचें प्राबल्य असणें हें एक चिन्हच आहे. भीमपलासी बहुतेक धनाश्रीसारखीच असते; मात्र भीमपलासींत मध्यम वादी आहे व धनाश्रींत पंचम वादी आहे. धनाश्री हा राग जुनाच आहे. ग्रंथांत त्यांचा उल्लेख सांपडतो.

धनाश्रीचा एक प्रकार भैरवी थाटांतला आहे. वर वर्णिलेल्या धनाश्री-
तच ऋषभ व धैवत कोमल केले म्हणजे ही दुसरी धनाश्री होते,
असें म्हणतात.

काफी मेलजन्य धनाश्री.

उठाव

नि॒सा, ग॒मप, धप, नि॒धप, ग॒, प॒ग, रे॒सा ।

चलन.

प, प॒ग, प॒ग, रे, सा, नि॒सा, ग॒, म॒प, प, धप, नि॒धप,

म॒ग, म॒प॒ग, ग॒, रे, सा, नि॒सा॒ग॒म॒प । नि॒सा, प॒नि॒सा,

रे, सा, ग॒, रे॒सा, नि॒सा॒ग॒म॒प, धप, नि॒धप,

सां, नि॒ध, प, म॒प, ग॒, म॒प॒ग, रे, सा ।

भैरवीमेलजन्य धनाश्री.

उठाव.

नि॒सा, ग॒म॒प, नि॒सां, नि॒ध॒प॒म॒ग, प॒ग, रे॒सा.

चलन.

नि॒सा॒ग, म॒प, प॒ध॒प, म, प॒ग, ग॒म॒प, ग॒, रे॒सा, रे॒नि॒सा,

म॒प, ग॒म॒प, नि॒ध॒प, प॒ध॒म, ग॒म॒प, ग॒म॒ग, रे॒सा ।

प॒ध॒प॒ग, म॒प, नि॒, नि॒सां, ग॒रे॒सां, प॒नि॒सां,

प॒ध॒म॒प, ग॒म॒प, ग॒, रे॒सा ।

धनाश्री-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

प	-	प	प	ग	प	ग	म	ग	री	-	सा
शा	ऽ	ख	सु	म	त	रा	ऽ	ग	गा	ऽ	य
×		०		२		०		३		४	
नि	-	सा	सा	ग	म	प	प	नि	ध	प	प
ओ	ऽ	ड	व	पू	ऽ	र	न	ब	ना	ऽ	य
×		०		३		०		३		४	
प	प	ग	म	प	प	नि	-	सां	सां	-	सां
क	र	ह	र	प्रि	य	मे	ऽ	ल	सा	ऽ	ध
×		०		२		०		३		४	
सां	नि	ध	प	ग	प	ग	म	ग	री	-	सा
रि	ध	ब	र	जि	त	नि	त	दि	खा	ऽ	य।
×		०		२		०		३		४	

अंतरा.

प	-	प	प	ग	म	प	नि	नि	सां	सां	सां
पं	ऽ	च	म	ज	ब	बा	ऽ	दि	क	र	त
×		०		२		०		३		४	
नि	नि	सां	गं	रीं	सां	रीं	सां	नि	ध	प	प
ध	ऽ	न्ना	ऽ	सी	ऽ	गु	नि	ब	र	न	त
×		०		२		०		३		४	
म	प	नि	सां	मं	गंमं	पं	-	गं	रीं	सां	सां
भी	ऽ	म	प	ला	ऽऽ	सी	ऽ	मों	च	त	र
×		०		२		०		३		४	

सां	-	निध	प	ग	म	प	ग	म	गुरी	री	सा
बा	ऽ	दी	ऽ	म	ऽ	ध	म	क	हा	ऽ	य।
x		०		२		०		३		४	

धनाश्री—सूलताल (मध्यलय)

स्थायी.

प	-	प	प	म	प	नि	प	ग	-
आ	ऽ	ज	कृ	पा	ऽ	ऽ	क	रे	ऽ
x		०		२		३		०	
म	ग	म	प	प	ग	-	री	-	सा
आ	ऽ	ये	ऽ	मे	रे	ऽ	धा	ऽ	म
सा	सा	०		२		३		०	
नि	नि	सा	सा	सा	म	ग	री	-	सा
ध	न	घ	रि	शु	भ	ऽ	दी	ऽ	न
x		०		२		३		०	
सां	सां	सां	-	रीं	सां	-	नि	ध	प
जा	ऽ	गे	ऽ	मे	रे	ऽ	भा	ऽ	ग।
x		०		२		३		०	

अंतरा.

प	प	म	प	सां	-	सां	-	सां
त	न	कि	त	प	त	ऽ	ग	ऽ
x		०		२		३		०

सां	नि	नि	सां	-	रीं	सां	सां	नि	ध	प
अ	खि	यां	५	सी	त	ल	भ	५	इ	
×		सां		२		३	०			
म	प	नि	सां	मं	गुं	-	रीं	-	सां	
भ	ले	जो	५	भ	ले	५	आ	५	ये	
×		०		२		३	०			
प	सां	सां	सां	रीं	सां	-	नि	ध	प	
मो	५	ह	न	घ	न	५	इया	५	म।	
४		०		२		३	०			

धनाश्री—चाँताल (विलंबित)

स्थायी.

सा	नि	सा	म	ग	री	सा	नि	सा	ग	म	प	प
सा	५	स	स	द	न	म	द	न	क	द	न	
०		३		४		×		०		२		
प	प	नि	पम	ग	म	प	नि	-	सां	-	सां	
द	र	श	न	को	५	ले	५	५	पू	५	जा	
०		३		४		×		०		२		
प	सां	-	ध	प	ग	प	प	ग	-	री	-	सा
जा	५	त	दे	५	खि	ए	क	५	बा	५	र।	
०		३		४		×		०		२		

अंतरा.

प	प	म	प	म	प	नि	नि	सां	-	सां
स	ह	ज	नि	क	ट	आ	य	ह	रि	
सां ^x	सां ^x	०	०	२	०	सां ^०	सां ^०	३	४	
नि	नि	सां	गं	रीं	सां	नि	नि	सां	नि	ध
ह	र	ख	ह	र	ख	बु	झ	न	ला	गे
म ^x	म	०	०	२	०	०	०	३	४	
प	ग	-	प	म	प	ग	-	री	-	सा
कां	हां	५	जा	५	त	ए	री	५	ग्वा	ल
सा ^x	०	०	०	२	०	०	०	३	४	
नि	सा	ग	म	प	नि	प	नि	सां	गं	रीं
क	र	प	क	र	त	वा	५	को	५	क
म ^x	म	०	०	२	०	०	०	३	४	र
प	ग	-	री	-	सा					
त	जो	५	हा	५	रा					
५	०	०	०	२	०					

राग धानी.



धानी प्रोक्ता मृदुगमनिका वर्जिता धर्षभाभ्या-
मारोहेऽस्याः सगमपनयः स्युस्त एवावरोहे ॥
गांधारो वाद्यपि च निसखः प्रोच्यते ह्यौडुवेयं ।
चंचच्चारुस्वरसुरुचिरं गीयते सर्वकालम् ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ १०० ॥

निसौ गमौ पनीसश्च सनी पमौ गसौ तथा ।
धानी लोकप्रसिद्धा स्याद्वाशाऽऽरोहे रिधोज्झिता ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १५० ॥

रिखव नहीं धैवत नहीं कोमल गमनि बरवानि ।
गनि वादीसंवादिर्ते राग कहावत धानि ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ९८ ॥

धानी हा राग काफी थाटांतून उत्पन्न होतो. यांत ऋषभ व धैवत वर्जित आहेत. गांधार वादी व निषाद संवादी आहे. हा सार्वकालिक म्हणजे कोणत्याहि वेळेस गाण्यास योग्य व क्षुद्रगीतार्ह असा आहे. कांहीं लोक धानीमध्ये अवरोहांत थोडासा ऋषभ लावितात. जुन्या ग्रंथांत धानीचा उल्लेख मिळतो. संगीत पारिजातांत ऋषभवर्जित व ऋषभधैवतवर्जित असे धानीचे दोन प्रकार सांगितले आहेत. रागतत्त्वविबोधांत “शुद्ध धन्नासी ” या नांवाने आजच्या धानीचा उल्लेख आहे असे कांहीं लोक

२ म्हणतात. पण असल्या वादमूलक गोष्टीत प्रचाराला अनुसरून चालणेंच हिताचें आहे. धानीत षड्ज, पंचम व मध्यम यांच्या सापेक्ष गौणत्वामुळें व ऋषभ व धैवत यांच्या असत्प्रायत्वामुळें तींत गांभीर्य मुळीच नसतें.

उठाव.

नि॒सा॒ग, म॒प, नि॒सां, सां॒नि॒प, म॒ग, सा ।

चलन.

ग, सा, ग॒म॒प, नि॒प॒नि॒सां, गं॒सां, नि॒प, म॒ग, ग॒सा । म,
म॒प॒ग॒म॒प॒नि, प॒नि॒सां, गं, सां नि, प॒ग, ग॒म॒प॒नि,
प॒म॒ग, सा ।

धानी-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि सा

अ ब

म	ग - ग सा	ग म प नि	प नि सां रें	सां नि प म
मा ऽ न म	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ह रि सु म	
५		२	०	३
ग ग ग म	प नि प म	ग म ग री	सा री नि सा	
र न क र	भा ऽ व ध	रे ऽ सु ध	घ ट मों ऽ।	
५	२	०	३	

अंतरा.

म म म -	प प ग म	प नि नि प	नि सां सां -
ध न दौ ऽ	ल त औ र	मा ऽ ल प	सा ऽ रा ऽ
५	२	०	३
सां - नि प	म प ग म	प नि प म	ग - नि सा
का ऽ म न	आ ऽ व त	ना ऽ म बि	ना ऽ। अ ब
५	२	०	३

राग प्रदीपकी अथवा पटदीपकी.



पगौ मगौ रिसनिसा गमौ पगौ मनी धपौ ।

मगौ मगौ रिसौ पटदीपकी षड्जवादिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १५३ ॥

प्रदीपकी अथवा पटदीपकी काफीमेलान्तून उत्पन्न होते. हींताहि आरो-
हांत ऋषभ धैवत वर्ज्य आहेत. ही भीमपलासी अंगानें गातात. वादीस्वर
षड्ज व संवादी मध्यम आहे. कोणी मध्यम वादी मानितात. यांत दोन्ही
गांधार लागतात. तीव्र गांधार बहुधा आरोहांत येतो. मन्द्र व मध्य सप्तकातच
हिचा विस्तार बहुतेक होतो. अवरोहांतहि ऋषभस्वर अति दुर्बल असतो.
ऋषभ धैवत हे यांत जरा तीव्रपेक्षां किंचित् नीच असे लावावे असें एक
विधान कोठें कोठें आढळतें. तीव्र गांधाराचा प्रयोग कुशलतेनें करावा
लागतो. यांत मध्यमावर मुक्काम केल्यानें हंसकंकणी यापासून भिन्न राहते.

उठाव.

पग, मग, रेसा, निसा, गम, पगम, निधप, मगम, गुरेसा ।

चलन.

सा सा
नि, सा, मगरेसा, निधप, म, नि, प, निसा, ग, म, मपम,
गम, निधप, म, गम, पग, रेसा । मपसां, सां,
रेंसां, निसांमंगेरेंसां, निधप, म, गम, पनि
धप, म, गम, पग, रेसा ।

प्रदीपकी-झूमरा (विलंबित)

स्थायी.

री	प	नि	नि	सा	सा	प	सा	प
निसा मग री सा	नि मप प	सा निनि निम प	नि नि सा					
अऽ ऽऽ री ऽ	बी ऽऽ र	आ ऽऽ ऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ					
नि	री	प	सा	म	सा			
सा मग री सा	निसा निध प	निम प नि -	प निसा सा					
पि ऽऽ या ऽ	घऽ रऽ	कऽ रुं गी ऽ	अ नेऽ क					
नि	ग	म	प	ग	सा	सा	प	
सा ग सा गम	म प मप	म गरी सानि धप	निनि नि सा					
सा ऽ त नऽ	के ऽ ऽऽ	सिं गऽ ऽऽ रऽ	वाऽ ऽ ऽ					
सा								
निसा मग री सा								
एऽ ऽऽ री ऽ।								

अंतरा.

सा म म	प	नि	नि	म
रीनिसा गग,म प प	म प प	प पम धप प	धप प मग	
बऽहो तऽ,दि न न	पा ऽ छे	पि याऽ मोऽ रे	आई ला ऽऽ	
नि	ग	सा	ग	सा
सा गम प मग	मग री सा	ग - नि नि	ग - ग	
म नऽ ऽ ऽऽ	ऽऽ रं ग	दो ऽ ऽ रे	धा ऽ ये	

सा ग म प निध प पम गसा गम प मग री सा
ला ऽ गेऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ इ गऽ ऽऽ ऽऽ ऽ रऽ वा ऽ।

प्रदीपकी-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

सा नि॒सा म॒ग॒ री सा पि॒ऽऽऽ या ऽ ३	प नि॒ ध प - घ ऽ र ऽ x	प नि सा सा नि॒ म प नि॒नि ना ऽ ऽ ऽऽ २	प नि॒ सा सा नि॒सा ऽ हीं ऽऽ ०
री म री नि॒ सासा ग ग कै॒ ऽसे के ऽ ३	ग म - ग, मप धी ऽ ऽ, रज x	म म प प म ग ध री ऽ ऽ ०	म ग री सा, नि॒सा ऽ ऽ ये ऽ, ऽऽ ०
सा म ग री सा पि॒ ऽ या ऽ। ३			

अंतरा.

सा	म	प	प	प	प	म
नि	सा	ग	म	म	प	ग
उ	मं	गे	ऽ	जो	ऽ	ब
सासा	नि	सा	री	सा	ग	म
नि	नि	मप	नि	सा	सा	सा
रै	ऽ	ना	ऽ	ऽ	दिन	मो
रै	ऽ	ना	ऽ	ऽ	दिन	मो
रै	ऽ	ना	ऽ	ऽ	दिन	मो

राग हंसकंकणी.



सगौ मपौ गरी सश्च निसौ गमौ पमौ पगौ ।
पांशाऽपराह्णा लक्ष्ये कीर्तिता हंसकंकणी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १५४ ॥

चढत रिखव धैवत नहीं दोउ गंधार दिखाय ।
तीवर रिध कोमल गमनि हंसकंकनी गाय ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ४५ ॥

हंसकंकणी राग काफी थाटांतून उत्पन्न होतो. आरोहांत ऋषभ व धैवत वर्ज्य आहेत. जाति औडुव—संपूर्ण आहे. हा दिवसां तिसऱ्या प्रहरी गाइला जातो. हा धनाश्री अंगाचा राग आहे. दोन्ही गांधारांचा प्रयोग यांत आहे. व तो रागाला मोठे वैचित्र्य आणितो. साधारणतः तीव्र गांधार आरोहांत व कोमल गांधार अवरोहांत लागतो. पंचमस्वर वादी व षड्ज संवादी आहे. हा अप्रसिद्ध रागांपैकी एक आहे. “ पग ” ही स्वरसंगति यांत विशेष महत्त्वाची आहे.

उठाव.

साग, मप, गरीसा, निंसा, ग, मप, म, पग ।

चलन.

ग, गमप, ग, रेसा, निं, साग, म, मपग । मपनिसां सां,
निसां, मपनिसां गंरेंसां, निधप, पनिधपध, मग,
म, निंसा, ग, म, पमपग, मप, ग, रेसा ।

हंसकंकणी-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

प	प	प	म	प	ग	रीग	री	सा	-
ग	ग	ग	म	प	ग	(SS)	क	नी	ऽ
ध	न	हं	ऽ	स	कं	()	क	नी	ऽ
सा	सा	सा	ग	ग	म	म	प	प	मग
नि	नि	सा	ग	ग	ग	ऽ	ग	नी	(SS)
अ	त	चि	ऽ	त्र	रा	ऽ	ग	नी	(SS)
×		२			०		३		

अंतरा.

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
म	प	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां
क	र	ना	ऽ	ट	सु	र	स	क	ल
×		२			०		३		
प	प	सां	सां	गं	रीं	सां	नि	ध	प
म	प	नि	सां	गं	रीं	सां	मि	ला	ऽ
सु	ध	मे	ऽ	ल	सु	मि	ला	ऽ	य
×		२			०		३		
ध	नि	ध	प	ध	प	मग	ग	प	म
प	ऽ	च	म	क	रे	(SS)	बा	ऽ	दि
पौ		२			०		३		
सा	सा	सा	ग	ग	ग	म	प	म	पग
नि	नि	सा	ग	ग	ग	ऽ	गि	नी	(SS)
च	तु	र	ब	ड	भा	ऽ	गि	नी	(SS)
×		२			०		३		

हंसकंकणी-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

प	म	प	म	प	म	पग	री	सा	-
ग	ग	ग	म	प	म	(	डि	त	५
क	र	ता	५	सो	पौ	५५	३		
×		२		०	०	(			
नि	री		री	म	म				
सा	नि	सा	ग	ग	ग	गम	प	म	ग
मा	५	नो	५	भं	व	५५	रे	५	५।
×		२		०	०	(	३		

अंतरा.

प	सां	सां	नि	सां	नि	सां	-	सां	सां	सां
म	प	नि	सां	नि	सां	५	५	निसां	सां	सां
आ	५	वे	५	सु	धे	५	५	५५	ज	ब
×		२		०	०			३		
प	सां	सां	गं	रीं	सां	नि	ध	प		
म	प	नि	सां	गं	रीं	सां	नि	ध	प	
आ	५	वे	५	बु	धे	५	५	स	ब	
×		२		०	०		३			
ध	नि	ध	प	-	नि	ध	प	ध	प	म
प	नि	ध	प	-	नि	ध	प	ध	प	म
ना	५	म	ले	५	ते	५	ह	र	५	
×		२		०	०		३			
म	प	ग	ग	म	प	म	प	म	ग	
प	म	ग	ग	म	प	म	प	म	ग	
ह	र	५	ह	र	रे	५	५	५	५	
२		२		०	०		३			

प	प	प	म	प	मग	मग	री	सा
ग	ग	ग	म	प	प	मग	री	सा
क	र	ता	ऽ	सो	पौ	ऽऽ	डि	ता
x		२		०		३		

कंकणी—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

म
नि
तें

म	ध	प	ग	-	री	सा	-	नि	सा	ग	-	सा	ग	म	-	प	
०	डे	रे	घो	ऽ	ल	घो	ऽ	ल	घ	ती	ऽ	मि	यां	वे	ऽ	ता	
					३				x				२				
म	नि	ध	प	प	म	प	ग	-	म	गम	प	ग	-	री	सा	-	नि
										३				२			
	नू	ऽ	ऽ	रा	हा	त	कां	ऽ	दी	ऽ	ठा	ऽ	डी	आ	ऽ	न्तें।	
	०				३				x				२				

अंतरा.

प	सां	सां	सां	सां
म म म प	नि नि सां -	नि सां मं गुं	रीं नि ध मप	
स दा रं ग	दी ग लां ऽ	तुं सि मा ऽ	न ले ऽ तेऽ	
प	ध म	म	सा	
सां नि ध म	प ग - -	गम प ग रीसा	सा - सा नि	
नूं ऽ खां ऽ	ऽ दी ऽ ऽ	ऽऽ ऽ ऽ अऽ	मा ऽ न, तें।	
	३	३	२	

राग पलासी.

हा भीमपलासीचा एक घटक आहे अशी समजूत कांहीं जुन्या संप्रदायाच्या गायकांची आहे. प्रचारांत भीम व पलासी हे वेगवेगळे मानणारे व गाणारे कचित्च आढळतील. पण जुन्या गायकांच्या संग्रहीं अशीं कांहीं गीतें सांपडतात. पैकीं हें एक गीत येथें दिलें जात आहे. पलासी हा राग काफी थाटांत धैवत—वर्जित षाडव असा आहे. बाकी पुष्कळसा धनाश्री किंवा धानी सारखा आहे.

पलासी-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

					सा						म					
					नि	सा	ग	-	म							
					चौ	ऽ	द्र	ऽ	सो							
					०						प	म	ग	म		
प	-	प	प	-	म	म	प	ग	म							
आ	ऽ	न	न	ऽ	खं	ऽ	ज	न	ऽ							
×		२			०		३									
					सा	म	ग	-	म							
प	म	ग	री	सा	नि	सा	ग									
के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चौ	ऽ	द्र	ऽ	सो							
×		२			०		३									
प	-	प	प	-	म	म	प	ग	म							
आ	ऽ	न	न	ऽ	खं	ऽ	ज	न	ऽ							
×		२			०		३									
प	म	प	ग	म	सा	ग	म	प	म							
के	ऽ	ह	ग	ऽ	बै	ऽ	ठी	ऽ	ब							
×		२			०		३									
प	नि	प	नि	सां	प	म	ग	म	प							
ना	ऽ	ये	ऽ	सिं	गा	ऽ	र	ऽ	क							
×		२			०		३									
म	ग	ग	री	सा	सा	सा	ग	-	म							
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चौ	ऽ	द्र	ऽ	सो							
×		२			०		३									

अंतरा.

ग	म	प	नि	सां	नि	सां	सां	सां	सां
आ _x	ऽ	य _२	ऽ	ग	ये _०	ऽ	म _३	न	मो
नि	सां	रीं	सां	सां	नि	सां	प	म	प
ह _x	न	ता _२	ऽ	छि	न _०	ऽ	दे _३	ऽ	ऽ
रीं	सां	नि	सां	प	म	प	ग	-	म
ख _x	न	को _२	चि	त	चा _०	ऽ	हा _३	ऽ	ऽ
प	म	ग	री	सा	सा _० नि	सा	म _३ ग	-	म
भ _x	रे	ऽ _२	ऽ	ऽ	चं _०	ऽ	द्र _३	ऽ	सो

संचारी.

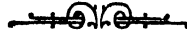
नि	सां	नि	सां	प	म	प	ग	म	म
आ _x	र	सी _२	ऽ	में	क _०	र	श्या _३	ऽ	म
प	-	प	प	प	म	प	ग	-	
की _x	ऽ	मु _२	र	त	वो _०	ऽ	नि _३	जं	ऽ
ग	म	प	म	प	ग	म _३ ग	री	सा	-
मू _x	ऽ	ऽ _२	ऽ	ऽ	ऽ _०	ऽ	र _३	त	ऽ

नि	-	सा	-	ग	म	प	ग	म	प
ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ग	रे	ऽ
x		२			०		३		

आभोग.

ग	म	प	नि	सां	नि	सां	सां	सां	-
शि	व	ना	ऽ	थ	नो	ऽ	र	वी	ऽ
x		२			०		३		
नि	-	सांसां	गं	रीं	सां	नि	सां	प	-
जा	ऽ	जल	में	सु	म	नो	र	ती	ऽ
x		२			०		०		
प	रीं	सां	नि	सां	प	म	ग	-	प
ना	ऽ	र	ऽ	बि	हा	ऽ	र	ऽ	क
x		२			०		३		
म	ग	ग	री	सा	नि	सा	ग	-	म
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चं	ऽ	द्र	ऽ	सो
x		२			०		३		

मध्यमादिसारंग.



रिमौ पनी तथा सश्च निपौ मरी पुनश्च सः ।
धगोज्झिता तु मध्याह्ने मध्यमादी रिवादिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १६७ ॥

धग बरजै कोमल मनि तीवर रिखव सुजान ।
परि संवादीवादितें मध्यमादि पहचान ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ३९ ॥

मध्यमादि अथवा मधमाद हा एक काफी थाटांतून उत्पन्न होणारा सारंग प्रकार आहे. सारंग अंगांतील धग दौर्बल्याला अनुसरून यांत ते स्वर मुळीच वर्ज्य आहेत. ऋषभस्वर यांत वादी व पंचम संवादी आहे. हा दुपारीं गातात. पूर्वांगांत “ परी ” व उत्तरांगांत “ निप ” या संगति रागबोधक आहेत. यांत शुद्ध निषादाचा प्रयोग कित्येकांच्या मते निषिद्ध आहे.

उठाव.

री, मप, नि, सां, निपमरे, सा ।

चलन.

निप, मपरे, सा, रेसा, निसा, रे, प, मप, निप । निनिसां,

सां, निसां, सां, निनिप, निसारेंरेसां, मप, निप,

रेरेमप, सां, निप, रे, मप ।

मधमाद सारंग-झपताल. (मध्यलय)

स्थायी.

प	प	प	म	प	म	-	सा	री	सा
नि	नि	त	म	ध	मा	५	दु	बु	ध
लि	ख	२			०		३		
सा	सा	म	म	प	म	म	प	पम	प
नि	५	री	री	ध	री	वि	र	हि	त।
ओ		२	व		०		३	(हि)	
×									

अंतरा.

सां	सां	सां	सां	-	सां	सां	सां	सां	सां
नि	नि	त	सा	५	रं	५	ग	स	ब
क	ह	२			०		३		
सां	सां	मं	रीं	मं	रीं	-	सां	प	नि
नि	५	दु	गु	नि	शा	५	३	म	त
मे		२			०				
म	प	रीं	रीं	रीं	सां	-	सां	नि	प
रि	ख	ब	सु	र	अं	५	श	नि	प
×		२			०		३		
म	प	सां	सां	सां	प	नि	म	री	सा
सं	५	ग	त	च	तु	पम	सु	म	त।
×		२			०	(र)	३		

मधमाद् सारंग-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि	नि	सां	-	रीं	सां	-	नि	-	प
म ×	ध	मा २	ऽ	द	सा ०	ऽ	रं ३	ऽ	ग
प	म	नि	नि	प	म	री	सा	-	सा
औ ×	ऽ	ड २	व	सु	र ०	स	रा ३	ऽ	ग
नि ०	सा	री	म	म	प	प	नि	-	प
दू ×	ऽ	जै २	ऽ	दि	व ०	स	जा ३	ऽ	म

अंतरा.

म	म	प	निप	नि	सां	-	सां	सां	सां
बिं ×	द	रा २	ऽऽ ()	ब	नी ०	ऽ	नि ३	जु	गु
नि	सां	रीं	मं	रीं	सां	सां	नि	नि	प
धै ×	ऽ	व २	त	ई	स ०	त	प ३	र	स
प	म	री	सा	सा	री	म	प	नि	सां
सा ×	ऽ	द २	त	क	हे ०	ऽ	र ३	सि	क
म	प	सां	सां	नि	प	म	री	-	सा
गु ×	नि	ज २	न	म	त ०	प्र	मा ३	ऽ	न

मधमाद सारंग-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

प	प	म	री	-	गी	री	सा	-
नि	नि	प	री	-	गी	री	सा	-
आ	ऽ	ज	अं	ऽ	ज	न	दि	यो
सा	सा	म	प	म	री	-	री	सा
नि	नि	आ	री	प	री	-	री	सा
रा	ऽ	धि	का	ऽ	नै	ऽ	न	को
×		२		०	०		३	

अंतरा.

सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
नि	नि	नि	सां	सां	नि	नि	सां	सां	सां
मी	ऽ	न	खि	ग	ही	ऽ	न	कु	ल
सां	प	सां	नि	सां	रीं	रीं	सां	रीं	सां
नि	नि	प	नि	सां	रीं	रीं	सां	रीं	सां
ल	ज	त	खौं	ऽ	ज	न	न	रे	स
प	प	प	नि	प	री	री	म	प	प
म	ध	क	चं	ऽ	च	ल	सु	र	स
अ		२		०	०		३		
सां	-	रीं	सां	सां	नि	नि	पम	री	म
श्या	ऽ	म	सु	ख	नै	ऽ	नऽ	को	ऽ।
×		२			०		२		

मधमादसारंग-त्राताल (विलावत)

स्थायी.

प
नि
ऐ

प	म	री	सासा	सा	नि	म	प	प	नि	प	मप	म
५	सी	५	सर	दा	५	५	ई	ख	५	स	५५	खा
				५				२				
री	सा	री	सा	-	सा	नि	सा	-	म	म	री	सा
५	न	की	५	ए	५	५	गु	ला	५	ब	५	सु
सा				५				२				
नि	सा	सा	-	सा	नि	सां	सां	नि	म	प	प	नि
गौं	५	ध	५	छी	र	का	५	५	५	ई	५	, ऐ
३				५				२				

अंतरा.

प	म	प	-	सां	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	-	सां
अ	त	५	पा	५	त	ब	स	न	पा	५	त		
५								३					
नि	सां	रीं	रीं	सां	सां	सां	-	नि	म	प	प		
बा	५	ज	त	मि	र	दौं	५	५	५	५	ग		
५				२				३					

प	म	प	-	सां	नि	सां	-	मं	रीं	मं	रीं	सां	रीं	सां
धु	न	५	०	सा	५	५	५	रीं	५	ग	३	ब	र	५
प	सां	-	नि	-	म	प	प	प	नि					
सा	५	५	०	५	५	५	५	ई	०	ए				

मधमाद सारंग-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

प	नि	नि	प	नि	नि	सा	सा	सा	-	सा	-	सा
अ	प	ने	अ	प	ने	घ	र	५	३	की	५	कि
सा	-	सा	री	-	री	प	-	म	प	म	सा	
वा	५	ड	दे	५	दे	सो	५	५	३	य	५	र
री	-	सा	नि	सा	री	म	री	सा	प	नि	-	प
ही	५	५	आ	५	५	५	५	५	३	ली	५	रि
सा	म	री	-	म	प	प	नि	-	प	नि	सां	सां
ऐ	सो	५	स	म	य	तू	५	५	३	अ	ब	बु

सां	-	सां	नि	-	प	प	म	री	म	प	नि
ला	५	ये	का	५	न	ले	५	५	५	५	५
x		०		२		०		३		४	
प	म	री	सा	री	सा						
अ	प	ने	अ	प	ने						
x		०		२							

अंतरा.

म	-	-	म	-	म	प	-	प	नि	सां	-	सां
सू	५	५	र	५	ज	आ	५	५	यो	सी	५	स
x		०		२		०		३			४	
सां	सां	-	सां	-	रीमं	रीं	सां	-	सां	नि	प	
प	र	५	छा	५	(३५)	प	र	५	छा	५	ई	
x		०		२		०		३		४		
म	-	म	री	म	-	म	प	मप	प	-	-	
भू	५	ले	५	है	५	ब	टो	(५५)	ही	५	५	
x		०		२		०		३		४		
नि	-	नि	सां	-	सां	नि	-	प	री	म	पनि	
बा	५	ट	धू	५	प	दे	५	ख	ग	ह	(री५)	
x		०		२		०		३		४		
प	मं	री	सा	री	सा	इ०						
अ	प	ने	अ	प	ने							
x		०		२								

नि	नि	प	प	सां	नि	-	म	प	नि	प
सां	रीं	नि	म	प	प	प	सां	नि	-	म
स	खी	५	५	५	ब्रि	ज	के	५	५	५
×					२		०			३
म	-	रीसा	री	-	सा	-	म	म	री	री
लै	५	५५	५	५	या	५	म	द	५	मा
×					२		०			३
दि	री	नि	म	प	सा	सा	म	म	री	री
सा	सा	नि	म	प	सा	सा	री	री	म	री
ब	र	५	५	५	जो	री	रं	ग	५	डा
×					२		०			३

म	प	-	नि	-	सां	नि	-	सां	-	-	नि	सां	सां	सां
झू	५	५	मे	५	५	५	५	झू	५	५	मे	५	स	ब
×					२			०			३			
प	सां	-	नि	म	प	प	प	रीं	-	नि	नि	म	प	-
घे	५	५	५	५	र	ल	ये	५	५	५	५	५	५	५
×					२		०				३			
नि	प	-	म	री	,	प	म	-	-	री	-	सा	-	
कुं	व	५	र	५	५	क	न्हा	५	५	५	५	ई	५	
×					३		३			०				

मधमाद सारंग-धमार (विलंबित)

स्थायी.

म	प	सां	निसां	रीं	सां	-	नि	-	सां	-	नि	प	-
ढ	प	की	५५	धु	का	५	५	५	५	५	रे	५	५
३				प					२		०		
म	-	म	प	नि	नि	प	म	री	सा	सा	री	म	री
बा	५	ज	त	ब	न	ब	न	५	५	ना	च	त	५
३				५					२		०		
म	प	नि	सां	रीं	-	-	सां	-	सां	नि	नि	प	
कुं	व	र	५	के	५	५	ण	५	५	का	५	५	न।
३				५					२		०		

अंतरा.

म	प	-	नि	सां	सां	सां	नि	सां	-	सां	रीं	मं	रीं
ए	क	५	गा	५	व	त	ए	क	५	मि	दीं	५	ग
५					२		०			३			
सां	सां	-	नि	प	म	प	विध	नि	प	री	-	सा	सा
ब	जा	५	व	त	ड	म	रू	५	५	बा	५	ज	त
५					२		०			३			
सा	सा	-	री	-	म	री	म	प	-	नि	सां	सां	-
ए	क	५	ना	५	५	५	च	त	५	दे	५	दे	५
५					२		०			३			
रीं	-	-	सां	-	सां	नि	नि	प	म	प	सां	निसां	
ता	५	५	ल	५	५	ता	५	५	न।	ढ	प	की	५५
५					२		०			३			

राग शुद्धसारंग



शुद्धसारंगरागः स्याद्गांधारस्वरवर्जितः ।
ऋषभांशः षाडवश्च संवादीपंचमस्वरः ॥ ८३ ॥
संगतिश्चात्र मधुरा स्यात्पंचमनिषादयोः ।
मध्याह्नसमयेचास्य गानं परमरक्तिदम् ॥ ८४ ॥
ऋषभो धैवतश्चैव तीव्रौ द्वौ समुदीरितौ ।
मध्यमश्च निषादश्च कोमलौ द्वौ समीरितौ ॥

संगीतसुधाकरे ॥ पृ. ८५ ॥

सरीमरी पमौपश्च निषौ मपौ मरी च सः ।
सारंगः शुद्धपूर्वः स्याद्यंशो मद्रयशोभनः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १७६ ॥

शुद्ध सारंग हा काफी थाटांतून उत्पन्न होतो. यांत गांधार वर्ज्य आहे, ऋषभवादी व पंचम संवादी आहे. हा दोनप्रहरी गातात. यांत धैवतस्वर स्पष्ट असल्यामुळे मधमादसारंग यापासून निराळा होईलच. यांत दोन्ही मध्यम व दोन्ही निषाद लागतात व अवरोहांत धैवताचा थोडा प्रयोग होतो. या कारणांनी शुद्धसारंग आपल्या अंगांनं स्वतंत्र आहे. नूर सारंग हा एक समप्रकृतिक राग आहे. पण त्यांत शुद्ध मध्यम नाही. कांहीं लोक यांत धैवत वर्ज्य करतात. पण आपण प्रचाराला धरून चालणें हें उत्तम. या रागाचा उल्लेख हृदयकौतुक व हृदयप्रकाश या ग्रंथांत आहे तसाच पारिजातांतहि आहे.

उठाव.

सा, रेमेरे, प, मप, निप, मप, मेरे, सा ।

चलन

सारे, मेरे, प, मप, धप, मेरे, सा, नि, प, निसा, रे, म,
 सा
 रे, सा । सारेमप, मप, धप, मेरे, निप, मेरे, सा,
 निप, निसा, रे, मेरे, सा ।

शुद्धसारंग—तांत्रा (मध्यलय)
स्थायी.

री	सा	री	म	री	प	-	प	म	प	ध	प	म	-	री
स	ब	बि	ध	का	ऽ	ज	ह	म	रे	स	म्हा	ऽ	रे	
२		३		×			२		३		×			
म	री	प	म	रीसा	री	-	सा	प	मप	ध	प	म	री	सा
हो	ऽ	बि	ज	ना	ऽ	थ	गो	ऽऽ	बि	द	जा	ऽ	रे	
२		३		×			२		३		×			

अंतरा.

प	म	प	सां	-	सां	-	सां	नि	सां	रीं	सां	नि	-	प
पु	र	के	ऽ	लो	ऽ	ग	स	ब	ही	ऽ	ठा	ऽ	डे	
२		३		×			२		३		×			
प	नि	प	म	री	सा	-	सां	-	नि	पम	री	-	सा	
क	र	जो	ऽ	र	त	ऽ	दा	ऽ	स	तु	म्हा	ऽ	रे	
२		३		×			२		३		×			

शुद्धसारंग—एकताल (विलंबित)
स्थायी.

नि	सा	री	म	री	म	प	-	म	प	-	ध	-	प
मा	ई	री	मैं	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	से	ऽ	क		
३		४		×									
म	प(प)	म	-री	सा	नि	सा	निसा	री	-	प	म	-	
हुं	ऽ	पी	ऽऽ	र	अ	प	ऽऽ	ने	ऽ	जी	या	ऽ	
३				×					२				

म		री	सा -	नि प -	नि	सा सा	सा री
S ₃	S	की	S	व्या S	S कू	S ल	हो S
			X	०		२	०
सा		म म					
म	री	- सा	प	प	री	म	सा री
S ₃	व	S त	स	री	S S	S S	S रे
			X	०		३	०

अंतरा.

[illegible]

राग बडहंस-सारंग



निपौ मरी सरी मश्च पनी पनी सनी पमौ ।

रिसौ मध्याह्नगः पांशः सारंगो बडहंसकः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १७२ ॥

कोमलमनि गंधारनहीं अल्पहिधैवतहोइ ।

सपसंवादी वादितें बडहंस कह्यो सोइ ॥

रागचन्द्रिकासार ॥ ४२ ॥

बडहंस-सारंग काफ़ी थाटांतून उत्पन्न होतो. कित्येक याला बिलावल थाटांत मानतात. यांत ऋषभ वादी व पंचम संवादी आहे. गाण्याचा वेळ दुपारचा आहे. सारंगभेद असल्यामुळे गांधार यांत वर्जित आहे. साधारणतः या रागांत गांधार व धैवत हे वर्जितच असावे. मध्यम यांत मुक्त असून निषादावर कांहीं ताना आणून संपवितात. याचा उल्लेख जुन्या ग्रंथांत सारंग मेलंत सांपडतो. हृदयप्रकाशात यांत तीव्र मध्यमाचा प्रयोग सांगितला आहे. पण प्रचार तसा नाही. किंचित् तीव्र धैवत अवरोहांत घेतला जातो. प्रचाराला अनुसरून चालणें हें केव्हांहि इष्ट आहे. कांहीं गीतांत तीव्र गांधारहि सांपडतो.

उठाव.

निप, म, रे, सा, रेम, प, निप, निसां, नि, पम,

रे, सा ।

^{प ध} निनि, ^प प, मेरे, सा, रेम, मप, निप, ^{सां} निसारेंसां, निम, निप,
^{सा} मरे, सा, सा, सानि, सा, रेम, मप । मप, निप,
^म निसां, सां, सारेंसां, सांनि, प, पमनिप, रे,
^{सा म} सा, सा, नि, सा, रेमप ।

ब्रह्मसंसारंग-एकताल (मध्यलय)

स्थायी.

प	ध	प	म	री	सा	नि	सा	सा	री	म	-	म
नि	नि	म	न	स	खि	ह	र	न	की	५	नो	
मे	रो	३		४		मां						
प	-	प	नि	-	प	नि	-	सां	नि	सां	नि	
या	५	५	सां	५	व	रे	५	ने	म	धु	र	
		३		४		५						
प	म	प	नि	नि	पम	म	री	री	सा	-	सा	
ब	ड	५	हं	५	(स५)	धु	न	सु	ना	५	य	
		३		४		५						
सा	नि	प	नि	सा	सा	सा	री	म	री	म	-	प
प	र	म	सु	ख	अ	नों	५	द	दी	५	नो।	
		३		४		५						

अंतरा.

प	-	प	नि	प	नि	सां	सां	नि	सां	सां	सां	
म	५	धय	मा	५	दि	बि	द	रा	५	ब	न	
		३		४		सां				२		
सां	नि	सां	रीं	मं	रीं	सां	नि	-	सां	सां	नि	नि
सा	५	म	त	सु	ध	लौं	५	क	द	ह	न	
		३		४		५				२		
प	म	प	नि	नि	पम	री	-	री	री	सा	सा	
ता	५	न	से	५	नि५	गौ	५	ड	च	तु	र	
		३		४		५						

सा नि	प	नि	सा	-	सा	म री	म री	म	प	प
अ	ऽ	ष्ट	भे	ऽ	द	वि	श	द	की	ऽ नो।
०		३		४		×		०	२	

बडहंस-सारंग-त्रिताल (विलंबित)

स्थायी.

सां - सां नि	प मप नि प	म री सा री	म - - म
धू ऽ प प	र तऽ आ ली	जि या अ क	ला ऽ ऽ य
०	०	३	×
म प निप नि	सां सां सां -	नि - सां -	रीं सां - प
प से ऽऽ वो	त न में ऽ	आ ऽ ये ऽ	हि जा ऽ या
०	०	३	

अंतरा.

म - प प	नि प नि नि	सां सां सां सां	नि सां सां -
वू ऽ छ ल	ता ऽ स ब	ब न में सु	का ऽ में ऽ
०	०	३	×
नि नि नि नि	सां सां सां सां	नि नि सां रीं	सां - - प
नि स दि न	उ न बि न	वि र ह स	ता ऽ ऽ य
०	०	३	×
म - प प	नि - प प म	री - री -	सा री - सा -
लू ऽ ह च	ले ऽ अ रुऽ	आं ऽ धी ऽ	आ ऽ वे ऽ
०	०	३	×
नि सां सां सां मं मं	रीं - सां सां	नि सां सां -	रीं सां - प
मों रि स खि	यां ऽ दु ख	हि य में ऽ	न मा ऽ य।
२	०	३	×

बडहंस-सारंग-अपताल (मध्यलय)

स्थायी.

प	ध						सा		
नि	नि	प	म	री	सा	-	नि	-	सा
ता	ऽ	ल	सु	र	के	ऽ	भे	ऽ	द
×		२			०		३		
म	म	म	म	म	प	-	म	प	प
गु	नि	य	न	कि	सं	ऽ	ग	ऽ	त
×		२			०		३		
प					प	ध			
नि	प	सां	सां	-	नि	नि	प	म	प
में	ऽ	क	छू	ऽ	पा	ऽ	ऽ	ऽ	वे।
×		२			०		३		

अंतरा.

म	प	नि	प	सां	सां	सां	सां	सां	-
सी	ऽ	ख	त	सु	न	त	र	हे	ऽ
×		२			०		३		
नि	सां	मं	रीं	मं	रीं	नि	सां	सां	प
सु	र	की	ऽ	ढ	र	न	मु	र	न
×		०			०		३		
म	-	म	प	प	म	री	री	सा	-
मु	ऽ	द्रा	ऽ	प्र	मा	ऽ	न	सों	ऽ
×		२			०		३		
प		प			प	ध			
नि	प	सां	सां	-	नि	नि	प	म	प
तो	ऽ	क	छू	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	वे।
×		२			०		३		

संचारी.

सा	म	म	म	-	प	म	प	प	-	-
आ	ऽ	प	ही	ऽ	गा	ऽ	वे	ऽ	ऽ	
^प नि	प	सां	सां	सां	^{रीं} नि	सां	^प नि	^ध नि	प	
आ	ऽ	प	हि	ब	जा	ऽ	ऽ	ऽ	वे	
^प नि	^ध नि	^प प	^प नि	नि	प	म	री	सा	-	
ता	ऽ	न	गु	नि	ज	न	के	व्यो	ऽ	
^{सा} नि	सा	^{सा} म	-	म	^प म	प	प	-	-	
रे	ऽ	स	ऽ	म	झा	ऽ	बे	ऽ	ऽ	

आभोग.

म	प	नि	प	-	सां	-	नि	सां	सां
बै	ऽ	जू	के	ऽ	प्र	ऽ	ऽ	ऽ	भु
^{सां} नि	सां	रीं	मं	रीं	सां	सां	^प नि	^ध नि	प
र	स	ब	ऽ	स	क	र	ली	ऽ	नो
म	म	^प म	प	प	म	री	^{सा} री	री	सा
त	ब	ही	ऽ	गु	नी	ऽ	ज	न	को

प	नि	प	सां	-	सां	प	नि	ध	नि	प	म	प
री	५	झ	५	र	झा	५	५	५	५	५	५	वे।
×		२			०					३		

बडहंस-सारंग-झूमरा (विलंबित)

स्थायी.

मध	म	म	प	पध	सां
निनिपम	पनिपम	री सा	री म -	म मप निनि प	नि सां -
आऽऽऽ	ऽऽजऽ	बा ५	ल म ५	सु पऽ नेऽ ५	ही ५ ५
३		×			०
सां		प	मप नि पम	म री सा -	नि म
रीं - सां नि		मोऽ ५ हेऽ	ग र वा ५	ल गाऽऽ येऽ	सा रीमरी मप
मी ५ ले ५		×			०
३					

अंतरा.

प	प	सां	सां सां	सां सां	नि
म प निप , नि	नि सां सांसां	निनि सांनि रीं सां	सां (सां) नि		
चों ५ कऽ , प	री ५ पिया	दिऽ सऽ ५ त	ना ५ हिं		
३	×	२	०		
म	री	नि	प	म	
प पम नि प	म री सा	सा (सा) नि सा री	म प प		
स दाऽ ५ ५	रौं ५ ग	जि याऽ त र	सा ५ ये।		
३	×	२	०		

बडहंस-सारंग-एकताल (विलंबित)
स्थायी.

म रीमपसां ५ लालहमी	सां नि सो ५ x	पनिमां निनिपम ५ ५ ५ ५ ५ ०	रीसानिसा - , सा ५ ५ ५ ५ ५ ५ , अ २
सां निनिपमरीसानिसा ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५	म री - बा ५ x	(सा) नि ब ५ ०	म सा रीमपनिपम का हे ५ ५ ५ ५ ५ ५ ३
सा री बा ५ x	सा निमा त ५ ५ ०	म री प ब ५ २	सा रीरीसानि व त ५ ५ ५ ५ ५ ३
म सा रीमपसां ५ लालहमी			

अंतरा.

सां नि सां - मन के फू ५ ५	सां नि सां निमां ले ५ ५ ०	सां नि सां निमां कहां ५ २	गं रीं गंरीं दे ५ ५ ०	सां - त ५ ३
प सां (सां) (प) -ग स ५ दा ५ ५ x	प धनिसारी रौं ग ५ ५ ५ ५ ०	सां - की ५ २	नि सां (सां) नि चो ५ ५ ०	पनिसारी सांनि री ५ ५ ५ ५ ५ ३

पम री म म
रीमपनि मप,री - सा सारी पप नि धनिसारीं सांसां रींरींसांनि पमरोसारी
याऽ ऽ छीऽऽऽ ऽऽ,पा ऽ वे महुं मद साऽऽऽ एक हाऽऽऽ ऽऽऽऽव
म
सा रीमपसां
त। लालहमी

राग सामंतसारंग.



पमौ पनी पमौ रिश्च सरी मपौ निधौ च पः ।

सामंतपूर्वसारंगो रिपसंवादशोभनः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १६८ ॥

सामंतसारंग काफ़ी थाटांतून उत्पन्न होतो. यांत गांधार मुळीच वर्ज्य आहे. सारंगाचा प्रकार असून यांत ऋषभ वादी व पंचम संवादी आहे. हा दुपारी गाइला जातो. अवरोहांत थोडा धैवताचा स्पर्श होतो. यांत देस व सारंग हे मिश्रित आहेत.

उठाव.

प, मप, निप, मरे, सा, रे, मप, निधप ।

चलन.

पम, पनिप, रेरे, सा, निसा, रम, प, म, निधप, मप, निसां,
सां, निसां रेरे, सां निप, म, निधप ।



सामतसारग—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

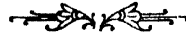
प	म	प	नि	पम	म	री	-	सा	निमा	सा
सा	ऽ	मं	ऽ	तऽ	सा	ऽ		रं	ऽऽ	ग
सा				री				म		
नि	सा	री	म	म	प	पम		नि	ध	प
बि	ल	स	त	च	तु	रऽ		सु	म	त
प		सां								
म	प	नि	सां	सां	सां	-		नि	सां	सां
ज	ब	उ	ऽ	त्त	रां	ऽ		ग	ग	त
नि										
सां	रीं	सां	नि	प	प	पम		नि	ध	प
धै	ऽ	व	त	छु	व	तऽ		इ	प	त।

अंतरा.

प		सां							
म	प	नि	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां
रि	प	क	र	त	स	म	वा	ऽ	द
प									
नि	प	नि	सां	सां	नि	सां	रीं	रीं	रीं
गां	ऽ	धा	ऽ	र	सु	र	त	जि	त

मं	मं	मं	मं	रीं	सां	सां	नि	सां	सां
रीं	रीं	रीं	मं	रीं	सां	सां	नि	सां	सां
अ	व	रो	ऽ	ह	क्र	म	स	ज	त
×		०			०		३		
म	प	रीं	रीं	सां	-	प	म	नि	ध
	प	रीं	रीं	सां	-	प	म	नि	ध
मू	ऽ	र	छा	ऽ	या	ऽ	नि	ध	प
×		२			०		३		

राग मियांकीसारंग.



सनी सधौ निपौ धश्च निसौ रिपौ मरी च सः ।

मीयांपूर्वकसारंगो मध्याह्ने ऋषभांशकः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १७१ ॥

मियांकीसारंग हा काफी थाटांतून उत्पन्न होतो. गांधार स्वर यांत मुळींच वर्ज्य आहे. यांत ऋषभ वादी व पंचम संवादी आहे. हा दोन प्रहरींच गातात. ऋषभाचें वादित्व व “ गिप ” व “ रीम ” या स्वरसंगति सारंगांगाच्या खुणा आहेत. मीयांमल्लाराप्रमाणें यांत “ निध ” संगति येत व त्यामुळेंच हा इतर सारंगांपासून भिन्न होतो. “ सा, निध निध, सा ” या स्वरविन्यासानें या रागाचें मंडन होतें. हा एक यावनिक प्रकार असून मीयां तानसेन यांनीं हा प्रचारांत आणिला असें लोकमत आहे.

उठाव.

सा, निसा, धनि, पधनिसा, रे, पमरे, सा ।

चलन.

निः प
रेसा, धनिप, निध, निध, सानिसा, सा, निध, निसा, सारे,

रे म म, प, प, धप, मरसा । प, निध, निध, सां, निसां,

रेंसां, निध, सां, रेंपं, मरें, सां, निप, मरे, सा ।

मियांकीसारंग—तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

(सा) नि॒ध सा री	री म री - सा	नि॒ सा - नि॒ री सा	नि॒ सा (सा) नि॒ ध
प्या रे॒ वा को	कां हां S S	पा SS S S	S ऊं रे S
नि॒ म प नि॒ध नि॒ध	री ^x नि॒ सा - नि॒मा	नि॒ सा री म सारी	प म री सा
पा S ऊं॒ रे॒	S S S SS	कां हां S SS	S S S S।

अंतरा.

नि॒ म सा - री मम	प म प प प	म प प , प	प (प) मरी सा
जं S ग Sल	जं S ग ल	हुं ड, फि	रं दि राS S
नि॒ सा री सा -	म प म प	म प (प) म री	म सा री म री सा
रु ठ ला S	हो S तो S	म ना S य	ला S S ऊं।

मियांकीसारंग—एकताल (विलंबित)

स्थायी.

(सा) नि॒सा	ध नि॒सा , सारी	री म री - , सासा	नि॒सारी रीसा	ध नि॒ प
मां SS	SS , गत	प ना S , इश	ब SS रS	से S

सा	ध	सा	म	री	म	रीमपनिनिपम	म	री
नि	सा	निसा, निसा	री	म	प	रीमपनिनिपम	म	री
ग	त	SS, नर	नी	S	S	SSSSS नS	जा	S
३		४	५	६	७	८	९	१०
सा	सा(सा)	निसा सारीरी						
ये	SS	SS मांगत						
३		४						

अंतरा.

प	सां	पध	सां	सां	सां	नि	सां	पनिमांरी, सां	
मप	नि	सां निसां	निनिमप नि	सां	सांसां	नि	सां	पनिमांरी, सां	
तुम	दा	ता SS	SSSS S	S	दोउ	ज	ग	केSSS, हो	
३		४	५	६	७	८	९	१०	
प	नि (नि)	- प	नि	प	मप निनि, पमप	म	री	सा(सा) निसा	
वा	S	S ली	ये	S	SS बिS, पSS	त	S	मांS SS	
३		४	५	६	७	८	९	१०	
ध	निध	निसा	सा, सा	रीमपनि सां	नि	प	मप, धप	म	री
३		४	५	६	७	८	९	१०	
SS SS	सों, स	होSSS S	S	S	S	SS, नS	जा	S	
३		४	५	६	७	८	९	१०	
सा	सा(सा)	निध, सारीरी							
ये	S।	SS, मांगत							
३		४							

मियांकीसारंग—चौताल (विलंबित)

स्थायी.

री	सा	-	नि	ध	नि	प	प	नि	ध	सा	सा	सा
द	या	५	नि	५	ध	द	या	५	क	र	दी	
सा द्वि												
धध	सा	सा	री	सा	-	सा	सा	-	री	री	म	
जे५	अ	ष्ट	सि	ध	५	न	व	५	नि	ध	५	
-	म	प	प	प	प	ध	प	-	म	री	-	
५	जो	स	ब	बि	ध	सु	ख	५	पा	५	५	
सा	री	सा	-	सा	धनि	प						
ऊं, ।	द	या	५	नि	५	ध						

अंतरा.

म			प	नि	ध	नि	सां	-	सां	सां	सां	-
प	-	-	नि	ध	नि	सां	-	सां	सां	सां	-	
जी	५	५	व	५	न	मू	५	क्त	क	र	५	
नि			नि			नि						
सां	सां	-	सां	रीं	सां	सां	ध	नि	नि	प	-	
ह	र	५	दू	ख	५	दा	५	५	ली	द्र	५	

म	ध	नि	ध	नि	सां	सां	रीं	-	नि	सां	सां	-
प	ती	त	पा	व	न	ते	०	५	५	५	रो	५
५	५	०	२	२	०	०	३	३	३	३	३	३
प	नि	प	-	म	री	-	सा	री	सा	-	ध	प
ज	स	५	गा	५	५	ऊं	०	१	द	या	५	नि
५	५	०	२	२	०	०	३	३	३	३	३	३

मियांकीसारंग-धमार (विलंबित)

स्थायी.

सा
निमा धनि पध
का ५ ५ ५
०

सा	सा	सारी	प	म	-	री	सा	-	-	सा	नि	ध	प	सा
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
नि	प	म	म	प	-	ध	प	म	री	सा	री	सा	सा	सा
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
सा	सा	री	प	म	-	री	सा	-	-	सा	निमा	धनि	पध	सा
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

अंतरा.

प	म	सां	सां	नि	-	सां	-	-	सां	नि	सां	रीं	सां
म	प	प	नि	ध									
ता	ऽ	ऽ	री	ऽ	दे	ऽ	दे	ऽ	ऽ	कु	ऽ	क	म
					२		०			३			
सां	-	-	सां	ध	नि	प	प	म	प	मप	सां	सां	
ची	ऽ	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽऽ	ज	स	कु	च
					२		०			३			
रीं	सां	-	सां	सां	नि	प	प	म	री	सा	सा	सा	रीप
जि	या	ऽ	ते	ऽऽ	ऽ	ऽ	भा	ऽ	ज	डा	र	मा	नोऽ
x					२		०			३			

राग लंकदहन-सारंग

रामपूरकडील एका गीतावरून लंकदहन या सारंगप्रकाराचे नियम असे होतील.

यांत दोन्ही निषाद, अवरोहांत थोडा शुद्ध धैवत व कोमल गांधार वक्र असे स्वर लागतात. या कोमल गांधारामुळे हा इतर सारंगप्रकारांहून भिन्न होतो. बाकीचे स्वर सारंगाप्रमाणेच.

याचे साधारण चलन असे आहे.

चलन.

म प ध रे म
सा, रे, म, म, प, प, निनिप, प, मरेसा, रेमरेसा, सांनिधनिप,
मपगगमरेसा, । मप, निसां, सां, सांरेंमरेंसां, सां,
प
निप, म, म, प, पसां, सांनिधनिप,
म म
ग, रे, सा,

लंकदहन-सारंग-धमार (विलंबित)

स्थायी.

सा
गु

री म - म -	प	प	प प -	प ध नि नि प -
ला ऽ ऽ ल ऽ	रं _२	ग	भ र ऽ	कि न डा ऽ
प - - म री	सा	-	री म -	री - सा -
रो ऽ ऽ री ऽ	ऽ _२	ऽ	मे ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
सा _× सां नि ध नि प	म	प	ग _{म म} ग म	री - सा सा
आं ऽ ऽ ऽ ऽ	ख _२	न	बी ऽ ऽ	च ऽ ऽ। गु

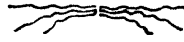
अंतरा.

म प - नि सां	सां	-	सां - -	सां नि सां सां -
ए क ऽ आ ऽ	वो _२	ऽ	री ऽ ऽ	मो ऽ हे ऽ
नि मं सां रीं मं रीं -	सां	-	सां - सां	प नि प म -
कि सी ऽ की ऽ	ना _२	ऽ	मा ऽ नुं	हू ऽ जे ऽ

म	प	-	सां	-	सां	-	सां	-	-	-	-	सां	सां
ल	गी	ऽ	मो	ऽ	हे	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	र
सां	नि	ध	नि	प	म	प	ग	ग	म	री	-	सा	सा
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ख	न	की	ऽ	ऽ	च	ऽ	ऽ	। गु

राग पटमंजरी.

(काफीमेलजन्य प्रकार)



निसौ रिसौ निधौ पश्च सरी मपौ धगौ रिगौ ।

मगौ रिसौ भवेत्पटमंजरी षड्जवादिनी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १५१ ॥

कोमलगमनी सुर जहां चढते धग न लगाइ ।

सप वादी संवादितें पटमंजरि गुनि गाइ ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ४४ ॥

पटमंजरी हें एक मनोरंजक रूप काफी थाटांतून उत्पन्न होतें. हा राग संपूर्ण आहे. आरोहांत धैवत व गांधार हे दुर्बल असल्याने सारंगांगाचा भास होतो. यांत वादी षड्ज आहे व संवादी पंचम आहे. हा सारंगानंतर गाइला जातो. “ सारे मप ” या स्वरांनीं सारंगांग व्यक्त होतें. धैवत व गांधार यांच्या योग्य प्रयोगानें त्याचा तिरोभाव होतो. हें एक अप्रसिद्ध-रूप असल्यामुळे याच्याबद्दल मतभेद असले तर नवल नाही.

पटमंजरीचा एक दुसरा प्रकार बिलावल थाटांतलाहि आहे. त्या प्रकारच्या उपलब्ध असलेल्या घराणेदार चीजा क्रमिक पुस्तक मालिकेच्या पांचव्या भागांत पां. १९६ ते १९८ ई वर दिल्या आहेत, तेथें पहाव्या.

उठाव.

नि, सा, रेसा, निधप, सा, रेम, प, धग, रेगमगरेसा ।

चलन.

सा, नि॒सारे॒सा, ध॒प, सा, नि॒सा, रे॒मप, म॒मप, ग॒रेग॒मग॒,
रे॒सा, रे॒नि॒सा ।

सां
नि॒सां, सां, नि॒सां; म॒प, प, सा, नि॒सा, रे॒सा, प॒नि॒प,
नि॒सा, रे॒म, प, प, म॒प, ध॒ग॒रेग॒मग॒, रे॒सा ।

री		सा				सा			
नि	सा	नि	सारी	सा	नि	धप	नि	सा	सा
अ	प	नी	(SS)	बि	था	(SS)	को	आ	ली
x		२			°		३		
मा	सा	प		म	म	प			
नि	नि	नि	सा	सा	री	री	म	प	-
का	S	S	S	सें	क	ही	ये	S	S
x		२			°		३		
प		प		म	ग	रीग	मग	री	सा
म	प	म	प	ध	ग	(SS)	(SS)	जे	S।
च	त	रा	S	S	आ	(SS)	(SS)		
x		२			°		३		

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां
म	मं	गो	ऽ	हि	आ	ऽ	व	ऽ
उ		२			०		३	त
प	प	म	प	प	सा	-	सा	सा
म	न	मे	ऽ	ल	बे	ऽ	को	ऽऽ
म		२			०		३	स
नि	धप	सा	सा	सा	री	-	म	प
दा	ऽऽ	नि	सा	ली	कै	ऽ	से	ऽ
५		३			०		३	ऽ

प	प	प	प	ध	ग	रीग	मग	री	सा
म	प	म	प	ध	ग	रीग	मग	री	सा
रा	५	खूं	५	५	आ	५५	५५	जे	५।
×		२			०		३		

पटमंजरी—आडाचौताल (विलंबित)

(काफीमेलजन्य प्रकार)

स्थायी.

री सा	निध प	सा -	नि सा	नि सा	री म	प मप
प ति	या५ ५	रे ५	५ ५	लि ख	भे जूं	५ ५५
५ ५	५	५	५	५	५	५
म म	प, मपध	म ग	री गग	री सा	री निसा	सा निसारंग
पि या	५, ५५५	के ५	५ ५५	पा ५	५ ५५	से ५५५५।
५	०	×	२	०	३	०

अंतरा.

सा सां	सांसां	निनि सांसां	प	म प	प मप	प	प	प , प	सा , निसा
निनि	सांसां	निनि सांसां	म प	प मप	म प	प , प	सा , निसा	सा , निसा	सा , निसा
जा ५	५ रे	कग ५वा	क हि	यो ५५	इ त	नो , सं	दे , ५५	दे , ५५	दे , ५५
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
री	प	प	प	प	प	प	प	प	प
निसा	निसा	निसारेसा	नि प	सा निनि	नि, सानि	सा	सा	री	म प
५५	५५, ५५५	वा ५	५ ५५	५, ५मो	रा	ले	जै	यो ५	रे ५५
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
म	म	प, मपध	प	प	प	प	प	प	प
पि	या	५, ५५५	५	५	५	५	५	५	५
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५

स्थायीप्रमाणें.

राग सूहा.

सूहा रागः खलु गमनिभिः कोमलैः संप्रपन्नो ।
ह्यारोहे धस्वरविरहितश्चावरोहे तथैव ॥
वादी मध्यः प्रविलसति संवादकः षड्ज एव
प्राङ्मध्याह्नान्मधुररुचिरं गीयते गानधुर्यैः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ३८ ॥

निसौ गमौ पनिमपाः सनी पमौ पगौ मपौ ।
गमौ रिसौ सुहा मांशा द्वितीयप्रहरे दिने ॥ १५७ ॥

अपि च

निसौ मरी सनिसगा मपौ मगौ मनी पसौ ।
धनी पमौ पगौ मरी सश्च मूहाऽपरा क्वचित् ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १५८ ॥

कोमल गमनी तीखरिखव धैवत जामें नाहीं ।
समसंवादी बादितें सूहा राग कहाइ ।

रागचंद्रिकासार ॥ ३७ ॥

सूहा हा एक काफीथायांतून उत्पन्न होणारा कानडा प्रकार आहे. कानडा प्रकारांतलें गंधारावरचें आन्दोलन यांतहि आहे. यांत धैवत वर्ज्य आहे. याचा दुसरा एक प्रकार कोमल धैवत घेणारा आहे. ह्याचा वादीस्वर मध्यम व संवादी षड्ज आहे. गाण्याची वेळ दुपारची आहे. याच्या आरो- हांत ऋषभ दुर्बल आहे. अवरोहांत गांधार वक्र आहे. हीही एक कानडा अंगाची खूण आहे. ह्याच्या उत्तरांगांत सारंग असतो. पण पूर्वांगांत

गांधार स्पष्ट असल्यामुळे सारंगापासून याचा भेद राहतो. यांत मुक्त मध्यम व त्यावर न्यास व तसेंच “निप” ही स्वरसंगति रागाला फार माधुर्य आणि-
तात. दरबारीकानडा व मेघमल्लार यांच्या संयोगाने हा राग होतो असें
विद्वानांचे मत आहे. सारंगाच्या प्रकारांत गांधार वर्ज्य असतो व कानड्यांत
तो लागतो. हा या दोन प्रकारांत मोठा फरक आहे.

उठाव.

नि॒सा, ग॒म, प॒नि॒मप, सां, नि॒प, म॒प, ग॒म, प॒ग॒म, रे, सा ।

चलन.

सा, नि॒सा, ^मग॒, ^मम, प॒ग॒, म॒रे, सा, नि॒सा, नि॒प, सा, म॒रे,
^मप॒ग॒, ^मम, रे॒सा, सा॒ग॒, ^पम, ^मप, सां, नि॒प, म॒प॒ग॒, म॒रे, सा ।

कोमल धैवत घेणारा प्रकार.

नि॒सा, म॒रे, सा, नि॒सा, ग॒म, प॒म, ग॒म, नि॒प, सां, ध॒नि॒प,
म॒प, ग॒म, रे, सा ।

सूहा-ज्ञपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा	सा	म	म	प	प	प	निम	प	सां
नि	र	ग	ग	र	प्रि	य	ठाऽ	ऽ	ठ
क		हा	ऽ		०		३		
×									
प	प	प	प	सां	नि	प	प	ग	म
नि	ध	निम	ऽ	ग	क	रि	ये	ऽ	ऽ
सु		राऽ	३		०		३		
×									
म	म	म	म	सा	री	-	सा	सा	-
ग	ऽ	ग	ग	म	भि	धा	ऽ	न	सां
सो		हा	ऽ		०		३		ऽ
×									
सा	सा	म	म	प	ग	म	सा	री	-
नि	ऽ	ग	ग	प	ग	रि	ये	ऽ	सा
वा		को	ऽ	बि	च		३	ऽ	ऽ ।
×					०				

अंतरा.

प	प	सां	सां	सां	सां	-	सां	सां	सां
म	ऽ	नि	सां	सां	रे	ऽ	नि	सां	सां
म		ध्य	म	क	०		औ	ऽ	श
×		२					३		
सां	सां	सां	रीं	सां	नि	सां	नि	प	प
नि	ऽ	व	त	को	त	जि	ये	ऽ	ऽ
धै		२			०		३		
×									
प	प	म	म	म	प	-	प	प	सां
नि	र	ग	ग	र	मे	ऽ	नि	मप	सां
द		बा	ऽ		०		घ	जुऽ	त
×		२					३		

प	नि	प	निम	प	सां	प	नि	प	म	ग	म	ग	म
नि	प	सौ	५	ग	क	रि	ये	५	५	५	५	५	५
×		२			०		३						
प	म	प	ग	ग	म								
म	५	हा	५	भि									
सो	×		२										
×													

स्थायी प्रमाणं.

सूहा-एकवाइत्रिताल (विलंबित)

स्थायी.

प

नि

सो

नि प - म	म प - सां	प नि प - म	म प गुम म
हु त ऽ ग	ल बी ऽ च	बै जौं ऽ ति	मा ला ऽ मो
म ग	×	२	०
प गु म म	री सा - सा	सा म - प	म प गुम नि
र ऽ मु	क ट ऽ न	य न ऽ बि	शा ऽ ला ऽ सो
३	×	२	०

अंतरा.

																म	म
प	नि	प	नि	सां	सां	-	सां	सां	नि	सां	रीं	सां	सां	नि	सां	नि	प
क	रा	५	कृ	त	कूं	५	ड	ल	ल	ट	क	चा	५	ला	५	च	
३				×				२				०					

म	प	ग	म	म	प	नि	प	सां	प	नि	प	-	मप	प	म	प	गुम	नि
त	रा	५	के		ह	र	रं	ग	गि	र	५	धर		ला	५	ला	५	सो
३					×				२					०				

सूहा-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि	सा	री	प	म	नि	प	सां	-	नि	प	-	प	प	री
सा	-	म	री	प	म	नि	प	सां	-	नि	प	-	प	प
का	५	क	रूं	हो	५	५	५	५	५	का	हा	५	क	रूं
०				३				×				२		५
री	री	म	म	री	सा	री	री	सा	-	सा	सा	म	म	री
म	म	री	सा	री	री	सा	-	सा	सा	म	म	री	री	सा
सु	नो	मो	री	स	ज	नी	५	उ	न	बि	न	अ	ब	मै
०				३				×				२		का
म	प	नि	प	सा	सा	सा	सा	-	म	री	म	सा	री	री
प	नि	प	सा	सा	सा	सा	-	म	री	म	सा	री	री	सा
क	ल	न	प	र	त	है	५	घ	रि	प	ल	छि	न	ए
०				३				×				२		रि

अंतरा.

म	री	म	री	प	प	प	नि	मप	नि	-	सां	सां	सां	-	सां	-
बै	५	जु	क	ह	त	है	५५		ला	५	इ	मि	ला	५	ई	५
×				२					०				३			
नि	पनि	पनि	प	म	री	-	सा	-	नि	सा	-	म	री			
त	ब	ही	५	जा	५	नी	५		का	५	क	रूं				
०				२					०							

स्थायी.

प
सां सां
प S

नि	सा	म	मम	मप	म	म
सांरि	सांनि पमरीरी	ग - - ग	गग	म निनि	पप	गम री सा सां
५५	ल५ न५ सो५	हा ५ ५ य	ह५ र	रं५ ग५	के५	बि ना, प
	x		३			

अंतरा.

प
म
सा

प प	सां - सां -	मां	सां	प प
प नि नि नि	सां - सां -	नि सां रीं सां	नि सां निप म	
ऽ रौं ऽ ग	पा ऽ णी ऽ	के ऽ शु भ	दू र सऽ बि	
	मं सां	सां नि	म	
प नि सां रीं	गं मं रीं सां	निसां सारीं सां नि पम	गम री सा सां	
न त र स	त ऽ मो रा	जिऽ ऽऽ याऽ निऽ सऽ दि न।, प		

सूहा-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

प
नि
,आ

मम प	प नि	प	प	प प
प,मप गग म,मप	सां - निसां नि	म प मप,मप	सां - निसां,निनि	
ज,SS रेS S,बS	धा S SS वा	S S SS,बS	ने S SS,लाS	
३	x	२	०	
मम	म सा	नि	प	म
प,मप गग म निप	सां गम री सा	सा म म,प	मपनिनि पमपग	म,नि
ड,SS लेS के SS	S घS S र	गा S वो,मा	SSSS SSSS ई,आ	
३	x	२	०	

अंतरा.

प म प	सां	प सां सां	सां नि
म प प निप,निनि	सां सांसां रीनिसां सां	निप,नि निसां -सां	रीं सां,सांरीं सांप निप
बा Sल केS,घर	ब्याहार चोSS है	अतः सु गौS अ	औं ग,मS लाS Sयो
३	x	२	०
म मम	म मम सा	नि	म
प गगम प,निप सां	प,मप गगम री सा	साम म प प	मपनिनिपम पगम मनि
आ छेSबने,SS को	गै,SS येSब जाये	रीS झा इ ये	माSSSSSS SSS ईआ
३	x	२	०

सूहा-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा	म	म					प		
नि	सा	ग	ग	म	प	प	निम	ष	सां
अ	क	क	ऽ	क	क	क	कऽ	ऽ	क
×		२			०		३		
प	प	प	सां	प	नि	प	प	ग	म
नि	प	निम	ऽ	क	क	र	ते	ऽ	ऽ
क	क	कऽ	२	०	०	३			
×									
प	म	म	म	म	म	म	म	म	
म	प	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	म
थे	इ	या	ऽ	ऽ	थे	इ	या	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
म	म	म		म		सा			
ग	ग	ग	म	प	ग	म	री	-	सा
सु	र	सा	ऽ	ऽ	धौं	ऽ	ऽ	ऽ	ते ।
×		२			०		३		

अंतरा.

प	प	सां						
म	प	नि	प	नि	सां	सां	सां	-
गा	ऽ	ये	ऽ	गु	र	न	ते	ऽ
×		२			०		३	
सां	सां	सां	सां	रीं	नि	सां	निप	नि
नि	सां	नि	सां	इ	क	र	तेऽ	ऽ
थे	इ	थे	ऽ	०			३	ऽ
×		२						

प	म	प	म	म	म	प	निम	प	सां
थे	इ	आ	ऽ	वे	थे	इ	आऽ	ऽ	वे
x		२		०			३		
प	नि	प	निम	प	सां	प	ग	म	
ति	र	नाऽ	ऽ	द	ति	रऽ	ते	ऽ	ऽ
x		२		०			३		
प	म	प	ग	ग	म				
थे	इ	या	ऽ	ऽ					
x		०							

स्थायीप्रमाणें.

सूहा-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

प	नि	प	-	प	ग	ग	ग	ग	म	री	-	सा
र	थ	ऽ	की	ऽ	ग	रू	ऽ	र	धू	ऽ	र	
x		०		०		०		३		४		
सा	नि	सा	-	म	-	म	म	-	प	प	ग	म
अ	स	ऽ	मा	ऽ	न	छा	ऽ	यो	है	ऽ	ऽ	
x		०		२		०		३		४		
म	ग	ग	म	री	-	सा	री	-	नि	सा	सा	-
दौ	ऽ	रे	दौ	ऽ	रे	दे	ऽ	ख	न	को	ऽ	
x		०		२		०		३		४		

नि	सा					प			प		म
सा	म	-	प	-	प	सां	-	नि	प	ग	म
ज	हु	ऽ	ना	ऽ	थ	आ	ऽ	ऽ	यो	है	ऽ
x		०		२		०		३		४	

अंतरा.

प	म	प	-	प	नि	सां	-	सां	नि	सां	सां	-
	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ती	मे	ऽ	ज	न	को	ऽ	
सां	नि	सां	-	मं	रीं	रीं	-	रीं	नि	सां	-	सां
	छि	न	ऽ	हू	न	ला	ऽ	गि	बा	ऽ	र	
प	म	-	प	प	-	सां	नि	प	नि	प	सां	-
	द्वा	ऽ	रि	का	ऽ	को	छां	ऽ	ड	प्र	भू	ऽ
म	प	रीं	रीं	रीं	सां	-	सां	-	नि	प	ग	म
	कुं	ऽ	ज	न	को	ऽ	आ	ऽ	यो	है	ऽ	

सूहा-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

नि सां सां - सां नि सां रि सां नि सां नि प नि प
ह री ऽ हऽ ऽ रि कुं ऽ ऽ जऽ न में
x ० २ ३ ४ ५

म	प	मग	मग	म	-	प	म	प	मग	म	सा	-	सा
ह	ह	रीऽ	ऽऽ	डा	ऽ	र	ह	ह	रीऽ	ऽ	बां	ऽ	स
री	सा	-	म	री	-	म	प	निप	-	सां	नि	सां	सां
ह	री	ऽ	बां	बां	ऽ	स	ह	रीऽ	ऽ	बां	बां	सु	री
रीं	सां	-	सां	नि	सां	सां	सां	रीनि	सां	सां	निप	निम	प
ह	री	ऽ	मु	क	ट		मोऽ	ऽ	र	लीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ।

अंतरा.

म	-	म	प	नि	प	नि	सां	सां	सां	सां	-
प	ऽ	न्ना	ऽ	पो	ऽ	पा	ऽ	ख	ह	री	ऽ
सां	सां	सां	रीं	-	सां	रीं	सां	सां	निप	नि	प
नि	नि	न	जी	ऽ	को	ना	ऽ	म	हऽ	री	ऽ
कि	स	रीं	रीं	-	सां	रीं	सां	-	निप	नि	सां
नि	मं	मं	बी	ऽ	च	ग	टा	ऽ	हऽ	री	ऽ
सां	म	ल	रीं	-	सां	रीनि	सां	सां	निप	निम	प
क	सां	-	ह	ऽ	री	होऽ	ऽ	र	हीऽ	ऽऽ	ऽ।
ह	री	ऽ	ह	ऽ	री	होऽ	ऽ	र	हीऽ	ऽऽ	ऽ।

मूहा-चाँताल (विलंबित)

स्थायी.

सा म री सा निमा सा
 क न क बै ऽऽ दि

नि	म	म	प	म	प	री	री	सा	री	नि	सा
सा	ग	ग	प	म	प	म	री	सा	री	नि	सा
उ	ल	ऽ	टे	ऽ	ऽ	र	ही	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि	सा	मग	म	प	प	ग	ग	म	री	-	सा
लू	ऽ	टेऽ	बा	ऽ	र	दू	टे	ऽ	हा	ऽ	र
री	निमा	सा	सा	गग	प	प	निप	सां	निमां	नि	नि
फै	ऽऽ	ल	र	होऽ	ऽ	क	जऽ	रा	ऽऽ	ध	ध
नि	प	सां	निमां	नि	नि	ग	ग	म	री	निमा	सा
ऽ	दि	स	ऽऽ	त	न	च	ट	क	बै	ऽऽ	दि।

अंतरा.

म	प	नि	नि	नि	सां	सां	-	सां	नि	रीं	सां
द	र	की	ऽ	द	र	की	ऽ	को	ऽ	च	की

[illegible]

सूहा-धमार (विलंबित)

स्थायी.

प	म	नि	प	म	री
नि	प	ग	म	प	सां
ए	रि	मैं	ऽ	का	ऽ
प	म	म	म	सा	हूं
नि	-	प	-	ग	ग
जा	ऽ	य	ऽ	वे	ऽ
म	म	म	म	प	प
त	क	त	क	मा	ऽ
				र	त
				पि	च
				ग	म
				री	-
				सा	-
				का	ऽ
				रि	

अंतरा.

प	प		
म प - नि प	सां -	सां सां -	सां - नि सां
रं ग ऽ के ऽ	ऽ ऽ	स र ऽ	की ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
सां सां सां		सां	नि
नि नि सां रीं -	सां -	रीं नि सां	प - नि प
भ र ऽ पी ऽ	च ऽ	का ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
म	म म	नि	प
प - - गु गु	म -	प प नि	नि
हा ऽ ऽ थ ऽ	न ऽ	लि ये गु	म प सां सां
×	२	०	३
प	म म	सा	
नि प - गु गु	म -	री - सा	
भ र ऽ झो ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ रि	
×	२	०	

राग सुघराई.



सुघराई स्यान्मृदुगमनिका रोहणे धैवतेन ।
हीनेत्युक्ता पुनरभिहिता चावरोहे ध्युक्ता ॥
वादीस्यात्पंचम इह सुसंवादिषड्जः प्रयुक्तो ।
मध्याह्नात्प्राक् सरसमधुरं गीयते बुद्धिमद्भिः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ३९ ॥

धपौ मरी निसरिगा मरी सनी पमौ च पः ।
गमौ रिसौ भवेत्पांशा संगवे सुघराइका ।

अभिनवगगमंजर्यास्र ॥ १५९ ॥

तीवर रिध कोमल गमनि चढते ध नहिं लगाइ ।
सप संवादीवादितें गुनि गावत सुघराई ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ३८ ॥

सुघराई काफी थायंतून उत्पन्न होणारा एक कानडा आहे. ह्यांत आरो-
हांत धैवत वर्ज्य आहे. “ निप ” संगति ह्यांत सुद्धां पुष्कळवेळां येते
कारण ती कानड्याची एक खूण आहे. अवरोहांत गांधार वक्र आहे. व तो
आन्दोलित आहे. हा राग दिवसाचे दुसरे प्रहरी गातात. ह्याचा वादीस्वर पंचम
व संवादी षड्ज आहे. ह्यांत किंचित् सारंगांग पण आहे. अडाणा व वृंदा-
वनी यांच्या संमिश्रणानें हा राग होतो असें म्हणतात. हा शहाना—
कानड्याशीं समप्रकृतिक आहे. शहाना ही ह्याच रागाची रात्रीं गाइली

जाणारी प्रतिमूर्ति आहे. सूहांत धैवत मुळीच वर्ज्य आहे. ह्यांत तोच फक्त आरोहांत वर्ज्य आहे. ह्या रागांत गांधार व धैवत हे दोन्ही स्वर स्पष्ट लागतात.

उठाव.

धप, मरे, नि॒सा, रे, ग, म, रेसा, नि॒प, मप, ग॒म, रेसा ।

चलन (प्रकार १)

नि॒ धप, रे, सा, रे, नि॒सा. सा, रेग॒गम, रे, सा, नि॒सा, रेम,
प म
मप, नि॒प, सां, पनि॒प, मप॒गम, प । म, प, नि॒सां,
प म
सां, रे, सां, नि॒प, पमप, नि॒प, ग॒ग, म ।

चलन (प्रकार २)

नि॒ नि॒ साध, धनि॒प, पे॒रम, मप, नि॒प, सां, नि॒सां, ग॒ग, म, नि॒प,
म म री नि॒ नि॒ मम री
मप॒ग, ग॒म, मरी, धधनि॒प, प॒ग, मरे, सा । मप,
नि॒प, नि, सां, रेसां, मरेसां, नि॒सांरेसां, पानि॒प,
मप, नि॒सां, रेसां, प, नि॒प, सां,
मम
प॒ग, मरे, सा ।

सुघराई—अपताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि	प	-	प	प	प	म	सा	री	री	सा
ध	प	-	म	प	नि	प	म	री	री	सा
दै	ऽ	ऽ	या	ऽ	पि	या	बि	न	मै	का
म	म	म	ग	म	म	री	-	सा	री	सा
ग	ग	ग	म	म	म	री	-	सा	री	सा
प	ल	ना	ऽ	सो	हा	ऽ	य	आ	ऽ	लि
सा	सा	री	म	म	प	प	नि	म	प	प
नि	सा	दि	न	त	र	फ	त	र	फ	फ
नि	स	सां	निरी	सां	नि	सां	प	प	निम	प
प	नि	सां	निरी	सां	नि	सां	प	प	निम	प
जि	य	रा	अ	कु	ला	ऽ	य	आ	ऽ	लि

अंतरा.

प	म	प	प	निप	नि	सां	सां	सां	-	सां
म	म	प	प	निप	नि	सां	सां	सां	-	सां
ह	रि	प	प	निप	नि	सां	सां	सां	-	सां
सां	सां	प	प	निप	नि	सां	सां	सां	-	सां
नि	सां	प	प	निप	नि	सां	सां	सां	-	सां
क	ब	प	प	निप	नि	सां	सां	सां	-	सां
म	म	प	प	निप	नि	सां	सां	सां	-	सां
पनि	पप	प	प	निप	नि	सां	सां	सां	-	सां
इ	त	प	प	निप	नि	सां	सां	सां	-	सां
ऽ	ऽ	प	प	निप	नि	सां	सां	सां	-	सां

प	रीं	सां - सांरीं	निं	सां	प	प	निम	प
त	प	त ऽ मिऽ	टा	ऽ	य	आऽ	ली	
×		२	०		३			

सुघराई—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि सा	सा म	री म	प प प -	नि प	ग -	ग -	म -
अ ध ऽ ग्भु	ज त वा ऽ	क रि हों ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ				
म म	प ध	म म	सा				
ग ग म	नि नि ध प	ग ग म	री - सा -				
ऽ का ऽ लन	नं दि या ऽ	ऽ गै ऽ ली	मै ऽ को ऽ।				
०	३	३	३				

अंतरा.

प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
- म - प	नि - सां -	नि सां रीं सां	नि सां नि प				
ऽ पा ऽ स	कै ऽ से ऽ	आ उं तो रे	मि त वा ऽ				
मं	रीं - रीं मं	रीं - सां सां	नि सां रीं सां	नि सां नि प			
सो ऽ य र	हे ऽ स ब	घ र के ऽ	लु ग वा ऽ				
प	नि सां नि प	मप नि प म	री - सा -				
अ ब हि सु	न त जा ऽ	ऽऽ ऽ ग लि	मै ऽ का ऽ।				
०	३	३	३				

सुघराई—त्रिताल (मध्यलय)
स्थायी.

प	प	ध	प	ध	मा	
म	प	नि नि	प	मप नि नि	री - री -	
ब	ऽ	लमा ऽ	रे ऽ ऽ चू ऽ	न रि या ऽ	मै ऽ का ऽ	
म	म		म प	धप म प -	म	म
ग	-	ग -			ग	- ग -
ला	ऽ	ऽ ऽ	ऽ	ऽ ल रं	गा	ऽ ऽ ऽ
म	म		री - सा -	री री री -	सा	- सा -
जै	ऽ	सी ऽ	तो ऽ री ऽ	प गि यां ऽ	वै	ऽ सी ऽ
ग	म	ध	म	प	ध	मा
म	-	नि नि	प	प नि नि	प	म प म
मो	ऽ	री ऽ	रे ऽ चू ऽ	न रि या ऽ	मै	ऽ का ऽ ।

अंतरा.

प	प	प	प	प	मा
म - प प	नि - नि -	सां सां सां सां	सां - सां -		
रों ऽ ग रं	गी ऽ ली ऽ	औ र च ट	की ऽ ली ऽ		
नि रीं रीं	रीं - सां -	प ध नि नि प म	री - री -		
भो ऽ र मं	गा ऽ दे ऽ	चू ऽ न र	मै ऽ का ऽ		
म म	म प	धप म प -	म म		
ग - ग -		गा ऽ ऽ ऽ ऽ	ग - ग म		
ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ल रं		दे ऽ ऽ ऽ		

सुघराई—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प म प - नि	प प म प म	रीग सारी - म	- प प -
तो रे ऽ ग	र ज वा ऽ	हां ऽ ऽ ऽ रे	पि या ऽ
म प , प	नि प नि प	सां - - -	नि सां - सां
बा बु ऽ ल	के ऽ ऽ ऽ	दे ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ स
सां रीं सारीं गं	- रीं सां -	- - प प	प - ध म
ना ऽ ऽ ऽ	जि या ऽ	पि या	हां ऽ हां ऽ।

अंतरा.

प म - प प	प नि प नि -	सां - - , सां	सां - सां सां
जो ऽ क छु	ह म से ऽ	चू ऽ ऽ कप	री ऽ तु म
प नि नि प -	सां नि नि सां -	सां रीं सारीं गं	रीं - सां -
ले ऽ हो ऽ	अ प ना ऽ	ता ऽ ऽ ऽ	सा ऽ
नि प गं - गं	सां रीं रीं सां सां	- प प प	प - ध म
सा ऽ ऽ स्न	ने द दु ख	सैं या पि	या ऽ हां ऽ

सुघराई—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प	सां - नि प	म म सा	म	ग - म म	प - प -
पा ऽ य ल	रु म ऽ झु म	ग गुम री री	बा ऽ जे स	खी ऽ री	
प रीं नि सां	नि प म प	म म म	ग ग ग म	री री सा -	
कै से आ उं	पि या के मि	ल न को ऽ	अ प ने ऽ		

अंतरा.

म प नि प	नि - सां सां	प रीं सां रीं	नि सां नि प
ज ब दे ऽ	खूं ऽ त ब	अ त हि स	ता ऽ वे ऽ
रीं	मं - रीं सां	म म	री - सा -
आ ऽ ग ल	गा ऽ ये ऽ	ग गुम री सा	गा ऽ रे ऽ
		सि ग ऽ रे सिं	

सुघराई—एकताल (मध्यलय)

स्थायी.

ध	प -	रीं सां	-	रीं	नि -	सां	ध	-	नि
बा	ऽ	र बा	ऽ	र	बा	ऽ	र बा	ऽ	र
५		०		०		३			४

प	म	प	ग	री	री	म	प	नि	नि	-
तु	म	को	क	ह	के	हा	५	५	री	५
सां	-	मां	सां	निमां	रीमां	नि	सां	नि	प	ग
५	५	क	ब	हं	५	ह	म	रे	५	ला
म	री	-	सा	री	-	नि	सा	नि	सा	री
र	ला	५	र	ला	५	र	फि	रो	५	५
प	नि	नि	म	प	म	प	नि	सां	मं	रीं
५	५	न	मु	रा	५	५	५	५	५	री

अंतरा.

म	म	म	प	नि	प	नि	-	सां	-	नि	सां
ड	ग	र	ड	ग	र	का	५	हे	५	ह	म
रीं	सां	नि	सां	नि	प	नि	सां	मं	रीं	मं	-
को	स	ता	५	वे	५	तु	म	को	५	लो	५
सां	सां	नि	सां	रीं	सां	नि	सां	प	नि	प	म
ग	न	ला	५	ज	न	आ	५	वे	५	स	ब

प	प	प नि	प	सां	-	सां	सां	सां नि	सां	रीं	मं
रं	ग	या	ऽ	री	ऽ	त	न	ह	म	रे	ऽ।
		३		५		५		०		२	
रीं	सां	निसां	रीसां	नि	प						
म	न	भाऽ	ऽऽ	वे	ऽ						
०		३		५							

सुघराई-आडाचौताल (मध्यलय)

स्थायी.

री	म	नि	सा	री	म	निप	निम	पग	म	मरी	गीमा	री	-	सा	निमा
हु	कु	म	की	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	वांऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	धी	ऽऽ		
५		२		०		३		०		५		०			
री	सासा	मरी	म	सां	नि	सां	सां	नि	पप	पम	निनि	पम	रीसा	री	सा
सा	हेब	केऽ	आ	गे	ठा	ऽ	डी	कऽ	रऽ	जोऽ	ऽऽ	ऽ	र		
५		२		०		३		०		५		०			

अंतरा.

प	सां	निप	निनि	सां	निसां	सांनि	रीं	सां	रीनि	सां	सां	नि	प	म	पप
महु	मद	शा	ऽऽ	जोऽ	हि	फ	रऽ	ऽ	मा	वे	ऽ	सोऽ	हिऽ		
५		०		५		५		०		३		०			

पम	पम	गम	म	री	म	पनि	पसां	निसां	निनि	पम	प	पप	निनि
बऽ	जाऽ	ऽऽ	लों	ने	क	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	मुऽ	खऽ	न	मोऽ	ऽऽ
४		०		×		२		०		३		०	
पम	रीसा	री	सा										
ऽऽ	ऽऽ	ऽ	र।										
४		०											

सुघराई—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प	मप	निसां	रीसां	निप	मग	रीग	-	रीरी	ग	-	-	म	री	-	-	ग
जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	नेऽ	नाऽ	ऽऽ	ऽ	देऊं	गी	ऽ	ऽ	पि	या	ऽ	ऽ	ऽ	
०				३				×				२				
सा	-	-	-	सा	नि	नि	नि	सा	सा	सा	सा	सा	नि	सा	री	री
को	ऽ	ऽ	ऽ	क	स	क	म	स	क	अ	रु	झ	ट	क	प	
०				३				×				२				
सा	सा	प	-	म	नि	प	म	री	ग	री	सा	री	ग	-	-	
०				३				×				२				
ट	क	हुं	ऽ	ब	र	सो	ऽ	क	छु	क	हे	ग	यो	ऽ	ऽ।	
०				३				×				२				

अंतरा.

म	म	-	प	-	प	नि	प	नि	-	सां	सां	सां	-	सां	-
अ	दा	ऽ	रं	ऽ	ग	सा	ऽ	ची	ऽ	क	र	मा	ऽ	नो	ऽ
२				०				३				×			

सां नि नि नि नि	सां सां सां -	सां रीं सां सां	प नि - प -
उ न दो उ २	व न सो ऽ ०	क छु न क ३	ही ऽ में ऽ x
प नि - म प	सां - सां -	म नि - प नि	म प मप निनि
जो ऽ ऽ क २	ही ऽ सो ऽ ०	धी ऽ ट लं ३	ग र सो ऽ ऽ ऽ x
मप निनि प म रीसा () () () () SS SS SS SS। २			

सुघराई-रूपक (मध्यलय) पाठ १

स्थायी.

प म -	प सां	नि निप निप () ()	प म -	प प	म प मरी म
हो ऽ २	म ट ३	की ऽ ऽ ० () ()	मो ऽ २	रि ३	रे ऽ ऽ ० ()
म म ग गम ()	री सा	सा री - सा	सा -	री म	प - निप ()
इया ऽ ऽ २ ()	म क ३	नहै ऽ या ०	गो ऽ २	र स	के ऽ ऽ ० ()
सां नि सां	निसां रीं	रीं - सां	सां नि -	सां रीं	नि सां निप निप () ()
मि स २	सां ३	लू ऽ ऽ ०	सां २	सां ३	टी ऽ ऽ ऽ ० () ()

अंतरा.

प	म	प	निप	सां	नि	सां	सां	नि	सां	सां	-	रीं	-	सां
अं	च	रा	SS	प	क	र	मे	S	रो	S		बै	S	यां
२		३		०			२		३			०		
नि	सां	रीं	सां	रीं	सां	नि	प	म	म	प	निप	सां	नि	सां
झि	झ	के	S	ली	S	नि	औ	र	हां	SS		हां	S	S
२		३		०			२		३			०		
सां	सां	सां	निसां	रीं	-	सां	नि	सां	निसां	रीं	नि	सां	-	निप
नि	नि	सां	निसां	रीं	-	सां	नि	सां	निसां	रीं	नि	सां	-	निप
क	र	S	SS	छू	S	S	S	S	SS	S	टी	S	SS	।
२		३		०			२		३		०			

सुघराई-रूपक (मध्य-विलंबित) पाठ २

स्थायी.

प	म	-	प	सां	नि	सां	नि	प	म	-	प	प	प	म	री
हो	S		म	ट	की	S	S	मो	S	S	रि	रे	S	S	
२			३		०			२			३		०		
म	री	म	री	सा	री	-	सा	सा	-	री	म	प	नि	प	
इया	S		म	क	न्है	S	या	गो	S	र	सं	के	S	S	
२			३		०			२		३		०			
सां	-	निसां	निसां	रीं	-	सां	नि	सां	नि	रीं	सां	नि	प		
S	S	मी	S	स	S	लू	S	S	S	S	S	S	टी	S	।
२		३				०		२		३		०			

अंतरा.

प	म	प	निप	सां	नि	सां	सां	नि	-	सां	नि	रीं	-	सां
अ	च	रा	SS	प	क	र	मे	S	री	SS	बै	S	यां	
सां	नि	सां	रीं	सां	नि	प	म	मप	नि	प	सां	नि	सां	-
झी	S	झ	कS	ली	S	S	औ	रS	हां	S	हां	S	S	
सां	नि	सां	निसां	निसारीं	रीं	-	सां	नि	सानि	रीं	सां	नि	प	
क	र	SS	SSS	छू	S	S	S	SS	S	SS	टी	S	S	।

सुधराई—तीव्रा (मध्यलय)

स्थायी.

प
नि
क

प	प	म	म	म	नि	प	-	प	म	प	ग	ग	ग	ग	म
र	म	कS	र	क	री	S	म	र	ही	S	मे	S	S		
ग	म	म	म	प	गम	म	ग	ग	म	प	ग	ग	म		
र	ब	र	हि	मा	SS	न	सा	हा	ब	सु	भा	S	न		

री	री	सा	सा	सा	रीं	रीं	सां	-	रीं	सां	सां	नि	प
नि	स	दि	न	चा	ह	त	ते	ऽ	रि	अ	मा	ऽ	ऽ
२		३		×			२		३		×		
नि	प	प	प	प	प	प							
ऽ	ऽ	मप	सां	नि	प	नि							
२		नऽ	र	हे	म।	क							
		३		×									

इत्यादि वर प्रमाणें.

अंतरा.

प	प	नि	नि	सां	-	सां	नि	नि	सां	रीं	रीं	सां
म	प	तऽ	र	जा	ऽ	मि	पाऽ	ऽऽ	क	प	र	व
२		३		×			२		३		×	
सां	सां	सां	सां	नि	नि	प	म	प	नि	सां	रीं	-
नि	नि	सां	सां	नि	नि	प	म	प	नि	सां	रीं	-
दि	गा	ऽ	र	ते	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ही	ऽ	दी	ऽ
२		३		×			२		३		×	
प	म	म	म	म	म	प	प	प	प	प	प	प
नि	प	ग	ग	ग	ग	म	म	प	मप	सां	नि	प
र	ख	ली	ऽ	जे	ऽ	ऽ	नि	त	नऽ	बी	ना	मे।
२		३		×			२		३		×	
प	प	गग	म	नि	प	-						
र	म	कऽ	र	क	री	ऽ						
२		३		×								

सुधराई—अपताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि	नि	नि	नि	म		म	म
सा	ध	ध	नि	प	-	प	ग
सुं	ऽ	द	र	न	ऽ	ली	अ
x		२		०		३	ल
म	म	प	म	म	म	ग	
ग	ग	म	निम	प	ग	म	री
बे	ऽ	ली	के	ऽ	सो	ह	त
x		२		०		३	नै
नि	नि	नि	नि	सां			
सा	ध	ध	ध	नि	सां	सां	रीं
मा	ऽ	न	म	त	ऽ	रे	प्या
x		२		०		३	रे
नि							
सां	-	रीं	-	सां	सां	-	सां
चौं	ऽ	च	ऽ	ल	ला	ऽ	ज
x		२		०		३	भ
							रे।

अंतरा.

प		सां				सां	
म	प	नि	सां	सां	सां	-	नि
अं	ग	अं	ऽ	ग	हो	ऽ	ज्यो
x		२			०		३
प		सां			सां	प	
नि	प	नि	सां	रीं	रीं	सां	नि
झ	ल	क	त	जो	ब	न	बा
x		२		०			३
							ऽ
							न

प	म	प	सां	नि	सां	सां	मं	रीं	मं	रीं	-	सां
स	स	ब	ह	ह	ऽ	क	हा	हा	ऽ	व	ऽ	त
x										३		
सां	नि	सां	सां	रीं	रीं	सां	सां	सां	-	सां	नि	प
ही	ही	ऽ	र	र	न	के	हा	हा	ऽ	र	ग	रे।
x			२				०			३		

सुघराई-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

नि
सा
धुं

नि	ध	नि	प	म	ग	म	म	-	प	सां	-
ध	ध	नि	प	प	ग	म	म	-	प	सां	-
ऽ	घ	ऽ	ट,	खो	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ब	नी	ऽ
३		४		x		०		२		०	
म	ग	म	-	नि	प	म	प	ग	म	री	री
दे	ऽ	खो	ऽ	ब	न	ऽ	ऽ	रा	ऽ	आ	ऽ
३		४		x		०		२		०	
नि	नि	नि	प	म	ग	म	रीसा	री	सा	-	सां
ध	ध	नि	प	प	ग	म	रीसा	री	सा	-	सां
ऽ	ष	ऽ	क	ते	रे	ऽ	मुऽ	ख	का	ऽ।	धुं
३		४		x		०		२		०	

प	प	-	प	प	सां	-	प	प	सां	-
म	वे	ॐ	दो	ॐ	प्रे	ॐ	ॐ	म	की	ॐ
नि	सां	-	नि	रीं	सां	-	नि	सां	मं	-
सा	ॐ	ॐ	यां	ॐ	र	स	ॐ	ब	स	ॐ
सां	नि	सां	नि	रीं	रीं	सां	सां	नि	सां	प
मि	गं	ॐ	म	दु	सों	भ	री	ॐ	या	ॐ
प	म	-	प	-	प	नि	सां	नि	रीं	सां
मा	ॐ	ॐ	नो	ॐ	आ	ॐ	ॐ	ली	या	ॐ
म	म	सा	री	री	सा	-	नि	सां		
प	गु	म	री	ख	का	ॐ	घुं			
पेहे	रे	ॐ	सु	ॐ						

सारां
—
सऽ
—

री	म	म	म	म	सा
नि	सा	ग	ग	प	म
हे	५	ल	५	५	५
०				×	२
सा	-	-	नि	प	सा
रे	५	५	स	ब	मी
०				३	५
प	नि	प	-	सा	नि
व	न	५	आ	छि	नी
०				३	५
				×	२

म
सा

प	नि	प	प	सां	-	-	-	-	-	सां	-	सां	-	सां	-	नि
५	थ	५	स	खी	५	५	५	५	५	मी	५	ल	५	५	मा	
				रीं												
सां	रीं	-	सां	नि	-	सां	-	-	-	नि	-	प	-	-	,म	
५	ग	५	ल	गा	५	५	५	५	५	५	५	वो	५	५	,हं	

म प - प	प - म ग	म म ग ग म प	री सा - नि
स हं ऽ स	में ऽ ऽ ऽ	दी ऽ ल ऽ	गा वो ऽ अ
नि सा - री	म म ग - ग म	री - सा री	री म म नि सा ग ग
च्छिनी ऽ कि	ब ऽ नो ऽ	को ऽ। स ऽ	हे ऽ ल ऽ
, म प -			
ऽ रि यां ऽ			

राग शहाना.



सहाना रागोऽयं मृदुगमनिकस्तीव्रधरिको ।
न धः स्यादारोहे विलसति विलोमे तु स मनाक् ॥
समान्नातः पांशो भवति सहकारी तु स इह ।
स्फुरत्तानैर्गीतो जनयति निशीथे मुदमसौ ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ १०८ ॥

निधौ पमौ पसौ निश्च पमौ पगौ मपौ गमौ ।
रिसौ रात्र्यां सहाना स्यात् पंचमांशपरिष्कृता ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १५६ ॥

रिध तीखे कोमल निगम चढत नहीं ध लगाइ ।
पस बादीसंबादितें होत सहाना भाइ ॥

रागचंद्रिकासार ॥ १०६ ॥

शहाना—कानडा काफी थाटांतून उत्पन्न होतो. हें आधुनिक रूप आहे. हा संपूर्ण आहे. कोणी आरोहांत धैवत वर्ज्य करून हा राग गातात. ह्यांत वादी पंचम व संवादी षड्ज आहे. रात्रौ तिसरे प्रहरि हा राग गाइल जातो. कानडा अंगाचा अवरोहांतला वक्र व आन्दोलित गांधार व तशीच 'निप' संगति त्या रागांत देखील येतात. तीव्र धैवत ह्यांत येत असल्यामुळे अडाणा दूर होतो. तसेंच धैवत व गांधार ह्या स्वरांमुळे सारंग हटतो. ह्याचें दिवसाचें प्रतिरूप सुघराई होय. ह्याचें साधारण चलन कानडा अंगानें होत असून

त्यांत धैवत व गांधार यांचा प्रयोग केल्याने फार गोडी येते. “निधमि प, धमप, ” असा स्वरविन्यास ह्या रागाचे चिन्हच आहे. सूहांत धैवत नसल्यामुळे तो राग निराळा होतो. अडाणा, दरबारी व मल्लार यांच्या संमिश्रणाने हा राग उत्पन्न होतो असे कांहींचे मत आहे.

उठाव.

निधप, मप, सां, निप, मपग, म, पग, म, रेसा ।

चलन.

^{प ध म}
 निधनिप, धमप, प, सां, निनिप, मप, ग, म, पगमप,
^{म म}
 गमरेसा, सा, म, प, धपप, ग, म, । मपनिसां,
^{प प}
 सां, निसां, निसारेंसां, सां, निप, निनिप,
^{प प म}
 निमपसां, निप, मप, गगम ।

शहाना—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

- म म म	प - प -	ध प - ध	प म री सा
५ जा ने दे	मै ५ का ५	सु नो ५ स	ज न वा ५
नि _३ (सा म म म	म ^म प ग म	प रीं सां रीं	सां ध नि सां
का ५ हे क	र _५ त तु म	नि त उ ठ	ह _० म स न
नि ध नि म	प ध नि सां	नि प म प	ग ^म म री सा
रा ५ ५ र	ना _५ हीं ना हीं	मा _२ नुं गी तो	री _० मैं अ ब।

अंतरा.

म प नि प नि	सां सां सां सां	नि सां रीं सां नि सां रीं सां	नि ध नि प
छे ५ र ५ क	र _२ त न हीं	मा ५ ५ ५ ५ ५	ने _३ ५ ५ ५
म प नि सां	रीं ^{गं} गं मं रीं	रीं सां - सां	म - म म
ब _५ र जो री	क _२ रे ५ ग	हे _० ली ५ नी	बिं _३ ५ दा क
म प - प	प रीं सां रीं	सां ध नि सां	नि ध नि प
हुं _५ क्या ५ मैं	नि _२ त उ ठ	ह _० म सं ग	रा _३ ५ ५ र
प ध नि सां	नि प म प	ग ^म म री सा	
ना _५ हीं ना हीं	मा _२ नुं गी तो	री _० मैं अ ब।	

शहाना—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

ध	नि	निध	नि	प	प	ध	म	प	प	प
अ	वऽ	गु	न	भ	र्यो	ऽ	स	क	ल	
x	(	२			०		३			
प	सां	-	निध	नि	प	म	प	ग	ग	म
हूं	ऽ	नाऽ	ऽ	थ	मे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	
x		(	२		०		३			
प	म	प	ग	ग	म	री	री	सा	-	सा
अ	प	नो	ऽ	स	म	झ	मा	ऽ	फ	
x		२			०		३			
नि	सा	म	म	-	प	प	मप	ग	ग	म
की	ऽ	जे	ऽ	घ	ने	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ।	
x		२			०	(	३			

अंतरा.

प	म	प	सां	नि	सां	सां	सां	सां	-	सां
तु	म	बि	न	क	व	न	हा	ऽ	रे	
x		२			०		३			
सां	नि	सां	रीं	-	सां	नि	सां	निध	नि	प
भ	व	फं	ऽ	द	मे	ऽ	रेऽ	ऽ	बि	
x		२			०		(	३		

प नि न ×	प ति	प नि क २	ध नि र	प त	प ध ह ०	म र	प रं ३	- ऽ	प ग
प सां गा ×	- ऽ	प सां य २	नि गु	प न	प म ते ०	प ग ऽ	म ग ऽ	म ऽ	म ऽ।
प म अ ×	प प	म ग नो २	म ग ऽ	म स	इत्यादि स्थायी प्रमाणें				

शहाना—क्षपताल (मध्यलय)
स्थायी.

प नि गुं ×	ध नि ऽ	प द २	प ला ऽ	- ऽ	ध मा ०	म ऽ	प ल ३	- ऽ	प न
प सां फू ×	- ऽ	प नि लो २	ध नि ऽ	प दा ०	प से ०	प रा ३	म ग ऽ	म ग ऽ	म ऽ
प म आ ×	प प ऽ	म ग ज २	म ग ऽ	म ब ०	सा री ना ०	- ऽ	री ब ३	री न म	सा री म
नि सा को ×	- ऽ	म मु २	म बा ऽ	- ऽ	प र ०	- ऽ	ग क ३	ग ऽ	म ऽ।

अंतरा.

प म	प	प नि	प	नि	सां	-	सां	-	-
आ x	ऽ	जे २	ऽ	न	बी ०	ऽ	को ३	ऽ	ऽ
सां नि	सां	रीं	-	सां	सां नि	सां	प नि	ध नि	प
कं x	ग	ना २	ऽ	बं	धा ०	ऽ	है ३	ऽ	ऽ
प नि	ध नि	प	प	-	प नि	प	प	-	प
नू x	ऽ	र २	का	ऽ	ओ ०	ब	ट ३	ऽ	ना
प सां	-	प नि	ध नि	प	म	प	म ग	म ग	म
अं x	ऽ	ग २	ऽ	म	लो ०	ऽ	है ३	ऽ	ऽ
प म	प	म ग	म ग	म	री	-	सा री	-	सा
ता x	ऽ	जे २	ऽ	र	स्वे ०	ऽ	सी ३	ऽ	र
नि सा	म	म	-	प	प	-	म ग	म ग	म
छ x	ऽ	त्र २	ऽ	ध	रो ०	ऽ	है ३	ऽ	ऽ।

शहाना-धमार (विरचित)

स्थायी.

नि	नि	-	प	-	-	प	ध	म	-	प	-	मप	प	म
कुं	ज	ऽ	न	ऽ	ऽ	उ	ड	त	ऽ	है	ऽ	ऽऽ	गु	
प						प				म				
सां	-	-	नि	ध	नि	प	म	प	-	ग	-	म	-	
ला	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	रि	दै	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	
प						सा								
म	प	-	म	ग	म	-	री	-	ग	सा	-	-	-	
हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	खे	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	
नि						म				म				
सा	म	-	म	-	-	प	प	-	-	प	-	ग	म	
के	ऽ	ऽ	ष्ण	ऽ	ऽ	क	न्है	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ।	
प														

अंतरा.

प	सां									सां				
म	प	-	नि	-	सां	नि	सां	सां	-	नि	सां	सां	-	
स	ब	ऽ	स	ऽ	ऽ	खि	य	न	ऽ	मी	ऽ	ले	ऽ	
प						सां								
सां	नि	सां	-	रीं	-	सां	-	नि	सां	-	नि	ध	नि	प
ब	न	ऽ	ब	ऽ	न	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	
प						प				प				
नि	प	-	प	-	-	प	ध	म	-	प	-	म	प	
खे	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	त	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नं	द	
प														

सां - - नि ध	नि	प	म	प	-	प	ग	म	-
ला S S ल S	S _२	रे	दै	S	S	या	S S S		
^प म प - म ग									
हो S S री S									

इ. अस्ताई प्रमाणें.

शहाना—धमार (विलंबित)

स्थायी.

नि - प प -	-	म	ध	म	-	प	-	-	मप
आ S S छी S	S _२	नि	भा	S S	त	S S	सों	S	
^प सां - - नि ध	नि	प	म	प	-	प	ग	म	-
खे S S ले S	S _२	क	न्है	S S	या	S S S			
^{म म म} प प - ग ग	म	-	री	री	-	सा	-	-	-
ब्रिज S बी S	S _२	S	थ	न	S	सों	S S S		
^{नि} सा म - म -	-	-	म	प	-	म	ग	म	-
ए S S री S	S _२	S	गु	ई	S	यां	S S S		

अंतरा.

प	म	प	-	नि	-	सां	नि	सां	-	-	नि	सां	सां	-
	अ	बी	ऽ	र	ऽ	ऽ	गु	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ल	के	ऽ
सां ^x	नि	सां	-	नि	सां	रीं	सां	रीं	नि	सां	नि	ध	नि	प
	स	र	ऽ	ऽ	ऽ	पि	च	का	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
प ^x ध	नि	नि	प	प	-	-	प	ध	म	-	प	-	म	प
	ना	ऽ	ऽ	च	ऽ	ऽ	त	ता	ऽ	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ
प ^x	सां	-	-	नि	ध	नि	प	म	प	-	म	गु	म	-
थै ^x	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दै	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ।

राग नायकी कानडा.



निपौ मपौ सनी पमौ पगौ मपौ गमौ रिसौ ।
धहीना नायकी मांशा मध्यरात्रगता जने ॥ १६० ॥
सरी पगौ मरिसमा : पधौ निपौ सनी पमौ ।
पगौ मरी स इत्युक्ता नायकी मांशिकाऽपरा ॥ १९१ ॥

अभिनवरागमंजयाष्ट ॥

गमनी सुर कोमल जहां धैवत सुरवरजोइ ।
समसंवादीवादितें कहो नायकी सोइ ॥

रागचन्द्रिकासार ॥ १०२ ॥

नायकी कानडा काफी थायंतून उत्पन्न होतो. ह्यांत धैवत वर्ज्य आहे. मध्ममवादी व षड्ज संवादी आहे. गानसभय मध्यरात्र आहे. पूर्वांगांत सूहा व उत्तरांगांत सारंग मिळून हा राग बनतो. ' रिप ' संगति रागवाचक आहे. कोणी नायकींत आरोहांत कचित् कोमल धैवत घेतात. हा धैवत निषादाच्या संगती लाविला जातो. जसें ' धुनिप '. कानड्यांपैकी देवसाख, नायकी, सुहा व सुघराई हे सारगांगाचे असून त्या सर्वांत धैवत व गांधार या स्वरांचें अल्पत्व असतें. कांहीं लोक नायकी कानड्यांत धैवत कोमल घेतात व तो संपूर्ण करून गातात. हा प्रकार दरबारी कानडा, कौशिक कानडा व बागेश्री असे तीन राग मिळून होतो. भावभट्टानें आपल्या अनूपविलासांत नायकी कानड्यांत मल्लार व कानडा यांचा योग सांगितला आहे. कानडा

प्रकार असल्यामुळे ह्यांत गांधाराचें अवरोहांत वक्रत्व व त्या स्वरावर आन्दोलन, तसेंच “ निप ” ही स्वरसंगति ही प्रमुख आहेत.

उठाव

निप, मप, सां, निप, मप, ग, मप, गम, रेसा ।

चलन.

म
सा, रेपग, म, रेसा, रेनिसा, रेपगम, म, म, प, सांनिप,
प सा
गम, रे, सा, रेपग, म, रे, सा ।

स्थायी.

प
नि
स

ध	म	म	प ध नि
नि प प म	प म - प	गु म री प	- नि नि म प
ज न बि न	भ ई ऽ नि	रा ऽ स हूं	ऽ क ऽ हो स
प	प ध	म म	सा
सां - - नि नि	प म प गु गु	म री - सा	री सा - नि
खी ऽ ऽ कि ऽ	स ऽ बि ध ऽ पा	ऽ ऊं ऽ द	र स ऽ। स

अंतरा.

प
म
क

प	सां	नि	प	सां	पथ
म प नि प	नि सां - प	निनि	प नि सां	रीं रीं सां	निनि
हु त ना ऽ	यिका ऽ अ	पऽ	ने जि य	को दु ख	हऽ
	×	२		०	(
म भ	नि प नि	पथ	म	सा	सा
पमप गु गु म	प नि प सां	निनि	पमप गु म	री री सा	नि
रऽऽ के ऽ द	र स बि न	निऽ	सऽऽ दि न	त र स । स	
	×	३		०	

नायकी कानडा-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प नि - प	प म प सां	प सां - प नि	म म प प म म
५ पा ५ पी	हु रि मु ख	बो ५ ५ ५	ल रे ५ तुं
म म ग ग म	म म नि प	प ग म री सा	री री सा -
५ सा ५ र	थ क क र	या ५ न र	त न को ५।

अंतरा.

म म प	सां - सां -	सां नि सां रीं सां	रीं निसां सां -
५ ह र बि	ना ५ दू ५	जो ५ स ब	झू ५ ५ ठो ५
रीं सां रीं	रीं नि सां नि प	प नि प - म	म - प - म
५ ह र रं	ग अ खि यां	५ खो ५ ल	५ रे ५ तुं
म म ग ग म	म म नि प	म ग म री सा	री री सा -
५ सा ५ र	थ क क र	या ५ न र	त न को ५।

नायकी कानडा-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

निसा ,रीप

एऽ ,मग

म म म	सा	री	ग	म म म	प
ग गग म रीसा	री -ग सा निसा	नि सा निसा	रीप	प गग म मप	
वा ऽऽ ऽ रन	वा ऽऽ रुं ऽऽ	पि ऽ ऽऽ यर	वा ऽऽ ऽ। मग		
३	५	२	०		

अंतरा.

प प	नि	प री
मप निप सांसां सांसां	रीसां री,सांरी सां,निप निप	मम मम प सां
इन नैऽ नन पर	तन म,नऽ वा,ऽऽ ऽ रुं	दर सदि खा जा
३	५	२

प प म
निप म,पनि पग म,मपनि
सुख हियेऽ राऽ ऽ। मगऽ
०

म म
प मग गम,रीसा
वा ऽऽ ऽऽ,रन
३

नायकी कानडा—तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

रीप
(
बन

प म ग ग म, रीसा	री - सा -	सा रीनि सा निसा रीप	प म, प निमप प म
रा SS SS, मोरा	प्या S रा S	ब्या S SS हन	आ S, SS SS या S S
म - प, पसां	सां निप नि प	सां सां निप, प	परी मसा री सा, रीप
छै S ल, छS	बी SS S ला	ला डे ला S, रं	गी S SS S ला बन

अंतरा.

प प	म प निप, नि	सां - सां, सां	सां - नि रीं सां रीं
भू S ख S, न	हा S र, च	मे SS S ली S	नि सां निप नि प
प सां	मंमं	सां	बे SS S ला
म प नि सां	गंगं मं रीं, सां	रीनि सां सां निसां	सां
कं ग ना S	हा S थ, स	जी S ला SS	

निनिपनि निपमप निनिपम रीसा, रीप
SS SS SS SS SS बन

नायकी कानडा-एकताल (विलंबित)

स्थायी.

सा	नि	सा	री	री	प	-	प	पध	म	म		
नि	सा	री	री	प	-	मप	निनि	ग	ग	म	रीसा	
सु	ख	क	र	आ	५	५५	ई५	रे	५	५	पि५	
				५		०						
री	-	सा	नि	सा	-	री	री	ग	म	री	सा	
या	५	के	५५	सौ	५	५	५	५	५	५	ग।	
				५		०		२		०		

अंतरा.

प	प	गग	म	प	-	प	मप	नि	प	सां	सां	
दौ	र	न५	दु	रा	५	ई	आ५	ई	५	५,	त	
		५		५		०		२		०		
प	नि	नि	प	-	प	री	म	सा	री	-	सा	निसा
ब	फ	ल	५	औं	५	५	५	५	५	५	ग	५५।
				५		०		२		०		

नायकी कानडा-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

नि	प	प	म	प	म	-	प	नि	प	-	री	
द	र	बि	न	सु	ख	५	स	द	न	५	श्या	
				५		०		२		०		

म
नि
सुं

प	म	प	-	प	नि	प	-	म	प	नि	सां	-
५	म	को	५	नि	र	५	खे	५	५५	५	५	५
प	नि	-	प	प	ग	ग	म	सा	-	सा	-	सा
नै	५	न	न	म	न	५	था	५	गे	५।	सूं	सूं
३		५		५		५		५		५		५

अंतरा.

नि	सा	-	-	सां	नि	सां	सां	-	प	नि	प	सां	नि	सां
या	५	५	बि	धु	न	ते	५	नि	क	से	५	५	५	५
५	सां	रीं	-	सां	नि	प	म	प	प	नि	मप	सां	-	५
५	री	५	मो	ह	न	तु	छ	के	५	५	५	५	५	५
५	५	५	सा	री	-	सा	-	नि	५	५	५	५	५	५
५	५	५	झां	५	के	५।	सूं	५	५	५	५	५	५	५
५														

नायकी कानडा-अपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा	री	सा	री	म	ग	म	री	-	सा
र	हे	प	र	५	ती	५	रा	५	ज
५		५	५	५	५	५	५	-	म
५		५	५	५	५	५	५	५	सु
५		५	५	५	५	५	५	५	५

आभोग.

प	-	म	प	नि	प	नि	सां	-	-
पी _x	ऽ	क _२	भ	री	प _०	ल	कैं _३	ऽ	ऽ
प	प	सां	-	रीं	मं _०	मं	रीं	-	सां
अ _x	ल	कैं _२	ऽ	ल	खीं _०	ऽ	ला _३	ऽ	ल
पं _x	पं	रीं	सां	रीं	नि	सां	प _३ नि	म	प
हो _x	य	ल _२	ल	के	मु _०	ख	चू _३	ऽ	ऽ
ग _x	म								
मे _x	ऽ।								

नायकी कानडा-चौताल (विलंबित)

(कोमल धैवत घेणारा प्रकार)

स्थायी.

रीं	सां	-	नि	प	प	म	नि	प	प	-	नि
बिं	बो	५	ठ	५	न	कुं	ड	५	ल	५	५
×		०		२		०		३		४	
प	-	मग	म	प	निप	सां	-	-	नि	प	-
गो	५	५५	ल	५	क५	पो	५	५	ल	५	५
×		०		२		०		३		४	
म	म				सा	नि		सा			
ग	ग	म	री	-	सा	नि	सा	सा	म	म	म
बिं	रा	५	ज	५	त	द	स	न	च	म	के
×		०		२		०		३		४	
री				म	म	म					
प	-	म	प	ग	ग	ग	ग	म	री	-	सा
चौं	५	५	पा	५	५	भा	५	५	ल	५	५
×		०		२		०		३		४	
म	म	-	म	प	निप	नि	सां	सां	सां	नि	प
ति	ल	५	क	५	सां५	सि	र	५५	प	५	र
×		०		२		०		३		४	
सां								नि			
नि	-	-	सां	-	सां	रीं	-	सां	सां	निप	निसां
मौं	५	५	ग	५	ल	नै	५	५५	न	५५	५५
×		०		२		०		३		४	

अंतरा.

म	-	म	प	निप	नि	सां	-	सां	सां	-	सां
को	ऽ	ट	को	ऽऽ	ट	अं	ऽ	ब	खौं	ऽ	ब
सां	सां			२		मां		सां			
नि	नि	सां	मं	रीं	सां	नि	नि	रीं	निध	नि	प
श्या	ऽ	म	ब	र	न	घ	न	स	मुऽ	ऽ	द्र
म	म	म	म	प	निप	नि	नि	-	सां	-	-
ऐ	सो	न	ट	ना	ऽऽ	ग	र	ऽ	को	ऽ	ऽ
प				२		ध		३			
रीं	सां	-	रीं	सां	निप	नि	प	-	म	नि	प
जै	ये	ऽ	री	ऽ	बऽ	र	न	ऽ	कं	ड	ल।
३		०		२		०		३		४	

संचारी.

सा								प			
म	म	-	म	-	-	प	-	प	सां	नि	प
त्रि	भं	ऽ	गी	ऽ	ऽ	नृ	ऽ	त्य	क	रे	ऽ
प		०		२		०		३		४	
नि	नि	-	नि	सां	सां	निसां	सांरी	नि	सां	निप	नि
मु	र	ऽ	ली	ऽ	अ	धऽ	रऽ	ध	रेऽ	ऽ	ऽ
३		०		२		०		३		४	
प	मग	म	री	सा	-	री	-	सा	सा	निसा	सा
म	नऽ	ऽ	अ	कू	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ग	ऽऽ	यो
३		०		२		०		३		४	

सा	-	-	री	-	-	म	-	-	म	-	-
मो	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ग	सां	ऽ	चो	ऽ	ऽ
x		०	२			०	३		४		
प	-	प	प	-	प	सां	निप	नि	प	-	प
का	ऽ	रि	ना	ऽ	ग	ध	न	ऽ	वै	ऽ	को।
x		०	२		०	३	४				

आभोग.

म	प	निप	नि	-	नि	सां	सां	-	सां	सां	निप
क	ह	त	म	ऽ	न	प्र	भु	ऽ	ति	रि	यां
x		०	२		०	३	४				
म	प	-	सां	नि	सां	मं	रीं	मं	-	रीं	-
र	स	ऽ	के	ऽ	ऽ	का	ऽ	ऽ	र	ऽ	न
x		०	२			०	३		४		
रीं	सां	-	प	सां	नि	-	रीं	सां	प	नि	-
सु	र	ऽ	स	ती	ऽ	बा	ऽ	ऽ	ह	ऽ	न
x		०	२			०	३		४		
म	नि	प	-	प	-	म	-	-	म	नि	-
भा	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	कू	ऽ	ऽ	ड	ऽ	ल।
x		०	२			०	३		४		

नायकीकानडा-धमार (विलंबित)

स्थायीं.

सा नि सा री प	म (सा) प ग म री -	सा -	सा री री नि -
ए ३ ऽ म ध	मौ ३ ऽ ऽ ड ३	ल २ ऽ	नि र ३
सा - री प	म (सा) प ग म री -	सा -	सा म - म
३ ऽ त त	का ३ ऽ न्है ३	या २ ऽ	ब्री ३ म
प - प -	प म प प नि -	प -	प म प सां
डो ३ ले ३	दि ३ र्ग न लो ३	ले २ ऽ	क पो ल
नि - प -	प सां - - नि प	म ग ३	म री सा
गो ३ ले ३	कूं ३ ऽ ड ल	की २ ऽ	झ ल क।

अतरा.

प म प - नि -	प -	सां - -	सां नि सां सां -
जो ३ ऽ दे ३	३ २ ऽ	खे ३ ऽ	३ ३ सो ३
सां नि सां - री -	सां -	सां नि सां -	प नि प नि प
री ३ ऽ झ ३	र २ ऽ	ह त ३	है ३ ऽ ऽ
प सां - सां नि प	प म	म ग ३	सा री सा री प
ता ३ ल ता ३	न २	की ३	म क। म ध

सा	म	म		सा	सा
नि	सा	री	प	प	ग
ला	ल	ला	ड	ली	ऽ
प				खे	ऽ
नि	-	प	-	म	-
से	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ
				ऽ	ऽ

म	प	-	सां	-	,	सां	सां	-	-	सां	नि	सां	सां	-
सं	५	५	ग	५	५	स	खा	५	५	स	५	खी	५	५
×					२		०			३				
सां						मां	मां			प	प			
नि	सां	-	रीं	-	सां	-	नि	नि	सां	नि	नि	प	-	
रं	ग	५	भ	५	र	५	ली	५	५	५	५	ये	५	५
×					२		०			३				
			प		प	म	री	सा						
म	प	-	सां	-	नि	प	म	री	सा	नि	सा	री	प	
खे	५	५	ल	५	५	र	चो	५	री।	ला	ल	ला	डा	५
×					२		०			३				

राग देशाख्य (देवसाख)



निसौ मरी पमौ निपौ सनी पमौ पगौ मरी ।

स इत्युक्तो देवसागः संगवे पंचमांशकः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १६२ ॥

हरप्रियामेलसमुद्भवोऽयं देशाख्यरागो धगदुर्बलः स्यात् ।

वाद्यत्र षड्जः सहचारिमध्यमः सारंगभंग्या कुतुपेऽभिगीयते ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ३७ ॥

देशाख्य यालाच कोणी देवसाख, देवसाग, अथवा देशाख म्हणतात. हा राग काफ़ी थाटांतून उत्पन्न होणारा कानडा प्रकार आहे. यांत वादीस्वर पंचम व संवादी षड्ज आहे. कांहीच्या मते समसंवाद आहे. यांत धैवत स्वर वर्ज्य असतो. कांही लोक यांत धैवत व गांधार दुर्बल ठेवून गातात. कानडाप्रकार असल्यामुळे गांधारावर आंदोलन अवश्य आहे. यांत मध्यमावर न्यास चांगला शोभतो. “ गप ” संगति यांत रागवाचक आहे. हा दुपारी गातात. जुन्या ग्रंथांत हा दोन्ही गांधार व दोन्ही निषाद घेणारा व ऋषभ-वर्जित असा वर्णिलेला आहे. दोन गांधार घेणारी देवसाखाचीं गीतं आजहि उपलब्ध आहेत.

उठाव.

नि॒सा, मरी, पम, नि॒प, सां, नि॒प, मप ग॒म, रीसा ।

चलन.

म म प म

सा॒सा॒मरे॒सा, नि॒सा, ग॒ग, प, नि॒प, ग॒मरे॒सा, सा॒नि॒सा ।

प मंमं

मप, प॒नि॒प, सां, सां, रे॒सां, नि॒सां, सां, नि॒प, ग॒गं

प म म

मे॒रे॒सां, नि॒प, ग॒ग॒म, रे॒सा ।

सा
नि सा
र ति

री	म	री	प	म	नि	प	सां -	प	नि	प	पम	प	म	ग	म -
	या	५	५	५	५	५	५	बी	५	त	५	ग	ई	५	५
	०				३			५					२		
म	म							नि	सा						
	ग	ग	म	री	-	री	सा सा	सा	नि	प	पम		री	-	सा सा
	क	रू	५	को	५	न	ग त	जि	या	घ	ब	५	रा	५	व त
	०				३			५					२		
सा	री														
	नि	सा	म	री	प	म	नि	प	सां -	प	म		प	म	नि
	च	त	रा	५	५	५	५	५	५	५	का	५	र	न	र ति
	०				३			५	५	५			३		

अंतरा.

री	री	म	सां
म	री	प	म
स	गु	न	बि
मं	मं	मं	मं
गं	गं	गं	गं
पि	या	क	ब
नि	सा	सा	सा
सा	-	प	-
हौं	ॐ	ॐ	ॐ
र	ति	ति	ति

देवसाख-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

री सा

अ खी

री म	री	प	म	नि	प	सां -	प	ध	नि	म	प	प	-	म	री
यां	५	५	५	५	५	५	ला	५	ग	र	ही	५	मो	री	
म	म						री								
ग	ग	म	री	-	री	सा	सा	म	म	नि	प	म	री	री	सा
अ	दा	५	रं	५	ग	पि	या	तु	म	रे	५	द	र	स	न
नि															
सा	-	म	री	प	म	नि	प	सां	-	सां	नि	प	म	री	सा
का	५	५	५	५	५	५	५	५	५	र	५	न	५	अ	खी

अंतरा.

री म	री	म	री	प	म	नि	प	सां	नि	सां	-	सां	नि	सां	सां	-
कु	च	भु	ज	फ	र	के	५	स	गु	५	न्भ	इ	ल	या	५	
रीं	मं	रीं	मं	रीं	-	मं	मं	म	म	री	री	म	म	री	री	सा
उ	न	के	५	आ	५	व	न	ह	रे	५	ब	द	न	को	५	
सा	सा			नि				प								
नि	नि	सा	सा	सा	-	प	-	म	-	प	-	म	-	री	सा	
क	र	हों	सिं	गा	५	५	५	५	५	र	५	न	५	अ	खी	

देवसाख-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

म						प			
ग	म	री	-	सा	री	री	म	-	प
दु _x	र	गे _२	ऽ	ह	र _०	नि	दे _३	ऽ	ष
म									
ग	म	री	-	सा	री	-	सा	सा	-
दा _x	ऽ	री _२	ऽ	द्र	दा _०	ऽ	हि _३	नी	ऽ
री							सां		
सा	-	म	ग	म	प	ध	नि	सां	सां
दु _x	ऽ	ष्ट _२	ऽ	बि	दा _०	ऽ	र _३	ऽ	नि
सां		सां					म		
नि	सां	ध	नि	प	प	म	प	ग	म
क _x	रु	शं _२	ऽ	भु	जा _०	ऽ	ऽ _३	या	ऽ।

अंतरा.

प		नि							
म	म	ध	निध	सां	सां	नि	सां	सां	-
अ	सु	र	ऽऽ	सं	घा	ऽ	र	नी	ऽ
नि									
सां	नि	सां	-	रीं	सां	नि	सां	धनि	प
र	क्त	बी	ऽ	ज	मा	ऽ	ऽ	रऽ	नी
म	-	म	-	प	ध	नि	सां	-	सां
दी	ऽ	न	ऽ	अ	भ	य	व	ऽ	र

सां	सां	नि	धं	नि	प	प	म	प	म	ग	म
सु	र	न	२	५	र	पा	५	५	३	या	५
×						०					

देवसाख—प्रपताल (मध्यलय)

म्यायी.

म	म	म	म	म	म	प	म	प	प
ग	ग	री	री	री	म	प	म	प	प
दा	५	न	व	द	ल	न	का	५	ज
×		२			०		३		
म	म	सा	सा	सा	री	री	सा	-	सा
ग	म	री	री	सा	री	री	सा	-	सा
अं	५	ब	च	टि	मु	ग	रा	५	ज
×		२			०		३		
नि	-	म	री	म	प	ध	सां	नि	सां
सा	-	री	म	म	प	ध	सां	नि	सां
घा	५	ल	नि	अ	सु	र	रा	५	ज
×		२			०		३		
सां	सां	मां	ध	नि	प	ग	म	म	म
नि	सां	ध	नि	प	प	ग	म	म	म
पा	५	ल	नि	५	सु	र	रा	५	ज
×		३			०		३		

अंतरा.

म	सां	ध	नि	सां	सां	सां	-	सां
प	-	ध	-	नि	सां	सां	-	सां
जे	५	ते	५	सु	भ	ट	दै	५
×		२			०		३	

नि	सां	सां	सां	-	रीं	नि	सां	सां	सां	ध	ध	-
सु	भ	ही	५	स	द	ल	ह	ल्यो	५			
प	-	ग	ग	म	प	ध	नि	सां	रीं			
बा	५	चो	५	अ	सु	र	सो	५	जो			
नि	सां	नि	-	प	म	प	प	ग	म			
र	न	छां	५	ड	ग	यो	भा	५	जि।			

संचारी.

नि	सा	सा	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	ध	नि	प
ब	र	ख	त	सु	म	न	त्रि	दि	स			
प	ध	नि	सां	रीं	नि	सां	ध	नि	प			
हुं	५	दु	भि	प	ट	ह	बा	५	ज			
प	ग	म	म	प	ग	ग	म	री	री			
आ	५	ई	५	वि	बु	ध	ना	५	रि			
ध	ध	ध	ध	ध	ध	ध	ध	नि	प			
ले	५	आ	५	र	ती	५	सा	५	ज			

टीपः—हीं शेवटचीं दोन गीतें देवसाखाचीं म्हणून जुन्या गायकांच्या संग्रहांतून आलीं आहेत. हल्लींच्या प्रचारांतलि देवसाखापासून निराळें असें हें स्वरूप आहे.

राग कौशिककानडा अथवा कौंसी

गांधारांदोलिता कौंसी वागीश्वर्यगमंडिता ।

अपि च

आसावरीसुमेलोत्था कौशिकीकानडा मता ।

प्रारोहे रिपहीनाऽसौ संपूर्णा चावरोहणे ॥ ७८ ॥

मध्यमः संमतो वादी साहचर्ये तु पङ्कजः ।

गानं समीरितं तस्या निशीथे भूरिगक्तिदम् ॥ ७९ ॥

कानडा मालकोशश्च मिलतोऽत्र यथायथम् ।

काफीमेलगता कौंसी पूर्वमेव मयोदिता ॥ ८० ॥

मधनिसनिधमैः स्यान्मालकोशांगदर्शनम् ।

पगमगरिसैः कुर्याद् बुधस्तदंगवागणम् ॥ ८१ ॥

अप्रसिद्धमिदं रूपं गायनोत्तमनिर्मितम् ।

समुद्भूतं यथान्यायमवश्यं रक्तिदं भवेत् ॥ ८२ ॥

श्रीमल्लक्ष्यमंगतिं द्वि० (पृ. १६४)

नायकी साहना तद्वद्देशाग्न्यः कौशिकान्हयः ।

रागाः प्रकीर्तितासाङ्गैः कानडांग सुशोभनाः ॥ १९ ॥

श्रीमल्लक्ष्यसंगीते ॥ द्वि० ॥ (पृ. १४०)

निसौ मगौ मपमगा गरी समौ धनी च सः ।

निधौ मधौ निधमपा गमौ गरी पुनश्च सः ।

कर्णाटः कौशिकाख्यातो निशीथे मध्यमांशिकः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १८८ ॥

संपूरन कोमल निगम मध्यम वादी जान ।
मालकंस मिलि कान्हरा कौंसी रूप बखान ॥

रागचंद्रिकासार ॥ १०४ ॥

कौशिककानडा अथवा कौंसिकानडा याचे दोन प्रकार आहेत. एक काफीमेलजन्य व दुसरा आसावरीमेलजन्य. काफी थाटांतून उत्पन्न होणाऱ्या कौंसीमध्ये कानडा व बागेश्रीचे अंग असते व आसावरी थाटांतील कौंसीत तेच कानडा व मालकौंसाचे असते. दुमऱ्या प्रकारांत आरोहांत ऋषभ व पंचम हे स्वर दुर्बल असतात. दोहांतहि वादी स्वर मध्यम व संवादी षड्ज आहे. गाण्याचा वेळ मध्यरात्र आहे. बागेश्री अंगाच्या कौंसीचे मंडन साधारणतः “ निप, मपनि मपग, म, पग, म, रेसा; मध, निध, मप, गमध, निध, प, मपगम, रेसा ” या स्वरसमुदायाने होतें. मालकौंस अंगाच्या कौंसीत “ मधनिंसां निधम ” हे स्वर मालकौंसाचे अंग दर्शवितात. व पग, मरेसा हे कानडा दर्शवितात.

कौंसिकानडा हा एक अप्रसिद्ध रागांपैकी आहे. व त्याची दोन्ही रूपे स्वतंत्रच असून योग्य नियमांनी गाडल्यास परिणामकारक होतात.

बागेश्री अंगाच्या कौंसीचे चलन.

म म म नि नि
पम, पधग, मप, गम, रेसा, रेनिंसा, ग, म, रेसा, सा, धध,

नि नि
धनिप, धनिंसां, रेसां, सां, धनिप, म, पधम ।

प नि नि
निंसां, सां, रेनिंसां, निप, मधध, निप,

धनिरेसां, धम, पधम ।

मालकंस अंगाचा कौंसी.

उठाव.

नि॒साम, ग॒म, प॒ग, म॒गरे॒सा, म, ध, नि॒सां, नि॒ध,
म॒धनि॒धम, प॒ग, म॒ग, रे॒सा ।

चलन.

सा, नि॒धनि, सा, म, म॒ग, म॒ग, रे॒सा, नि॒ध, सा, म, म॒गप,
प॒ग, रे॒गम॒गरे॒सा । म॒धनि॒सां, सां, सांमं, मं॒गंरं॒सां,
सांनि॒धम, ग, प॒ग, म॒गरे, सा ।

ध	(ध	म	पध	म	-	-	म	प	म	-	ग
प	ॐ	ॐ	(जत्र)	ग	-	-	खी	ॐ	ग	-	म
री	-	सा	-	री	नि	सा	री	नि	सा	ग	ग
पा	ॐ	ल	ॐ	मो	ह	नी	मु	र	त	श्या	ॐ
म	री	-	सा	सा	सा	नि	ध	नि	प	ध	नि
म	ला	ॐ	ल	त	न	म	न	ध	न	जो	ॐ
रीं	सां	सां	-	ध	नि	ध	प	म	प	ध	म
ब	न	नौ	ॐ	छा	ॐ	व	रे	को	ले	ग	ई

सां	सां	सां	सां	-	सां	सां	रीं	सां	सां	सां
नि	सां	सां	नि	सां	-	सां	रीं	नि	सां	सां
सुं	द	र	स	रु	ऽ	प	उ	ज	ऽ	ग
प		०		२		०	३	३		४
नि	-	प	प	म	नि	नि	नि	ध	नि	नि
				ध						
ना	ऽ	ग	र	सु	र	त	च	तु	र	चि
५		०		२		०		३		४
रीं	सां	-	धम	प	ध	म	-	प	म	प
ऽ	रे	ऽ	(लिऽ	ख	ल	ई	ऽ।	मैं	ऽ	(जब
५		०	(	३		०		३		४

कौंसीकानडा-एकताल (विलंबित)

स्थायी.

सा सा	नि नि	सा म	म	म	म	-	ग	म	प	म	ग	-
कि	पा	डा	क	रे	डा	डा	जोगी	डा	डा	डा	डा	डा
ग	म	ग	री	सा	नि	ध	-	नि	सा	-	नि	सा
ह	म	प	र	तु	म	डा	गु	रु	डा	ह	म	म
सा	म	म	ग	म	ग	म	सा	री	-	ग	सा	निमा
म	-	ग	ग	म	ग	-	री	-	ग	सा	निमा	रे
से	डा	व	क	तु	मा	डा	डा	डा	डा	रे	डा	डा

अंतरा.

म	ग	म	नि	ध	ध	मधनिमां -	सां	सां	नि	सां	सां	निमां
अं	डा	ग	ब	मु	डा	डा	त	ल	गा	डा	ये	डा
नि	ध	नि	सां	मं	-	गं	भं	गं	रीं	सां	नि	ध
सीं	डा	गी	डा	डा	डा	डा	ब	जा	डा	डा	डा	डा
मधनिमां, निध	ध	मग	ग	म	नि	ध	नि	सां	-	सां	नि	सां
डा	त	डा	भो	डा	रे	डा	ही	डा	डा	आ	डा	डा

निध	नि	धुम	ग	म	ग	-	सा	-	ग	सा	निसा
(SS)	S	(येS)	S	ह	मा	S	S	S	S	रे	(SS)
3		४		x		०		२		०	

कौंसीकानडा-एकताल (विलंबित)

स्थायी.

सा	रीनि	सा	निसा	साम	म	-	ग	मप	प	-	म	ग
(राS)	S	(SS)	(जन)	के	S	S	(सिर)	ता	S	S	S	S
3		४		x		०		२		०		
म	ग	री	सा	नि	-	ध	नि	सा	-	निसा	साम	द्विमा
S	S	जा	S	रा	S	S	जा	S	S	(SS)	(सिरि)	
3		४		x		०		२		०		
म	-	ग	,प	प	-	म	ग	म	ग	री	सा	
रा	S	S	,म	चौ	S	S	S	S	S	द्र	S	।
3		४		x		०		२		०		

अंतरा.

म	ग	म	नि	ध	,ध	मधनिसां	-	सां	सां	सांसां	निनि	सां	निसां	सांसां
ज	ग	त	,उ	ध	SSS	S	र	न	न	जS	न	SS	प्रति	
3		४		x		०		२		२		०		

मं गं सां निध				मधनिसां निध				म	ग	ग	म	नि	सां
पा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽल	न	ऽ	तूं	ऽ	ही	आ		
३		४		५		०		०		०			
सां सां नि ध				नि ध	म	ग	गम	ग	री	सा			
ऽ	द	अं	त	स	ब	ही	क	हेऽ	बाँ	ऽ	द।		
३		४		५		०		२		०			

राग मेघमल्लार.

मल्लार एव मेघः किञ्चिन्मृदुनिप्रवेशतो भवति ।
ऋषभस्यांदोलनमत्यत्र भवेद्भेदधीजननहेतुः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ।

रिमौ रिसौ निपौ निसौ रिमौ रिपौ रिमौ रिसौ ।
ऋषभांदोलितो मेघः सपसंवादमंडितः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १७६ ॥

सुध मल्लारके मेलमें दोउ निखाद लगात ।
समवादीसंवादितें मेघमल्लार कहात ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ९३ ॥

मेघमल्लार काफी थाटांतून उत्पन्न होतो. ह्यांत धैवत व गांधार वर्ज्य आहेत. अर्थात् जाति औडुव—औडुव आहे, षड्ज् वादी व पंचम संवादी आहे. कोणी मध्यम संवादी मानितात. “ म रे प ” हा मल्लाररागाचा स्वरविन्यास ह्यांतहि प्रामुख्याने येतो. ऋषभावर होणारें आन्दोलन ह्या रागाची ओळखण्याची खूणच आहे. हें आन्दोलन ऋषभाला मध्यमाचा

म म म
कण लावीत एकसारखें तीन चार वेळ तो गाडल्यानें होतें. जसें रे, रे, रे. मध्यमावर अनेकदां मुक्काम होतो व त्यानें सारंग टळतो. हा राग मौसमी आहे, व तो वर्षाकालीं गातात. धैवत घेणाऱ्याहि कांहीं चीजा या रागाच्या उपलब्ध आहेत.

उठाव.

रेम, रेसा, निप, निसा, रे, मेरे, प, रेम, रे, सा ।

चलन.

^{म म} रे, ^प रेमेसा, ^{सा म} निप, सा, सारेरे, ^म रेमम, रे, सारेमेरे, सानिप,
^प मपसां, ^{रे} निप, मेरेसा । मप, निसां, सां, रेंसां,
^प निसारेंमरें, सां, ^{म म} निपे, सां, निप, रेरेमेरेसा ।

मधमलार—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

म	म	म	म	री	सा	सा	प	प	प
री	री	री	म	री	सा	सा	नि	नि	प
उ	मं	ड	ऽ	घु	मं	ड	मे	ऽ	घ
×		२			०		३		
प	नि	सा	री	सा	री	प	म	-	म
ग	ग	न	च	ढ	आ	ऽ	ये	ऽ	ऽ
×		२			०		३		
म	म	म	म	री	सा	सा	प	प	प
री	री	री	म	री	सा	सा	नि	नि	प
बि	बि	ध	ऽ	ब	र	न	स	क	ल
×		२			०		३		
म	प	सां	नि	प	निनि	प	म	-	सा
बि	बु	ध	म	न	हऽ	र	खा	ऽ	ये।
×		२			०		३		

अंतरा.

म	प	नि	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां
गु	नि	य	न	क	र	त	ता	ऽ	न
×		२			०		३		
नि	सां	रीं	रीं	सां	प	नि	प	प	प
ध	ग	ब	र	ज	स	ह	ग	म	क
×		२			०		३		

प	म	प	सां	-	सां	प	निनि	प	री	-	सा
	ब	र	खा	ऽ	रु		तऽ	सु	हा	ऽ	ये
×			२				०		३		
मं	रीं	-	मं	रीं	मं	रीं	सां	सां	प	नि	प
	गं	ऽ	भी	ऽ	र		सु	ध	मु	र	त।
×			२				०		३		

मेघमल्लार—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

म	री	म	री	म	री	सा	सा	प	नि	प	नि	प
	ते	ऽ	रो	ऽ	सु	म	र		न	क	रुं	
×			२			०			३			
नि	सा	री	-	री	री	प	प	-	री			
तूं	ऽ	ही	ऽ	जि	व	न	भ	ऽ	ल			
×		२			०		३					
नि	सा	री	म	री	सा	सा	प	नि	प	नि	प	
ते	ऽ	रो	ऽ	हि	ज	स	ग	ऽ	न			
×		२			०		३					
म	प	सां	-	-	निनि	प	म	री	सा			
	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ई	ऽ	ये।			
×		२			०		३					

अंतरा.

म	प	नि	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां
तुं _x	ऽ	ही _२	ऽ	न	य _०	न	जो _३	ऽ	त
नि	सां	रीं	-	रीं	सां	सां	प नि	प नि	प
तुं _x	ऽ	ही _२	ऽ	पो	ख _०	न	प्रा _३	ऽ	न
मं	मं	मं	मं	मं	सां	-	सां	नि	प
रीं	रीं	रीं	रीं	रीं	सां	-	सां	नि	प
क _x	हां	के _२	अ	ब	कौ _०	ऽ	न _३	को	ऽ
म	प	सां	-	-	प प निनि	प	म	री	सा
क _x	हा	ऽ _२	ऽ	ऽ	ऽऽ _०	ऽ	ई _३	ऽ	ये।

मेघमल्लार-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

म	म	म	म	म	सा	-	प नि	-	प
री	री	री	म	री	सा	-	नि	-	प
ग _x	र	ज _२	ऽ	घ	टा _०	ऽ	घ _३	ऽ	न
नि	-	री	-	री	सा म	प	म	प	मरी
सा	ऽ	रे _२	ऽ	री	का _०	ऽ	रे _३	ऽऽ	ऽ
का _x	हा	रे _२	ऽ	री	का _०	ऽ	ई _३	ऽ	ये।

री	सा	म	री	म	री	सा	सा	प	नि	-	प
नि	५	व	५	स	रु	त	आ	३	५	इ	
पा		२			०						
प	प	सां	-	सां	पध	पम	म	री	-	सा	
म	ल	हा	५	न	निनि	न	भा	३	५	ये।	
दु		२			म	न					
५					०						

अंतरा.

प	प	सां	नि	सां	नि	सां	-	सां	-	-
म	५	न	५	अं	घे	५	री	५	५	
३		२			०		३			
सां	सां	रीं	-	सां	सांसां	सांनि	मप	निसां	रीं	
नि	ज	री	५	ड	रीं	५	५	५	वे	
बि		२			रा	५	३			
५	प	सां	नि	सां	सां	सांनि	रीं	सां	-	
नि	दा	रं	गी	ले	मं	म	द	सा	५	
स		२			०		३			
५										
नि	सां	निसां	सां	नि	-	प	म	री	-	सा
सां	पि	या	घ	रे	५	ना	५	५	हिं।	
५		२			०			३		

मेघमल्लार—त्रिताल (मध्यलय)

(धैवत घेणारा एक प्रकार)

स्थायी.

सा सा सा री

च म क बि

री	पम	प	म	री - री री	म री - सा	सा सा सा -
ज	री	या	ऽ	ऽ ऽ ब र	ऽ स ऽ मे	ह र वा ऽ
x				२	०	३
प	नि	प	नि	सा सा नि सा	री म री सा	री नि सा -
मा	ती	जा	बा	ल म वा ऽ	ऽ ऽ प र	दे स वा ऽ
x				२	०	३
सा	नि	-	नि नि	- म प -	म री - सा	
ठौ	ऽ	र	ठौ	ऽ र ठौ ऽ	र ठौ ऽ र।	
x				२	०	

अंतरा.

म	म	म	नि	ध - नि नि	सां नि नि नि सां	- सां सां -
क	हा	क	रूं	ऽ ऽ मो हे	ग र ज बा	ऽ व री ऽ
x				२	०	३
ध	नि	ध	नि	सां सां सां -	सां सां (सां) -	ध नि प -
अ	जि	जो	ही	ऽ न पी ऽ	ह र वा ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
x				२	०	३
ध	नि	ध	प	म प म -	री - म -	प - - -
आ	ऽ	व	त	है ऽ म ग	वा ऽ ऽ ऽ	हे ऽ ऽ ऽ
x				२	०	३

ध	सां	ध	प	म	प	म	म	री	-	म	-	प	-	प	-
जा	ऽ	व	त	है	ऽ	म	न	वा	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	रो	ऽ
×				२				०				३			
सां	-	सां	नि	-	म	प	-	म	री	-	सा				
दौ	ऽ	र	दौ	ऽ	र	तो	ऽ	र	ओ	ऽ	र				
×				२				०							

मेघमल्लार-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

प	ध	नि	नि	प	सां	नि	सां	सां	-	रीं	रीं	नि	सां
धू	ऽ	म	आ	ऽ	ये	ऽ	ब	द	ऽ	रि			
३			×		२			०					
प	ध	नि	नि	प	म	री	री	म	री	म	प	म	प
या	ऽ	भ	रे	ऽ	अ	त	सु	रै	ऽ				
३			×		२			०					
म	म	प	नि	प	म	री	री	म	री	म	री	सा	
या	प्या	ला	भ	र	भ	र	पि	वा	ऽ	वे			
३			×		२			०					

अंतरा.

म	म	प	नि	नि	सां	सां	सां	-	सां
ए	क	तो	भ	र	पि	च	का	ऽ	रि
×		२			०		३		

सां	नि	सां	रीं	रीं	सां	सां	नि	सां	प	नि	ध	नि	प
दु	जे	ब	र	से	मे	ऽ	हा	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ
मं	रीं	मं	रीं	मं	रीं	सां	रीं	सां	रीं	नि	सां	सां	सां
आ	प	छि	का	वे	मो	हे	छि	का	वे	छि	का	वे	वे
सां	नि	सां	सां	-	सां	प	नि	प	प	नि	ध	म	प
ग	र	वा	ऽ	ल	गा	वे ।	धू	ऽ	म	धू	ऽ	म	म
×		२			०		३			३			

मेघमल्लार-झपताल (मध्यलय)

स्थायी

							री	नि	सा
							म	ग	न
							३		
म	री	री	री	-	री	म	री	सा	-
र	हो	रे	दा	ऽ	लि	द्र	भ	ये	ऽ
सा	सा	म	री	म	सा	-	नि	-	प
को	ऽ	न	ऽ	ह	रे	ऽ	न	ऽ	र
प	प	नि	सा	-	री	री	सा	-	सा
म	ऽ	द्र	के	ऽ	म	न	में	ऽ	त
३		२			०		३		

प	प	प	पध	प	प	री	नि	सा
म	प	सां	- निनि	प	म	री	नि	सा
जो	ऽ	लो	धऽ	रे	ऽ।	म	ग	न
x		२		०		३		

अंतरा.

सां	सां	सां	सां	-	प	ध	म	
नि	नि	सां	सां	-	नि	नि	प	री -
का	ऽ	भ	यो	ऽ	जो	ऽ	भ	यो ऽ
x		२			०		३	
प	प	नि	सां	रीं	रीं	-	सां	- -
म	प	नि	सां	रीं	रीं	-	सां	- -
छ	त्र	प	ति	न	रे	ऽ	स	ऽ ऽ
x		२			०		३	
सां	सां	सां	सां	-	सां	सां	सां	सां
नि	नि	सां	सां	-	नि	नि	सां	सां सां
रा	ऽ	म	रा	ऽ	जा	ऽ	को	प र
x		२			०		३	
सां	सां	सां	सां	रीं	रीं	सां	सां	नि -
नि	नि	सां	मं	मं	रीं	सां	सां	नि -
ता	ऽ	प	पा	इ	य	त	है	ऽ ऽ
x		२			०		३	
प	मप	रीं	सां	-	प	प	प	नि म प
नि	(पऽ)	त	सा	ऽ	ग	र	को	ऽ न
x		२			०		३	
प	प	सां	-	पध	प	म	री	नि सा
म	प	सां	-	निनि	प	म	री	नि सा
ता	ऽ	रो	ऽ	तऽ	रे	ऽ।	म	ग न
x		२			०		३	

मेघमल्लार-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सां	सां	सां	प	प	री	म	म	म
सां	सां	सां	नि	प	री	री	री	री
प्र	ब	ल	द	ल	सा	ज	ज	ग
×		२			०	३		
म	म	म	री	-	सा	री	सा	सा
री	५	म	जा	५	भू	५	प	र
×		२			०	३		
री	नि	सा	म	प	नि	प	नि	सां
उ	मं	ड	घ	न	घो	५	र	ल
×		२			०	३		
मं	मं	रीं	सां	-	प	प	नि	म
रीं	५	द्र	ला	५	नि	५	है	५
×		२			०	३		

अंतरा.

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां
म	र	नि	त	मु	स	ल	धा	ऽ	र
ब		स			०				
×		मं					प		
सां	सां	रीं	मं	रीं	सां	सां	नि	-	प
नि	ऽ	त	ऽ	पा	हा	ड	छा	ऽ	र
हो		२			०		३		
×	मं	मं	मं						
रीं	रीं	रीं	रीं	मं	रीं	सां	रीं	सां	-
के	ऽ	ण	क	र	ध	र	गि	रि	ऽ
×		२			०		३		

मं रीं व x	मं र	रीं ब २	सां चा	- ऽ	प नि यो ०	प ऽ	नि है ३	म ऽ	प ऽ।
---------------------	---------	---------------	-----------	--------	--------------------	--------	---------------	--------	---------

संचारी.

म बुं x	- ऽ	म दु २	म न	म ध	प र ०	प नि	नि ध ३	प री	- ऽ
प म स x	प ब	सां ही २	- ऽ	सां कि	नि इ ०	प च्छा	प क ३	म री री	- ऽ
म री प x	म री सु	री पौं २	म ऽ	म छि	री जि ०	री य	सा जौं ३	- ऽ	सा त
म अ x	म धि	म क २	प सु	प ख	नि पा ०	- ऽ	नि यो ३	म है	प ऽ।

आभोग.

म ह x	प र	नि ना २	प ऽ	नि थ	सां स्तु ०	सां त	सां क ३	सां रे	- ऽ
-------------	--------	---------------	--------	---------	------------------	----------	---------------	-----------	--------

सां	नि	सां	सां	-	-	सां	नि	सां	रीं	रीं	-
अ	प	नी	५	५	५	कौ	५	न	ग	त	
मं ^x	रीं	रीं	मं ^२	मं	मं	रीं	सां	रीं	सां	-	
सु	र	प	त	अ	चि	न	भ	यो	५		
सां ^x	नि	सां	रीं	सां	रीं	सां	-	नि	म	प	
स	र	नि	वा	५	यो	५	है	५	५।		
५		२			०		३				

मेघमल्लार—सूलताल (मध्यलय)

स्थायी.

सां	नि	-	सां	-	सां	रीं	सां	-	प	नि	-	प
रा	५	धे	५	आ	ये	५	मे	५	घ			
५		०		२		३						
प	म	प	सां	-	प	नि	प	म	प	म	-	री
ह	रि	को	५	घ	र	ले	जा	५	ये			
५		०		२		३						
म	री	प	प	म	री	म	री	-	सा			
घ	टा	भ	इ	घ	न	५	घो	५	र			
५		०		२		३						

सां नि ग x	सां नि र	सां जं ०	सां त	सां रीं थ २	रीं र	रीं र ३	सां र	नि सां र ०	नि र।
---------------------	----------------	----------------	----------	----------------------	----------	---------------	----------	---------------------	----------

अंतरा.

प म छू x	प ऽ	नि टे ०	- ऽ	सां प २	सां व	नि न ३	सां भु ०	सां व ०	सां न
सां नि दू x	सां ऽ	रीं र ०	रीं र	सां ह्यो २	- ऽ	नि ऽ ३	सां ग ०	नि व ०	नि न
मं रीं क x	मं रीं रि	मं रीं ये ०	मं ऽ	रीं च २	रीं प	- ऽ ३	सां ला ०	- ऽ ०	सां ई
सां नि सो x	सां ऽ	रीं च ०	रीं प	सां ला २	- ऽ	नि सां ई ३	रीं सां ऽ	नि घ ०	नि र।

मेघमल्लार-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

नि सां आ x	- ऽ	नि ये ०	सां घे ०	- ऽ २	सां र	नि घो ०	सां रीं ऽ	प सां रे ३	नि का ४	- ऽ	प रे
---------------------	--------	---------------	----------------	-------------	----------	---------------	-----------------	---------------------	---------------	--------	---------

प	म	-	प	प	सां	सां	प	ध	नि	नि	प	प	म	री
बा	५		द	र	च	हुं	ओ	५			र	प्या	५	रे
म	म		०		री	री	म				३		५	
री	री	-	म	म	म	म	री	-			सा	री	सा	-
कू	५		५	क	त	म	यू	५			र	ग	ण	५
नि			०	सा	म		म				३		५	
सा	-		री	री	री	प	री	-			म	री	-	सा
जो	५		र	हि	ज	त	ला	५			५	त	५	है।
म			०		२		०				३		५	
सां	नि	सां												
आ	५													
५														

अंतरा.

प	म	प	नि	सां	-	सां	नि	-	सां	सां	-	सां
द	म	के	आ	५	ज	दा	५	म	नी	५	म	
मं	मं	०		२		०		३		५		
रीं	रीं	मं	रीं	-	सां	री	री	म	री	सा	-	
रो	५	रे	अं	५	ग	भा	५	५	म	नी	५	
नि		०		२		०		३		५		
सां	-	सां	रीं	-	पं	मंरी	मं	रीं	रीं	सां	-	
डा	५	रे	डा	५	रे	को	५	य	लि	या	५	
५		०		२		०		३		५		
नि		सा	री	म	री	प	री	-	म	री	सा	-
५												
चा	५	त	क	हु	ल	सा	५	५	त	है	५	
५		०				०		३		५		

संचारी.

नि	सा	-	सां	सां	सां	नि	-	सां	नि	-	सां	सां	प	-
आ	५	५	ई	अं	धी	५	या	५	रि	घ	टा	५		
प	म	-	प	प	सां	-	सां	सां	सां	सां	सां	सां	प	-
ठा	५	५	डी	स	ब	५	दे	५	स	छ	टा	५		
म	री	री	म	री	म	प	-	री	री	म	री	सा	री	सा
नै	५	५	५	न	न	५	नी	५	र	ना	रि	न		
सा	सा	सा	-	री	प	री	मरी	म	री	सा	-			
अ	त	ही	५	ब	र	सा	५	५	५	त	है	५		

आभोग.

प	म	प	-	सां	सां	नि	सां	-	नि	सां	-	सां
क	हे	५	५	यूं	५	बि	यो	५	गि	ना	५	र
नि	सां	रीं	मं	रीं	सां	-	सां	-	सां	नि	नि	प
आ	वे	५	५	न	हीं	५	हू	५	ख	पा	५	र
नि	सां	रीं	-	सां	सां	पं	मं	रीं	-	रीं	सां	-
क	हे	५	५	ह	री	५	व	ल	५	भ	ये	५

नि	सा	री	-	म	प	री	-	म	री	सा	-
सा	री	री	-	री	प	री	-	म	री	सा	-
जि	य	रा	५	त	र	सा	५	५	त	है	५।
x		०		२		०		३		४	

मेघमल्लार-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

म	री	-	री	री	-	प	म	री	-	सा	री
ला	५	गी	मा	५	न	क	र	५	न	को	५
x		०		२		०		३		४	
सा	सा	-	सा	री	-	सा	म	री	म	री	सा
ते	रे	५	तो	५	५	आ	५	५	ये	है	५
x		०		२		०		३		४	
म	-	म	प	-	प	प	म	नि	नि	प	मप
ला	५	ल	ली	५	जि	ये	५	५	म	ना	५५
x		०		२		०		३		४	
सां	-	नि	प	म	री	म	री	-	सा	निसा	सा
५	५	५	५	५	५	५	५	५	ये	५५	तुं
x		०		२		०		३		४	

अंतरा.

प	प	-	प	प	सां	-	नि	सां	-	सां
म	ढ	५	दे	खो	च	५	त्र	सा	५	रि
सां	सां	-	मं	रीं	सां	-	प	नि	-	प
उ	मं	५	गी	घ	टा	५	५	का	५	री
म	प	-	मं	रीं	मं	रीं	सां	नि	सां	सां
वे	५	५	दे	खो	रा	५	त	ला	५	गी
सां	रीं	-	प	नि	प	म	प	म	री	सा
री	बा	५	द	र	ह	रे	५	५	५	तूं

मेघमल्लार-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

सां	नि	सां	सां	-	सां	सां	सां	रीं	रीं	सां	-	प	नि	प
आ	५	यो	५	अ	ब	ब	र	खा	५	रु	त			
×		०		२		०		३		४				
प						प				म				
म	-	प	प	सां	-	नि	-	प	प	-	री			
ओ	५	त्क	ट	कां	५	ती	५	न	रे	५	स			
×		०		२		०		३		४				

म	री	म	नि	-	प	प	री	री	म	री	-	सा
अं	५	भो	५	ध	र	न	ग	प्र	म	५	त	
नि												
सा	-	री	-	सा	सा	प	मरी	म	री	सा	सा	
का	५	मी	५	ज	न	स	ब५	ह	र	ख	त।	
५		०		२		०		३		४		

अंतरा.

प	म	प	नि	सां	सां	-	मां	नि	सां	रीं	नीं	सां	सां
च	म	क	त	दा	५	म	नी	प	ता	५	क		
नि													
सां	-	रीं	-	सां	सां	रीं	सां	नि	-	प	प		
डं	५	का	५	भ	यो	अ	श	नी	५	र	व		
५		०		२		०		३		४			
मं	मं	मं	मं	मं	रीं	मं	रीं	रीं	सां	सां	सां	सां	
रीं	रीं	रीं	रीं	रीं	मं	रीं	रीं	सां	नि	सां	सां		
के	५	ण	ब	र	न	म	धु	र	मे	५	घ		
५		०		२		०		३		४			
सां	नि	सां	रीं	रीं	सां	-	रीं	सां	-	नि	-	म	प
ग	ग	न	भ	न्यो	५	स	मं	५	ता	५	त।		
५		०		२		०		३		४			

संचारी.

नि	सा	सां	नि	नि	-	नि	नि	प	म	म	प	प
ब	हू	५	धा	५	र	घ	न	ब	र	स	त	
५		०		२		०		३		४		

राग सूरमल्लार



मल्लारो यः सूरपूर्वो निधुक्तो
द्वावत्राप्याच्छादितौ तौ धगौ स्तः ।
षड्जो वादी मध्यमः संप्रवादी
रागाभिज्ञैर्गीयते प्रावृषीह ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ९५ ॥

रिसौ रिमौ पमौ निधौ पनी सनी पमौ रिसौ ।
सूरमल्लारको मांशः सारंगंगेन मंडितः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १७३ ॥

सारंगकी छब देत है गावत सुरमल्लार ।

रागचंद्रिकासार ॥ ९४ ॥

सूरमल्लार हा एक काफी थाटांतून उत्पन्न झालेला मल्लाराचा प्रकार आहे. हा राग भक्त सूरदासांनी निर्माण केला असे म्हणतात. ह्यांत धैवत व गांधार मुळीच वर्ज्य आहेत. मध्यम वादी व षड्ज संवादी आहे. कोणी षड्ज वादी व मध्यम संवादी मानतात. मध्यमावर न्यास असतो. हा मौसमी राग आहे. वर्षाऋतूंत हा गातात. धैवत व गांधार हे स्वर ह्या रागांत नसल्यामुळे सारंग बराच पुढे येतो. म्हणून तो टाळण्याकरितां धैवताचा किंचित् स्पर्श ह्या रागांत संमत आहे. हा मल्लार असल्यामुळे “ मरे ” ही मीड ह्यांत वारंवार येणारच. पण तीमुळे सोरट रागाचा किंचित् भास होतो.

तो “ निप ” व “ रिप ” या स्वरसंगतीमुळे टळतो. “ निमप निधप ” ह्या स्वरविन्यासानेही सूरमल्लार प्रगट होतो. ह्या रागांतील मध्यमान्त स्थाय मल्लाराचे सूचक आहेत. कोणी ह्यांत थोडा कोमल गांधार घेतात. मध्यमादि (मधुमाद) सारंग व मल्लार यांच्या मिश्रणाने सूरमल्लार होतो. असे जाणत्यांचे मत आहे.

उठाव.

निसा, रेम, पम, निधप, निसां, निप, मेरे, सा ।

चलन

सा, निसा, रेम, मप, निधप, मपमेरे, सा, निनिपमेरे, सा,
 सा, रेम, मपनिधप, निसां, रेंसां, नि, मनिधप,
 मपनि, पमेरे, सा । ममप, नि, निसां, रें, नि
 निमप, धप, मेरे, सांनि, मपनिधपं,
 धप, मेरे, रेंनि, मपनिधप,
 मेरे, प, मेरे, सा ।

कोमल गांधार घेणारा प्रकार.

रे मा
 गरेमप, निधनिमप, प, मप, निसां, रेंसां, निधनिप, मेरे,
 म सा
 सारे, मपगुम, रेसा ।

सूरमल्लार—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

प	सां	-	प	नि	-	प	प	म	प	नि	नि	प
	गा	५		वो	५	गु	नी	५		स	क	ल
×				२			०			३		
प	म		म	नि	नि	प	म	री	सा	-	सा	
रा	५		२	ग	नि	सु	र	म	ला	५	र	
×				२			०		३			
सा	नि	सा	म	री	म	री	सा	-	सा	-	सा	
	सा	५	२	रं	५	ग	के	५	सौं	५	ग	
×				२			०		३			
सां	नि	सां	मं	रीं	मं	रीं	सां	सां	प	नि	म	प
मे	५		२	ल	न	क	र	म	ला	५	र।	
×				२			०		३			

अंतरा.

म	प	नि	सां	सां	सां	-	नि	सां	सां
म	५	ध्य	म	क	रो	५	बा	५	दि
×		२			०		३		
नि	सां	सां	रीं	रीं	सां	रीं	सां	प	नि
ख	र	ज	सु	र	स	म	वा	५	दि
×		२			०		३		

प	पम	नि	-	प	म	री	री	सा	सा
ब	रऽ	खा	ऽ	स	मे	ऽ	च	त	र
×		२			०		३		
सां		मं					प		
नि	सां	रीं	मं	रीं	सां	सां	नि	म	प
सं	ऽ	स्था	ऽ	न	ख	र	हा	ऽ	र।
×		२			०		३		

सूरमल्लार—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प प

ब र

प	-	नि	प	प	-	री	सा	नि	म	सा	-	री	म	-	-	-	-
खा	ऽ	रु	त	बै	ऽ	रि	ह	मा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२					
प				प								सां					
म	-	प	प	नि	प	नि	नि	सां	-	सां	सां	नि	नि	सां	सां		
मा	ऽ	स	अ	खा	ऽ	ड	घ	टा	ऽ	घ	न	ग	र	ज	त		
०				३				×				२					
सां				मं				नि									
नि	नि	सां	सां	रीं	मं	रीं	सां	सां	-	(सां)	-	नि	-	प	म		
पि	यु	प	र	दे	ऽ	स	ह	मा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ब	र		
०				३				×				२					

अंतरा.

प म - प प	प नि प नि नि	सां - सां -	सां नि सां सां सां
दा ऽ द र	मो ऽ र प	पै ऽ या ऽ	चा ऽ त्र क
प ध नि नि प म	प म री सा	नि ^x म सा - री म	- - - -
पि यु पि यु	क र त पु	का ऽ रे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
प म म प प	प नि प नि नि	सां सां सां सां	नि नि सां सां
अ ब न स	हु त स खि	च तु र बि	र ह दु ख
सां नि नि सां सां	मं रीं मं रीं सां	नि ^x सां - (सां) -	नि - प म
नि क स त	प्रा ऽ न ह	मा ऽ रे ऽ	ऽ ऽ। ब र

सूरमल्लार-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प
म म प
(
ब र ऽ
)

प ध नि नि प म	म प म री सा	नि म सा - री म	- - - -
स न के ऽ	बा ऽ द र	का ऽ रे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

री	प	सां	सां	सां	सां	रीं	सां
म म म प	नि प नि नि	सां सां सां -	सां रीं सां -				
उं म ड घ	टा ऽ घ न	बि ज री ऽ	च म के ऽ				
सां सां रीं	रीं रीं सां सां	नि सां - (सां) -	नि - म म				
नि सां मं भं	रीं रीं सां सां	सां - (सां) -	नि - म म				
दि न त र	व र ह रि	या ऽ रे ऽ	ऽ ऽ। ब र				

अंतरा.

प	प	सां	सां	सां	नि सां सां सां
म - म प	नि प नि नि	सां सां सां -	नि सां सां सां		
नं ऽ द कुं	व र फ र	ज न वा ऽ	ऽ ऽ स खि		
प ध	नि म	सा - री म	- - - -		
नि नि प म	री सा नि सा	सा - री म	- - - -		
ज म ना ऽ	ट ट भ्रि ग	वा ऽ रे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		
प	प	सां	सां	सां	रीं रीं सां सां
म - म प	नि प नि -	सां - सां सां	रीं रीं सां सां		
मो ऽ र ध	रे ऽ सिं ऽ	गा ऽ र सु	घ र अ त		
नि सां	रीं - सां सां	नि सां - (सां) -	नि - म म		
सां - मं मं	रीं - सां सां	सां - (सां) -	नि - म म		
रा ऽ ग म	ला ऽ र उ	चा ऽ रे ऽ	ऽ ऽ। ब र		

सूरमहार—त्रिताल (मध्यलय) ठुमरी

स्थायी.

				प
				म प
				अ व
प ध	नि नि प म	री - सा सा	म	प
घ ट ही ऽ	दे ऽ ख ड	री ऽः ऽः ऽः	प - म मप	मप
प ध नि	सां	सां	प - म मप	मप
नि नि म प	नि - सां -	- - नि सां	सां	सां
घ ट आ ऽ	ली ऽ री ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	रीं रीं सां सां	सां
सां नि प म	री म री म	प म री सा	क र प कऽ	कऽ
र त मो हे	का ऽ न्हा ऽ	ऽ ऽ ग हे	री सा म मप	मप
			ल ई। अ वऽ	वऽ

अंतरा.

म म म म	प प प प	प	नि प नि नि	सां - सां सां
ज ल थ ल	अ ग म भ	व न ज ल	कुं ऽ ड ल	
प	नि प नि नि	सां	नि सां रीं सां	नि - प प
दि ऽ ट न	आ ऽ व त	जा ऽ त स	खी ऽ मो हे	

म री म री म	प - प प	म प प नि प नि	सां सां सां सां
आ ऽ न अ	चा ऽ न क	सु घ र छै	ऽ ल मो री
सां रीं रीं - सां	रीं रीं सां सां	प ध म नि नि प नि	नि म म प
बै यां ऽ प	क र क र	की ऽ नी सै	ऽ ल। अ ब

सूरमल्लार—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प नि नि प म प	म री सारी निसा	सा सां - (सां) -	नि - म प
बा द वाँ ऽ ब	र स न ऽ को ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ ऽ
म प प म नि प म	म री सा सा	सा सा नि सा सा री	री री सा सा
न नि ऽ न ऽ नि ऽ	बूँ ऽ द न	ग र ज ग	र ज अ ब
नि सा सा म म	- प प -	म प प रीं सां -	नि नि नि म प
च हूं ऽ ओ	ऽ र तें ऽ	बि ज री ऽ	च म क ऽ त।

अंतरा.

प म म प नि	- प नि नि	सां - सां -	नि सां सां -
कुं व र श्या	ऽ म न हि	आ ऽ ये ऽ	स ज नी ऽ

प नि - प नि	सां सां सां सां	निसां रीं रीं सां	सां (सां) नि -
कौ ऽ न सो	त न स न	ने ऽ ऽ हा ल	गा ऽ ये ऽ
प प		सां	प प
म प रीं रीं	सां रीं सां सां	नि सां रीं सां	नि प म प
ए क घ री	प ल छि न	क ल न प	र त अ ब।
०	३	×	२

सूरमल्लार-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प
म
घो

प प	नि		
प नि - नि	सां - सां सां	- रीं सां नि	प म री सा
र घो ऽ र	घो ऽ र घो	ऽ र ब र	स त मे ऽ
३	×	२	०
सा			
नि सा री म	प नि सां रीं	सां नि म प	(नि) - प म
हु र वा ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	बी ऽ ज रि
३	×	२	०
सा			सा म
री सा नि सा	(सा) नि प नि	प नि सा सा	नि सा री म
या ऽ च म	के ऽ अ न	त गा ऽ म	जि न जा ऽ
३	×	२	०

म री म प -	(नि) - प म	प म मप निसां	सां प रीं नि - म
ओ मे रे ऽ ३	पी ऽ य र ५	वा ऽ ऽ ऽ ऽ २	हा ऽ घो ०

अंतरा.

प म म प प	प नि प नि -	सां सां - सां	सां नि सां सां -
म ध वा पि ५	ला ऽ वो ऽ २	ग रे ऽ ल ०	गा ऽ वो ऽ ३
सां नि सां रीं रीं	रीं सां सां नि सां रीं रीं	सां नि म प	प ध नि नि प म
भ र भ र ५	श र वा ऽ २	ऽ ऽ ऽ ऽ ०	ऽ ऽ ऽ ऽ ३
री सा प नि ऽ ऽ, अ न ५	प नि सा सा त गा ऽ म २	इत्यादि स्थायी प्रमाणें	

सूरमल्लार-तीव्रा (मध्यलय)

स्थायी.

सा
नि सा
दा नि
३

री - री	म री -	म री प	म री सा	सा सा	री प
तो ऽ म्ता ५	तो ऽ २	म्ता ना ३	ना ना ना ५	ता ना २	दे रे ३

प म री	री म -	री सा	री - सा	नि सा	म री
ना S S x	तो S २	म्ता S ३	दा S x	नि ता ना	दे रे ३
प म प -	प -	प म	नि प -	प म	री म
ना S S x	दा S २	नी S ३	य ला S x	ली S २	या S ३
प म री	री म	प निप	नि सा नि	प म	री सा
S S S x	ली S २	य S S ३	ला S S x	य S २	ला ले ३
री नि सा	री -	री प	म री सा		
तो S म्ता x	तो S २	म्ता ना ३	ना ना ना x		

अंतरा.

प म -	म प	प ध नि नि प	सां नि -	सां नि	सां सां -
दी S २	म्दा रा ३	दा रा S x	दी S २	म्दा रा ३	दा रा S x
सां -सां	सां सां	रीं रीं -	सां -	सां -	प नि प नि
दी S म २	अ त ३	त दी S x	म्दी S २	म्दी S ३	म्तो S म्त् x
सां सां	रीं -	सां - -	री म री	म म	प म प -
ना दे २	ना S ३	S S S x	ता ना	दे रे ३	ना S S x

म	प	-	प	-	प	नि	प	-	प	म	री	म	प	म	-
दा	२	५	नी	३	य	ला	५	ली	२	या	३	५	५	५	५
						×							×		
म	री	म	प	नि	प	नि	सां	-	सां	-	सां	नि	सा	नि	सां
ली	२	५	ये	३	५	ला	५	५	५	५	बे	३	ला	५	५
						×							×		
प	म	री	सा	री	-	सा	री	-	री	प	री	री	सा	री	री
ला	२	५	ले	तो	५	मता	तो	५	मता	ना	ना	ना	ना	ना	ना
						×							×		

सुरमल्लार—आडाचौताल (विलंबित)

स्थायी.

प	सां	-	निसां	सां(सां)	नि	-	मनि	नि	प	मपनि	प	म	री	सा
आ	५	५	५	५	५	५	५	ये	५	५	ग	र	ज	त
	×		२		०		३		०				०	
प	म	प	मप	निनि	पमप	म	री	सा	निसा	रीमपानि	निमप	मपनि	सांरी	मंरी
बा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	२					०	३		०				०	
सां	रीं	-	सां	सां(सां)	नि	निम	नि	नि	प	मपनि	प	म	री	सा
हा	५	५	५	५	५	५	५	ये	५	५	ग	र	ज	त
	२				०		३		०				०	

अंतरा.

प	प	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां	सां
म	प	निप, नि	सां सां	- नि	सां, निसां	सां, सां	रीं	-	सां
रु	५	मे ५, झू	५ म	५ च	हं, ५ ५	ओ, र ५	ते ५	५	५
सां सां			म			मा	म		
निनि	सां	- नि	प पम	नि प	म री	सा निमा	रीमपनिनि	निमप	
बर	से	५ ५	स दा ५	५ ५	रौ ५	ग अत	ही ५ ५ ५ ५	५ ५ ५ ५	
प			सां				प		
मपनिसांरीं	मं	रीं सांसां	रीं -	सां सां (सां)	नि -म	नि नि	प	मपनि	
५ ५ ५ ५ ५	५	५ सुख	पा ५	५ ५ ५	५ ५ ५	५ ये	५	५ ५ ५	
प	म	री सा							
ग	र	ज त।							

सूरमल्हार-धमार (विलंबित)

स्थायी.

म	री	म	प	नि	ध	नि	प	-	धप	धम	म	म	री
हु	र	सों	५	इ	त	५	ना	५	५ ५	५ ५	क	ह्यो	५
री													
ग	ग	सा	-	म	री	री	म	प	धप	धम	म	रे	-
जा	५	ए	५	बी	५	र	पा	५	तं ५	ग ५	वा	५	५।

अंतरा.

म म प नि नि	नि सां	सां सां -	मं रीं मं रीं -
इ त ऽ ब र x	से २ ऽ	घ न ऽ ०	श्या ऽ म ऽ ३
सां नि सां नि प	म प	नि सां रीं	रीं - मं -
ब द रि या ऽ x	इ २ त	बि र ह ०	न ऽ को ऽ ३
रीं - सां नि प	प म प	धप धम री ०	म री म प
ने ऽ न छ र x	ला २ ऽ	गे ऽ ऽ ऽ ०	हु र सों ऽ। ३

राग रामदासी मल्लार.



हरप्रियाहये मेले जातो रागः मुनामकः ।
रामदासीति विख्यातः संपूर्णो लोकविश्रुतः ॥ १९ ॥
मध्यमः संमतो वादी संवादी षड्ज ईरितः ।
गानं तस्य समीचीनं वर्षाकाले मुनिश्रितम् ॥ १०० ॥
गांधारस्तीव्र आरोहेऽवरोहे कोमलाभिधः ।
अप्रसिद्धमिदं रूपं नूनं रक्तिप्रदायकम् ॥ १०१ ॥
द्विगांधारप्रयोगान्स्यादन्यमल्लारभित्स्फुट्य ।
रिमयोर्निपयोश्चापि संगतिर्भूरिरक्तिदा ॥ १०२ ॥
सहानागौडसंयोगाद्रूपमेतद्विनिर्मितम् ।
धीमता रामदासेनेत्याहुः केचिद्विपश्चितः ॥ १०३ ॥
मतान्तरे तु मृदुग एक एवाऽत्र संमतः ।
लक्ष्यमार्गमनुलंघ्य कुर्यात्तत्र स्वनिर्णयम् ॥ १०४ ॥

श्रीमल्लः स्वसंगीति द्वि० (पृ. १५७)

रामदासी हा एक मल्लाराचा प्रकार काफी थाटांतून उत्पन्न होतो. हा रामदास नायकांनी निर्माण केला असे म्हणतात. यांत वादी स्वर मध्यम व संवादी षड्ज आहे. हा सुद्धा वर्षाकाली गातात. यांत दोन्ही गांधार लागतात. आरोहांत तीव्र गांधार व अवरोहांत कोमल गांधार लागतो. हें एक अप्रसिद्ध व चित्ताकर्षक रागरूप आहे. दोन गांधार स्पष्ट लागत असल्यामुळे इतर मल्लार प्रकार यापासून भिन्न होतात. यांतहि “ मरी ”

व “ रीप ” संगति रक्तिदायक आहेत. यांत शहाना, व गौड या रागांचा संयोग आहे. कांहीं लोक हा नुसत्या कोमल गांधारानें गातात.

उठाव.

म म

पग॒मरेसा, रे॒न॒सा, सा॒रग, म, प, म॒प, ग॒ग॒मरे, प॒मा॒न॒प,

म प

ग॒मरेसा । प॒ध॒नि, सां, सां, सा॒रेंसां, नि॒सां, नि॒प,

प म म

म, म, प॒ग, म, प॒म, नि॒प, ग॒मरेसा ।

ध	नि	सां	नि	सां	सां	-	नि	सां	सां	रीं	सां	-	सां
प	ध	नि	सां	नि	सां	सां	-	सां	सां	रीं	सां	-	रीं
ज	ब	हुं	५	नि	क	सूं	५	प	नी	५	यां	५	भ
रीं	नि	सां	प	नि	प	म	-	म	-	प	प	ग	म
र	न	को	५	बै	५	५	यां	५	प	क	र	५	झ
प	ग	म	म	प	प	म	नि	प	-	प	ग	ग	म
का	झो	५	री	५	५	५	५	५	५	ते	५	रो	५

नि	नि नि	वि नि ध		नि		ध	
सासा	धध	धध निप	- प प प	धनिसां , धप	मगमग	प प	मगमग -
(उ३)	(मौरी)	(सुर) St	(आ) जहु	(ना) SS , दS	(ई) SSS	(रेद)	(ई) SSS S
		m री प	p सां -	सांध निप	m म	m री प	
Sको	यली	या S	कू S	कS S र	प पि	हा S	
(उ३)	(र)	(र)	(x)	(०)	(२)	(०)	(०)

सां (सां)	सां	नि	प	नि	ध	नि	ध	नि	सा	सा ,री
क र	ही	SS	पु	का	S	S	S	SSS	र । S	स
३	४	()	×		०		२	()	०	()

रामदासीमल्लार-धमार (विलंबित)

स्थायी.

प
नि प
ऐ सो

म म	ग ग म री सा	-	सा	री नि	-	सा - सा री
खे S S ल न	S	ब	दौं S S	S S	गी अ	
×	२	०	३			
म	ग म - म -	ग म	प म प	प ग म -		
नो S S खे S	S	S	हो S	री S S S		
×	२	०	३			
प - म नि प	नि	म	प म ग	म म नि प		
के S S S S	S	S	ला S S	S र। ऐ सो		
×	२	०	३			

अंतरा.

ध	सां	प - ध नि -	सां नि	सां - रीं	नि सां सां -
बा S S हां S	S	म	रो S	रे	दू S ई S
×	२	०			३

प	नि	प	-	प	-	म	प	प	ग	ग	म	-	-	-
	औ	र	ऽ	तो	ऽ	र	त	ग	रे	ऽ	को	ऽ	ऽ	ऽ
x						२		०			३			
म	नि	म	-	प	-	ग	ग	म	-	-	प	म	नि	प
	हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऐ	सो
x						२		०			३			

—

राग नटमल्लार.



काफीमेलसमुत्पन्नो नटमल्लार ईरितः ।
आरोहे चावरोहेऽपि संपूर्णस्तद्विदां मते ॥ १०५ ॥
मध्यमः कीर्तितो वादी संवादी षड्ज ईरितः ।
गानं चास्य समीचीनं वर्षाकाले मुनिश्चितम् ॥ १०६ ॥
नटमल्लारसंयोगाद्रागोऽयं निर्मितो बुधैः ।
पूर्वांगे स्यान्नटल्लया मल्लारस्योत्तरांगके ॥ १०७ ॥
रिमयो रिपयोश्चात्र संगतिः सुखदायिनी ।
ईषन्निकोमलस्पर्शः प्रतिलोमेऽत्र क्षम्यते ॥ १०८ ॥
मतान्तरे द्विगांधारो गीयते लक्ष्यवर्त्मानि ।
नित्यं लक्ष्यमनुलुंघ्य कुर्यात्तत्र स्ववर्तनम् ॥ १०९ ॥

श्रीमल्लक्ष्यसंगतिः । द्वि० । (पृ. १५७-८)

नटमल्लार हा काफी थाटांतून उत्पन्न होतो. हा संपूर्ण आहे. यांत मध्यम वादी व षड्ज संवादी आहे. हा मल्लाराचा एक प्रकार आहे, व तो वर्षाकाळीं गाडला जातो. नट व मल्लार यांच्या संयोगानें हा राग निर्माण झालेला आहे. पूर्वांगांत नट व उत्तरांगांत मल्लार आहे. “ मरी ” व “ रीप ” या स्वरसंगति यांत रक्तिवर्धक आहेत. यांत तीव्र गांधारही कोठें कोठें घेतलेला आढळतो. कांहीं गीतें तर नुमता तीव्र गांधार घेणारी अशीं मिळतात व तो प्रकार बिलावल थाटांत कोणी मानतात.

उठाव.

ग रे
सा, रेग, ग, (म)रे, मरे, सा, नि॒सा, रेसा, नि॒सा, रेग,
मप, (प)मग, मरे, रे, मरे नि॒सा ।

नटमल्लार—त्रिताल (विलंबित)

स्थायी.

सा
पि

ग	री	ग	ग	पपमगमरी	ग	म	री	री	म	री	सा	नि	सा	सा	मा	री	रीग	सा	निमा
यु	३	३	३	ली	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
ग	म	री	ग	गमपधधपमपमग	पपमगमरी	री	म	री	नि	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा
प	ति	या	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

अंतरा.

म	प	ग
री - म म	म प प -	मम प - मम
आ ऽ व त	बी ऽ ती ऽ	बग खा ऽ रुत
३	×	२
सांसांनिध निप मग ग	म पम प गग	ग ग ग रीगम
आ ऽ ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ली ऽ ऽ	का ग द ऽ ऽ ऽ
३	×	२
प	ग	सा
म म पम निध	सांसांनिध निप मम	म गरी गरी मग
मा ई री ऽ ऽ	ना ऽ ऽ बा चत	लि ख ऽ बै ऽ या ऽ
३	×	२
		पपमग मरी निसा
		भा ऽ ऽ ऽ गी ऽ ला
		०

सासा (प) पपमग री	गीगम म - म	ध नि	प सां
फर (३) ऽ कऽऽऽ र	ऽऽऽ ही ऽ ये	पप ध सां निसां	सां मां(मां) ध निप
	(x)	(२)	
ग म गमप -म	धधपमप म ग म	पपमगमरी	री नि सा सा, सा
ऽ ऽ ऽऽऽ ऽऽ	ऽऽऽऽ रे ऽ ऽ	मोऽऽऽऽ रा ऽ ऽ	ऽ ऽ वे, पि
(३)	(x)	(२)	(०)

नटमल्लार-निलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

मासा
(
नज
(

रि - सा सा	सा - री म	- म प (प)	म ग म री
रे ऽ न हीं	आं ऽ दा ऽ	ऽ ने ऽ मी	यां ऽ ऽ वे
(३)	(x)	(२)	(०)
प म प मप	धनि सां निसां धप	म ग म रे	गम (प) म, गम, रीसा
ख ण दा तेनुं	चाऽ ऽ ऽऽ वघ	णे ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽ ऽ, ऽऽ, नज
(३)	(x)	(२)	(०)

अंतरा.

पप निध निसां सां	सां (सां) सां सां	ध नि सां रे	सां (सां) धनिप
ढुंढे दीऽ फिरे दी	ऽ ऽ रें दि	सु नो मि यां	रा ऽ जऽ णा
(३)	(x)	(२)	(०)

सां रीं गं मं पं गं मं, रीं सां सां (सां) ध निप धनि सां-सां निध प मग मरी गम (प) मगम री सा
 की त SSS SS, ब ल तां S डा S व ता SSS SS व S णे S SS SS S SS S न ज
 ३ २ ०

नटमल्लार—(एकप्रकार) चौताल (विलंबित)

स्थायी.

नि
सा
ब

सा	री	ग	ग	म	री	-	नि	सा	सा	-	री
न	वा	S	री	बि	न	S	मो	S	को	S	आ
३		४		×		०		२		०	
री	नि	सा	सा	-	री	नि	सा	-	री	ग	प
S	S	ली	S	ला	S	S	ग	S	त	रे	S
३		४		×		०		२		०	
म	री	प	-	सां	सां	ध	नि	प	प, मप	गग	सासा
S	S	नी	S	भ	या	S	S	S	व, SS	न S	बन
३		४		×		०		२		०	
म	री	ग	ग	मग	म	री					
वा	S	S	री S	बि	न						
३		४		×							

अंतरा.

प	म	प	सां नि	सां	सां	सां	-	री नि	सां	सां
म	म	प	मा	५	न	बी	५	ती	५	त
जु	ग	०		२		०		३		
प		सां								
निम	प	प	नि	सां	सां	री	-	नि	ध	-
(ने)	५	क	ना	५	स	रा	५	त	जा	५
५		०		२		०		३		४
री	म	म	री	म	प	-	सां	सांनि	री	नि
म	म	०								
अ	व	ध	भ	ई	५	ला	५५	५	५	गो
५		०		२		०		३		४
प	ध			री				म		री
ध	म	-	म	ग	ग	सा	सासा	री	ग	ग
सा	५	५	व	५	५	न,	। वन	वा	५	५
५		०		२		०		३		४

कांहीं अप्रसिद्ध मल्लारप्रकार.



मीरांबाईकी मल्लार. चरजूकी मल्लार, चंचलसस मल्लार

मल्लाराचे कांहीं अप्रसिद्ध प्रकार कांहीं ठिकाणी ऐकण्यांत येतात. पण त्यांचीं लक्षणे उपलब्ध नाहींत, कारण ते फारच थोड्या लोकांना येत असतात. त्यांनाही त्यांतील एखाद दुसरेच गीत अवगत असतें. व या गीतांवरूनच यांचीं लक्षणे ठरवावीं लागतात.

१. मीरांमल्लारः—यांत दोन्ही गांधार व दोन्ही धैवत येतात. हा काफी थाटांत मानिला जातो.

साधारण चलन

मरे, सारे, नि॒सा, गु॒गमरेप, मप, नि॒धनि॒सां, रे॒सां, ध॒धनि॒
प, मप, सां॒धनि॒प, मपगम, मप, नि॒प, रेम पध॒मप ।

२. चरजूकी मल्लारः—काफी थाटांतून उत्पन्न होतो. यांत पूर्वांगांत “ मरे ” ही संगति आहे. उत्तरांगी “ सां नि ध प, ग॒रे ” असा प्रकार होतो.

साधारण चलन

सा, मरेमप, सांनि॒धप, ग॒रे, गु॒गसा, नि॒धसांनि, ध॒प, ग॒रे,
ग॒रेगु॒सा । मप, नि॒सां, सां, रे॒गरे॒सां, नि॒सां, पनि॒प,
सांनि॒धप, ग॒रे, रे॒गसा ।

चंचलसस मल्लारः—यांत “ मरे ” ही संगति व “ गगमरे, सा ”
हा कोमल गांधाराचा तुकडा लागतो. हा राग अति दुर्मिळ आहे.

साधारण चलन

म रे
सा, रेप, मरेसा, रेसा, सा, निरेसा, निपप, मपसा, निसा,

म म सां
रे, गगमरे, सा, मपसां, सां, निमप, सां, निसां, मप
निसां, रें, निसां, पनि, मप, रेम, सारे, सा ।

धूलिया मल्लारः—याचें माध्राण चलन असें आहे. यांत देसाचें अंम
असतें व “ मरे ” संगति रक्तिवर्धक आहे.

म, रेमम, प, पपपनि, धनिमपसां, निसां, रें, सांनिधप,
मसांनिधप, म, रे, ममप ।

भीराबाईकी मल्लार-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

री	म	(री)	-	री	नि	सा	म	म	ग	ग	म	(री)	प	मप
तु	म	५	५	घ	न	से	५	५	५	५	५	५	५	५
म	प	नि	ध	निध	नि	सां	नि	सां	रीं	सां	ध	नि	प	
५	५	५	५	५	घ	न	ग	र	जे	५	५	५	५	५
प	म	प	सां	ध	नि	प	म	प	ग	म	म	म	म	म
ग	र	ज	ग	र	ज	क	हा	५	५	अ	त	त	त	त
म	प	मग	म	म	नि	प	री	म	प	ध	म	प	प	प
जा	५	५	य	ब	र	जे	५	हो	५	५	५	५	५	५

अंतरा.

प	म	प	निप	सां	-	सां	सां	सां	-	सां	नि	सां	रीं	
क	हूं	५	५	धा	५	म	क	हूं	५	छा	ह	ब	ब	ब
ति	नि	नि	प	म	प	-	नि	सां	रीं	मं	गं	मं	मं	मं
ध	ध	नि	प	म	प	-	नि	सां	रीं	मं	गं	मं	मं	मं
ता	५	व	त	क	हू	५	ला	५	ग	त	५	५	५	५
रीं	सां	नि	ध	नि	सां	निमां								
ओ	स	रे	५	हो	५	५								

चरजूकामलार—चाताल (त्रिलाबत)

स्थायी.

नि
सा
ह

नि	म	सां	नि	ध	प	म	ग	नि
म	रीग	री	मप	सां	-	नि	ध	प
मे	SS	S	बोली	बो	S	S	ल	ले
3		4		X	0		1	
-	म	री	ग	सा	ग	-	म	री
S		प	S	र	ती	S	S	S
3		4		X	0		2	
प	सां	नि	ध	प	ग	-	सा	री
S	S	S	S	र	ती	S	S	S
3		4		X	0		2	

अंतरा.

प	म	प	-	सां	नि	सां	सां	सां	रीं	रीं	गं	रीं	सां
सु	न	ॐ	हो	ॐ	उ	धो	ह	मे	ॐ	ना	हीं		
सां	रीं	नि	सां	सां	प	ध	प	सां	नि	ध	प	प	
ठौ	ॐ	ॐ	र	कौ	ने	ॐ	ॐ	ॐ	गां	ॐ	व		
म	ग	-	,	म	री	ग	सा	-	, सा	म	रीग	री	, मप
की	ॐ	ॐ	री	ॐ	त	ॐ	ॐ	, ह	मे	ॐ	ॐ	ॐ	, बोली

चचलसस मल्लार-चाताल (त्रिलोमत)

स्थायी.

नि
सा
ए

म	री	प	म	री	सा	री	सा	-	सा	नि	री	री	सा
३	३	३	४	४	४	५	५	०	०	२	२	०	०
-	नि	-	प	म	प	सा	-	री	म	ग	री	री	सा
३	३	३	४	५	५	५	०	०	२	२	३	०	०

अंतरा.

प	म	म	प	सां	-	नि	म	प	सां	नि	सां	सां
५	५	५	०	०	२	२	०	३	३	४	४	५
प	म	प	-	नि	सां	सां	री	नि	सां	प	नि	म
५	५	५	०	०	२	२	०	३	३	४	५	५
प	री	म	सा	री	सा	-	सा	नि	सा	प	नि	म
५	५	५	०	०	२	२	०	३	३	४	५	५

धूलियामल्लार-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

रां

म

आ

म	री	प	म	म	प	-	-	म	प	प,पम	म	नि	ध
ॐ	ज	४	ध	र	ती	ॐ	ॐ	ले	ॐ	दु,लॐ	ॐ	हा	ॐ
नि	म	प	प	सां	-	नि	सां	रीं	-	सां	नि	ला	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ने	मे	ॐ	ॐ	घ	दू	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ध	प	प	म	पप	सां	-	-	नि	ध	प	-	म	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	व्या	हन	आ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
री	ग	ॐ	री	मम	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

इ० वरप्रमाणें.

अंतरा.

प	म	प	सां	-	सां	नि	सां	सां	सां	नि	सां	सां	-
इं	द्र	के	ॐ	ॐ	द	मा	ॐ	म	बा	ॐ	जे	ॐ	ॐ
मो	नि	सां	रीं	रीं	-	सां	नि	सां	नि	सां	रीं	-	ॐ
बुं	द	न	को	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	से	ॐ	रा	ॐ	ॐ

म	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
प	रीं	रीं	रीं	रीं	रीं	रीं	गंगरींसां	रीं	नि	सां	सां	सां	सां
ब	र	न	ब	र	न	के	SSSS	५	स	गा	थी	थी	थी
×		०		२		०		३		४			

प	सां	-	-	नि	ध	प	-	म	री	गु	री	मम	ये।	धर
आ	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
×					२		०		३				४	

राग रूपमंजरी मल्लार

हा एक मल्लाराचा प्रकार काफ़ी थायंतून उत्पन्न होतो. यांत दोन्ही गांधार लागतात. कोमल गांधार अगदी गौण असतो. “मरे ”व “ रीप मल्लाराच्या स्वर संगती यांतहि प्रामुख्याने येतात. यांत उत्तररागांत देसाचें अंग असतें व “ म,गमरे, सा ” असा पूर्वांगांत अवरोह होतो. याचें साधारण चलन असें आहे.

सा, मरे, प, मगम, रे, सा, सा, निधप, रेगसारे, ममप,

पमनिधनिप, मप, मगरे, सारेपमगरे, सा निधनिप सा ।

रेरेममप, मप, निधनिधप, म, गग, सा, निधप ।

रूपमंजरी—रूपक (विलंबित)
स्थायी.

री
सासा
(
वर
)

सा	म	री	प	मग	म	री	सा	सा	-नि	री	सा	नि	ध	प
खा	२	५	३	५५	५	०	रु	त	आ	२	५	५	५	ग म
ग	रीग	सारी	म	म	प	-	-	प	-म	नि	ध	नि	प	-
पा	२	या	बि	न	कै	५	५	से	५५	५	५	क	टे	५
म	प	म	ग	री	-	सा	री	प	म	ग	री	-	सा	
अं	२	धि	या	५	५	५	री	उ	जि	या	५	५	५	री
नि	सा	-	नि	ध	नि	प	सासा							
रे	२	५	५	५	५	न	वर							

अंतरा.

म	री	-	म	म	प	-	-	प	पम	नि	ध	नि	प	-
मो	२	५	र	प	पी	५	५	हा	५५	५	५	दे	५	५
प	म	-	री	री	सा	-	नि	ध	री	-	म	म	प	-
दे	२	५	तज	रा	५	५	ई	को	५	य	लि	या	५	५

प	सां	-	नि	ध	नि	ध	प	म	पम	ग	गग	सा	-	-
२	२	२	३	३	०	०	०	२	२	३	३	०	२	२
नि	सा	-	नि	ध	नि	प	सासा							
२	२	२	३	३	०	०	०							

राग श्रीरंजनी



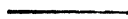
स्वरहरप्रियमेलज्जाता श्रीरंजनी तथा ।
सन्यासं सांशकं चैव सषड्जग्रहमुच्यते ॥
आरोहेऽप्यवरोहे च स्यात् पवर्जित षाडवम् ।
सरिगधनिस । सनिधमगरिस ॥

रागलक्षणे ।

हा राग दाक्षिणात्य आहे. हा काफी थाटांतला एक षाडव प्रकार आहे. यांत पंचम वर्ज्य आहे. बागेश्रीति पंचम लागतो. तो यांत मुळीच वर्ज्य आहे. हाच दोहोंत फरक आहे.

चलन.

म॒ग॒रे॒सा, ध॒नि॒सा, म॒ ग॒म॒ध, म॒ध॒नि॒ध॒म, ग॒, म॒ध॒नि॒सां,
सां॒नि॒ध, म॒ग॒, रे, सा ।



श्रीरंजनी-एकताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा म	ग	री	सा	ध	नि	सा	ध	-	नि	सा	सा
गु x	नी	ज ०	न	क २	र	त ०	मे	५ ३	ल	ज २	ब
सा	सा	म	म	म	म	म	म	ग	-	ग	ग
क x	र	ह ०	र	प्रि २	य	अ ०	त	सूं ३	५	द २	र
म ग	म	ध	-	ध	ध	म	ध	सां	सां	सां	सां
सि x	रि	रं ०	५	ज २	नि	इ ०	क	सु ३	म	धु	र
रीं	सां	नि	ध	नि	ध	म	ग	म	ग	री	सा
रू x	५	प ०	त	ज २	त	पं ०	५	च ३	म	सु २	र।

अंतरा.

म	म	नि	ध	सां	-	सां	-	सां	सां	सां	सां
को x	उ	क ०	हे	बा २	५	गे ०	५	सि ३	रि	इ २	न
सां	सां	सां	मं	गं	रीं	सां	सां	-	सां	-	नि
बि x	न	पौं ०	५	च २	म	मा ०	५	वा ३	५	दी २	५

म	ध	नि	ध	म	ग	म	ग	म	ग	री	सा
नी	ऽ	सु	र	सा	ऽ	ध	त	रं	ऽ	ग	त
×		०		२		०		३		५	
रीं	सां	नि	ध	सां	नि	ध	म	ग	री	सा	सा
ब	र	न	त	नि	पु	न	क	वि	च	त	र।
×		०		२		०		३		५	

राग आभोगी

अधिकारि स्वरद्वरप्रियमेल्लात् सुनामकः ।
आभोगी राग इत्युक्तः सन्यासं सांशकग्रहम् ।
आरोहेऽप्यवरोहे च पनिवर्जं तथौडुवम् ।
सरिगमधस । सधमगरीस ।

रागलक्षणे ।

हा राग दाक्षिणात्य आहे व तो आपले येथेही थोडाबहुत प्रचलित आहे.
हा काफी थाटांतून उत्पन्न होत अमून औडुव आहे. यांत पंचम व निषाद
हे स्वर वर्ज्य आहेत. षड्ज वादी असून त्यावर मुक्काम असतो.

साधारण स्वरूप असें आहे.

मगरेसा, धंयसा, सा, म, ममधग, मगमध, सां, सां,
सांधसां, ध, मध, ग ।

आभोगी—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

गु					री	सा	री	री	ध	-	सा	-	सा
म	ग	री	सा	री	ध	०	या	०	०	०	मे	०	ल
ख	र	ह	र	प्रि	०	०	०	०	०	०	३	३	३
×		२									म	ग	ग
सा	सा	म	म	म	ध	म	म	म	म	म	ग	ग	ग
ज	ब	बि	बु	ध	ज	न	क	र	त	३	३	३	३
×		२			०		३						
म	ग	म	ध	ध	सां	-	सां	रीं	सां				
आ	०	भो	०	गि	रा	०	ग	स	ब				
×		२			०		३						
सां	सां	सां	ध	सां	ध	म	ध	म	ग				
च	तु	र	गु	नि	त	ब	क	ह	त।				
×		२			०		३						

अंतरा.

म	ग	म	ध	ध	सां	सां	सां	-	सां
म	०	ध	म	क	र	त	वा	०	दि
×		३			३		३		
सां	सां	मं	सां	ध	सां	ध	म	-	म
ख	र	ज	क	र	स	म	वा	०	दि
×		२			०		३		
गं	ग	मं	मं	गं	रीं	सां	रीं	रीं	सां
म	ध	रा	०	त	के	०	स	म	य
×		२			०		३		

ध	सा	सा	सां	सां	ध	सां	ध	म	ध	म	ग
स	क	ल	ज	न	म	न	ह	र	त		
x		०			०		३				

आभोगी-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा	म	ग	रीसा	री	सा	ध	-	सा	सा	-
ज	य	ति	सि	रि	रा	०	५	धि	के	५
x		२						३		
सा	सा	म	म	म	म	-	ध	ग	-	
स	क	ल	सु	ख	सा	०	५	धि	के	५
x		२						३		
ग	म	ग	म	ध	ध	सां	-	रीं	सां	-
त	रु	णि	म	णि	नि	०	५	त्य	नौ	५
x		२						३		
सां	सां	सां	सां	सां	ध	म	ध	म	ग	
त	न	कि	शो	५	५	५	५	५	री	।
x		२			०			३		

अंतरा.

ग	म	ग	म	ध	ध	सां	-	सां	सां	सां
के	५	ण	त	न	नी	०	५	ल	घ	न
x		२						३		

सां	-	मं	सां	ध	सां	ध	सां	ध	म
रू	५	प	की	५	चा	५	ल	की	५
ग					मं				
म	मं	मं	मं	मं	गं	गं	मं	गं	सां
के	५	ण	मु	ख	हि	म	कि	र	ण
म									
सां	-	सां	ध	सां	ध	सां	ध	म	ग
की	५	च	को	५	५	५	५	५	री।

आभोगी-अपताल (मध्यल्य)

स्थायी.

ग				सा	त्रि			
म	ग	रीमा	री	सा	ध	ध	सा	- सा
च	र	न	ध	र	आ	५	ये	५ री
नि								
सा	-	म	म	म	ध	म	म	ग -
मो	५	प	र	द	या	५	क	५ रे ५
ग								
म	ग	म	ध	ध	सां	सां	सां	- सां
आ	५	ली	५	री	ध	न	ध	५ न
ध								
सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	ध	म ग
अ	ज	मे	५	रे	भा	५	५	५ ग।

[illegible]

राग चंद्रकौंस



हा काफी थाटांतला राग आहे. यांत ऋषभ व पंचम वर्ज्य आहेत.
यांचें चलन साधारण असें आहे.

सा, नि॒ध, म॒धनि॒सा, म॒ग, सा, म॒गम॒धनि॒सां, सांनि॒धम॒ग
म॒गसा । ग॒म॒धनि॒सां, नि॒सां मंगं, सां नि॒सांनि॒ध,
नि, म॒ध, नि॒ध, म॒ग, म॒धनि॒ध, म॒ग,
म॒ग, सा ।



चंद्रकौस—सूलताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा	-	नि	ध	ध	म	ध	सा	नि	-	सा	-
प्रे	५	म	न	ग	२	र	की	५	५	५	५
x		०					३			०	
सा		सा		म		म	म	ग	-	सा	-
नि	सा	म	म	ग	म	ग	ग	-	सा	-	
ड	ग	र	क	ठि	न	है	५	५	५	५	५
x		०		२		३				०	
नि	सा	म	ग	म	ग	म	नि	ध	नि	सां	-
सा	म	म	ग	ग	म	म	५	५	५	५	५
जि	न	जा	५	ओ	५	५	३	५	५	५	५
x		०		२						०	
नि	सां	नि	ध	म	ध	म	ग	म	ग	सा	
को	५	५	५	५	५	५	५	५	५	ऊ	।
x		०		२		३				०	

अंतरा.

म		नि		सां	सां	-	सां	नि	सां	सां
ग	म	ध	नि	सां	सां	५	नि	बै	सां	सां
प	हि	ले	तो	मी	ठे	३	५	५	न	न
x		०		२					०	
सां		मं	मं	गं	सां	नि	सां	नि	ध	
नि	सां	मं	मं	गं	सां	५	५	५	त	५
ब	स	क	र	ले	५	५	३	५	०	
x		०		२						

ध नि	म	ध	-	ध नि	नि	ध	म	म	ग
पी	ऽ	छे	ऽ	ग	ले	फां	ऽ	सी	ऽ
x		०		२		३		०	
ग म	ध	नि	ध	म	ग	म	ग	-	सा
दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त
x		०		२		३		०	
सा	सा	सा	सा	ग	-	सा	-	सा	नि
ऐ	सो	ब	ट	वा	ऽ	ऽ	ऽ	र	न
x		०		२		३		०	
म ग	म	ध	नि	ध	ग	म	ग	-	सा
य	न	ब	स	त	ठ	ग	ढू	ऽ	जा ।
x		०		२		३		०	

राग गौड



गौड हैं एक काफी थाटंतून उत्पन्न होणारें अप्रसिद्ध रूप आहे.
पूर्वांगांत कानडा व उत्तरांगांत मल्लार अशा संयोगानें हैं रागस्वरूप होतें
याचें साधारण चलन असें आहे. जाति संपूर्ण आहे.

साधारण चलन.

सा, मेरेसा, नि॒सा, ग॒, मेरेप, धप, प॒ग, मेरेप, मपधरेंसां,

म

धनि॒प, मप॒ग, मेरेसा । मप, नि॒धसां, सा, निरेंसां,

धनि॒प, मरेंसां, रेंनिसां॒धनि॒मप, धसां, नि॒,

प, मप॒ग, मेरेसा ।



गौड-क्षपताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि	सा	सा	म	री	री	सा	सा	नि	सा
श्या	ऽ	म	छ	बि	ध	र	फि	रे	ऽ
म ^x	म				०		म		
ग	ग	म	री	प	ध	प	प	ग	-
धु	र	बा	ऽ	ध	र	न	छ	बि	ऽ
म ^x					०				
री	-	प	प	प	म	प	ध	-	रीं
री	ऽ	इं	द्र	ध	नू	ऽ	पी	ऽ	त
सां	सां	सां	ध	नि	प	धम	प	ध	सां
प	ट	च	ट	ऽ	क	(ऽऽ)	दे	खा	ऽ
नि	प	म	प	-	ग	म	म	री	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	है	ऽ	ऽ।
म					०				

अंतरा.

म	प	ध	नि	ध	सां	सां	सां	सां	-
दा	मि	नी	ऽ	द	म	क	द्यु	ति	ऽ
सां ^x					०				
नि	सां	नि	रीं	-	सां	-	ध	नि	प
दे	ऽ	त	दे	ऽ	त	ऽ	द	व	र
सां					०				

मं									
गं	-	मं	-	रीं	रीं	सां	रीं	सां	रीं
सो	ऽ	हं _२	ऽ	ऽ	कूं _०	ऽ	ड _३	ल	अ
नि	सां	ध	नि	म	प	-	प	ध	सां
मो	ऽ	ल _२	लो	ऽ	ल _०	ऽ	ग _३	ती	ऽ
नि	नि	प	म	प	ग	म	म	री	सा
च	म	का _२	ऽ	ऽ	यो _०	ऽ	है _३	ऽ	ऽ।

संचारी.

म									
ग	म	री	प	प	ध	नि	प	म	प
बि	श	द _२	ब	ला	क _०	न	की _३	ऽ	ऽ
म	प	ध	सां	रीं	सां	सां	ध	नि	प
पा	ऽ	ती _२	ऽ	ऽ	ब _०	न	मा _३	ऽ	ल
म	प	ग	म	री	म	म	री	-	सा
अ	ति	मं _२	ऽ	द	मं _०	द	मे _३	ऽ	ध
ध	-	सा	सा	री	सा	-	प	म	प
बां	ऽ	सु _२	री	ऽ	लो _०	ऽ	सु _३	र	ऽ

री	प	म	प	-	ध	सां	ध	नि	प
गा x	ऽ	ऽ _२	ऽ	ऽ	यो ०	ऽ	है ३	ऽ	ऽ।

अंतरा.

म	प	ध	नि	ध	सां	सां	सां	नि	सां
आ x	व	न २	ऽ	ऽ	ब ०	घ	र ३	ही	ऽ
ध	-	रीं	सां	रीं	नि	सां	ध	नि	प
प्या x	ऽ	रे २	म	न	भा ०	ऽ	व ३	न	की
री	म	री	प	प	ध	म	प	ध	सां
सा x	ऽ	ऽ _२	व	न	सो ०	आ	व ३	न	की
मं	रीं	सां	ध	प	ग	म	री	सा	-
सा x	ऽ	ज २	स	ज	आ ०	ऽ	यो ३	है	ऽ।

आसावरी थाट.

आसावरी थाटांतील राग (१०)

देसी

कोमलदेसी

गांधारी

देवगांधार

खट

खट-तोडी

जंगला

झीलफ

गोपी (का) वसंत

सिंधु भैरवी

राग देसी

रिमौ परी मपधपा निधौ परी गरी निसौ ।
संगवे गीयते देशी पंचमांशा सुरक्तिदा ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १८६ ॥

आसावरिके ठाठमें चढते धग न लगाइ ।
परि बादी संवा दितें देसी गुनियन गाइ ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ३३ ॥

स्वरैरासावर्याः किल जगति देशी सुविदिता ।
धगत्यक्ताऽऽरोहे विलसति वरोहे तु सकला ॥
प्रसिद्धः संवादो भवति समयोरत्र मधुरः ।
प्रभां सारंगस्य प्रकटयति पूर्वेऽग इह सा ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ३४ ॥

देसी राग असावरी थाटांतून उत्पन्न होतो. हा एक तोडीचा प्रकार मानिला जातो, व गायक लोकांचा फार प्रिय आहे. ह्याच्या आरोहांत गांधार व धैवत हे स्वर लागत नाहीत. अवरोह संपूर्ण आहे. जाति औडुव-संपूर्ण आहे. ह्याचा वादीस्वर पंचम व संवादी ऋषभ आहे. गानसमय दिवसाचा दुसरा प्रहर आहे. ह्यांत तीव्र धैवत सुद्धां कधीं कधीं लाविला जातो. पूर्वांगांत सारंग व उत्तरांगांत आसावरी मिळून हा राग होतो. जुन्या ग्रंथांत हा राग वर्णिलेला आढळतो. त्यांपैकी “ रागलक्षण ” या ग्रंथांत आंध्रमताचा देशी म्हणून वर्णिलेले स्वरूप आजच्या प्रचाराशी बरेच जुळते.

या शिवाय उत्तरेकडील गायक कोमलदेसी म्हणून एक देसीचा प्रकार गातात. तो याच देसीत अवरोहांत कांहीं विशिष्ट रीतीने कोमल ऋषभाचा प्रयोग करून ते गातात. असले कांहीं प्रकार तिकडल्या लोकांत प्रचलित आहेत. जसे कोमल बागेश्री, कोमल बहार, कोमल वसंत, वगैरे, हे प्रकार म्हणजे या रागांत असलेले प्रमुखस्वर विकृत करून उत्पन्न केले जातात. बागेश्रीत धैवत कोमल, बहारांतहि तोच कोमल करून, व वसंतांत गांधार कोमल करून ते या रागांचीं उपांगें गातात.

देसीचा उठाव.

सा म सा नि
नि॒सा, रेप॒ग, रे, नि॒सा, रेम॒परेम॒प, ध॒प, मप॒ग, रे, प॒ग
रे, नि॒सा ।

चलन.

सा, रे॒गे॒रेसा, रे, नि॒सा, रेम॒प, रेम॒प, ध॒प, सां, प, ध॒प,
म म सा
मप॒ग, रे, प॒गे॒रे, नि॒सा, । मम॒पसां, नि॒सां, रे॒गे॒रेसां,
 नि म
रे॒नि॒सां, सां, प, ध॒प, मप॒गे॒रे, रेम॒पसां, प,
ध॒प, मप॒ग, रे, सा, रे॒नि॒सा ।

देसी-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

गु री गु री गु	री सा सा री	प गु - री	सा री - नि
मि त वा बा x	ल मु वा ऽ २	ऽ ऽ ऽ ऽ गै	ला प ऽ र ३
सा - - सा	म री प पध मप	प गु री गु री	सा री - नि
दे ऽ ऽ स x	बा ऽ ल ऽ मु ऽ २	वा ऽ ऽ गै	ला प ऽ र ३
सा - - सा	म री - म प	प - प -	नि ध - प ध
दे ऽ ऽ स x	जा ऽ य ब	सी ऽ ला ऽ	को ऽ न गा ३
- प प प	ध प - ध म	म री म पध मप	म गु - - री
ऽ म अ ब x	जै ऽ यो ऽ २	को ऽ ने ऽ ऽ ऽ	बे ऽ ऽ स। ३

अंतरा.

म म प	सां - सां -	सारीं गुं रीं सारीं	नि सां - ध प
ऽ उ न बि x	ना ऽ मैं ऽ २	छी ऽ न अ ऽ ०	छी ऽ ऽ न ३
नि ध - प प	म पध मप गु री	- म म प	सां - - -
जा ऽ रे प x	थि ऽ क ऽ वा ऽ २	ऽ उ न बि	ना ऽ ऽ ऽ ३

सांरीं	गुं	रीं	सां	रीं	नि	सां	-	सां	सां	नि	नि	सां	-	प	-	-	प
बू	५	ढे	भ	ई	५	ले	५	के	५	५	५	५	५	५	५	५	स।
x				२				०						३			

देसी-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

री	ग	री	ग	री	सा	सा	री	सारी	ग	-	री	सा	री	-	नि
च	त	र	बा	ल	म	वा	५	५	५	५	भ	यो	प	५	र
x				२				०				३			
सा	-	सा	-	सा	री	सा	री	प	ग	री	ग	री	सा	री	-
दे	५	सी	५	बा	५	ल	म	वा	५	५	भ	यो	प	५	र
x				२				०				३			
सा	-	-	-	सा	-	सा	सा	री	म	म	म	प	-	प	-
दे	५	५	५	सी	५	अ	ब	तो	५	डी	ह	मा	५	री	५
x				२				०				३			
नि	नि			नि				म				म			
ध	ध	प	-	ध	प	ध	म	री	म	प	ध	प	-	ग	री
स	ग	री	५	स	ज	नी	५	पी	५	५	५	५	५	त	५।
x				२				०				३			

अंतरा.

प	म	म	प	सां	-	सां	सां	सां	नि	-	सां	रीं	सां	-	ध	प
५	ह	र	प्रि	या	५	मो	रे	प्रा	५	ण	५	अ	धा	५	रे	५
x				०				०				३				

सां - प प	ध ध प प	री म प ध	प गु - री
दू ऽ जो न	अ ग द ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	व री ऽ त।

देसी-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा
गुं

म गु री - सा	री - नि -	सा - सा -	सा - - म
दू गुं ऽ द	ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ वो ऽ	रे ऽ ऽ मा
री म पध मप	गु - - -	री - गु -	सा री री - - म
ऽ ऽ लऽ निऽ	यां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ फू
- प - प	सां - - -	प ध पम प	म गु री - री
ऽ लों ऽ दे	हा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रऽ ऽ	वा ऽ ऽ। गुं

अंतरा.

म
आ

म प - प	सां - - -	सां सां नि नि सां -	सां - - नि
ज मो ऽ रे	घ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ मो

- सां - रीं	सां - - -	सां सां नि नि सां -	प - - पध
ह न	आ	र	ये र
म म			
प ग - म	प - सां -	नि सां - ध	प - - पध
च हूं मैं	फू	र लों	दे सिं
ध		म	री
म - प -	- ध म प	ग - री -	नि सा - सां
गा		र	वा गूं

देसी-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

री नि सा	म री म प -	ध ध नि ध	प ध प म
सा चिक	ह त है	अ दा रं	ग य ह
म म			
प री री म	प ध प म	प (ग) री ग	रीसा री सा -
न दी ना	व सं	जो	ग

अंतरा.

म म प	सां - - सां	सां नि - सां -	सां रीं नि सां सां -
कौ न कि	सी के	आ वे	जा वे

सां	नि - नि	सां - - सां	परीं रीगं री सां	निसां निसां प -
५ दा ५ न	पा ५ ५ नि	कि ५ सी ५ म त	ला ५ ५ ५ वे ५	
		× नि		
मप पगं गं	रीं सां निसां निसां	(प) ध म प	री ग रीसा री	
५ ये ५ ही ५ क	ह त स ५ व ५	लो ५ ५ ५	५ ५ ५ ५ ५	
		×	२	
सा, री नि सा	री म प -			
ग, सा चि क	ह त है ५।			

देसी-अपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा	-	सा	-	री	सा	-	ध	प	-
रैं	S	ज	S	न	की	S	जे	S	S
प ^x		सां		प	प ^०		म		
म	प	नि	सां	प	म	प	ग	री	ग
म ^x	ल	मु	S	क्त	मे	S	रे	S	S

री	सा	री	नि	सा	री	म	प	-	प
प	र	ता	ऽ	प	साँ	ऽ	ऽ	ऽ	अ
नि _x		म _२		री	म _०		सा _३		री
ध	प	ग	री	प	ग	री	री	निसा	री
हं _x	ऽ	म _२	ऽ	द	जूं _०	ऽ	के _३	ऽऽ।	नि

अंतरा.

प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
म	प	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां
तूं _x	हि	नू _२	ऽ	र	तूं _०	हि	भू _३	ऽ	प
सां	सां	सां	-	सां	रीं	नि	- प		
नि	नि	सां	ऽ	गं	गुं	सां	ध	ऽ	उं
ते _x	ऽ	रो _२	ऽ	हि	गुं	न	गा _३	ऽ	उं
प	मप	म	री	म	प	-	सां	नि	प
से _x	(ऽऽ)	ग	ऽ	क	रे _०	ऽ	ऽ _३	ध	प
		वा _२						स	ब
पध	मप	म	री	म	ग	री	सा	निसा	री
(जिऽ)	(यऽ)	ग	ऽ	त	ते _०	ऽ	री	ऽऽ।	नि
(_x)		जौं _२					रे _३		

देसी-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

										री उ
री	सा									
नि	नि	सा	-	री	नि	सा	धि	पं	-	
डौं	ऽ	ड	ऽ	न	बा	ऽ	जे	ऽ	ऽ	
x		२			०		३			
म	म	म	-	ध	पम	प	म	ग	री	-
उ	ल	ल	ऽ	मु	राऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	
x		२			०		३			
सा	सा	सा	-	-	री	म	री	म	प	-
म	ध	मा	ऽ	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
x		२			०		३			
म	प	म	ध	री	म	ग	री	सा	-	-
कां	ऽ	धे	ऽ	कां	व	रि	या	ऽ	ऽ	
x		२			०		३			

अंतरा.

म	-	प	नि	-	सां	-	सां	-	सां
की	ऽ	प	जो	ऽ	ज्यो	ऽ	त	ऽ	प्र
x		२			०		३		

नि	-	सां .	-	रीं	नि	सां	नि	ध	प	-
का	ऽ	श ^२	ऽ	क	र ^०	त	है ^३	ऽ	ऽ	
नि	नि	ध	प	ध	नि	नि	ध	प	प	
ध	न	नं ^२	ऽ	द	ध ^०	न	नं ^३	ऽ	द	
म	-	प	ऽ	ध	नि	ध	-	प	-	-
कृ	ऽ	ण ^२	ऽ	औ	ता ^०	ऽ	रे ^३	ऽ	ऽ	
सा	सा	सा	-	-	री	म	री	म	प	-
म	ध	मा ^२	ऽ	ऽ	ते ^०	ऽ	ऽ ^३	ऽ	ऽ	।

इत्यादि, स्थायीप्रमाणे.

अंतरा २

म	-	प	नि	-	सां	-	सां	-	सां	
नं ^३	ऽ	द ^२	को	ऽ	नं ^०	ऽ	दु ^३	ऽ	न	
नि	नि	सां	-	रीं	नि	सां	नि	ध	प	-
स	ब	दू ^२	ऽ	ख	भौं ^०	ऽ	ज ^३	ऽ	न	
नि	नि	ध	प	ध	नि	नि	ध	प	प	
ब	ल	वं ^२	ऽ	त	ब	ल	वं ^३	ऽ	त	

म	-	प	-	ध	ध	-	प	-	-
कौं	ऽ	स	ऽ	प	छा	ऽ	रे	ऽ	ऽ
x		२			०		३		
सा	सा	सा	-	-	री	म	री	म	प
म	ध	मा	ऽ	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
x		२			०		३		

इत्यादि, स्थायीप्रमाणें.

देसी-अपताल (मध्यलय)

स्थायी.

म		सा	री			म			
ग	-	री	-	नि	सा	-	रीम	पध	प
नै	ऽ	ना	ऽ	ल	गे	ऽ	रीऽ	आऽ	ली
x		२			०		३		
प					म				
सां	नि	ध	प	प	री	म	प	पध	मप
उ	न	सें	ऽ	रि	आ	ऽ	ऽ	ऽऽ	लीऽ।
x		२			०		३		

अंतरा १.

प		सां							
म	प	नि	सां	नि	सां	-	सां	-	-
व्या	ऽ	कू	ऽ	ल	हूं	ऽ	मैं	ऽ	ऽ
x		२			०		३		
नि				सां			प		
सां	नि	सां	-	रीं	सां	नि	ध	प	-
फि	रुं	बा	ऽ	व	री	ऽ	सी	ऽ	ऽ
x		२			०		३		

प	म	प	सां	नि	सां	रीं	सां	नि	ध	-	प
कै	५	से	५	क	टे	५	रै	५	न		
×		२			०		३				
म	म	सा		री	सा		म		ध		
गु	गु	री	-	नि	सा	-	रीम	पध	मप		
क	ल	ना	५	प	रे	५	रिड	आ	लीड		
×		२			०		३				

અંતરા ૨.

प	म	प	सा	नि	सां	नि	सां	-	नि	सां	सां
	ने	ऽ	हा	ऽ	ल	गा	ऽ	य	ग	ये	
सां	नि	सां	सां	-	रीं	सां	निसां	नि	ध	प	-
फि	र	ना	ऽ	हिं	आ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	
प	म	प	सां	नि	सां	रीं	सां	नि	ध	-	प
बिं	ऽ	दा	ऽ	नि	तु	र	इया	ऽ	म		
म	ग	-	सा	री	-	नि	सा	-	रमि	पध	मप
ऐ	ऽ	से	ऽ	भ	ये	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ली

देसी-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

सा
,निसारीप
,सखिमैका

म	ग-री ग,रीसा	सा री	री नि सा सा	प	म प रीम	प	म प पधमप ग री
चे S S S,नन	आ S S वे	आ S S S	आ S S S	जे S			
प प	सांसां	प	प	प ध	म		
मम प सां,निसां	निनि सां प मपध,प	निम प मप निनि,पमप	ग री निसा,रीप				
बिन दे खे, S S	इया S S म S S S,सुं	द S S S S S,र S S	के S S S। मैका				
म	ग-री ग,रीसा						
चे S S S,नन							

अंतरा.

	सां	सां सां सां	सां सां सां	
,ममप	सां - निसां सां	रीसा गं रीं	सां निनि निसा प,मप	
S S S,निसादि	ना S मै S का	क S ल न प	र S त S हे, S S	
ध	म निसा प	नि	प	प ध
प,पध प,मप ग रीरी	म प सां धप	निम प मप निनि,पमप	ग री निसा निसारीप	
कै, S S से, S S क है S	री S S अब	रे S S S न S दी S S	न S S S। सखिमैका	

देसी-एकताल (विलंबित)

स्थायी.

रीम	म	ग	रीग	रीसा	री	सा	-	री	री	नि	सा	सा	निमा
पप	ग	ग	रीग	रीसा	री	सा	-	री	री	नि	सा	सा	निमा
नै	या	या	SS	मोरी	भ	ई	S	पु	रा	S	नी	SS	
3			4		x		0		2		0		
	म	प	प	ध	प	मप	वध,पमप	ग	री	नि	सा,री		
S	खे	व	ट	स	दा	SS	मS,तSS	वा	S	S	S,र		
3		4		x		0		2	0				

अंतरा.

	प	म	पप	सां	-	-	सां	सां	-	सां	-		
	Sऔ	घट	धा	S	S	S	S	S	S	ट	S		
	4		x		0			2		0			
सां	नि	-	सांरी	सां	निनि	ध	प	म	-	-	म		
S	S	S	जत	ना	SS	हीं	S	आ	S	S	न		
3		4		x		0		2		0			
प	प	प	धध,पमप	ग	-	-	री	री	नि	सा	सा	-री	
S	प	री	मS,मSS	धा	S	S	S	S	S	S	र	SS	
3		4		x	0			2	0				

देसी-एकताल (विलंबित)

स्थायी.

रीम	म	ग	रीग	रीमा	री	-	री	नि	-	सा	-	सा	निमा
पप	ग	ग	रीग	रीमा	री	-	री	नि	-	सा	-	सा	निमा
मे	रा	रा	SS	मन	हा	S	S	S	S	S	S	र	SS
3			4		x	0				2		0	

म	री	म	प	-	ध	प, पध	पमप	म	ग	री	री	नि	सा	निसा	मम
	ली	S	S _५	S	S, SS	ना SS	रे	S	S _२	S	S	S	S	S	मे S
	३				x		०								

अंतरा.

[illegible]

देसी-आडाचौताल (विलंबित)

स्थायी.

म	सा	री	सा	सा	सा	सा	सा	प	प
पमप ग	रीग, रीसा	री नि	सा सा	रीनि सा	निनि सा	प	प	प	प
पिऽऽ या	ऽऽ, हम	वा	ऽ	ऽ	री	तोऽ	ऽ	ऽऽ	रे
५	०	५	२	०	३	०	३	०	३
प	म	प	ध	म	प	ग	री	ग	सारी
सा -	निसा, सा	री म	प ध	म प	ग	री	ग	सारी	सारी
के	ऽ	ऽऽ, ब	सै	ऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ
५	०	५	२	०	३	०	३	०	३

री	म	ग	रीग,रीसा	सा	री	सा	सा	रीनि	सा	सा	सा	प	प
प	ग	ग	(रीग,रीसा)	री	नि	सा	सा	रीनि	सा	निनि	सा	प	म,मप
पी	या	SS	,हम	वा	S	S	री	तोS	S	SS	S	रे	ब्रिजS
प		०		म	प	ध			म			०	
सा	-	निसा	,सा	री	म	प	ध	म	प	ग	-	री	ग
के	S	SS	,ब	सै	S	S	S	S	S	या	S	S	S
		०		म	प	ध			म			०	
सा	री	नि	सा	नि	सा	री	म	प	प	-	मप	धप	-
S	S	S	S	तु	म	रे	का	र	न	S	SS	बेS	S
		०		०		२		०		३		०	
मप,पध,पमप	ग	री	नि	सा	री	प	री	ग	री	नि	सा	सारी	
SS,कS,लSS	हो	S	त	S	S	S	जी	S	S	S	S	याS	
	०		०	२			०	३			०		

अंतरा.

मप
(
कब

सां	-	सां	-	निसां	सां	सां	रीं	सां	रीं	सां	रीं	सां	निसां	सां
की	S	ठा	S	SS	डी	आ	S	SSS	ग	न	बा	S	SSS	S
०		२		०		३		०			०		०	

प	मप	ग	री	ग	री	सा	नि	सा	मप	सां	-	प	मपधपमप	ग	री
रे	असु	ब	SS	न	की	SS	SS	ला	SS	SS	गSSरSS	ही	SS		
सा				प		सा				नि					
नि	सा	री	प	री	ग	री	नि	सा	सारी						
आ	SS	खी	SS	SS	SS	SS	SS	SS	याSS						

देसी-चौताल (विलम्बित)

स्थायी.

नि	सा	ग	री	सा	म	ग	री	सा	नि	सा	सा
सा	म	ध	पु	र	न	ग	रि	के	रा	SS	जा
अ	व	०	२	२	०	०	३	३	४		
री		म			प		म	म	ग	री	-
नि	सा	-	री	म	म	-	म	प	ग	री	-
सि	री	SS	रा	SS	म	SS	चाँ	SS	द्र	SS	SS
५	०	०	२	२	०	३					
म				म				नि			
री	म	-	म	प	प	प	-	सां	ध	-	प
रा	SS	SS	व	न	के	मा	SS	र	वे	SS	को
५	०	०	२	२	०	३					
म		म		म	पध	मप	ग	-	री	नि	सा
री	म	री	म	पध	मप	ग	-	री	नि	सा	-
लौं	SS	का	SS	चSS	ढSS	धा	SS	यो	है	SS	SS
५	०	०	२	२	३	०	३				

अंतरा.

प	म	प	-	सां	-	सां	सां	-	सां	सां	सां	सां	सां
	ब	डे	ऽ	ब	ऽ	डे	जो	ऽ	धा	ऽ	स	ब	
	×		०		२		०		३		४		
प	नि	प	सां	सां	सां	सां	गं	रीं	सां	निसां	निधनि	प	-
	जु	ध	क	र	बे	को	सा	ऽ	थ	ऽ	च	ले	ऽ
	×		०		२		०		३		४		
प	मप	नि	ध	प	ध	प	-	प	म	प	ग	री	
	(स	मुं	द	र	ती	र	ऽ	जा	ऽ	य	के	ऽ	
	×		०		२		०		३		४		
म	री	म	री	म	प	पनि	पम	प	ग	री	नि	सा	
	ल	श	क	र	ठे	ऽ	रा	ऽ	यो	है	ऽ	ऽ	
	×		०		२		०		३		४		

संचारी.

प	पम	प	पम	म	री	म	प	प	नि	-	प	
ह	(न	म	(न		सो	ऽ	बी	ऽ	र	जा	ऽ	ने
×	)	०	)		२		०		३		४	
म	-	री	म	म	प	प	नि	प	म	प	ग	री
							ध					
लौं	ऽ	का	ऽ	स	ब	फूं	ऽ	क	द	ई	ऽ	
×		०		२		०		३		४		
म	-	प	ग	-	री	सा	-	री	नि	सा	सा	
रा	ऽ	व	न	ऽ	को	मा	ऽ	न्यो	रा	ऽ	म	
×		०		२		०		३		४		

सा	सा	म	री	म	प	पध	प	म	म	ग	री	-
प	च	रं	ग	फै	SS	रा	S	यो	है	S	S	
x		०		२	)	०		३		४		

आभोग.

प	म	प	-	नि	प	प	सां	-	सां	सां	-	सां
सी	S	S	ता	S	को	ला	S	यो	ज	S	ब	
x	०		२		०			३		४		
नि	नि	प	सां	-	ग	रीं	सां	-	नि	ध	-	प
प	प	-	सां	-	ग	रीं	सां	-	नि	ध	-	प
पू	S	S	जो	S	द	से	रा	S	आ	S	य	
x	०		२		०			३		४		
म	प	नि	ध	प	ध	प	-	प	म	प	ग	री
ह	र	रं	ग	ऐ	S	S	सो	S	सि	री	S	
x		०	२		०			३		४		
म	री	म	री	म	प	-	पध	म	-	प	ग	री
द	स	र	थ	को	S	SS	जा	S	यो	है	S	
x	०			२		०		३		४		
सा	सा	म	ग	री	सा	म						
निसा	म	ग	री	सा	म							
अS	व	ध	पु	र	न							
x		०		२								

देसी—धमार (विलंबित)

स्थायी.

म	ग	री	ग	री	-	सा	-	म	प	-	नि	-	सा	री	
	बा	५	५	ल	५	म	५	ह	म	५	रे	५	५	बि	
म	ग	री	ग	री	-	,	सा	नि	सा	-	नि	ध	-	प	-
	दे	५	५	स	५	५	ग	ये	५	५	अ	५	ब	५	
प	री	नि	सा	री	म	,	म	प	सां	-	नि	ध	-	प	-
	तो	५	५	डी	५	५	ह	मा	५	५	री	५	५	५	
	धु	म	-	प	-	-	ध	ग	-	-	सा	री	नि	सा	सा
पी	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	त।

अंतरा.

म	प	-	सां	-	,	सां	नि	सां	-	सां	-	-	-
आ	५	५	स	५	५	भ	री	५	५	मैं	५	५	५
नि	-	-	सां	-	,	रीं	सां	-	-	नि	सां	प	-
हो	५	५	त	५	५	नि	रा	५	५	५	५	सी	५

पध	पम	प	ग	रीग	सा	री	-	म	प	-	सां	-	नि	ध	प
देऽ	खोऽ	ऽ	स	ऽऽ	खी	२	ऽ	पि	या	ऽ	३	ऽ	की	ऽ	
प	प							म							
म	म	-	प	-	-	ध	ग	-	-	री	नि	सा	सा		
अ	नो	ऽ	खी	ऽ	२	ऽ	री	०	ऽ	३	ऽ	त			

देसी-धमार (विलंबित)

स्थायी.

म प
स खि

सां - रीं	सां नि	ध,	प	पध	पम	प	ग	-	-	री
ठा	ऽ ऽ डो	२	सुं	दऽ	रऽ	ऽ	सां	३	ऽ	व
म	सा									
ग	- - री नि	सा	सा	सा	सा	-	रे	म	प	प
रो	ऽ ऽ ढो	२	टा	क	ही	ऽ	३	य	त	
प	री म प -	,	प	प	-	प	ध	म	-	मप
नं	ऽ ऽ द	२	कि	शो	ऽ	र	री	३	सखि	

अंतरा.

म	प	-	सां	-	-	सां	सां	सां	-	नि	सां	सां	-
प	ल	ऽ	झ	ऽ	ऽ	प	क	त	ऽ	वा	ऽ	की	ऽ
×	मं		सां		२	मां				रीं			
रीं	गं	-	रीं	-	सां	-	रीं	नि	-	नि	सां	सां	-
छ	बी	ऽ	नि	ऽ	र	ऽ	ख	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ
×					२		०			३			
प			नि			म				सा			
सां	-	नि	ध	प	पध	मप	ग	-	-	री	नि	सा	सा
आ	ऽ	ऽ	ऽ	लि	कऽ	रीऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
×					२		०			३			
म			म							प	ध		
री	म	प	री	म	प	प	प	-	प	ध	म	-	मप
ग	री	ऽ	ऽ	ऽ	या	में	शो	ऽ	र	री	ऽ	ऽ	संघि
×					२		०			३			

देसी-धमार (विलंबित)

स्थायी

मा					म					सा	री		
नि	सा	री	प		प	ग	-	री	सा	-	सा	री	नि
जि	न	लु	वो		मो	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	अ	च	र
३					×					२	०		ऽ
सा	-	सा	-		नि		म			प	री	म	प
ऽ	ऽ	वा	ऽ		सा	सा	-	री	म	प	री	म	प
३					×					२	०		ऽ
					अ	त	ऽ	ही	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

नि नि		म		री		री	
ध ध प प	पध पम प ग -	री	-	नि सा -			
धी ऽ ट लं	ग ऽ र ऽ ऽ वा ऽ	२	२	०	०	०	०

अंतरा.

प	नि	सां	सां	सां	सां	सां	सां
म प - ध प	सां	गीमां	रीं	सां	नि सां प प		
य ह ऽ ड र	ब र ऽ	जो री ऽ	ग हे मो रा				
नि	सां	गीमां	रीं	सां	नि सां प प		
प नि प सां -	गं	रीं	सां	नि सां प प			
पै ऽ ड वा ऽ	ब र ऽ	जो री ऽ	ग हे मो रा				
पध पम म प ग	री -	नि सा -					
ह ऽ र ऽ ऽ वा ऽ	२	२	०	०	०	०	०

कोमलदेसी-धमार (विलंबित)

स्थायी.

प - प प	नि नि वि	ध ध ध प -	ध म	प - ध
गो ऽ कु ल	घू ऽ ऽ म ऽ	२	म	चा ऽ ऽ
नि - नि -	सां नि - ध -	-	ध	नि ध -
ई ऽ री ऽ	पि या ऽ ऽ ऽ	२	बि	दे ऽ ऽ

ग नि	-	सां नि	सां	सां	-	सां	-	नि	ध	-	प	ध्रम			
बो	ऽ	ल	बो	ऽ	ले	ऽ	बा	ऽ	ऽ	ते	ऽ	जूं	ऽऽ		
×					२		०			३					
प	-	-	सां	-	-	सां	गं	-	-	गं	रीं	-	सां	-	
ला	ऽ	ऽ	गो	ऽ	ऽ	सु	धे	ऽ	ऽ	बू	ऽ	ध	ऽ		
×					२		०			३					
नि	सां	सां	-	नि	-	-	धध	प	-	-	ध	म	प	ध	
स	ब	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बिस	रा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ		
×					२		०			३					
म	म	ग	री	-	सा	-	सा	प	-	-	नि	ध	-	-	प
प	ग	-	री	-	सा	-	प	-	-	ध	-	-	प		
अ	ब	ऽ	मो	ऽ	रे	ऽ।	गो	ऽ	ऽ	कु	ऽ	ऽ	ल		
×					२		०			३					

राग गांधारी

रिमौ पनी धपौ सश्च निधौ पमौ पगौ रिसौ ।

गांधारो रिद्वयः प्रोक्तो धैवतांशसमन्वितः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १८४ ॥

गांधारी राग आसावरी थाटांतून उत्पन्न होतो. ह्यांत आरोहांत गांधार वर्ज्य आहे. अवरोह संपूर्ण आहे. ह्याचा वादी धैवत व संवादी गांधार आहे. गानसमय दिवसाचा दुसरा प्रहर आहे. ह्यांत दोन्ही ऋषभ लागतात व ह्याचें

म सा

साधारण चलन आसावरी अंगाचें आहे. “गुरिमप” हा स्वरविन्यास या रागाचें स्वतंत्र अंगच आहे.

उठाव.

म सा

सा, ध, प, धमपग, रेम, प, नि, निसां, ध, प, मप,
धमप, ग, रे, सा ।

चलन.

प निधप, धमप, ग रेमप, निध, प, धम, पग, रे, सा, रेमप,
निध, निधप ।

गांधारी-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प प सां सां	प प प ध	म - प -	ग म प - प
सु नो ऽ न	नं दि या ऽ	तो ऽ रा ऽ	२ बी ऽ र
ध - ध ध	ध ध प ध	म प म ध	म प ग ग
हैं ऽ स न	नि त नि त	अ ब ध ब	३ त अ स
ग ध प ध	म प ग ग	री - - -	- - सा -
औ ऽ र न	ही ऽ क ही	जा ऽ ऽ ऽ	२ ऽ ऽ ग ऽ
म - म म	प - ध -	ध - सां -	- - - -
को ऽ न सु	ने ऽ का ऽ	से ऽ क हुं	२ ये ऽ दु ख
ध ध सां -	गं - रीं सां	नि सां रीं सां	नि ध प म
ब ति यां ऽ	ये ऽ दि न	र ति यां ऽ	२ ऽ ऽ ऽ ऽ

अंतरा.

म म म म	प - ध -	सां - सां -	सां - सां सां
स र ब स	दे ऽ दे ऽ	हा ऽ री ऽ	जा ऽ ब त

अंतरा.

प	नि	सां	सां	सां	नि	सां	री	सां	गं	रीं	सां	-
म	प,मप	ध	-नि	सां	-	नि	सां	ध	सां	री	सां	-
बि	ना,SS	ना	ऽथ	की	ऽ	ऽ	ऽ	पी	ऽ	ऽ	ऽ	त
गं	रीं	-	सां,सां	नि	ध	प	पध	प	ग	री	सा	म
का	ऽ	हू	,सेन	जा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	त	अ
नि	नि	ध	सां	री	नि	ध	प	धम	प	मप	पधमप	प
की	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	त	सा	ऽ	ऽ	ची	मा

गांधारी-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

नि	ध	-	प	पध	प	ग	-	री	म	प	प	प
ही	ऽ	यो	उऽ	धो	ऽ	ऽ	ऽ	तु	म	जो		
नि	ध	-	सां	सां	नि	सां	सां	नि	सां	रीं	नि	
ने	ऽ	हू	बी	ऽ	ऽ	ज	बो	ग	व	न	की	

ध	-	प	-	ध	म	ग	-	-	गु	री	सा	-
५	५	नो	५	मा	५	धो	५	५	रि	वा	५	
३		४		५	५	०		२	(	०		
नि	(	प	ध	म	म	ग	-	गु	री	सा	नि	
सा	ध	प	ध	प	ग	-	री	-	री	सा	सा	
ला	५	गो	५	रा	धा	५	के	५	म	न	।	क
३		४		५		०		२		०		

अंतरा.

प	म	प	-	नि	-	ध	सां	-	सां	सां	सां	सां	
ह	ग	५	ता	५	रे	कू	५	५	की	५	ने		
५		०	२	२	०	०		३	४				
रीं	गं	रीं	रीं	सां	सां	नि	सां	-	रीं	नि	ध	प	
सां	गं	रीं	रीं	सां	सां	सां	सां	-	रीं	नि	ध	प	
(	सु	अ	न	ज	ल	भा	५	५	र	भ	५	रे	
अ	सु	०	०	२	०	०		३	३	४			
म	प	नि	-	नि	प	पध	ग	री	गु	री	-	सा	
प	नि	-	ध	प	पध	प	ग	री	री	री	-	सा	
५	ल	५	क	५	न	सी	५	च	सी	५	च		
५		०	२	२	०	०		३	४				
प	म	प	नि	ध	-	सां	सां	रीं	सां	रीं	नि	ध	प
जा	५	ते	५	औ	र	बि	र	वा	५	भ	५	ये	
५		०	०	२		०		३					
ध	म	गु	गु	-	सा	-	नि	सां					
पध	ग	री	री	-	सा	-	सां						
(	घ	न	ब	५	न	५	।	क					
स	घ	न	ब	५	न	५	।	क					
५		०	०	२		०							

स्थायी.

प
नि
बी

[illegible]

अंतरा.

प		-	नि	-	नि	सां	-	-	सां		
म	प	-	ध	-	नि	सां	-	-	नि	सां	सां
ना	ऽ	ऽ	को	ऽ _२	हु	हे	ऽ	ऽ _३	र	ऽ _४	त
नि		-	सां	रीं	गं	रीं	सां	रीं	नि	ध	प
ध	-	-	सां	रीं	गं	रीं	सां	रीं	नि	ध	प
ना	ऽ	ऽ	को	हु	ऽ	हे	ऽ	ऽ _३	र	ऽ _४	त

म	प	-	रीं	सां	-	रीं	रीं	नि	ध	प	-
ब	न	५	ब	न	५	फि	र	५	त	है	५
प											
म	प	रीं	सां	रीं	नि	प	नि				
गै	५	५	५	५	यां	५, १	बी				

गांधारी-धमार (विलंबित)

स्थायी.

प
नि ध प
का ५ ५

ध	म	प	ध	म	ग	-	री	म	म	प	प	-	-
५	५	न्ह	जु	का	५	५	५	५	न	सु	नी	५	५
नि				म	ग	री	-	सा	-	ग	री	-	सा
ध	-	प	ध	प	-	ग	री	-	सा	-	ग	री	-
आं	५	ख	न	दे	५	५	५	५	खी	५	हो	५	री
नि	नि			म	ग	-	री	-	सा	-	प	नि	ध
सा	ध	प	ध	ग	-	-	री	-	सा	-	प	नि	ध
ऐ	सी	बा	रा	जो	५	५	५	५	री	५	का	५	५

अंतरा.

प	म	प	-	नि	-	-	नि	सां	सां	-	सां	नि	सां	सां	-
अ	प	ऽ	ने	ऽ	ऽ	२	री	अ	प	ऽ	ने	ऽ	मं	ऽ	
×								०			३				
सां	गं	गं	-	रीं	-	सां	-	सां	सां	रीं	नि	धु	-	प	-
द	र	ऽ	सें	ऽ	ऽ	२	ऽ	नि	क	ऽ	सी	ऽ	ऽ	ऽ	
×								०			३				
म	प	गं	रीं	-	-	सां	सां	-	रीं	नि	धु	-	प	धु	
प	गं	-	रीं	-	-	सां	सां	-	रीं	धु	-	प	धु		
को	ई	ऽ	सां	ऽ	ऽ	२	व	री	ऽ	ऽ	को	ऽ	ई	ऽ	
×								०			३				
म	प	म	ग	री	-	सा	-								
प	म	ग	री	-	सा	-									
गो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	२	ऽ								
×															

गांधारी-धमार (विलंबित)

स्थायी.

											म	री	म	-	
											हो	ऽ	ऽ		
											०				
प	-	प	-	नि	धु	-	-	प	-	-	प	धु	म	-	
री	ऽ	में	ऽ	कै	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	२	क	र	त	ऽ	
३				×							०				

प - ध ध	म	ग - - री -	सा -	सा नि	री ध -
३ ३ च तु	रा	३ ३ ३ ३	ई	३	स खी ३
	म		म	ग	
सा - सा -	री	म प ध -	ग	ग	री - सा
मो ३ री ३	गे	३ ३ ३ ३	द	चु	रा ३ ई
३	×		२		०

अंतरा.

प	नि	नि	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां
म प - ध -	ध	-	सां	सां	-	नि	सां	सां	सां
ल ख ३ ली ३	नी	३	मु	स	३	का	३	व	त
×	२		०			३			
नि	सां - रीं	गं	रीं	रीं	सां - रीं	नि	ध	प	प ध
ध	सां	रीं	गं	रीं	सां	रीं	ध	प	प ध
का ३ ३ ये ३	अं	गि	या	३	३	मा	३	ये	दु
×	२		०			३			
प	ग - - री -	सा	-						
ग	- - री -	सा	-						
रा ३ ३ ३ ३	ई	३							
×	२								

गांधारी-धमार (विलंबित)

स्थायी.

म

मा

प	नि	म	सा	प	नि
नि ध प	ग - - री म	प -	ध -	प	प
र त पि च	का ३ ३ ३ ३	री ३	दै ३	या	या
३	×	२	०		

प	ध	म	पध	मप	म	ग	-	-	री	-	सा	प	म	ग	-	री
छि	प	छिऽ	पऽ	इया	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	बिऽ	हा	ऽ	री			
३				×					२		०					
					म	ग										
	-	साम	पनि	पधमप		ग										
	ऽ	ऽमा	रत	पिऽचऽ		का										
	३															

अंतरा.

प	म	प	-	ध	-	नि	ध	प	सां	-	नि	सां	सां	-	
	ज	मू	ऽ	ना	ऽ	ज	ल	भ	र	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	
	x					२		०			३				
प	सां	-	सां	ध	प	सां	गं	रीं	-	-	सां	नि	सां	ध	प
	जा	ऽ	त	थी	ऽ	वी	ऽ	चे	ऽ	ऽ	मि	ऽ	ले	ऽ	
	x					२		०			३				
ध	प	ध	म	म	प	पध	मप	ग	-	री	-	साम	पनि	पधमप	
	मो	ऽ	हे	कुं	व	रऽ	कऽ	न्हा	ऽ	ई।	ऽ	ऽमा	रत	पिऽचऽ	
	x					३		०				३			

राग देवगांधार



आसावर्याः स्वरेभ्यः प्रभवति रुचिरो देवगांधाररागः ।
प्रारोहे वर्ज्यतोक्ता ध्रुवमेह रिधयोः पूर्णता चावरोहे ॥
पूर्वांगे सा धनाश्रीः प्रविलसति सदाऽऽसावरी चोत्तरांगे ।
संवादी पंचमोऽंशः स इह सुमधुरं गीयते संगवे हि ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ३५ ॥

मपौ धपौ सनी सरी सनिधपा मपौ निधौ ।
पमौ पगौ पगरिसा देवगांधारकोऽंशधः ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १८३ ॥

आसावरिके मेलमें चढतन रिध सुर पेखि ।
धग बादी संबादितें देवगांधार सुदेखि ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ३४ ॥

देवगांधाराचे दोन प्रकार आहेत. ते दोन्ही आसावरी थाटांतलेच आहेत. एकांत आरोहांत ऋषभ व धैवत हे स्वर वर्ज्य आहेत व वादी धैवत आणि संवादी गांधार आहे. गाण्याचा वेळ सकाळचा आहे. पूर्वांगांत धनाश्री व उत्तरांगांत जौनपूरी असते.

देवगांधाराच्या दुसऱ्या प्रकारांत दोन गांधार घेतले जातात. त्यांतहि वादी धैवत आहे. शुद्धगांधार आरोहांत “ सारेग, म ” अशा रीतीने घेतला जातो. बाकी जौनपूरीसारखा असतो, याला संस्कृत ग्रंथांचा आधार नाही. पण प्रचारांत तो जास्ती आहे.

३३४

ओडव संपूर्ण प्रकार.

उठाव.

मप, ध॒म, सां, नि॒सां, रे॒सां, नि॒ध॒प, मप॒ग, प॒ग, रेसा ।

चलन.

मम, प, ध॒प, सां, सां, नि॒सां, नि॒नि॒सां, रे॒सां, नि॒ध, प,
ध॒प, ग॒मप, रे॒सां, नि॒ध॒प, ध॒प, ग, रे, सा ।

दोन्ही गांधार घेणारा प्रकार.

ध॒म, प॒नि॒ध, प, ध॒मप॒ग, रे, ^मप॒प॒ग, रे, ^{सा}ग॒सा, नि॒सा,
^{सा}सारेग म, प॒ग, रे, ग॒सा ।

देवगांधार—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

म -	नि	प ध -	प सां	सां सां सां	नि -	सां सां रीं	सां -	नि	ध - प
दे ऽ	व गां ऽ	धा ऽ	र स ब	मा ऽ	न त गु	नी ऽ	ज ऽ	न	
म	म	०	३	×	म	०	३		
नि प	ग - म	प -	रीं - सां	नि प	ग म प	म ग	री - सा		
अ सा	व ऽ रि	को ऽ	मे ऽ ल	रि ध	त ज त	अ नु	लो ऽ म।		
×	२	०	३	×	२	०	३		

अंतरा.

म प	नि	ध प प	सां -	सां - सां	नि -	सां - सां	रीं सां	ध - प
धै ऽ	व त क	रे ऽ	बा ऽ दि	गां ऽ	धा ऽ र	स म	बा ऽ दि	
म	म	०	३	×	२	०	३	
गं -	गं गं -	रीं सां	रीं सां	सां सां	नि प	ग म प	ग म	ग री सा
रा ऽ	ग ल ऽ	छ न च	त र	मा ऽ	न त पु	र न	बिलु म।	
×	२	०	३	×	२	०	३	

देवगांधार—एकताल (विलंबित)

(दोन्ही गांधार घेणारा प्रकार)

स्थायी.

प	ध	म	प	पनि	नि	ध	प -	ध	म	प	प
रे	३	३	३	नके	जा	३	गे	३	आ	३	३
प	पप	म	सा	री म	म	सा	री	ग	सा	निसा	-
मप	धधपमप	ग	री	पप	ग	-	री	ग	सा	निसा	-
पि	यऽरऽऽ	वा	३	मो	रे	३	घ	३	र	३	३
३		३		×				२			

सा	री	सा	सारी	म	म	म	गम	मम	ग	-	सा
री	नि	सा	सारी	ग	म	म	गम	पप	ग	-	री
रा	३	३	ते	मा	३	ते	३३	३३	३	३	३
		४		×		०		२		०	
ग	सा	प	निसा मपनि								
३	३	४	रे, नके								

अंतरा.

प	म	नि	सां	सां	सां	रीं	सां	सां	सां
म	पप	धु	नि	सां	नि	सां	सां	नि	नि
पे	३	पा	ग	के	३३	३	लट	प	टे
		४		×		०		२	
नि	सां	रीं	सां	सां	सां	रीं	नि	ध	प
ध	सां	३	अ	ल	सा	३	३	३	ने
नै	३	४	×	×		०	२	०	३
पपमग	म	प	धु	धु	सां	सां	मम	म	सा
बा	३	ते	क	र	त	मो	सें	ल	जा
३		४		×		०		२	
ग	सा	प	मपनि						
३	ते।	४	रेनके						

देवगांधार-एकताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा	री	म	प	म	-	नि	ध	प	-	ध	म
ला	डी	५	५	ल	५	ब	ना	५	५	ब	न
०		३		४		×		०		२	
धप	मप	ग	-	सा	-	प	ग	-	री	सा	-
(आ५)	(५५)	या	५	सो	५	मो	रे	५	५	५	५
०		३		४		×		०		२	
नि	सा	री	ध	-	सा	नि	सा	सा	-	री	ग
५	५	ध	र	५	५	नी	५	कि	५	स	मा
०		३		४		×		०		२	
रिग	म	म	-	म	प	म	मप	-	ग	री	सा
(५५)	ध	न	५	स	५	मा	(५५)	०	धि	मि	ल
०		३		४		×				२	
री	-	सा	-	सा	सा	म	री	री	सा	सा	-
बै	५	ठे	५	सु	भ	५	५	घ	५	री	५।
०		३		४		×		०		२	
सा	-	सारी	ग	म	-	प	म	प	ग	री	सा
सु	५	(भ५)	५	५	५	५	५	दि	५	न	५।
०		३		४		×		०		२	

अंतरा.

म	म	प	प	नि	ध	ध	सां	-	नि	सां	सां	सां
आ	वो	गा	वो	ना	चो	५	५	५	५	५	स	ब
०		३		४		×		०		२		

नि	ध	सां	-	रीं	मं	गुं	रीं	सां	नि	ध	ध	प
सं	ग	की	५	५	५	स	हे	५	५	लि	या	
०		३		४		×		०		२		
प	प	म	-	प	प	ग	-	री	-	सा	री	
इ	स	५	५	ब	न	री	५	को	५	रि	झा	
०		३		४		×		०		२		
-	सा	सा	सां	नि	ध	म	प	प	ग	री	सा	
५	वो	छी	५	न	५	५	५	छि	न	५	डा	
०		३		४		×		०		२		

राग खट.



निसौ गमौ पधौ पमौ पधपसा निधौ पमौ ।
पगौ मनी धपमपा गमौ गरी पुनश्च सः ।
षट्ठागो मिश्रमेलोत्थो धैवतांशोऽपि संगवे ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १८७ ॥

आसावर्याः स्वरेभ्यो ध्रुवमजनि खटो मिश्ररागोऽयमुक्तो ।
धांशो गांधारमंत्री प्रकृतिचपलको मग्नः पंचमांतः ॥
पूर्वांगे भैरवोऽस्य प्रविलसति सदाऽऽसावरी चोत्तरांगे ।
गायंत्येनं हि सर्वे सुकुशलमतयः संगवे श्राव्यकंठाः ॥

रागकल्पद्रुमांकुरे ॥ ३६ ॥

धग बादीसंवादि है मिले जहां खट राग ।
गावत गुनियनका बिकट है प्रसिद्ध खट राग ॥

रागचंद्रिकासार ॥ ३५ ॥

खटराग आसावरी थाटांतून उत्पन्न होतो. आरोहावरोहांत हा संपूर्ण आहे. ह्याचा वादी स्वर धैवत व संवादी गांधार आहे. गाण्याची वेळ दिवसाचा दुसरा प्रहर आहे. कोणी ह्यांत पंचम वादी मानतात; व गांधारावर उठाव करून, पंचमावर मुक्काम करितात. हा चपलप्रकृति आहे. व गमकांनी युक्त आहे. कोणी हा भैरव थाटांत घालतात. सहा (षट्=खट) राग मिळून हा राग बनलेला आहे असेहि कित्येक म्हणतात. ह्यांत दोन्ही ऋषभ,

दोन्ही गांधार व दोन्ही धैवत लगतात. खटरागांत धैवत व गांधार आन्दोलित असतात. जुन्या ग्रंथांत हा राग वर्णिलेला आढळतो.

चलन, एक प्रकार.

म नि नि नि प
रेनि॒साग॒म, प, ध॒ध॒सां, नि॒प, प॒ग, म, प॒नि॒ध॒प, प, प॒ग
ग
म, म, प॒ध॒नि॒ध॒प॒ग॒म॒ग॒रे॒सा ।

दुसरा प्रकार.

म नि नि म
रेनि॒सा, ग॒, म, प, प, प, ध॒ध॒, प, सां, ध॒, प, ग, म,
म म
नि॒ध॒, प, ध॒प, ग, म, प, ग॒म॒रे॒सा ।

स्थायी.

सा	नि	सा	म	प	-	प	नि	प
प्र	थ	म	सु	ठ	ऽ	ठ	न	ठ
नि	-	नि	नि	सां	सां	सां	नि	प
ध	ऽ	ध	ध	नि	ऽ	ध	ध	ऽ
भै	म	र	वी	को	क	रे	रे	ऽ
म	म	नि	-	नि	म	ग	म	म
ग	ऽ	ध	ऽ	ध	प	नी	ऽ	सों
दो	म	नो	ऽ	ध	ग	नी	ऽ	सां
म	म	नि	ध	प	म	ग	री	सा
ग	ऽ	ध	ध	प	ग	म	च	रे।
रू	ऽ	प	अ	नु	म	बि	च	

अंतरा.

म	प	प	नि	-	नि	सां	सां	सां	सां
बा	ऽ	दि	धै	ऽ	व	त	म	धु	र
नि ^x	नि	नि	नि	सां	रीं	सां	सां	नि	प
ध	ध	ध	नि	र	भा	ऽ	त	ध	हे
स	म	य	प	म	प	ध	नि	सां	सां
सां ^x	सां	सां	ध	ट	शु	भ	नि	य	त
नि	नि	नि	ख						
मु ^x	र	त							

रीं	सां	नि	ध	म	प	ध	नि	सां	सां
च x	तु	र २	अ	भि	म ०	त	उ ३	च	रे।
नि	ध	प	ग	म	प	-	प	ध	प
प्र x	थ	म २	सु	ध	ठा ०	ऽ	ठ ३	न	ठा।

खट-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

म	म	म	म	प	प	सां	नि								
प -	ग	ग	ग	प	प	सां	ध	ध	नि	प					
का	ऽ	न्ह	र	का	ऽ	रो	ऽ	नं	ऽ	द	दु	ला	ऽ	ऽ	रो
३				×				२				०			
म	म	नि	म	म	म	री	सा	री							
प -	प	ग	म	ध	प -	प	ग	म	प	म	री	री	सा		
मो	ऽ	ने	ऽ	न	नि	को	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रो	री।
३				×				२				०			
नि	म	मारी	निसा	री	म										
का	ऽ	ऽ	न्ह	र											
३															

अंतरा.

प	नि	सां	सां	सां	नि	सां	रीं	सां	नि	ध	नि	प			
म	प	ध	नि	सां -	सां -	नि	सां	रीं	सां	ध	नि	प			
प्रा	ऽ	ण	पि	या	ऽ	रो	ऽ	ज	न	उ	जि	या	ऽ	ऽ	रो
३				x				२				०			

म	प	ध	नि	म	री	सा
प - ग म	प - ध सां	प मग म प	म री री सा			
मो ऽ ह न	मी ऽ त ह	मा ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रो री			
३	×	२	०			
म						
सा - ग म						
का ऽ न्ह र						
३						

खट-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

म	म	म	प	नि	नि	ध	प
प - ग ग	ग प प प	ध ध नि प	सां ध नि प				
ए ऽ री ऽ	आ ऽ ज स	खी ऽ ब न	तें ऽ ब ने				
३	×	२	०				
प	म	म	प	मम	म	री	सा
नि प ग ग	म नि प -	गग म निम प	म री सा -				
आ व त गा	व त श्या ऽ	मऽ स खाऽ ऽ	ग न मे ऽ।				
३	×	२	०				
सा	म	म					
रीनि सा ग ग							
एऽ ऽ री ऽ							
३							

अंतरा.

प	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि
म प ध ध	सां सां सां सां	नि सां रीं सां	नि सां ध निप				
ग ति गुं ऽ	ज त अ मि	त ग थं ऽ	द हु की ऽ				
३	×	२	०				

सां सां सां - ^ध प ध नि सां रीं सां नि - ^ध प ध नि सां
ल खि को ऽ न र हे ऽ अ प ने ऽ म न में ऽ।
३ x २ ०

खट-एकताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा	री	म	म	म	म	नि	नि	प	प	नि	प
री	नि	सा	ग	ग	री	प	प	ध	ध	नि	प
उ	ठो	ऽ	प्या	ऽ	भो	ऽ	र	भ	ई	ऽ	ऽ
नि	नि	नि	नि	सां	सां	नि	नि	ध	ध	नि	प
ध	ध	ध	ध	सां	हीं	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हिं
ज	ग	त	कां	नि	प	मग	म	म	-	म	म
म	म	निध	ध	नि	प	ना	ऽ	व	ऽ	त	त
ग	ब	ऽ	की	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	नि	नि	नि	नि	प	मग	म	री	-	सा	सा
म	ध	ध	ध	नि	प	प्रा	ऽ	प्या	ऽ	रि	रि
तो	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ण	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा.

म	प	-	नि ध	नि ध	नि ध	ध सां	-	-	सां नि	सां	सां
ह	ग	ऽ	खो	ऽ	ले	वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ख

नि	नि	नि	सां	-	सां	सां	रीं	सां	नि	नि	प
ध	ध	ध	सां	२	छि	व	न	३	ला	४	गि
धू	५	५	प	२	छि	व	न	३	ला	४	गि
सां	सां	सां	नि	-	म	प	ध	सां	सां	सां	सां
नि	नि	नि	ध	२	मि	ले	५	३	औ	४	र
पौं	५	५	छी	२	मि	ले	५	३	औ	४	र
सां	सां	सां	सां	-	म	प	ध	नि	सां	सां	सां
नि	नि	नि	नि	ध	म	प	ध	नि	सां	सां	सां
च	क	५	वा	२	च	क	५	३	वि	४	वि।

खट-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा		री	री		म	म	
म	-	म	म	प	-	प	-
आ	५	ज	बि	रा	५	ज	की
नि	नि	नि	नि	ध	सां	नि	प
ध	ध	ध	ध	-	सां	सां	ध
स	र	स	सूं	बा	५	स	की
ग		नि		नि	-	प	म
म	ग	म	ध	ध	-	प	म
ब	द	न	छ	चं	५	द	ल
प		नि		म	ग	म	री
ग	म	ध	प	-	ग	म	सा
म	द	न	ला	५	जे	५	५।

नि ध चौं x	नि ध S	नि ध द २	नि ध सा	नि ध S	सां ध नौं ०	सां S	सां S	नि ध नि प र
प ग मो x	म S	नि ध हे	नि ध S	प S	प कै ०	म S	म S	मम गग सेS ब
ग म ना x	नि S	ध य २	प ली	मप S	म गम नोS ०	प S	री म S	सा री सा S

अंतरा.

प म अ x	प प	नि ध ने २	नि ध S	नि ध बि	ध सां र ०	सां S	सां S	- S	- S
नि ध जा x	नि ध S	नि ध न २	सां स	सां ब	रीं को ०	सां S	नि सां य ३	नि ध ही S	प S
सां नि कि x	सां नि र्पा	सां नि S	ध क	म र	ध प मो ०	ध S	नि हे ३	सां S	सां ये S
सां नि रा x	सां नि S	सां नि ग २	सां नि दि	सां नि S	ध प नो ०	ध S	नि S	नि सां सां S	S

खट-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा	री	सा	म	म	प	-	नि	प	-
री	नि	ग	ग	ग	थे	ऽ	ध	रे	ऽ
मु	कु	ट	मा	ऽ	०		ध	रे	ऽ
नि	नि	नि	नि	नि	सां	सां	नि	प	
ध	ध	ध	ध	ध	द	न	प	रे	ऽ
खो	ऽ	र	चं	ऽ	०		३		
म	म	नि	नि		प	-	प	म	ग
ग	ग	प	ध	ध	क्ता	ऽ	ग	रे	ऽ
मा	ऽ	ल	मू	ऽ	०		३		
म		नि	म	म	म	ग	ग	री	- सा
ग	म	ध	प	प	ग	ग	३	ऽ	ऽ
के	ऽ	ण	हे	ऽ	रे	ऽ	३	ऽ	ऽ
३		२			०				

अंतरा.

सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	-
नि	नि	नि	सां	सां	नि	नि	सां	सां	ऽ
पी	ऽ	त	प	ट	क	ट	क	से	ऽ
नि	नि	नि	ध	नि	रीं	सां	नि	ध	प
ध	ध	ध	न	कूं	ड	ल	सां	से	ऽ
क	र	२		ऽ	०		३		

सां	सां	सां	सां	-	प	ध	सां	सां	सां
नि	नि	नि	नि		प	ध	नि	नि	सां
नि	स	दि	ना	ऽ	उ	र	ब	से	ऽ
x		२			०		३		
रीं	सां	नि	नि	म	प	ध	सां	सां	सां
प्रे	ऽ	सां	ध	ऽ	रे	ऽ	नि	नि	ऽ
x		२	हे	ऽ	०		३	ऽ	ऽ

खट-क्षपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा		म		प		म	म	म
रीनि	सा	सा	ग	म	म	प	प	प
राऽ	ऽ	व	रे	ऽ	नौ	ऽ	द	छ
x		२			०		३	ल
प								
म	प	प	प	-	सां	-	नि	ध
छं	ऽ	द	की	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ऽ
x		२			०		३	
म		नि						
ग	म	ध	-	प	ध	प	म	ग
मो	ऽ	सो	ऽ	अ	ब	द	ब	द
x		२			०		३	ऽ
ग								
म	नि	ध	प	प	म	ग	म	री
बि	ल	म	ऽ	र	हे	ऽ	ऽ	ऽ
x		२			०		३	ऽ

अंतरा.

प		नि		सां				
म	प	प ध -	नि	सां	सां	सां	-	
रा	ऽ	त की ऽ	बा	ऽ	त	हं	ऽ	
x		२	०		३			
नि			सां		नि			
ध	-	नि सां ग	रीं	सां	सां ध	प		
जा	ऽ	न ऽ ग	ई	ऽ	हं	ऽ	ऽ	
x		२	०		३			
सां	सां	ध म म	प	ध	सां	नि	सां	-
नि	नि	जा ऽ सो	ऽ	त	के	ऽ	ऽ	
कु	ब	२	०		३			
x		सां सां सां	ध		नि			
रीं	सां	नि नि नि	प	ध	नि सां सां			
पा	ऽ	ये ऽ प	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।	
x		२	०		३			
नि	ध	म ग म						
रा	ऽ	व रे ऽ						
x		२						

खट-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

प	-	प ग ग	ग	प	प	प	प
आ	ऽ	ज नं द ला	ऽ	ल	मु	ख	
x		२	०	३			

नि	नि	नि	नि	-	सां	सां	सां	नि	ध	प
ध	ध	ध	ध	५	न	न	नि	र	ख	
चौं	५	द	नै	५	०		३			
म		म	नि	ध	प	प	म	म		
ग	म	नि	ध	प	प	प	ग	ग		
प	र	म	मं	५	ग	ल	भ	यो	५	
५		२			०		३			
म		नि	ध	प	-	म	ग	सा		
ग	म	ध	प	-	गम	प	म	री	सा	
भु	व	न	मे	५	रे	५	५	५	५	
५		२			०		३			
सा		म	म	म						
रीनि	सा	ग	ग	ग						
आ	५	ज	नं	द						
५		२								

अंतरा.

प		नि			सां	-	सां	सां	-
म	प	ध	-	५	द	५	प	ला	५
को	५	टि	कं	५	०		३		
नि	नि	नि	सां	-	रीं	सां	नि	ध	प
ध	ध	ध	सां	-	५	५	त्र	क	रि
व	५	ण्य	ए	५	क	५	३		
५		२			०				
सां	सां	सां	ध	म	प	ध	नि	सां	सां
नि	नि	नि	ध	म	प	ध	नि	सां	सां
वा	५	रौं	५	त	ब	हि	ज	न	हि
५		२			०		३		

[illegible]

संचारी.

म	म	म	म	म	प	प	प	प	प
स	क	ल	सु	ख	स	द	न	ह	र
×		२			०		३		
नि	नि	नि	नि	नि	सां	-	सां	नि	प
ध	ध	ध	ध	ध	गो	ऽ	ध	ध	र
खि	त	ब	द	न	०		प	व	
×		२					३		
म	म	नि	नि	प	प	म	प	म	ग
ग	ब	ध	ध	ल	म	द	न	ज	तो
प्र		ल	द		०		३		
×		२							
म	म	नि	प	म	प	म	म	-	सा
ग	ऽ	ध	हे	ऽ	ग	ऽ	री	ऽ	ऽ
सं		ग			रे		३		
×		२			०				
म	म	नि	प	प	पध	पम	म	ग	म
ग	ग	ध	ध	ल	(मऽ)	(दऽ)	प	ग	म
प्र	ब	ल	द		(मऽ)	(दऽ)	न	ज	तो
×		२					३		

म	ग	म	नि	प	-	म	ग	म	ग	री	-	सा
	सं	ऽ	ग	हे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ ।
	x		२			०		३				

आभोग.

प	म	प	नि	ध	-	ध	सां	-	सां	-	सां
	क	हो	को	ऽ	उं	कै	ऽ	सें	ऽ	हु	
नि ^x		नि	नि	ध	सां	सां	रीं	सां	सां	नि	ध
	ध	ध	हिं	सु	ध	बु	ध	र	हे	ऽ	
सां ^x	ना	ऽ	हिं	सु	ध	बु	ध	र	हे	ऽ	
सां	नि	सां	ध	-	म	प	ध	नि	सां	सां	
	ग	दा	ध	ऽ	र	मी	ऽ	श्र	गि	रि	
सां ^x	नि	सां	नि	ध	म	प	ध	नि	सां	सां	
	ध	र	न	ठे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ ।	
नि ^x	ध	नि	प								
	आ	ऽ	ज								
सां ^x											

स्थायी.

नि	सा	म	प	प	प	प	प
सा	नि	ग	र	त	ल	ख	ख
न	ख	प	र	ध	नि	प	प
नि	नि	नि	ध	सां	सां	सां	ध
ध	ध	प	र	जु	ग	न	प
कुं	ऽ	म	नि	ध	प	प	ग
गं	म	प	र	ह	स	त	ग
च	ल	न	ध	ग	म	री	सा
ग	म	नि	प	ग	म	ऽ	ऽ
ग	त	बि	सा	रो	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा.

म		नि	नि	सां					
प	-	प	ध	ध	नि	सां	सां	सां	सां
जाँ ^x	S	घ	प	र	क०	द	लु ^उ	ल	ख
नि ^३	नि	नि	सां	सां	रीं	सां	नि ^३ सां	नि ^३ ध	प
धाँ ^x	S	क	प	र	के०	S	हु ^उ	री	S
सां ^३	सां	सां	सां	सां	ध				
नि	नि	नि	नि	नि	प	ध	नि	सां	सां
कु ^३	च	न	की	S	उ	च	न	प	र

रीं	सां	सां	नि	-	प	ध	सां	नि	सां	-
स _x	ब	सुं _२	धा	ऽ	रो _०	ऽ	ऽ _३	ऽ	ऽ	ऽ।

संचारी.

ग	म	-	म	म	म	म	प	प	प	प
कं	ऽ	ठ	ग	लं	कं	ऽ	ठ	प	र	
नि _x	नि	नि	नि	नि	ध	सां	-	सां	ध	प
ध	ध	ध	ध	ध	सां	-	सां	ध	प	
कं	ऽ	ठ	ग	ल	कं	ऽ	ठ	प	र	
नि _x	नि	ध	प	प	प	म	री	री	ग	म
प	ध	प	प	प	म	ग	री	री	ग	म
ह	ग	न	प	र	मृ	ग	न	ख	ऽ	
नि _x	प	प	ग	म	मग	मग	री	-	सा	
ध	प	प	ग	म	मग	मग	री	-	सा	
ज	न	बि	सा	ऽ	रोऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
नि _x	न	बि	सा	ऽ	रोऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

आभोग.

नि	नि	नि	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां
ध	ध	ध	ध	ध	नि	सां	सां	सां	सां
बे	ऽ	द	गु	रु	ब	ऽ	ह	गु	रु
नि	ध	नि	सां	सां	रीं	सां	सां	सां	सां
दा	ऽ	स	गु	रु	छ	ब	न	प	र
नि _x	न	बि	सा	ऽ	रोऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ

सां नि	सां नि	सां नि	ध	म	प	ध	नि	सां	सां
रा x	ऽ	धि २	का	ऽ	ब ०	द	न ३	प	र
रीं	सां	सां	नि सां	-	प ध	ध	नि	सां	सां नि
चौं x	ऽ	द २	वा	ऽ	रो ०	ऽ	ऽ ३	ऽ	ऽ।

खट-धमार (विलंबित)

स्थायी.

सा	म	म							
नि	सा	ग	ग	-	,	म	प	-	-
कौ x	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	खे	ले ०	ऽ	ऽ
नि	नि	नि	नि	नि	ध	सां	सां	-	-
ध	ध	ध	ध	ध	,	सां	सां	-	-
हो x	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	क	न्है ०	ऽ	ऽ
प	नि	ध	ध	प	म	म	प	ग	म
स	ग	दि	न	र	ना २	रि	य	न	ऽ
प	ध	नि	ध	म	ग	-	री	-	-
क x	र	त	ची	ऽ	र २	ऽ	फा	ऽ	ऽ

अंतरा.

म	प	-	नि ध ध	,	ध	सां सां -	नि सां सां सां
क	र	ऽ	ग ह	ऽ _२	त	औ र	ऽ _३ ऽ मुख
नि	ध	ध	- सां -	रें	सां	गं रें सां	सां सां नि ध प
मीं	ड	ऽ	त	ऽ	लि	प	टो ऽ री ऽ।
x					२	०	३

खट-धमार (विलंबित)

स्थायी.

मम	गग	म	प - - प -	प	म	नि ध सां निध
ऽ _३	तेऽ	रो	का ऽ ऽ न ऽ	मा	न	त ना ऽऽ
नि	पम	प म	म नि ध ध प	नि	प	प ग म
ऽ _३	ऽऽ	हीं	मो ऽ ऽ सों ऽ	क	र	त ऽ ऽ
म	नि	ध प -	प म ग म ग	री	सा	गं री सा
है	ऽ	ऽ	जो ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ _२	ऽ	ऽ ऽ री।
३			x		०	
री	मम	सा गग	म			
नि	सा	गग	म			
ए	ऽ	तेऽ	रो			
३						

अंतरा.

प	म	नि	नि	सां	-	-	सां	-	सां	नि	सां	सां	-
म	प	प	ध	ध	सां	-	-	सां	-	नि	सां	सां	-
बा	५	५	ट	५	घा	५	५	ट	५	५	५	में	५
सां	सां	सां	सां	सां	सां	-	सां	-	सां	नि	सां	सां	-
रीसां	गुरी	रीसां	री	नि	सां	-	नि	सां	-	नि	ध	प	-
प५	क५	र५	ले	५	५	५	५	५	५	त	५	५	५
म	नि	ध	प	-	-	प	प	प	-	नि	नि	ध	ध
बै	५	५	यां	५	५	प	क	र	५	त	जो	५	५
नि	नि	नि	ध	प	म	ग	मग	री	सा	नि	सा	गग	म
५	५	५	५	५	५	५	५५	री	५।	ए	५	ते	रो

खट-तोडी-एकताल (विलंबित)

स्थायी.

ग	ग	ग	री	री	सा	री	म	म	प	-	प
धे	ते	ते	धे	ते	ले	द्रे	५	ना	द्रे	५	ना
प	प	-	प	ध	नि	नि	ध	-	नि	प	-
त	द्रे	५	ना	५	त	द	रा	५	द	रा	५

प	प	प	प	ध	म	म	म	प	सां	सां	सां
य	ली	य	ला	लौ	ऽ	य	ली	य	ला	लौ	ऽ
०		३		४		×		०		२	
नि	प	म	ग	म	प	ग	ग	-	री	-	सा
य	ला	ली	य	ला	ली	य	ला	ऽ	या	ऽ	ल।
०		३		४		×		०		२	

अंतरा.

प	प	प	ध	ध	ध	नि	सां	सां	सां	सां	-
उ	द	त	न	द	न	त	द्वी	ऽ	या	दीं	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ध	ध	-	नि	सांरी	गं	रीं	रीं	सां	नि	ध	प
त	नुं	ऽ	ऽ	नां	म्	त	न	न	दे	रे	ना
×		०		२		०		३		४	
ध	नि	ध	प	-	ध	म	म	ग	री	-	सा
ता	ऽ	रे	ना	ऽ	रे	ता	ऽ	रे	दा	ऽ	नी
×		०		२		०		३		४	
ध	प	म	ग	री	सा	ध	ऽ	ऽ	ग	ऽ	म
×		०		२		०		३		४	
ध	ऽ	ऽ	ऽ	सां	ऽ	गं	गं	रीं	सां	ऽ	रीं
×		०		२		०		३		४	
ध	ऽ	ऽ	ऽ	प	म	ग	म	प	ध	नि	नि
×		०		२		०		३		४	
ध	प	म	ग	री	सा						
×		०		२							

राग जंगला.

हा एक धुनवजा राग आपलेकडील गायक गात असतात. यांत टुमरी, टप्पा, गझल वगैरे गीते बहुधा असतात. यांत दोन्ही भैवत लागतात. याचें साधारण स्वरूप असें आहे.

गरेगसा, रेम, प, धनिध, प, ध, मप, रेगरेसा, रेम, प,
धनिध, प । म, पनिसां, सां, निसारेंगें, सां,
निसां, ध, प, ध, ध, निसां, धनि, पनि
धप, धम, प, गरेगसा, रेम, प,
धनिध, प ।

दुसरा एक भैरव थाटांतून उत्पन्न होणारा “जंगूला” नांवाचा ऐकण्यांत येतो. तो अंगदीच अप्रसिद्ध आहे. व त्यचिं लक्षण उपलब्ध नाही. त्या रागाचें म्हणून आलेलें एक गीत मागें क्रमिक पांचव्या पुस्तकांत भैरव थाटांत दिलें गेलें आहे.

जंगला-दीपचंदी (मध्यलय)

स्थायी.

म - प प	नि	ध - -	प - ध प	म - -
शं ३ ऽ क र	धू	३ ३	म ३ ३ म	चा ३ ३
प - प नि	प	नि ध -	म म	ग सा -
ई ३ ऽ हे री	ए	री ३	आ ३ जे ३	३ ३ ३
री म प प	नि	ध - -	प - ध प	म - -
शं ३ ऽ क र	धू	३ ३	म ३ ३ म	चा ३ ३
प - म -	ग म -	म म ग म	प प प	
ई ३ ऽ ३ ३	३ ३ ३	मो ३ हे त क	मा ३ र ग	
प - ध ध	ध ध -	ध ध प प	प ध म	
यो ३ ऽ पि च	का ३ री ३	भि ३ ज ग ई	सा ३ री	
म म प नि	प	नि ध -	म म गरी	ग सा -
सु ३ ध ना ३	आ ३ ई ३	आ ३ जे ३ ३	३ ३ ३।	

अंतरा.

म म ग म	प ध -	प - - प	सां - -
रं ३ ग छि र	क ३ त ३	है ३ ३ अ	चा ३ ३

- - रीं सां	नि ध -	पध नि सां सां नि नि ध	प म	ध प प म ग
ऽ ऽ न क	मो ऽ ऽ	पै ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
	×	र	०	
म - प -	नि ध - -	प - प ध	म - -	
ना ऽ मा ऽ	ने ऽ ऽ	ऽ ऽ गि रि	रा ऽ ऽ	
	×	र	०	
प - प नि	नि ध -	प - ग री	ग री सा	
ई ऽ हे रि	ए री ऽ	ला ऽ ला ऽ	ऽ ऽ ऽ	
	×	र	०	
री म प -	नि - -	प - प ध	म - -	
ना ऽ मा ऽ	ने ऽ ऽ	ऽ ऽ गि रि	रा ऽ ऽ	
	×	र	०	
प - - ग	म - -	- - - -	म म म	
ई ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	स ज क	
	×	र	०	
ध ध ध ध	नि नि नि	नि ध नि नि	सां सां सां	
र न पि च	का रि ऐ	सी ऽ मो री	भि ज ग	
	×	र	०	
सां - रीं सां	नि सां नि	ध प म -	ध - ध	
ई ऽ त न	सा रि सु	रं ग से ऽ	प्रे ऽ म	
	×	र	०	
ध ध प प	नि - ध	प - प ध	प ध म	
क रे हं स	रं ऽ ग	से ऽ मो हे	ह र क	
	×	र	०	

म	-	प	नि		^प नि	^ध	-		^म प	-	^म ग	री		ग	सा	-
ही	ऽ	ये	ल		गा	ई	ऽ		आ	ऽ	ज	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ।
					x				२					०		

जंगला-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

^ध	-	-	प	-	म	ग	म	-	प	^{नि} ध	-
भू	ऽ	ऽ	प	ऽ	स	खि	री	ऽ	मि	ल	ऽ
		०		२		०		३		४	
प	म	-	^ग री	ग	सा	री	म	-	ध	नि	-
का	हे	ऽ	को	ऽ	क	र	त	ऽ	नि	त	ऽ
x		०		२		०		३		४	
प	सां	नि	^ध प	^ध प	म	^{री} ग	^{सा} री	म	प	-	
इ	त	नो	जो	ऽ	रे	चा	ऽ	ऽ	यो	री	ऽ।
x		०		२		०		३		४	

अंतरा (१).

म	-	ध	-	ध	नि	-	-	नि	सां	-	
ऽ	सा	ऽ	थ	ऽ	स	खी	ऽ	ऽ	मि	ल	ऽ
x		०		२		०		३		४	
ध	-	नि	-	^{नि} सां	नि	^ध	-	प	^ध	प	
ऽ	मं	ऽ	ग	ऽ	ल	गा	ऽ	ऽ	व	ऽ	त
x		०		२		०		३		४	

म	प	म	-	गरी	ग	सा	री	म	-	ध	-	नि
मो	ती	ॐ	य	ॐ	न	चो	ॐ	ॐ	ॐ	क	ॐ	पु
x		ॐ		ॐ	ॐ			ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	
-	धप	ध	प	ध	प	म	ग	री	म	प	-	
ॐ	रा	ॐ	यो	ॐ	र	चा	ॐ	ॐ	ॐ	यो	री	ॐ
x	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

अंतरा (२).

म	म	ध	-	ध	नि	-	-	नि	सां	-
ॐ	ता	न	ॐ	से	ॐ	न	के	ॐ	ॐ	ॐ
x		ॐ			ॐ			ॐ	ॐ	
ॐ	ध	ध	नि	-	सां	नि	ध	-	-	प
ॐ	तु	म	ब	ॐ	हु	ना	ॐ	ॐ	ॐ	क
x		ॐ		ॐ				ॐ	ॐ	
म	प	म	-	री	ग	सा	री	म	म	ध
क	र	ॐ	त	ॐ	ॐ	स्तू	ॐ	ति	गु	न
x		ॐ		ॐ	ॐ			ॐ	ॐ	ॐ
सां	ध	-	प	ध	प	म	ग	री	म	प
ॐ	गा	ॐ	यो	ॐ	र	चा	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
x		ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

राग झीलफ.

आसावरी मेलजन्यो झीलफः श्रूयते जने ।

राग आधुनिको ह्येष संपूर्णो धैवतांशकः ॥ ८७ ॥

जौनपुर्यपि खड्गागो द्वावत्राययवौ मतौ ।

प्रातःकालप्रगेयत्वादुत्तरागं परिस्फुटम् ॥ ८८ ॥

श्रीमल्लश्वसंगीते (द्वि० पृ. १६४)

झीलफ हा एक यावनिक राग हजरत अमीर खुश्रूनी प्रचारांत आणिला. याचे दोन प्रकार आहेत. एक भैरव थाटांतला व दुसरा आसावरी थाटांतला पहिल्या प्रकाराचे वर्णन व त्यांतील चीज मागे क्रमिक पुस्तकमालिकेच्या पांचव्या पुस्तकांत पृ. ३४७ ते ३५१ वर आल्या आहेत तेथे पहाण्या. आसावरी थाटांतला झीलफ हा जौनपुरी व खट यांच्या संयोगाने झालेला आहे. यांत धैवत वादी आहे. व हा प्रातःकाली गाईला जातो.

चलन

नि॒सा, ग, म, प, पम, पध॒नि॒सां, रे॒नि॒सां ध, प, नि॒नि॒सां,
रे॒सांनि॒ध, प, ग॒ग॒पम॒गरे, सा । मप, ध, नि॒सां,
सां, नि॒सां, रे॒सां, नि॒सां, ध॒नि॒प, म॒प॒ग, म,
प, प, रे॒सां, रे॒नि॒सां॒ध॒नि॒प ।

झीलफ-सप्तताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा	नि	सा	ग	म	म	प	प	प	-	प
दिर	दिर	दिर	तो	ऽ	म्ना	दिर	दिर	तो	ऽ	म्ना
ध	प	ध	नि	सां	रीं	नि	सां	ध	-	प
द	रे	न	ता	त	दा	रे	दा	ऽ	न्नि	
सां	नि	सां	सां	-	रीं	सां	नि	ध	प	नि
ता	ऽ	न्ना	ऽ	म्त	न	न	न	न	न	त
ध	प	ग	म	प	म	री	री	-	सा	
न	न	न	न	त	दा	रे	दा	ऽ	न्नि।	

अंतरा.

प	म	प	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां	-
बा	इ	से	ऽ	पो	सी	दा	म	जु	ऽ	
सां	नि	रीं	-	सां	सां	नि	ध	नि	प	
ख	ले	पू	ऽ	सिं	दि	ग	चा	ऽ	स्ति	

म	प	म	ग	म	प	प	प	-	प
गुफ (_x)	त	ई (_२)	ऽ	सग (_०)	गा	ये	गा	ऽ	ये
रीं	सां	नि सां	-	रीं	सां नि	सां	नि	ध	नि
कु (_x)	वे	लै (_२)	ऽ	ला	र (_०)	फते (_०)	बुं (_३)	ऽ	द।

झीलफ-धमार (विलंबित)

स्थायी.

म
ग म
मैं तो

प	प	-	प	प	ध	म	प	नि	-	नि	ध	-	प	-
ऐ	सो	ऽ	रं	ग	औ	र	न	हिं	ऽ	दे	ऽ	खी	ऽ	
_x					_२		_०			_३				
प	म	प	ग	म	पध	प,प	म	ग	म	री	-	सा	-	
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	तो,ऽ	रे	ऽ	ऽ	सं	ऽ	ग	ऽ	
_x					_२	_०	_०			_३				
नि	सा	-	री	ग	-	म	प	म	प	म	-	ग	म	
भू	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	र	ही	ऽ	ऽ	मा	ऽ।	मैं	तो	
_x					_२	_०	_०			_३				

अंतरा.

				प		नि	नि	नि						
				म	प	-	ध	ध	-	ध				
				ह	ज	ऽ	र	त	ऽ	नि				
				०			३							
सां	-	सां	नि सां	सां	-	रीं	सां	-	नि					
जा	ऽ	मो	दी	ऽ	न	ऽ	ओ	ली	ऽ	या	ऽ	के	ऽ	
×				२		०			३					
प						प				ग				
ध	प	म	प	ग	म	म	ध	प	म	प	म	ग	री	सा
घ	र	ऽ	क्रा	ऽ	ऽ	ज	मैं	तो	ऽ	ऽ	रे	ऽ	सं	ग
×				२		०				३				
नि			म							म				
सा	-	-	ग	-	-	म	प	म	प	म	-	ग	म	
भू	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	र	ही	ऽ	ऽ	मा	ऽ	मैं	तो	
×				२		०				३				

झीलफ-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा सा

ह ज

ग	म	म	प	,	म	ग	म	नि				ध	-	-	-	ध	-	-	प
र	त	अ	ली	ऽ	घ	र	आ	नों	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ब				
०				३				×				२							

प ध सां नि	सां - - नि	ध प म ग	म - - -
धा ऽ ऽ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
, ध - ध	प - ध प	म ग ग म	प ध नि सां
ऽ ला ऽ रि	मा ऽ ल नि	यां ऽ फू ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
नि ध प ध	पम प (म) ग	प म ग रे	सा - सा सा
ऽ लों दा ऽ	से ऽ ऽ रा ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ । ह ज
०	३	×	२

अंतरा.

प
चौ

सां	ध नि - नि	सां सां सां -	- - - नि	सां - - ध
ऽ द ऽ त	ब ख में ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ हो
०	३	×	२	
ध नि - सां	रीं सां गं रीं	सां - - नि	ध प - म	
इ रो ऽ ष	ना ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ह	
०	३	×	२	
म ग - म	प - - -	प - - प	- - ध -	
स न ऽ हु	से ऽ ऽ ऽ	न ऽ ऽ ज	ऽ ऽ न ऽ	
०	३	×	२	

धु	प	-	प	प	ध	सां	नि	सां	-	-	नि	ध	प	म	ग
म	ज	ऽ	ब	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
धु	ध	ध	-	पम	प	म	ग	ग	म	प	ध	नि	सां	नि	ध
स	ब	हूं	ऽ	रा	ऽ	मि	ल	मौ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग
०				३				×				२			
प	-	-	धु	पम	प	म	ग	प	म	ग	री	सा	-	सा	सा
ल	ऽ	ऽ	ऽ	गा	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ह	ज
०				३				×				२			



राग गोपिकावसंत (गोपीवसंत).



नट भैरवि रागाख्य मेलाज्जातः सुनामकः ।

गोपीवसंत रागश्च सन्यासं सांशकग्रहं ॥

आरोहेऽप्यवरोहे च रिक्ते वक्रमेव च ॥

सगमपनिधनिस । सनिधमपमगस ।

रागलक्षणं ।

गोपीवसंत हा एक आसावरी थाटांतून उत्पन्न होणारा षाडव प्रकार आहे. यांत ऋषभ वर्ज्य आहे. वक्र स्वरूप आहे. वादी षड्ज आहे. गाण्याचा वेळ सकाळीं आहे. हा दक्षिणेकडील राग आहे.

साधारण चलन

नि नि नि नि नि नि
सा, गमप, गमप, ध, धनिसां, धप, सां, धनिधम, प, ग,
म, गमपनिधसां, मपग, मग, सा ।



स्थायी.

सा	सा	म	म	प	-	प	-	-
नि	ग	ग	म	प	-	प	-	-
दा	ता	ता	बि	धा	ता	ता	ता	ता
नि	नि	नि	सां	नि	सां	नि	प	-
ध	ध	ध	ध	नि	सां	ध	प	-
त्रै	लो	लो	क	ना	ता	था	ता	ता
सां	ध	नि	ध	म	-	प	ग	म
दी	न	ता	दु	नी	ता	के	ता	ता
म	प	नि	सां	म	प	ग	ग	सा
तु	ब	ह	ता	दा	ता	ता	ता	ता

अंतरा.

म	म	नि	नि	सां	सां	सां	-	सां
ग	ऽ	ध	ध	श	र	मे	ऽ	री
ला		ज	ऽ	मं	०	३		
नि	नि	सां	गं	मं	गं	नि	-	प
ध	खि	यो	ऽ	ऽ	ज	ग	मे	ऽ
र		२			०		३	
मं	पं	मं	गं	मं	गं	सां	नि	म
तु	म	बि	न	न	हीं	ऽ	ध	
३		२			०		को	ऊ

प	ध	नि	सां	-	म	प	म	ग	ग	सा
दू	ऽ	जो	ऽ	ऽ	त्रा	ऽ	ता	ऽ	ऽ।	
x		२			०		३			

गोपीवसंत-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

म म
गं ग म
बि ऽ द्या
३

प	-	प	-	प	नि	ध	धनि	प	म	म
दा	ऽ	नी	ऽ	द	या	नि	निऽ	बि	ऽ	द्या
x		२			०			३		
प	-	प	-	प	नि	ध	-	नि	ध	ध
दा	ऽ	नी	ऽ	द	या	ऽ	नी	, ऽ	स	स
x		२			०		३			
नि	सां	नि	ध	प	-	सां	-	नि	ध	ध
र	ऽ	स	ती	ऽ	मा	ऽ	ता	ऽ	म	म
x		२			०		३			
म	-	प	म	म	प	ध	सां	नि	सां	-
हा	ऽ	बां	ऽ	क	बा	ऽ	नी	ऽ	ऽ।	
x		२			०		३			

म	प	म	म	म	ग	सा	म	म	म
सु	र	गुं	ऽ	द	री	ऽ।	बि	ऽ	द्या
x		२			०		३		

अंतरा.

म	म	नि							
ग	ग	म	ध	-	सां	-	सां	सां	सां
दे	ऽ	व	गं	ऽ	ध	ऽ	ब	गु	नि
x		२			०		३		
नि		मं					नि		
ध	नि	सां	गं	मं	गं	सां	ध	-	प
क	र	जौ	ऽ	र	कै	ऽ	ठा	ऽ	डे
x		२			०		३		
मं	पं	गं	गं	मं	गं	सां	नि	-	म
मां	ऽ	ग	ऽ	त	ब	र	दा	ऽ	न
x		२			०		३		
प	ध	सां	सां	-	म	प	म	म	म
जै	ऽ	नि	ऽ	ऽ	क	रि।	ग	ग	द्या
x		२			०		३		

गोपीवसंत-त्रिताल (क्लिप्त)

स्थायी.

ग-सानि	सागमप	- म	प	-	- मप	नि नि नि	नि	-	प	-
एऽऽऽ	काऽऽऽ	ऽ हे	हो	ऽ	ऽ	मो	ऽ	हेम	ना	वो
३	३		x			२			०	

सां नि ध म	म (पम) (गम) - (गसा)	सा नि ध प	नि म नि ध नि सा निसा
बा ऽ ल मा	वा ऽ ऽ ऽ तुम	जा ऽ ऽ वो	ज हा ऽ ऽ
	नि		
ग म म -	प ध नि सां	म प म ग	म - ग सा
पी ऽ त ऽ	ल गा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽ।

अंतरा.

पम (ग म ध)	सां - सां सां	नि सां - गं सां	नि ध - प -
दे ऽ ऽ खी ऽ	पी ऽ त न	ऐ ऽ सी न	वे ऽ ली ऽ
पधनिसां गंमं गं सां	ध नि ध प	गम पधनिसां म म	मप मगम ग सा
ना ऽ ऽ ऽ बो ऽ	लो ऽ मों सो	हो ऽ ऽ ऽ ऽ ह र	जा ऽ ऽ ऽ ई ऽ।

राग सिंधभैरवी.



पगौ रिगौ सरी निश्च सधौ पधौ सनी धपौ ।
सिंधुभैरविका धांशा मन्द्रमध्यप्रचारिणी ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १८५ ॥

कोमल सब तीवर रिखब वादी मध्यम होइ ।
संवादी खरज हि जहां सिंधभैरवी सोइ ॥

रागचंद्रिकासार ॥ २५ ॥

सिंध भैरवी आसावरी थाटांतून उत्पन्न होतो. हा संपूर्ण आहे. धैवत स्वर यांत वादी आहे. कोणी मध्यम वादी मानतात. हा दिवसाच्या दुसऱ्या प्रहराी गातात. यांत दोन ऋषभ लागतात. कोणी पंचमास षड्ज कल्पून भैरवी गाऊन तिला सिंधभैरवी म्हणतात. हे आधुनिक राग-स्वरूप आहे. याचा विस्तार मन्द्र व मध्य सप्तकांतच फार करून होतो.

उठाव.

प॒गे॒रे॒ग, सा॒रे॒नि॒सा, ध॒प, ध॒सा, नि॒ध॒प ।

चलन.

सा, रे॒गम, रे॒ग, रे॒नि॒सा, ध॒प॒ध॒मप॒गे॒ग, सा, रे॒गे॒रे॒नि॒सा ।

सिंध भैरवी—झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

री	नि	सा	नि	म	प				
नि	सा	सा	ग	म	प	-	प	ध	प
ग्या	ऽ	न	गु	न	दा	ऽ	ता	र	ब
०		३			×		३		
ग	प	नि	प	नि	ध	पम	प	री	ग
मा	ता	वि	धा	ऽ	ता	(SS)	र	चौ	है
०		३			×		२		
री	सा	नि	सा	ग	म	प	ग	म	म
री	ग	रा	ता	मु	हि	नु	दी	ऽ	न
०		३			×		२		
ध	प	री	ग	सा	ग	म	प	री	सा
खा	जे	अ	ज	मी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
०		३			×		२		

अंतरा.

ग	ग	म	नि	सां	सां	सां	ध	नि
दो	उ	ज	ग	उ	जा	रो	ते	हा
०		३			×		२	
सां	गं	रीं	सां	सां	नि	सां	ध	-
चे	ऽ	प्ली	ऽ	च	रा	ग	वा	ऽ
०		३			×		२	
ध	-	गं	रीं	सां	सां	ध	प	ग
पा	ऽ	प	दु	ख	क	ठ	न	हा
०		३			×		२	

नि	ध	ग	-	म	सां	सां	-	-	सां
रा	खो	ला	५	ज	मे	५	५	५	री।
०		३			×		२		

सिंध भैरवी—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

प ग री ग सा री नि सा ग री नि सा ध ध प म
मं ५ द र पं ५ च म ख र ज स म ग ह त
० ३

प ध सा सा ग रि नि नि प - ध सा ध - प म
न ट जु ग भै ५ र वि ठा ५ ठ ब खा ५ न त।

अंतरा.

ग सा ग म	प - प -	म - प -	ध प ग री
म ५ ध्य म	बा ५ दी ५	ता ५ में ५	सु ध क र
०	३	×	२
नि नि री -	ग री ध नि	ध प ध सा	ध - प म
सिं ५ धू ५	भै ५ र बि	च त र ब	खा ५ न त।
०	३	×	२

भैरवी थाट.

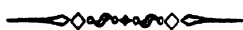
भैरवी थाटांतील राग (५)

बिलासखानी तोडी
मोटकी

भूपाल तोडी
उतरी गुणकली

वसंत मुखारी

राग बिलासखानी तोडी.



निसौ रिसौ धनिसगा रिगौ मगौ रिगौ रिसौ ।

धनी धपौ गरी गधौ पगौ रिगौ मगौ रिसौ ।

बिलासखानीका तोडी धगसंवादमंडिता ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ १९७ ॥

बिलासखानी तोडी भैरवी थाटांतून उत्पन्न होतो हा राग मियां तानसेन याच्या बिलासखान नामक मुलानें उत्पन्न केला. ह्याचा वादीस्वर धैवत व संवादी गांधार आहे. हा संपूर्ण आहे. ह्याची गाण्याचीवेळ सकाळची आहे. ह्याचा उठाव “ सा, रेनि, सारेग, रेग, मग, रे, सा ” अशी स्वरांनीं होतो. ह्यांत आसावरी व तोडी यांचा सुंदर योग आहे. आरोहांत मध्यम व निषाद दुर्बल आहेत. ह्या स्वरांचा उपयोग मोठ्या काळजीनें व कुशल-तेनें केला तर भैरवीपासून हा सहज वांचवतां येईल.

चलन.

सा, रेनि, सा, रेग, रेग, मग, रे, सा, सारेध, सा, रेग,

मग, रेग, रे, सा । धप, निधम, पग, रेग, मग,

रेसा, साध, सारेग रेग, मग, रे, सा ।



बिलासखानी तोड़ी-तिलवाडा (विलंबित)

स्थायी.

रीनिंसां सारी
नीSS केS

री ग - , मग घूं S , SS S	री ग री सा - ग री या S	सा ग - , नि सा री S , दु म क	नि निधु - - धंग तS S S SS
री ग - री , गम चा S S , लच	ग म - ग री ला S S S	ग री सा - S त है S	री नि - - S S S S

अंतरा.

नि
धु, धनि
Sसु नत

सां - - , निसां सा S S , SS	नि सां - - सांसां थ S S निया	सां गं रीं रीं रीं नि , सांरी बे S S , कल	रीं गं - रीं नि हो S त स
धु - म ग दा S S S	ग री ग री सा S S रं ग	नि सा - री नि S S S S	सा - - री गम ले S S होत्र

म - ग री | ग री सा - | - री नि ध सा - नि नि सारी
 लै S S S | S S या S | S S S S | S S नीS केS
 x २ ० ३

बिलासखानी तोड़ी-एकताल (विलंबित)
 स्थायी.

ध पध मग री रीरी री - सा - नि सा री नि सारी
 अS बS S मोरे कौ S था S ए क S षS
 ३ x ० २ ०
 ग रीग री सा सा ध ध मग री ग , रीरी सा -
 ल SS छि न मो S SS S रे , संग वा S।
 ३ ५ x ० २ ०

अंतरा.

ध पध मग री ध सां सां सां - नि सां रीं नि ,सांरीं
 नेS हS S ला S गी ला S तु म S ,सन
 ३ (x ० २ ०
 गं रीगं रीं सां सां रीं नि धध नि ध प
 मो SS रा S सु ग रे S धुं S म द
 ३ (x ० २ ०
 प म सा री सा ध नि सा री ग रीरी सा -
 ध ग री सा ध नि सा सारी ग रीरी सा -
 ने क हू न ला S S गीS लो अंग वा S।
 ३ x ० २ ०

बिलासखानी तोड़ी-झूमरा (विलंबित)

स्थायी.

प	ध	ध	म	गरी	ग	री	सा	नि	सा	सा	री	नि	ग	-	ग	री	सा
ज	ब	तें	SS	SS	S	म	न	मो	SS	S	S	S	S	S	S	ह	न
ग	ग	री	-	सा	नि	सा	निसा	नि	ध	नि	सा	-री	ग	ग	ग		
दे	खी	S	ला	प्या	SS	रा	त	ब	तें	SS	S	S	S	S	S	क	छु
ध	ध	म	ग	म	ग	री	सा	नि	सा	सा	ध	ध	सा	ध	-		
प	प	म	ग	ग	म	री	सा	सा	सा	ध	ध	सा	ध	-			
ना	सो	हा	S	SS	S	S	S	S	S	S	S	S	S	S	S	S	S
नि	ध	नि	सा	-री	ग	-	ग	म	-	ग	री	ग	री	सा			
S	S	S	SS	S	S	वे	मा	S	S	S	S	S	S	ई			

अंतरा.

म	नि	नि	ध	गं	प	ध	ध	नि	ध	प	म	म
प	प	ध	ध	री	री	सां	ध	ध	नि	ध	प	ग
उ	न	के	दे	खे	बि	न	जि	या	में	जो	आ	व
				S			र	S			०	त
म	नि	ध	म	ग	म	री	सा	नि	सा	निसा	ग	म
है	S	S	SS	S	S	S	S	नि	ध	प	री	ध
				S	S	S	S	तो	हे	या	हू	की
				S	S	S	S	र				जे

प	ध	म	ग	री	ग	-	री	नि	सा	री	ग	म	म
ना	५	५	५	५	५	५	ये	मा	५	५	५	५	५
	३				×			२			०		

बिलासखानी तोड़ी-त्रौताल (विलंबित)

स्थायी.

सा
अ

री	नि	सा	री	ग	-	ग	म	ग	री	सा	सा
न	५	ह	त	श	५	द्व	उ	प	ज्यो	५	मो
	३			×		०		२		०	
री	नि	ध	ध	ध	ग	-	ग	-	म	ग	री
५	ध	ट	में	ता	५	५	को	५	क	रुं	५
	३			×		०		२		०	
-	री	-	सा	सा	ध	म	ग	री	ग	रीसा,	सा
५	ध्या	५	न	अ	५	ट	जा	५	५	म५, १	अ
	३			×		०		२		०	

अंतरा.

प	नि	नि	सां	सां	सां	रीं	-	गं	रीं	सां	सां
ध	ध	ध	रि	ख	ब	गों	५	५	धा	५	र
ख	र	ज		२		०		३		५	

सां	गं	-	रीं	गं	रीं	सां	रीं	नि	ध	नि	-	प
म	५	०	ध	म	औ	र	पौ	५	५	च	५	म
म												
प	गं	-	रीं	गं	रीं	सां	-	रीं	नि	ध	ध	
धै	५	५	०	व	त	नि	खा	५	दु	पा	५	ऊं
ध	म	ग	री	ग	री	-	सा	सा	री	नि	सारी	
अ	त	५	०	अ	भि	रा	५	म।	अ	न	५	हत

बिलासखानी तोड़ी—धमार (विलंबित)

स्थायी.

सा	-	री	नि	सा	सा	री	ग	-	ग	म	ग	री	ग
ए	५	०	०	अं	गी	५	या	५	द	र	की	५	५
री	-	सा	-	सा	री	नि	सा	-	,	री	ग	री	ग
जा	५	०	०	फा	५	५	ग	५	५	खे	ल	न	५
ग	-	सा	-	सा	ध	-	प	-	ध	म	म	ग	म
ग	५	०	०	स	५	५	खूं	५	ची	५	रे	५	५

ग॒ री॒ - सा	सा॒ री॒ नि॒ ध॒ नि॒	सा॒ सारी॒	ग॒ री॒ गु॒
इया॒ ५ ५ म	कै॒ ५ ५ से॒ ५	र॒ हे॒ ५	गी॒ ५ ५
३	५	२	०
री॒ सा, री॒ नि॒			
ला॒ ज। मो॒ री॒			
३			

अंतरा.

प॒ प॒ - नि॒ ध॒ -	सां॒ सां॒	सां॒ सां॒ सां॒	रीं॒ गं॒ रीं॒ सां॒
लि॒ प॒ ५ ट॒ ५	लि॒ प॒	ट॒ झ॒ क॒	झो॒ ५ रे॒ ५
५	२	०	३
सां॒ - - सां॒ -	रीं॒ नि॒ ध॒ म॒ ग॒	ग॒ री॒ ग॒ री॒ सा॒	
झो॒ ५ ५ र॒ ५	क॒ रे॒ झो॒ ५ र॒	मो॒ ५ ५ र॒	
५	२	०	३
सा॒ नि॒ सा॒ री॒ ग॒ -	ग॒ म॒ ग॒ री॒ ग॒	री॒ - सा॒ सा॒	
चु॒ री॒ ५ या॒ ५	क॒ र॒ का॒ ५ ५	ई॒ ५ ह॒ म॒	
५	२	०	३
नि॒ सा॒ सां॒ सां॒ - रीं॒ नि॒ ध॒ म॒ ग॒ री॒ ग॒	री॒ सा, री॒ नि॒		
री॒ ५ ५ भी॒ ५	५ ५ ५ ५ ५	जे॒ ५। मो॒ री॒	
५	२	०	३

राग मोटकी.

हैं एक मिश्रमेलोत्पन्न स्वरूप आहे. यांत दोन्ही धैवत, दोन्ही ऋषभ व दोन्ही निषाद लगतात. याचें साधारण चलन असें आहे.

नि म
सा, धंनिपसा, सा, साम, प, ग, रे, सा, ग, ग, मरेसा,
म सां
निसाग, मपधनि, निग, रे, सा, सारेपग । मपनि
सांनिसां, सां निनिसां, सांनिधप, म, पगम
पधनि, ग, रे, सा, सारेपग ।

मोटकी-झपताल (मध्यलय)

स्थायी.

निः	-	निः	धः	निः	पः	सा	-	निसा	सा	सा
सा	५	ह	५	लि	यो	५	५ ५ ५	म	न	
मो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
५		५								
निः	सा	म	म	प	ग	-	री	-	सा	
सा	खी	५	गि	र	धा	५	५	५	रि	
५		५			५		५			
सा	ग	-	ग	-	म	री	-	री	-	सा
रे	५	न	५	दि	ना	५	ना	५	हिं	
५		५			५		५			
सा	निः	सा	ग	ग	म	प	ध	निः	-	निः
चै	५	न	५	प	र	त	मो	५	रे	
५		५			५		५			
प	म	री	ग	सा	सा	री	प	म	ग	-
ध	ग	५	५	न	वा	५	५	री	५	
बि	न	ब	५	न	५	५	५	५	५	
५		५			५		५			

अंतरा.

प	म	प	नि	सां	नि	सां	सां	सां	-	सां
मे	रे	तो	५	ए	क	अ	धा	५	र	
५		५			५		५			

सां	सां	सां	-	रीं	सां	नि	ध	प	-
नि	नि	ही	ऽ	के	द	र	स	को	ऽ
उ	न	ही	ऽ	के	द	र	स	को	ऽ
x		२			०		३		
पध	मप	म	म	प	प	ध	सां	प	
(	(	ग	ऽ	त	व	हि	नि	-	ध
ग	त	म	ऽ	त	व	हि	ए	ऽ	क
ऽ	ऽ	२			०		३		
x									
म		सा	-	सा	नि	री	म	-	
ग	-	री	-	सा	सा	री	प	ग	-
के	ऽ	ऽ	ऽ	मु	रा	ऽ	ऽ	री	ऽ।
x		२			०		३		
री	सा								
मो	ऽ								

राग भूपाल तोडी.



भैरवीमेल संभूतो भूपालः प्रातरौडुवः ।
मध्यमेन निषादेन विहीनो धैवतांशकः ॥
गांधारस्त्वत्र संवादी समाख्यातो मनीषिभिः ।
धैवतर्षभगांधारास्त्रयः स्युः कोमलाः स्वराः ॥

संगीतसुधाकरे पृ० २६ ॥ १३२-१३३ ॥

जब भैरविके मेलसों सुर मनि दिये निकाल ।
धगबादीसंबादितें कहत राग भूपाल ॥

रागचंद्रिकासार ॥ १६ ॥

भूपाल तोडी हा भैरवी थाटांतून निघतो. त्यांत मध्यम व निषाद हे स्वर वर्ज्य आहे. धैवत वादी व गांधार संवादी आहे. हा सकाळीं गातात.

साधारण चलन.

धसां, सां, रेसां, ध, प, सारिंसां, धप, ग, धप, ग, पग,
रेसा । पध, सां, रेसां, गरिंसां, धसारिंगरेसां, धप,
ग, धगरेसां, धप, ग, पग, रेसा ।



भूपालतोड़ी-चौताल (विलम्बित)

स्थायी.

म	प	प	सां	सां	सां	रीं	सां	-	नि	ध	ध	प	-	
सु	गौं	ऽ	ध	म	ल	या	ऽ	ग	र	में	ऽ			
×		०		२		०		३		४				
म	प	प	सां	सां	-	गं	रीं	सां	-	नि	ध	-	प	-
सु	वा	ऽ	स	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नो	ऽ			
×		०		२		०		३		४				
म	ग	-	ध	ध	प	प	ग	-	ग	री	री	सा	सा	
बे	ऽ	नि	भु	जं	ग	ले	ऽ	तु	व	त	न।			
×		०		२		०		३		४				

अंतरा.

म	प	-	प	प	नि	ध	ध	सां	-	सां	सां	सां	-	
चौं	ऽ	द्र	ब	द	न	की	ऽ	उ	प	मा	ऽ			
×		०		२		०		३		४				
नि	नि	-	सां	-	-	सां	गं	रीं	-	सां	नि	ध	प	
ध	ध													
क	हां	ऽ	लो	ऽ	ऽ	क	ऽ	रें	ऽ	ब	खा	न		
×		०		२		०		३		४				
म	प	प	-	प	नि	ध	-	ध	सां	सां	नि	ध	प	
क	र	ना	ऽ	न	ले	ऽ	त	तु	व	त	न।			
×		०		२		०		३		४				

राग उत्तरी गुणकली.



हा एक अगदी अप्रसिद्ध असा प्रकार उत्तरेकडे गायक गातात. हा भैरवी थाटांतला राग आहे. यांत आसावरी व भैरवी यांचें मिश्रण आहे. “ ध॒म ” “ प॒ग ” व “ सां॒ध ” या स्वर-संगती यांत आसावरीच्या सूचक आहेत. मांडणी भैरवीचीच आहे.

याचें साधारण चलन असें आहे.

म॒ग॒म॒प, ध॒, प॒ध॒मि, म॒ध॒म॒प॒ग, ग॒मे॒सा, सा॒रे॒नि॒ सा॒रे॒ग॒म,
प॒ध॒नि॒सां, नि॒ध॒प॒म, प॒ध॒नि॒सां, ध॒, प । गे॒रें, सां,
नि॒सां ध॒, प, सा, म॒ग, म॒ग, म॒ध, नि॒सां,
रें, सां, ध॒, प, प॒ध॒नि॒सां, ध॒नि, ध॒प ।



उतरी गुणकली-त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

म गु

ता ना

म	प	प	ध	नि	-	प	ध	म	पध	मप	ग	-	-	-	ग	म
ना	दिर	दिर	तो	३	ऽ	म	ता	ना	ना	दे	रे	ना	३	३	त	न
ग	री	-	-	-	सा	-	री	नि	सा	री	ग	म	प	ध	नि	सां
ना	३	३	३	३	ना	३	त	ना	ना	३	३	३	३	३	३	३
नि	ध	प	म	प	ध	नि	सां	ध	नि	-	ध	-	प	म	ग	ग
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	दा	३	३	३	३

अंतरा.

गं	गं	-	रीं	रीं	रीं	सां	-	सां	नि	सां	-	ध	-	ध	प	-
स	म	३	के	र	खि	यो	३	क	दं	३	द	३	स्त	खा	३	३
ग	सा	सा	सा	सा	सा	-	म	-	-	-	-	ग	-	-	म	म
प	र	म	ज	नूं	३	३	३	के	३	३	३	३	३	३	ह	ह

राग वसंतमुखारा.

हा एक दक्षिण पद्धतीतील राग आहे. यांत पूर्वांगांत भैरव व उत्तरां-
गांत भैरवी यांचा योग असतो.

वसंतमुखारी—ज्ञपताल (मध्यलय)

स्थायी.

सा		म				नि			
नि	-	सा	ग	म	प	-	प	ध	प
मे	५	ल	ब	कु	ला	५	भ	र	न
x		२			०		३		
प	प	ध	नि	सां	ध	नि	ध	प	प
क	र	त	म	धु	र	सु	र	ज	न
x		२			०		३		
प	(नि	ध	प	ध	प	म	प	म	(ग
रा	५	ग	त	ब	क	हे	ब	सौं	५
x		२			०		३		
ग	(नि	ध	प	-	मग	मग	ग	(री	सा
म	५	मु	खा	५	री५	५५	म	ज	न
ती	५	२			०		३		
x									

अंतरा.

म	प	प	नि	-	नि	सां	सां	सां	सां
औं	५	श	धै	५	व	त	सु	ष	म
x		२			०		३		

धु	नि	सां	रीं	सां	नि	सां	सां	धु	प
को	उ	क _२	ह	त	सु _०	र	पौं _३	च	म
प	नि	धु	प	धु	प	म	प	ग	म
नि	य	त _२	रौं	ऽ	ज _०	न	च _३	तु	र
म ^x ग	म	नि	धु	प	मग	मग	ग ^म म	री	सा
सं ^x	ऽ	धि _२	ग	त	(जाऽ _०)	(ऽऽ)	म _३	दि	न।

तोडी थाट

तोडी थाटांतील राग (५)

गुर्जरी तोडी
लाचारी तोडी

| लक्ष्मी तोडी
बहादुरी तोडी

अंजनी तोडी



गुर्जरी तोडी.



निसौ रिगौ मधमगा निधौ मगौ रिगौ रिसौ ।

गुर्जरीतोडिका धांशा संगवे पंचमोज्झिता ॥

अभिनवरागमंजर्याम् ॥ २०१ ॥

आरोही अवरोहिमें पंचम सुरको छोडि ।

धरि बादीसंवादितें कहत गूजरी टोडी ॥

रागचन्द्रिकासार ॥ २९ ॥

गुर्जरी अथवा गूजरीतोडी हा तोडी थाटांतून उत्पन्न होणारा एक षाडव राग आहे. यांत पंचम वर्ज्य आहे. धैवत वादी व ऋषभ अथवा गांधार संवादी आहेत. हा दिवसां दुसऱ्या प्रहरीं गातात. याचा बहुतेक विस्तार मध्यम तार सप्तकांतच होतो. या रागाचा उल्लेख जुन्या ग्रंथांत भैरव थाटांत सांपडतो.

उठाव

नि॒सा, रे॒ग, म॒ध॒म॒ग, नि॒ध॒म॒ग रे॒ग, रे॒सा ।

चलन.

ग, रे॒सा, नि॒सा, रे॒ग, रे॒ग, म॒ग॒ध॒म॒ग, रे॒ग, रे॒सा, नि॒रे, सा ।

गूर्जरी तोड़ी-ब्रह्मताल (मात्रा २८) (मध्यलय)

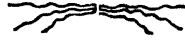
स्थायी.

ग री	-	सा	-	नि	नि	सा	री	नि	ध
ना	५	रा	५	य	न	ह	र	तुं	५
ध	नि	सा	री	ग री	-	-	सा		
ही	५	क	र	ता	५	५	र		
ध म	ध म	ध	नि	म	ग	ग री	री	-	सा
ज	ग	पा	५	ल	५	न	हा	५	रा
७		८		९		१०		०	

अंतरा.

म	ग	म	ध	नि	सां	सां	सां	-	सां
तुं	५	ही	५	आ	५	द	औं	५	त
नि	-	सां	रीं	नि	-	ध	ध		
तुं	५	क	र	ता	५	५	र		
ध म	-	ध	नि	ध म	ग	ग री	री	-	सा
ते	५	रो	५	हि	बि	५	स्ता	५	रा
७		८		९		१०		०	

तोडीचे कांहीं अप्रसिद्ध प्रकार.



ळाचारी तोडी.

या तोडी प्रकारांत शुद्ध ऋषभ, दोन्ही गांधार, दोन्ही धैवत व दोन्ही निषाद लागतात.

लक्ष्मी तोडी.

लक्ष्मी तोडी, रामपूरचे, गायक दोन्ही ऋषभ, दोन्ही गांधार, दोन्ही धैवत व दोन्ही निषाद घेऊन गातात.

बहादुरी तोडी.

हिचें लक्षण उपलब्ध नाही. बहादुरी तोडी म्हणून ऐकण्यांत येणारी गीतें एवढीच काय ती माहिती यांत देतां येईल. यांत स्वर सर्व तोडीचेच लागतात. फक्त पंचम जरा गौण आहे. कोणी दोन्ही ऋषभ यांत घेण्याचें सांगतात.

अंजनी तोडी.

अंजनी तोडीचें एक ध्रुवपद ग्रंथकर्त्यास श्रीमंगलसेन कपूर नांवाच्या एका पंजाबी गृहस्थांनी ऐकविलें होतें. तें यथें दिलें आहे. या ध्रुवपदावरून अंजनीतोडी हा संपूर्ण असून त्यांत दोन्ही धैवत, दोन्ही निषाद, कोमल गांधार व बाकीचे सर्व शुद्ध, असे स्वर लागतात, असें दिसतें. पूर्वांगांत देसी व उत्तरांगांत काफी व आसावरी यांचे संमिश्रणानें उत्पन्न झालेलें हें स्वरूप दिसतें.

स्थायी.

ग
म
ला

[illegible]

अंतरा.

सांसां
निनि
मंम

सां प	नि ध	म	पप	सां नि सां	सां गं	रीं सां	नि	ध	प	म
द सा	५	हेसुं	द	५५	र बा	ल मु	वा	५	५	५
			५							

ग	रीगम	म	-	प	प	म	ग	म	ग	प	म	प	प	मप
४	SSS	०	०	स	दा	२	०	०	रं	३	गी	०	ली	SS
प		प	प	प	प	प	प	प	प	प	प	प	प	प
धम	प	मप	मप	नि	ध	नि	प	म	ग	ग	रीगम	म	म	म
पी	४	SS	तज	ता	२	०	०	०	०	३	SSS	वे	ला	०

लाचारी तोडी—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

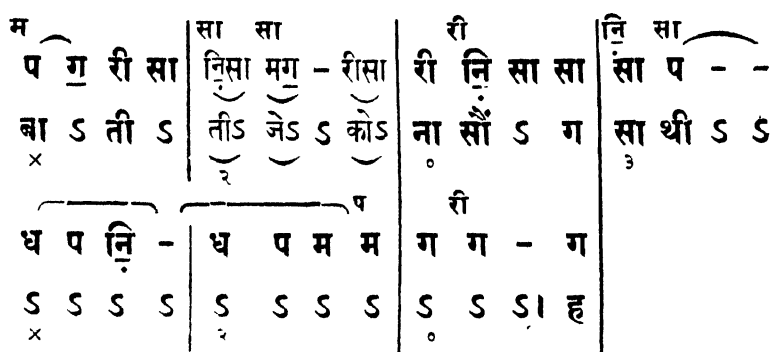
ग

ह

गम	प	ध	-	पध	मप	ग	-	री	नि	सा	-	नि	-	सा	-
मे	३	दे	खी	०	लो	ल	खी	२	लो	चो	रा	०	०	०	०
नि	सा	सा	प	-	-	ध	प	नि	-	ध	प	म	म	ग	ग
जा	३	सी	०	०	०	०	०	२	०	०	०	०	०	०	०

अंतरा.

सा	म	नि	सा	-	गम	प	प	प	प	प	प	मप	धप	म	प	-	ग	-
ए	४	क	०	तों	अं	धे	री	रा	ति	दु	जे	०	दिया	३	ना	०	०	०



लक्ष्मीतोडी-सूलताल (मध्यलय)

स्थायी.



अंतरा.

म	म	नि	नि	सां	-	सां	सां	-	सां
प	प	ध	ध	सां	-	नि	सां	-	सां
औ	ऽ	र	नि	या	ऽ	तो	आ	ऽ	गे
x		०	२	२		३		०	
सां	सां	सां	रीं	सां	-	नि	सां	नि	प
नि	नि	सां	रीं	सां	-	नि	सां	ध	प
नि	ऽ	की	न	ला	ऽ	ऽ	ऽ	गे	ऽ
x		०	२	२		३		०	
नि	-	सां	-	सां	सां	नि	सां	नि	प
ध	-	सां	-	नि	सां	नि	सां	ध	प
जै	ऽ	से	ऽ	दि	व	स	दी	प	क
x		०		२		३		०	
प	प	ध	ध	ग	-	री	-	सा	-
नि	ध	प	ध	ग	-	री	-	सा	-
ला	ऽ	ग	त	फी	ऽ	ऽ	ऽ	को	ऽ
x		०	२	२		३		०	

लक्ष्मी तोडी-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

ध	ध	सां	सां	सां	-	सां	रीं	सां	-	नि	ध	-	प
प	-ध	सां	सां	सां	-	रीं	सां	-	ध	-	प		
मा	ऽऽ	न	म	ना	ऽ	व	न	ऽ	आ	ऽ	यो		
x		०		२		०		३		४			
प	-	गुं	रीं	गुं	रीं	सां	सां	सां	नि	ध	ध	प	-
गुं	-	गुं	रीं	गुं	रीं	सां	सां	सां	नि	ध	ध	प	-
आ	ऽ	पो	ऽ	च	ल	उ	ढ	ह	ह	स	के	ऽ	
x		०		२		०		३		४			

म	-	ग	प	-	ध	ग	-	ग	री	री	सा	-
ग	५	न	बो	५	लो	ला	५	ला	न	के	५	५
५		०		२		०		३				

अंतरा.

प	-	म	म	नि	-	ध	सां	सां	सां	सां	सां	-
सूं	५	द	र	श्या	५	म	स	लो	५	नी	५	५
५		०		२		०		३		५		
सां	-	गं	रीं	-	सां	सां	-	सां	सां	नि	ध	प
रीं	५	५	र	५	त	कै	५	से	त	जो	५	५
५		०		२		०		३		५		
नि	-	सां	ध	-	प	ग	-	री	री	सा	-	
ध	५	५	ड	५	र	नै	५	न	न	सो	५	५
५		०		२		०		३				

बहादुरी तोडी-मपताल (मध्यलय)

स्थायी.

नि	-	-	-	प	म	प	ध	-	म
ध	५	५	५	हं	मु	ख	चं	५	द्र
५					०		३		

मं ^१ चं _x	- ऽ	धं ^२ द्रि	नि का	सा ऽ	नि ऽ _०	सा ऽ	री ऽ _३	सा पे	- ऽ
सा चं _x	नि ऽ	धं ^२ द्रि	धं ^२ का	नि ऽ	नि की _०	सा ऽ	री घ _३	सा टा	- ऽ
री वा _x	नि ऽ	गं ^२ रुं	री रु	गं चि	मं रं _०	री ऽ	गं भा _३	- ऽ	- ऽ
री का _x	गं -	मं ^२ ऽ	धं ^२ ऽ	नि म	धं सुं _०	गं ऽ	मं द _३	गं रि	मं नि
री का _x	गं ऽ	धं ^२ ऽ	नि ऽ	सा ऽ	री ऽ _०	गं ऽ	री इ _३	सा पैं	- ऽ।

अंतरा.

सा नि वा _x	सा ऽ	सा रुं _२	गं कं	गं ज	मं को _०	मं म	प लु _३	- ऽ	धं गु
मं ला _x	प ऽ	प ब _२	मं गु	धं ला	नि खे _०	सां ऽ	नि रा _३	धं ऽ	प ऽ

म	री	सां	ग	री	सां	नि	सां	नि	ध
फु	ल	प्या	रि	सृ	दू	ऽ	ल	कं	ज
×		२			०		३		
री	ग	म	ध	नि	ध	म	ग	री	सा
प	द	अ	रु	ऽ	ना	ऽ	इ	ऽ	पै।
×		२			०		३		

अंजनी तोड़ी-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

							सा	म री	म	प	प
							नि	द्रा _३	हु	न _४	हिं
सां	नि	सां	नि _३	प	-	प	-	म	प	ग _३	-
आ _x	ऽ	ऽ	वे	री _२	ऽ	मा _०	ऽ	ऽ _३	ऽ	ऽ _४	ऽ
री	म	ग	री	ग	सा	री	ग	सा	सा	-	-
श्या _x	ऽ	म _०	बि	ना _२	ऽ	मैं _०	ऽ	ऽ _३	को	ऽ _४	ऽ
सा	सा	म	री	म	प	नि	ध	प	-	नि	नि
क _x	ब	हुं _०	आ	ऽ _२	वें	गे _०	ऽ	ऽ _३	ऽ	नं _४	द
सां	-	रीं	नि	ध	प	रीग	सारी	म	प	प	प
ला _x	ऽ	ऽ _०	ऽ	ऽ _२	ल।	निऽ _०	ऽऽ _०	द्रा _३	हुं	न _४	हिं

अंतरा.

म	नि _३	-	ध	नि	नि	सां	सां	सां	सां	-	सां
मो _x	र	ऽ _०	मु	क _२	ट	चं _०	द	न _३	भा	ऽ _४	ल

म	नि	नि	सां	सां	गं	गं	रीं	सां	-	नि	-	प
मु	ध	तें	ऽ	मु	र	ली	अ	ऽ	ध	ऽ	र	
प	ख	०		२		०		३		४		
प	प	-	सां	रीं	रीं	नि	-	-	ध	ध	म	
ग	ले	ऽ	सो	ह	त	ऽ	ऽ	ऽ	ब	न	ऽ	
५		०		२		०		३		४		
म	नि	सां	रीं	नि	ध	म	सा	री	म	प	प	
प		ऽ		ऽ		ऽ		ऽ		ऽ		
मा	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	नि	द्रा	हुं	न	हिं	
५		०		२		०		३		४		

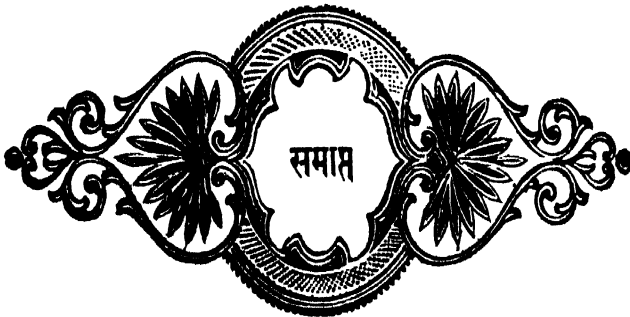
संचारी.

सां	-	सां	-	सां	नि	सां	-	नि	ध	प	-
गो	ऽ	प	न	के	ऽ	सं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ
५		०		२		०		३		४	
प	-	-	म	ग	-	री	ग	-	-	री	सा
आ	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	खे	ऽ	ऽ	ल	ऽ	त
५		०		२		०		३		४	
सा	सा	म	म	प	नि	सां	-	-	नि	ध	प
ग	जा	हुं	ग	ज	ति	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ
५		०		२		०		३		४	

आभोग.

म	-	म	म	नि	-	सां	सां	-	सां	-	सां
के	ऽ	ण	प्र	ध	ऽ	छ	ब	ऽ	प	ऽ	र
५		०		२		०		३		४	

ध	ध	ध	ध	सां	सां	रीं	-	सां	निसां	ध	-	प
त	न	म	न	ध	न	वा	ऽ	र	डा		ऽ	रुं
x		०		२		०		३			४	
सां	नि	-	सां	सां	-	रीं	नि	-	ध	-	म	
नि	र	ऽ	ख	त	ऽ	भ	ई	ऽ	आ	ऽ	ऽ	
x		०		२		०		३		४		
म	प	सां	रीं	नि	ध	म	सा	री	म	प	प	
नि	हा	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	नि	द्रा	हुं	न	हिं	
x		०		२		०		३		४		



पुरवणा.

मालगुंज-चौताल (विलंबित)

स्थायी.

सा	सानि	धनि	सा	-	म	म	-	ग	री	-	सा
आ	SS	SS	प	S _२	हि	हो	S	S _३	S	S _४	त
x		०				०					
म	ग	म	निध	-	नि	सां	सां	सां	सां	सां	सां
आ	S	द	अं	S _२	त	गु	प	त	प्र	ग	ट
x		०				०					
रीं	सां	निध	सां	ध	प	-	म	-	म	ग	-
ध	र	नीS	S	ध	र	S	ए	S _३	त	S _४	S।
x		०				०					

अंतरा.

म	-	-	ध	-	नि	सां	-	सां	सां	-	सां
आ	S	S	प	S _२	हि	डा	S	र	मू	S _४	ल
x		०				०					
सां	-	-	नि	-	ध	नि	नि	ध	नि	ध	पम
आ	S	S	प	-	हि	प	व	न	प	ति	तS
x		०				०					

म	-	-	ग	-	ग	म	ध	^प ध	नि	सां	सां
आ	५	५	प	५	हि	क	र	न	हा	५	र
_×		_०		_२		_०		_३		_४	
सां	ध	नि	-	ध	प	-	म	-	^प म	ग	-
क	र	नी	५	क	र	५	ए	५	५	५	५।
_×		_०		_२		_०		_३		_४	

टीपः—हा राग व ही चीज मागे २९४ पानापुढें काफ़ी थाटाच्या शेवटीं घालावयाची राहिली ती येथें देत आहों.

संपादक.

स्वर-विस्तार.

टीप.

या पुस्तकांत आलेल्या रागांचे हे स्वर-विस्तार विद्यार्थ्यांस उत्तम गातां आल्याने, त्या रागांचे चलन त्यांच्या लक्षांत चांगले ठसेल. या विस्तारांत स्वल्पविरामांनीं ठिकठिकाणीं थांबण्याचीं स्थळे दर्शविली आहेत. हीं विराम-चिन्हे फारच महत्वाचीं आहेत असें समजावयाचें आहे. हे विस्तार उत्तम साधल्यावर मग त्यांच्याच सहाय्यानें लहान मोठ्या ताना रचण्याची कला विद्यार्थ्यांस साधेल, व नव्या नव्या ताना रचण्यास अंतःस्फूर्ती होईल.

या पुस्तकांत आलेल्या रागांचे स्वरविस्तार

(यांत ऋषभ स्वर री किंवा रे असा दोन्ही तऱ्हेनी लिहिला आहे).

(१) पूर्या-स्वरविस्तार

(१) सा, री^धसा, निरी^ग, मंमं ग, रीग, मंरीग रीसा ।
निरी, सा ।

(२) सा, नि^ध, मं^ध, सा, नि, सारीग, गमंमं, ग, निध-
री
मंग, ग, मंरीग, रीसा । निरी, सा ।

(३) मंगरीसा, नि^धमं^धसा, नि, सारीग, मंधमंग, मंध,
ध
निधमंग, गमंमं, ग, रीसा । निरी, सा ।

(४) सा, नि^ध, निमं^धसा, निरीगरीसा, गमंरीग, गमंध,
मंधमंग, रीगमंधनिनिधमंधधमंगमंमंगरीसा । निरीसा ।

(५) मंग, निधमंग, रीग, निसारीग, गमंधमंग, रीगमंरीग,
ध
धनिरीग सारीग, गमंमंग, मंरीगरीसा । निरी, सा ।

(६) निधमंगरीनिरीनिमं^ध, सा, धनिसारीग, मंध, निनि-
धमंधधमंगमंमंगरीसा । निरी, सा ।

(७) सां, निरीं, सां, गं, रीगं, रींसां, धनिरीगं, मंगं,
गंरींसां, मंघसां, रेंनिधमंग, निधमंग, मंधमंग, मंग,
गरीसा । निरी, सा ।

(८) ममं गरीसा, निनिधमं धमं गमं गरीसा, गं गरीं सां निरीं-
 धनिनिधमं धमं गमं गरीसा, मं मं गरीं सां निरीं निधनिमं-
 धमं गरी गरी निमं धसा, निरी गमं मग, गरी, सा ।
 निरी, सा ।

(२) पूर्व कल्याण-स्वरविस्तार

(१) री, गरीसा, गमं प, ध, मं प धमं ग, गरीसा, निरी धसा ।

(२) री गमं प, निधप, धमं ग, री, पमं ग, री, मं री, गरीसा,
 री धसा, निरी निध, मं निधसा, निरी, सा, धमं ग, रीसा ।

(३) री गमं ध, मं निधप, गमं धप, री गमं प, गमं प धनिसां, मं धमं ग,
 निधमं ग, री, पमं गरी, गरीसा ।

(४) पमं ग, धमं गरी, गमं पमं ग, निधमं गरी, गमं प धनिसां,
 मं धमं गरी, गमं पमं गरी, गरीसा ।

(५) ध निरी गमं प, गमं प, री गमं प, धप, गमं प धनिसां, मं धप,
 री गमं ध निधप, धमं गरी, गमं पमं गरी, मं प धमं, ग, रीसा ।

(६) गरीसा, पमं गरीसा, निधपमं गरी गमं पमं गरीसा, निरीं-
 निधमं धपमं गरी गमं पमं गरीसा, गरीं सां निधप, मं धपमं गरी,
 गमं निनिधमं गरीसा ।

(७) गग, मं धप, मं धसां, निरीं, सां, निरीं निध, निधप, मं ध-
 निसां, रीं निधमं धप, गमं प, निधमं ग, री गमं प, धमं ग, री,
 मं प धमं, ग, रीसा ।

- (८) रीगमंगरीसा, रीगमपमंगरीसा, रीगमपधनिधपमंगरीसा,
रीगमपधनिसांनिधमंगरीसा, रीगमधंनिरीसांनिधपमंगम-
पधनिसां, मधमंग, निनिधमंगरीसा ।

(३) मालीगौरा-स्वरविस्तार

- (१) सा, रेसा, धसा, निरेग, रेसा, रेप, प, मप, धप, मधग,
रेग, मधमंग, रे, सा ।
- (२) सा, रेनिधप, मंग, मंग, मधसा, निरे, सा, निरेगरे, सा,
रेनि, प, मप, मंग, मध, सा ।
- (३) सासा, प, मधप, मंग, धमंग, रेगरे, सा, निरेसा ।
- (४) प, मप, सा, सासा, प, मधपमंग, धमंग, रेगरेसा, निरेसा ।
- (५) प, मंग, प, धग, रेग, मध, मंग, गरेसा, निरेसा ।
- (६) सा, निरेसा, रेग, मंग, निरेसा, निरेग, मरेग, पगधपग,
रेग, रे, सा ।
- (७) निनिरेनि, पमंग, मंग, मध, रेसारप, पमप, म, गरेग,
मधमंग, पग, रेग, रेसा, निरेसा ।
- (८) ग, मधम, सां, सां, नि, रेनि, प, पमंग, निमंग, निमंग,
रेग, मधमंग, रेसा ।

(४) जैत-स्वरविस्तार

- (१) सा, सा, रेगरेसा, रेरेसा, रेग, प, प, धग, पधग, रेग,
धपग, रे, सा, सारेसा ।

- (२) रेरेगेरे, गप, प, गपधप, गरे, पग, रेसा; रेगेरेसा, पगेरे, सा, प, प, सां, प, पग, रेग, पधपग, रेसा ।
- (३) सागपग, पधग, गरेसा; सारेसा, ग, प, प, पधग, प, सां, प, धग, सागप, धग, रेसा ।
- (४) रेरेसा, गपग, रेसा, पपगपग, रेसा, रेगेरेसा, गप, प, पधगप, प, सांप, धग, रेगपधग, पग, रेसा, सारेसा ।
- (५) प, प, सां, सां, सारिंसां, सांसां, रेसां, प, पग, रेगप, सां, पधग, सागप, धपग, गरेसा, सारेसा ।
-

(५) वराटी—स्वरविस्तार

- (१) प, धगपध, मधमंग, पग, रेसा, सा, रेग, मंग, रेसा, नि, रेग, रे, मंग, रेसा, नि, रेग, पग, प, धमंग, सा, पधमंग, रेगमधमंग, पधग, रेग, मंग, रेसा ।
- (२) निसा, निरेगरेसा, निरेग, रेग, मंग, धमंग, पधग, रेग, मधमंग, रेसा ।
- (३) निरेग, रेग, मंग, पग, पधमंग, रेग, मधमंग, गरेसा ।
- (४) रेग, प, पधग, मध, सा, रेनिप, पध, मंग, पग, रेसा, सारेगरेसा, रेगेरेसा, पमधमंग, सां, निप, प, मधम, ग, प, पग, रेग, मधमंग, मंग, रेसा ।
- (५) प, पधसां, सां, सारिंसां सारिंनि, प, पधग, पमधमंग । रेग, रेसा ।

(६) बिभास (मारवा थाट)—स्वरविस्तार.

- (१) प, प, धग, प, पध, ध, मंधप, मंधसां, पधप, गप, ध, मंध, पग, रेसा ।
- (२) सा, पग, पध, मंधनिप, धगिप, मंध, निधनिप, गपध, मंधप, गपगरेसा, निरेगप, पध, प, पधसां, पध, प, निधप, ध, गप, रेगप, धप, मंधसां, गंरेसां, रेसां, पध, प, ध, गप, रेगमंधनिधमंगप, धप, गरेसा, गंरेसा, धप, गपगरेसा, निधप, गपगरेसा, निधप गपगरेसा, गंरेसां, प, धगपगरेसा, गपध, मंधप ।
- (३) पपधसां, निरेसां, निरेगंरेसां, रेसां, पंगंरेसां, गंरेसां, पधप, गंमंधसां, धपगरेसा ।
-

(७) पंचम (एक प्रकार)—स्वरविस्तार

- (१) मंधसां, सां निध, मंधमंग, मंग, रेरेसा, सासाम, म, मममंग, मंधसां सां, सां, निध, निमंधसां ।
- (२) मग, निधनिमंधमंम, गमंधसां रेनिध, निमंधसां, मंधमंम, सासाम, म, मंग, मंधनिधनिमंध, सां ।
- (३) सांनिधमं, मग, मंधनिधमंम, ग, मंग, रेसा, साम, ग, निधमंग, रेगमंधनिमंध, सां ।
- (४) गंरेसां, गंमंगंरेसां मं, मंगं, मंगंरेसां, सां, रेनिधमंमग, गमनिधमंगरेसा, निरेसाम, सामंम, धमंमग, गमंधनिमंधसां ।

- (५) मंमधसां, सां, रेंसां, निरेंसां, सारेंगेंसां, मं, मंगं, रेंसा, रेंनिधमधसां, निध, मनिधमंग, धमंग, मग, मंगरेसा ।
-

(८) पंचम (२ रा प्रकार)-स्वरविस्तार

- (१) ग, मंगरेसा, सा, म, म, ग, प, मंमधसां, मग, मधसां, सां, निरेंनि, प, मंमधसां, मग, पग, रेंसा ।
- (२) मधसां, सां, निरेंसां, गेंसां, निरेंनि, मधसां, रेंनि, प, मध, मंम, म, ग, पंगरेसा)
-

(९) भट्टियार-स्वरविस्तार.

- (१) सा, धध, पम, म, पग, सा, म, मपग, धसांध, पम, मप, धसां, निध, पम, मपग, रेंसा, धपम, पम, निधपम, रेंसां, निधप, पधसां, रेंसां निधपम, गम, पग, रेंसा ।
- (२) सारंग, म, पम, ध, पम, सांरेंगेंसां, रेंसां, धपम, पग, रेंसा ।
- (३) सां, रेंसां, सांध, निप, धम, पग, मधसां, रेंगेंसां, सांध, निप, धम पग रेंसा ।
- (४) मधसां, सां, नि, रेंगेंसां, सां, रेंनिध, प, मधसां निधपम, मध, पम, पग, रेंरेसा ।
- (५) सा, गम, मपम, धपम, सां, रेंसानिधपम, पधसां, रेंगेंसां, मंगेंसां, रेंनिधप, पधसां, निधपम, मधपम, पग, रेंसा, साध, धपम ।

(१०) भंखार-स्वरविस्तार.

- (१) ग, पग, रेसा, निसा, गमप, पमपग, मंधमंग, मंगरेसा
निनि, सारेग, मग, मंधमंग, मंगरेसा ।
- (२) प, मपग, पगरेसा, नि, रेग, मग, गमग, गमंधमंग, मंग-
रेसा, निसा, गमप ।
- (३) प, पमग, मंधमंग, पगरेसा ।
- (४) सा, सा, गमप, प, ग, गमपग, पगरेसा, सारेसानि, सारेग,
मग, मप, मपग, पगरेसा ।
- (५) मंधसां, सां, रेसां, सां, मम, पग, मंधसां, रेनिध, मंग,
पगरेसा, सासा, गमप ।

(११) साजगिरी-स्वरविस्तार

- (१) सा, निनि, रेग, मरेमंग, रेसा, निरेसा, सा, रेसा, निनि,
रेगनिरेसा, गरेसा, सा, निधसा, निसा, रेनिरेग, निरेनिध,
मंधमसा ।
- (२) रेसा, गगम, निनिमंधग, गमगमपमंग, रेसा ।
- (३) निरेसा, गरेसा, निनिरेनिध, मंधसा, सा, गरे, गम, रेमंग,
रेसा, निरेसा; सारेरेसा, निरेगरेसा, मरेमंग, गमंधग, मंग,
रेग, मंग, रेसा, निरेसा; ममंग, मंग, धगमंग, गम,
निनिमंग, गमंगम, ग, रेसा, निरेसा ।
- (४) ममंग, प, धप, सां, सां, निरेसां, निरेगरेसा, सांसां, निनि,
रेनिधप, पधग, प, प, धसां, निरेनिमंधग, गमं, गमं,
गमपमंग, मंग, रेसा, निनिरेगमरेमंग, रेसा, निरेसा ।

(१२) ललितागौरी-स्वरविस्तार

- (१) सा, प गरी, सा, रीनिसा, धनि, सारीग, म, धमंग, रीग, मपग, रीसा, रीनिसा ।
- (२) निरीगम, मंम, धमंम, रीग, मपग, मगरीसा, रीनिसा ।
- (३) सा, निरीगम, मंग, प, मंधनिप, धम, पग, गमप, गरी, गमगरी, सा, रीनिसा ।
- (४) गमप, मंध, निधमंग, मधप, धम, पग, धमंगमंग, रीग, मग, पगरीसा, रीनिसा ।
- (५) सा, निध, मंधसा, निरीगम, निधमंग, मंधनि, रींगरींसां, रीनिधप, धनिप, धम, पग, रीग, गमप, गरीसा ।
- (६) सा, निसाम, मंग, मगरीग, गमप, धनिप, मंधनि, रीनिधप, धमंग, गममंग, रीगमगरीसा ।
- (७) प, मप, गमप, रीग, रीगमप, मंधनि, धमंग, मप, धमं, धनि, रींगरींसां, निरीनिधप, म, मंग, निसारीग, मगरीसा ।
- (८) मंधसां, निरींसां, निरींगरींसां, रीनिसां, धनि, मंधनि, रीनिधप, निधमंग, रीग, मधरीनिधमंग, रीगमपग मग, रीसा ।
- (९) प, धमं, ममंग, मप, धनिरीनिधप, धनिधमंम, गमधनिरींगरीनिधमंग, निधमंगमप, गमरीग, पगरीसा ।
- (१०) ममंधसां, गरींसां, रींगं, गंमपं, गं, ममंगं, मंगरींसां धनि-सांरींसां निधमं, गममंग, निधनिप, धम, पग, गमप, गरी, गरीसा ।

- (११) निधमंगरीसा, निरींगरीसां, रीनिधमंगरीसा, गमप, मंधनि,
रींगरीसां, रीनिधप, धमपग, गमप, मंधमंगरीसा ।
- (१२) पगरीसा, धमगमपगरीसा, निरीनिधमंग, मपगरीसा निरी-
गमधनिरींगरीसांनिधमंगमपगरीसा ।
- (१३) मंधसां, निरींगरीसां, गमपमपगरीसां, गंगरीसांनिधरीनिध-
पधमपगरीसा ।

(१३) सिंधुरा-स्वरविस्तार

- (१) मगरेसा, मप, धसां, रेंगरेसां, रेंसां, निध, मप, सां, निध,
मपधगरे, निध, सां, निध, मप, गरे, पगरे, म, गरेसा,
रेमपधसां ।
- (२) सां, धसां, रेंगरेसां, पंगरेसां, रेंसां, पधसां, निध, निध,
मप, गरे, सा, निधमप, निध, म, प, ग, रे, पग, रेसा,
रेमपधसां ।
- (३) रेमपधसां, मपसां, धसां, धसारेंगं, रेंसां, पधसां, धसारेंसां,
निप, सां, निप, मपगरे, रेमरेगरेसा, रेमपधसां ।
- (४) रेमपधसां, धसां, सारेंसां, पपधरेंसां, रेंगरेसां, सां, निध,
मप, धसां, निध, मपध, गरे, पगरे, रेगसा, रेमपधसां ।
- (५) म, पधसां, धसारेंगरेसां, रेंसां, निध, ममपधसां, निध,
रेंसांगरेसां, सारेंसां, निध, मपध, सां, निध, सारेंगरेसां,
सां, निध, मपध, गरे, रेंसांनिध, मपधसां, निध, मपधगरे,
निनिध, म, पधमप, गरे, म, ग, रे, सा ।

(एक प्रकार)

- (१) मपनिसां, रेंगुरेंसां, सां, निध, मपग, रे, मग, रेसा,
रेमपध, सां, रेंसांनि, पध, मपनिसां, रेंगुरेंसां ।
- (२) मप, सांसां, रेसां, गुरेंसां, सां, निध, निध, मपध, गुरे,
पगुरे, सारेनिसा ।

(१४) सिंध-स्वरविस्तार.

- (१) निध, पधनि, सा, निधनिरे, गम, रेमगुरे, गुरे, निधनिसा ।
- (२) गुरसा, मगुरेसा, पगम, रेमगुरेसा, गुरे, धनिसा ।
- (३) रे, धनिसारे, गुरे, धनिरे, मगुरे, पधपमगुरे, निधप, धपम,
पमग, मगुरे, मगुरेसा, गुरे, धनिसा ।
- (४) म, प, धप, मगुरे, धनिसारेमगुरे, धनिसांनिधप, मपगम,
गुरे, पमगुरेसा, गुरे, धनिसा ।
- (५) प, सांनिधप, मपधनिधप, धपम, गम, गुरे, रेगमप, गुरे,
धनिसां ।
- (६) मप, सां, निधनिसां, रेंसां, निधनिरे, गमंगुरे, गुरेंसां धनि-
पध, रेंसांनिधप, गम, निधपम, गमपगुरेसा, गुरे धनिसा ।

(१५) बर्वा-स्वरविस्तार.

- (१) सा, रेगुरेसा, रेम, पधमप, रेगुरेसा, रेनिसा ।
- (२) सा, मगुरेसा, रेम, पध, निध, मप, रेम, धमप, रेगुरेसा,
रेनिसा ।

(३) म, रेम, धमप, रेम, सारेमपधनि, पधमप, रेम, गुरे, रेम-
^म
 पधमप, रेग, रेसा, रेनिंसा ।

(४) म, प, धप, सां, निध, मप, निधमप, रेगरे, मग सारे-
 निंसा, पधनिंसा, मगरेसा प, रेगरेसा, निंसानिध, निधप,
 रेमपधनिपधमप, धमगरे, सारेमधमगरे, म, गरेसारेनिंसा ।

(५) मम, पधनि, सां, नि, सां, निरेंसां, रेनिधप, सासारेम,
 प, धमप, सांनिधप, मपधमप, रेगरेसा, रेनिंसा ।

(१६) धनाश्री-स्वरविस्तार

(१) निंसा^मग, मप, प, मप, म^पग, ग^ममपनिधप, मप^मग, प^मग,
 मगरे, सा, निंसागमप ।

(२) निंसाग^{नि}मप, मप, धप, मप^मग, सा^मग, मप, ग, प, नि, सा,
 पमप, ग, निनिधप, मपधप, मप^मग, प, ग, म^मग, रे, सा,
 निंसागमप ।

(३) प, मप, ग^म, प, निधप, मपनिध^मम, मप^मग, सा^मग, मप^मग,
 म, गरे, सा ।

(४) नि, सा, मगरेसा, निंसा, गमप, ग, रेसा, नि, सा, नि,
 ध, प, मप, निंसा, पनिंसा, मपनिंसा, मगरेसा, निंसा-

गमपग, रेसा, नि॒सागम॑नि॒निधप, सांनि॒धप, मप, नि॒धप,
मपधप, मपग, साग, पग, धप, मपग, नि॒साग, मपग,
मग, रे, सा, ।

- (५) प, मपगम, पनि, पनि, सां, नि॒सां, मंग॑रेंसां, रेंसां, नि॒ध,
प, मप, सां, नि॒ध, प, धप, मपग, नि, सा, गमपग, पग,
गरे, सा ।

(१७) धानी—स्वरविस्तार

- (१) नि॒साग, मग, पग पनि॒पम, ग, पग, सा ।

नि॒सा, मग, सा, पग, म, पग, सा, नि॒सा, प॒नि॒सा, म॒प-
नि॒सा, ग॒गसा, नि॒प, मप, ग॒म, पनि, पमग, सा, नि॒सा,
ग, सा, प॒नि॒सागसा, पग॒पनि॒प, सां, नि॒प, मपग, मपनि॒-
पमग, पग, मग, सा ।

- (२) सा, नि॒सा, प॒नि॒सा, म॒प॒नि॒सा, ग॒गसा, पग, सा, प, मप,
ग, म, नि॒पमग, सा ।

- (३) प, मप नि, सां, नि॒सां, मंग॑, सां, नि, सां, गंम॑पंगं, सां,
गंग॑सां, सां, नि॒सां, ग॒सां, नि॒नि॒प, मपग, नि॒सा, ग॒मप,
नि॒सां, ग॒सां, नि॒नि॒प, मपग, म, पग, मग, सा ।

(१८) प्रदीपकी स्वरविस्तार

- (१) नि, सा, म॒गरे॒सा, नि, सा, नि॒धप, नि॒नि, सा, म, म,
पग, म, नि, सा, गम, पग, म॒गरे, सा, नि॒रेसा ।
- (२) नि, प॒नि, सा, म॒पनि, सा, म, ग, नि॒सा, म, पगम, प,
धप, मपगम, नि, सा॒मग, मप, म, पग, रे, सा, नि, रेसा ।
- (३) नि॒साम, गम, पम, धप, म, पग,म, नि॒धप, सां, नि॒धप,
धप, ग, म, पग,रे, सा, नि, सा, म॒गरे॒सा, पम॒गरे॒सा,
नि॒धप, धप, मगम, पग, रे,सा, नि॒रे, सा ।
- (४) नि, प॒नि, म॒पनि, ग॒मप॒नि, प॒नि॒सा, नि॒सा, म, नि॒धप,
धप, गम, धप, नि॒धप, गम, नि॒साग, म, पग, म, सा, प,
गम, रे॒सां, नि॒धप, सां, नि॒धप, धप, ग, मपम, नि, सा,
ग, म, पग, रे, सा, नि॒रेसा ।
- (५) म, पग॒म, प, नि, प॒नि॒सां, नि॒सां, ग॒रे॒सां, म॒गरे॒सां, रे॒सां,
नि॒धप, म, पग, म, प॒नि॒पनि, सां, मं, मंगं, म॒पं, मं, मंगं-
रे॒सां, सां, नि॒धप, धप, मपग, म, पग॒रे, सा, नि॒रेसा ।

(१९) हंसकंकणी—स्वरविस्तार.

- (१) सा, ग, ग, मप, ग॒रेसा ।
- (२) नि, सा, ग, सा॒गमपग, म, ग, ग, म, पग, रे, सा ।
- (३) नि॒सा, प, नि, सा, म॒प, नि, सा, सा॒ग, म, पग, मप, धप,
नि॒सां, प, गमपग॒ रेसा ।

- (४) सां पधपनिधप, सागमप, निधप, पग, म, पग, रेसा ।
 (५) निसा, पनिसा, निसागमप, ग, पग, रेसा ।
 (६) पग, मपग, सागमप, धपनिध, प, गम, सांनिधप, निध-
 पधप, ग, म, पगरेसा ।
 (७) निसागमप, गमप, धप, गमनिधप, सांप, निध, प, रेंसां,
 निधप, धप, मपग, म, पग, रेसा ।
 (८) निसामगरेसा, पगरेसा, निसागरेसा, नि, सा, निधपमप-
 निसा, ग, म, धप, सां, धप, ग, मप, ग, रेसा ।
 (९) प, मप, गम, प, नि, निसां, मपनिसां, गंरेंसांरेंसां, निधप,
 सां, प, निधप, गं, रेंसां, निधप, सांनिधप, धप, ग, म,
 धपगरेसा, निसागमपग, म, धप, गरेसा ।

(२०) पलासी—स्वरवितार

- (१) सा, नि प, ग, मगरीसा, ग मप, मप, निप, निमप, ग,
 मगरीसा, निनि, सा ।
 (२) सा, मपनिसा, म, मप, गमगप, निप, मपसां, निप,
 गमपनिसांरीं निसांपनिमप, ग, पग, रीसा, निनिसा ।
 (३) रीनिसा, निप, सा, मगरीसा, निसागमप, मपनिमपग,
 मनिपग, म, गरीसा, निनि, सा ।
 (४) पमगरीसा, निपभगरीसा, रींसांनिपमगरीसा, मपनिमपसां,
 ग, म, सागमप, ग, रीसा, निनिसा ।

- (५) प, निप, सां निप, मपसां, रीनिंसांनिप, गमपसां, निप, मंगरींसां, पनिसां, निप, गमपसां, निपग, मगरीसा । निनि, सा ।
- (६) सामग, पग, मपनिमपग, गीनिंसां, निपग, गमपनिंसांमंगं, रींसां, निपग, मगरीसा, निनि, सा ।
- (७) पग मपसां निंसां, पनिसां, मंगं, रींसां, रीनिंसां, पसां, मपनिरींसां, ग, मपनिमपसां, ग, मगरीसा ।
- (८) सां, प, ग, मप, सागमप, निमप, गरीनिंसां, प, मप निरींनिंसां, पनिमपग, मगरीसा ।
- (९) सां, निंसां, गरींसां, मंगरींसां, पनिसांमंगं, रींसां, निंसां गमपं, गं, रींसां, निंसांपनिमपग, मगरीसा, निनि, सा ।
- (१०) सागमपमगरीसा, निनिपमगरीसा, रींरींसांनिमपसांनिपमग रींसा, मंगरीनिंसां पानमपगमगरींसा, गमपानसागमपमंग रींसां, मपग, मनिपग, रीसा, निनि, सा ।

(२१) मधुमाद सारंग—स्वरविस्तार

- (१) सा, निंसा, रे, मरे, ^मपरे, सा, निंसा, पनि, पनिसा, मप-
निंसा, रे, निंसा, रेमप, म, प, रे, ^मपरे, निंसा ।
- (२) निंसारे, मरे, पमरे, निनिप, मप, ^मरे, ^मपरे, निंसा, मप,
निंसारे, रे, मरे, पमरे, निंसारेम, पनिपमरे, रे, सा ।

(३) नि, सा, रे, प^पमरे, मरे, मप, नि^पनिप, नि^पमप, सां, नि^पप,
मप, नि^पपमरे, नि^पसारे, मपनि^पनि^पपमरे, प^पमरे, मरे, प^मरे, सा ।

(४) नि, सा, प^मनि^पसा, म^पपनि^पसा, सा, रे, प^मरे, मपनि^पनि^पपमरे, सां,
नि, प, मरे, प^मरे, सा ।

(५) मपनि, पनि, सां, नि^पसां, नि^पसारें, सां, नि^पनि, प, नि,
सारेमप, नि, रेंनि, मप, सां, नि, प^पमरे, प^मरे, रे, सा ।

(६) सा, रेंनि, मप, सां, नि^पमप, मरे, रेमरे, सा, नि^पनि, मप,
नि, सा, रे, मप, नि, मप, रे, सा ।

(७) मपनि, नि, सां, रें, म^मरें, प^मरें, सां, नि^पप, मप, नि^पप, मरे,
प^मरे, सा ।

(२२) शुद्धसारंग—स्वरविस्तार

(१) सा, नि, सा, रे, मरे, सा, नि^पसा, प^पनि^पसा, रे, मरे, प^पमरे,
सासारेसा ।

(२) सा, नि^पसा, प^पनि^पसा, म^पपनि^पसा, रे, मरे, प^पमरे, धप, मप-
धप, मरे, प^परे, नि^पसा, सारेसा ।

(३) सा, नि^पसा, रेम^पप, धप, म^पपधपमरे, पमरे, नि^पसा, रे, नि^पप,
मरे, पमरे, मरे, सा, सारेसा ।

(४) सा, रे, प, प, म^पपध, प, म^पपधप, मरे, सा, नि^पप, म^पप,
धप, मरे, पमरे, मरे, रे, सा ।

(५) सासा, रेरेसा, सासारेरे, म^पपधप, म^पपधम^पप, मरे, पमरे, सां,
नि^पप, म^पपधप, मरे, परे, सा ।

(६) सानि^पनि^पपमरेमरेपम^पपधप, सा, नि^पसा, रे, ममरे, नि^पनि^पपमरे,
म^पपधप, प, मरे, परे, नि^पसा ।

(७) सासारे, मरे, सा, पमरेसा, म^पप, सां, ध, प, म^पप, धप,
म^पपरे, मपनि^पनि^पपमरे, पमरे, मरे, सा, सा, रे, सा ।

(८) म^पपनि^पसा, प^पनि^पसा, नि^पसा, रे, म^पप, रे, धप, म^पप, रे, परे,
सा, ध, प, म^पपधप, रे, परे, रे, सा ।

(९) म^पपधधप, म^पप, मरे, म^पप, धप, मरे, नि, सारे, सारे, म^पप,
सां, ध, प, म^पप, मरे, परे, सा ।

(१०) नि^पनि^पपम^पप, ध, प, मरे, नि सां, रेंसां, प, मरे, पमरे,
मरे, रे, सा ।

(११) सा, नि^पसा, म^पप, मरे, प, धप, सांध, प, म^पधप, प, मरे,
नि^पसारेमपनि^पमरे, पमरे, रे, सा ।

(१२) सा, प, प, म^पप, धप, म^पपधप, मरे, नि^पसारे, पमरे, ध, प,
म, रे, सां, नि^पध, प, म^पप, धप, मरे, रेमपमरे, पमरे,
मरे, रे, सा ।

(१३) ममप, निसां, सां, सारिंसा, मरेंसां, निसां, ध, प, म^पप, सां,
ध, प, म^पप, ध, प, मरे, नि^पसारे, मरे, पमरे, रे, सा ।

(२३) बडहंस सारंग—स्वरविस्तार.

(१) नि^पनि^पप, मप, नि^पप, म, रेसा, रेम, मप, नि^पनि^पपमरे, सा,
म, मप, रेसा, मप, पम, मप नि, सां, सां, सारिंसा, नि,
मप, नि^पनि^पपमरेसा, सारेसा^पनि, नि^पसा, रेमपमरेसा ।

(२) मप, पनि^पप, नि, नि, सांसांसां, रेरेसां, नि, रेसांनि, पपम,
नि^पनि^पप, म, रेसा, सारेनि, सारेमप, नि^पप, नि^पनि, रेरेसाम
मम, पपनि^पनि^पपमम, रेरेरेम, रेमपधपमरेसा ।

(३) मममपपनि^पनिसांसांनिसारिंरेसांधप, मममपपधप, धपप,
मरे, नि^पनि^पपमरे, मरेमप, नि^पपमरेसा ।

(२४) सामंत सारंग—स्वरविस्तार.

(१) सा, रे, मरे, सा, नि^{सा}सा, रे, मरे^{सा}सा, प^ममरे, रे^ममप^पमरे,
 सा^{सा}नि^{सा}सा, प^{सा}नि^{सा}सा, नि^{सा}सा, रे, मरे, मप, मप, म^पनि^धप,
 प, मप, मरे, नि^धप, मरे, रे^मम, रे^मसा, सा, रे, रे, मप, प^मनि^प,
 मरे, नि^प, म^मनि^धप, मप, धप, मरे, रे^ममप, मरे, रे, सा ।

(२) नि^{सा}सा, प^{सा}नि^{सा}सा, नि^धप, म, प, नि^धप, मप, मरे, रे^ममप,
 मरे, रे, सा ।

(३) सा, नि^{सा}सा, नि^प, नि^{सा}सा, म^मप^मनि, धप, मप, नि^{सा}सा, रे, म,
 मप, प, नि, प^पमरे, रे^ममप^पमरे, रे, सा ।

(४) रे^ममप, नि^धप, मप, सां, नि^धप मप, धप, मरे, रे^मसा नि^प,
 म^मनि^धप, मरे, रे^ममप^ममरे, प^पमरे, मरे, रे, सा ।

(५) सारे^ममरे^{सा}सा, सारे^ममप^ममरे, सा, सारे^ममप, नि^धप, म^मनि^धप,
 मरे, सां नि^प, मप, धप, मरे, नि^{सा}सा, मरे, प^पमरे, सा ।

(६) सारे^ममप, रे^ममप, धप, म^मनि^धप, धप, मरे, सां, नि^धप, मप-
 धप^पमरे, मरे, प^पमरे, नि^धप, मप, नि^धप^पमरे, धप^पमरे, मरे, रे, सा ।

(७) सा, रे, म, प, प, मप, मनिधप, मरे, मप, धप, मरे,
मरे, सा, रे, सा ।

(८) मप, नि, सां सां, निसां, निप, निसां, रे, रे, नि, निसां,
रेसां, निप, मपनिधप, मप, निसां, रे, सां, नि, प, मप,
मरे, मपमरे, सा ।

(२५) मियांकीसारंग—स्वरविस्तार.

(१) सा, निसा, रे, पमरे, सा, निसा, धधनिपमप, धधनिसासा,
रे, मरे, सा, निसा, पध, निसा, सारेमरेमप, प, धप, मरे,
मपमरे, मरे, सा, निप, मरे, सा, निसा, रे, मरे, पमरे,
सा, प, ध, धनिसा, सारेसा ।

(२) सारेसा, निसा, पधनिसा, धनिसा, निसा, सारे, मरे,
पमरेसा, मप, धध, निप, मपधनिप, सां, ध, निप, मपमरे,
सा, निसा, रे, मरे, सा ।

- (३) सां, नि^पप, मप^पप, नि^धध, नि^धध, सां, नि^धसां, रें^धसा, मरें^धसां,
 रेंसांरेंसां, धनि^धप, मप^{नि}ध, नि^{नि}सां, रेंसां, धधनि^{नि}पमपमरेरेसा ।
-

(२६) लंकदहन सारंग—स्वरविस्तार.

- (१) सा, रीम, मप, निप, मरी, मपसां, निधनिप, ग, मरी,
 पमरी, सा ।
- (२) मरीसा, रीप, निधनिप, रीमप, सां, पनिप, मपनिप, ग,
 म, पमरी, सा ।
- (३) सा, री, रीप, रीमरी, निप, मप, ग, मरी, निसा, पनिसा,
 निधनिप, मपसा, री, मरी, पमपरी, ग, मरीसा ।
- (४) म, मप, निप, रीमप, निसा, रीमरीप, मपसां, निप, रीम-
 पनिसां, रीसां, धनिप, मपनिप, री, सानिसारी, ग, मरी,
 रीसा ।
- (५) मरी, पमरी, निधनिप, मरी, मपसां, पनिमपरी, रीमपरीसां,
 धनिप, सां, निप, ग, मरी, सा ।
- (६) ममपमपनिप, नि, सां, सां, निसां, रीं, मरीं, सां निसां-
 रीसां, निप, सांधनिप, मपग, मरी, सा ।
- (७) निधनिप, रीमपनिसां, निप, रीसां निप, मपनिसारींमरींसां,
 धनिप, गंमरींसां, धनिप, मपसां, निप, रीमप, री, सा ।
- (८) सां, निसां, मपनिसां, रीसां, रींमरीपं, रींमरींसां, निसांरीं-
 मंसांरींनिसां, धनिप, ग, म, निसारीप, मरी, सा ।

(९) निनिधनिपमरीसा, रींरींसांनिपमरीसा, मंमंरींसांनिधनि-
पमरीसा, निःसारीमपनिसांरींमंसांरींपमंरींसां, धनिपमगमप-
मरीसा ।

(२७) पटमंजरी—स्वरविस्तार

(१) सा, नि, सा, रेसा, रेमप, प, मप, प, धग, मप, रेमपधग
रेसा, रेनिसा ।

(२) निसा, रेमप, मप, धपमधप, गरे, ग, सा, धपमपधगरे,
गमगरे, सा ।

(३) मप, पसां, पमप, सा, मप, धपनिप, मपसां, पधप, गरे,
मपधगरे, मगरे, सा ।

(४) सा, निसा, प, सा, गरे, सापमप, गरे, रे, सा, निसाधप,
सा, नि, सा, मगरे, सा ।

(५) साम, मप, मपगरे, मप, धप, सां, पधपमगरेगम, गरे,
निप, म, पगरे, रेसा ।

(६) रेसा, धप, सा, निधपधप, निसा, सा, रेम, मप, प, मप-
धगरे, रेगमगरे, सा ।

(७) सा, रेसा, रेगरेसा, रेमप, मपधगरेगमगरेसां, प, मपधगरे,
ग, मगरे, सा ।

(८) मम, प, सां, सां, रेंसां, गंरें, गं, सां, नि, सां, प, मप, सां, रेमप, प, निधप, मप, धप, गुरे, पगुरे, गमगुरे, रेसा ।

(२८) सूहा-स्वरविस्तार

(१) सा, ^मनि^मसा, ^मग, ^मम, ^मप^मग, ^ममेरे, सा, ^मनि^मसा, ^मनि^मप, सा, ^ममेरे,
^मप^मग, ^मम, ^मरेसा, सा, ^मग, ^मम, ^पप, सां, ^मनि^मप, ^ममप^मग, ^मम, ^मप^मग, ^ममेरे,
 सासा, ^मनि^मसा ।

(२) ^मप^मनि^मसा, ^ममेरेसा, ^मग^ममप, ^मग, ^मम, ^पनि, ^पनि^पप, सां, ^पनि^पप, ^परेंसां,
^पनि^पप, ^ममप^मग^मम, ^मरेसा, ^मसारेसा ।

(३) ^मसारेसा, ^ममेरे, सा, ^पप^मग, ^ममेरेसा, ^मनि^मप^मप^मग, ^मम, ^मरेसा, सां,
^मनि^मप^मप, ^मग^मम, ^{सां}रेसा, ^मनि^मरेसा ।

(४) ^पसामेरे, ^मप, ^मनि^मप^मप^मनि^मप, सां, ^मनि^मप, ^पमप, ^पग^ममेरे, सा, ^पनि^मप-
^ममप, ^मग^मम, ^मनि^मप, ^गग, ^ममेरेसा ।

(५) ^पममप, ^पप, ^पनि^मप, सां, सां, ^पनि^मसां, ^पसांमंरेंसां, सां, ^पनि^मप,
^मग, ^{मं}मप, ^पगंमं, ^मरें, सांसां, ^मनि^मप, ^ममप, ^गग, ^मम, ^मरेसा ।

(२९) सुधराई-स्वरविस्तार

(१) धप, रे^मसारे^र ग, म, रेसा, नि^मसारे^मम, मप, नि^मप, सां, नि^मप,
नि^मग, म, रेसा, रे^मग मनि^मप ।

(२) सा, रेसा, नि^म, सारे^मग, मरेसा, मप^गग, म, रे^मरे^मग, धप^मग,
मरेसा ।

(३) प, मप, ग^ममरे^{सा}रे^पग, म, मप, नि^पप, सां, नि^पप, मपनि^पसांरेंसां,
नि^पप, मपमपधप, ग, म, मप, रेसा ।

(४) नि^मसा, नि^मसारे^मग, मरे, सा, सारे^ममपधप^मग, म, प, रेसा, मप,
सां, ग, म, नि^मप, पमप, ग, म, रेसा ।

(५) मपनि^पप, सां, नि^पसां, पनि^मसांरेंसां, नि^पप, नि^मनि^पमपधप^मग,
म, सारे^मग, म, मप, ग, मरेसा ।

(३०) शहाना-स्वरविस्तार

(१) सा, नि^{सा}सा, रेसा, प^मग, म, म, रेसा, नि^पप, सा, नि^पसा, रे,
ग, मरे, सा, नि^मसाम, प^मगम ।

(२) नि^{सा}नि^मसा, ग^ममेरेसा, नि^मपग^{मम}मेरेसा, नि^मसारेसा, ग^मगमेरेसाप,
ग^मम, नि^मपग^मम, पसां, नि^मपग^मम, रे, सा ।

(३) नि^{सा}सा, रे^{मम}मेरेसा, म^मपग^मग, प^मग, नि^मधनि^मप, म^मपग, रेसां, नि^मध
नि^मप, म^मपग, म, ध^मप, ग, मेरे, सा ।

(४) सा^{नि}साध^{नि}धनि^मपमप, सां, नि^मधनि^मप, प^मग नि^मप, ग^ममेरेसा,
नि^मसा, म, म, प^मगम ।

(५) नि^{सा}सा, रे^ममेरेसा, प^{नि}ग^ममेरेसा, ध^ममप^मग^ममेरेसा, सां, नि^मधनि^मप,
प, म^मप, ग, म^मनि^मप, ग, म^मपग, मेरे, सा ।

(६) म^पप, नि^पसां, सां, सां, रेसां, रे^ममेरेसां, सांरे^मनिसां, सां,
नि^पनि^मप, म^मप, सां, नि^मप, म^मप, ग^मम, प^मग, मेरेरेसा ।

(३१) नायकी कानडा—स्वरविस्तार

(१) सा, रे^मनि^मसा, रे^मप^मग, ग^ममेरेसा, रे^पनि^मसा, नि^मप, म^मपसा, रे,
ग^{मम}गमेरे, सा ।

(२) सा, रेप^मग, नि^मप, मप^पग, मरे, सा, ममप, नि^पप, नि^ममप, ग,
प^मग, मरे, सा ।

(३) सारेनि^मसा, रेप, ग, मपनि^पपमप^मग, सां, नि^पपमपनि^ममप^मग,
प^मग, मरे, सा, रेनि^मसा ।

(४) सां, नि^पनि^पप, रेंसां, नि^{मं}प, मपसां, रेंपं^{मं}गंमरेंसां, नि^{मं}सांरेंनि^{मं}सां,
नि^पप, मप^मग^मम, प^मग^ममरे, सा ।

(५) सा, रेप^मग, मरे, सा, रेनि^मसा, रेप^मग, म, मप, प, सां, नि^पप,
मपसां, नि^पप, प^मग, म, रेसा ।

(६) मप, नि^पप, नि^{मं}सां सां, रेंरेंसां, रेंपं^{मं}गं, मरेंसां, रेंसां, नि^पप,
सां, नि^पप, मप, नि^पपमप^मग^मम, प^मग^ममरेसा ।

(७) सांसां, सां, सांरेंनि^{मं}सां, रेंपं^{मं}गं, मं, रें, सां, रेंनि^पसां, नि^पप,
मप, सां, नि^पनि^मप, मप, ग, म, प^मग, म, रेसा ।

(८) नि^मसा, रेसा, रेमरेसा, प^मग, मरेसा, म, म, प, प, नि^पप,
सांनि^पप, म, रेंसां, नि^पप, मप^मग^मम, नि^मप^मग^ममरेसा ।

(३२) देवसाख-स्वरविस्तार.

सा मा म म म सा पृथ
 (१) नि॒सा, मरे॒सा, नि॒सा, ग, ग, प॒ग, मरे॒सा, नि॒सा, नि॒नि॒प,
 प मम
 म॒प॒नि॒सारे, प॒ग॒ग॒मरे॒सा ।

मम म प म
 (२) नि॒सा, ग॒ग, प॒ग, नि, प॒म॒प॒ग, मरे, सा, नि॒सारे, सा, मरे-
 म प ध मम
 सा, प॒ग, मरे, सा, सां, नि॒नि॒प, ग॒ग॒प॒ग, म, रे, सा ।

म म सा म म म
 (३) नि॒सारे, सा, प॒नि॒सा, रे॒मरे, प॒ग॒मरे॒सा, नि॒सा॒ग, प॒ग, नि॒प-
 म प म म म
 ग, सां, नि॒प, म॒प॒नि॒प, ग, ग॒प॒ग, म, रे, सा ।

मंमं प ध
 (४) प॒नि॒प, सां, सां, सां॒रे॒सां, गं॒गं॒मरें, सां, नि॒नि॒प॒सां, मरें॒सां,
 मं मं प ध मम प म
 नि॒सां॒गं॒मं॒पं॒गं, मरें॒सां, नि, नि॒प, ग॒ग॒म॒प, सां, नि, ग,
 म
 प॒ग, म, रे॒सा । सा, रे॒सा ।

म प म
 (५) मरे॒सा, ग॒मरे॒सा, प॒ग॒मरे॒सा, नि॒प, म॒प, सा, रे॒प॒ग, मरे, सा,
 म प ध म
 नि॒सारे॒मरे, प, म॒प, सां॒नि॒प, म॒प॒ग॒म, नि॒नि॒प, ग॒म, रे, सा ।

(३३) कौंसी अथवा कौशिक कानडा (बागेश्री अंग)
स्वरविस्तार

(१) नि^पप, म^मप, ग^ममनि^मध, नि^मप, ग^ममरे^मसा, सा^मम, म, प^मग^मम,
नि^{नि}नि^मधनि^मप^मग^म, म, म^मग^म, प^मम, प^मग^म, ग^मरे^मग^म, म^मग^म, रे^मरे^मसा ।

(२) सां, नि^{नि}सां, नि^मध, धनि^मधप, धम, नि^मप, म^मग^म, म^मधनि^मध,
प^मधम, ग^म, रे^मसां, नि^मधम^मग^म, प^मधम, ग^म, रे^मसा ।

(३) प^{रे}सांनि^{नि}सांनि^{रे}धधनि^{नि}पम, म^मग^मम, रे^मसा, सा^मनि^मसानि^मसाम^मम^मग^म,
म, प^मधनि^मग^मरे^मसा^मरे^मसा ।

(४) म^पपनि^{सा}धनि^{रे}धनि^मसां, सां, सां, नि^मरे^मनि^मसांसांनि^मसां, नि^मधनि^मसां-
नि^पसांनि^{सा}रे^मसां, नि^मध^मनि^मम^मप^मम^मग^मग^मम, रे^म, सा, सा^मम, ग^म,
म, प, म^मनि^मप^मम, म^मग^मरे^म, सा ।

(मालकौंस अंग)

(५) नि^मसा, म, म, सा^मप^मम^मग^म, म^मग^म, रे^मग^म, प^मग^मम^मग^मरे^मसा, नि^मधम,
रे^{सा}सा, ग^म, रे^मसा, म, प, प, म^मग^मरे^मग^म, म^मप^मग^म, रे^{सा}सा, नि^मसारे^मसा,
नि^मधसा, म^मप, सा, ग^म, म^मग^म, प^मग^म, म^मग^मरे^मसा, नि^मसाम ।

(६) ^{नि}ध^{सा}नि^मसा, रे^गग, रे^गग, रे^{सा}सा, म, प^गग, ग, रे^गग, रे^{सा}साम, साम,
 प^गग, साम^मध^मम, ग, नि^मध^मम, ग, प^गग, म^गगरे^{सा}सा, नि^{सा}सा, म,
 सा
 म, नि, साम, प^गग, म^धनि^धम, सांनि^धम, ग, प^गग,
 म^गग, रे^{सा}सा, नि^{सा}सा, म, म^धनि^{सां}ध^{नि}सां, सां, नि^धनि^धम,
 मं^गमं^गरे^{सां}सां, सांनि^ध, नि^ध, म, ग, प^गग, म^गगरे^{सा}सा, नि^{सा}साम ।

(३४) मेघमल्लार-स्वरविस्तार.

(१) सा^मनि^मसा, नि^मसा, र^मरे, सा, नि^मसा, प, म^{रे}रे, सा, नि^मनि^धप,
 मप, म^{रे}रे, सा ।

(२) सा, रे^पसा, नि^धनि^प, म^पप, सा, रे, म^{रे}रे, नि^पप, सां, नि^पप,
 म^{रे}रे सा ।

(३) सा, रे^मरे, प^पमरे, नि^पनि^प, म^पप, सां, नि^पप, म^{रे}रे, रे^मरे, म^{रे}रे, सा ।

(४) रे^मरे, म^{रे}रेसा, नि^पप, सा, नि^मसा, रे, प^ममरे, सा, नि^पनि^पमरे,
 प^ममरे, म^{रे}रेसा ।

(५) म^मप, नि^मसा, प^पनि^मसा, रे, रे, प, मे^परे, नि^मसां, नि^पप, म^मनि^पप,
 मे^परे, सां, नि^पपमे^परे, प, मे^परे, सा, म^पप, नि^पसां, सां^{सां}रेंसां,
 नि^धसां^{मंमं}रेंसां, नि^धनि^पप, रे^परे^धमं^परेंसां, रे^पसां, नि^पनि^पपम^पप, सांनि^प-
 पमे^परे, सा ।

(३५) मूरमल्लार—स्वर्गविस्तार

(१) सा, नि^मसा, रे^मम, म^पप, नि^धप, म^पपमे^परे, सा, नि^पनि^पपमे^परे, सा,
 रे, सा ।

(२) सा, रे^मम, म^पपनि^धप, नि^पसां, रे^पसां, नि, म^पनि^धप, म^पपनि,
 पमे^परे, सा ।

(३) सा, नि^मसा, मे^परे, सा, म^पपनि^धप, म^पपनि^पसां, रे^पसां, नि^म-
 नि^धप, ध^पप, मे^परे, सा ।

(४) नि^मसा, प^मनि^मसा, रे^म, मे^परे^पपमे^परे, सा, नि^पनि^धप, म^पपमे^परे, रे,
 सां, नि, म^पपनि^धप, मे^परे, सा ।

(५) सासा^परे^मम, सा^परे^मम, म, प, म, नि^धप, प^मम, म^पपनि^पसां, रे^पसां,
 मे^परे, सां, नि, म^पपनि^पसां, नि, म^पपनि^पसां, रे^पमे^परे^पसा, नि, म,
 नि^धप, मे^परे, सा ।

(६) सा^परे^मम^पपनि^धप, म^पपसां, नि, ध^पप, रे^पसां, रे^पमे^परे^पसां, सांनि,

मप, निधप, धप, मरे, रेंसां, नि, म, निधप, मरे, प,
मरे, सा ।

(७) सारे^{म प}निसा, रे, नि^मनिमप, धप, मरे, सां^पनि, मपनिधप, धप,
मरे, रें^मनि, मपनिधप, मरे, प, मरे, सा ।

(८) ममप, नि, निसां, सां, रें^{नि}निसां, निसारें^{नि}मरेंसां, निसां, नि,
मपनिसारें^{नि}मरेंसां, नि, म, प, रें^{नि}नि, मप, निधप, धप^{मरे},
पमरे, सा ।

(३६) रामदासी मल्लार-स्वरविस्तार.

(१) पम, ग^मम^ममरे, सा, रे, सा, नि^मसा, रेग, म, पमपग^म, म, नि^मप,
ग^मम, पग^म, मरेसा ।

(२) सा, नि^मसा, ग^मम, रे, सा, नि^मसारेग, म, रेगम, पम, निध-
नि^मप, मप, म, पग^म, मरेसा ।

(३) साम, म, गम, पम, गमपग^मम, मरेप, नि^मप, मरे, सारेगम,
पग^मम, रेसा ।

(४) मप, नि^मप, निसां, सां, निसां, रेंसां, निधनि^मप, म, ग, म,
पम, नि^मप, मरे, सा, ग^मम, मरे, प, पम, गम, रे, सा ।

- (५) पध, निसां, सां, निरेंसां, निसां, निप, गम, मप, ^मगम,
पमनिप, ^मगम, पग, मरेसा ।
- (६) साम, म, गप, मगप, पमनिप, पग, म, रेसा, निसा,
निधनिप, सा, निसा, ^मगम, रेप, मगम, रेम, रेसा ।
- (७) मप, प, निसां, सां, निधनिप, पगमरेसा, ^मगमरेप,
^ममगम, रे, ^ममरे, सानिसा ।

(३७) नटमल्लार—स्वरविस्तार.

- (१) सा, ^गरेग, ग, (म)^गरे, ^ममरे, सा, निसा, रेसा, निसा, ^मरेग,
मप, (प), मग, ^ममरे, ^मरेमरे, निसा ।
- (२) ^मरे, मम, प, प, ममपप, ममपम, ^पनिध, सां, (सां)धनिप,
^गमग, ^ममप, ^गगग, गग, गम, ममग, मप, ^{रे}मनिध, सां
(सां)धनिप, ^{रे}मग, ग, म, (म)ग, ^ममरे, सा ।
- (३) ^{साम}सा, ^{रे}पपमगग, मम, प, प, धसां, निसां, ^{सां}रेंसां, सांधनिप,
ग, म, पम, (प)^मम, गम, ^मरेमरे, सा ।

(३८) मिराबाईकी महार—स्वरविस्तार.

- (१) सा, मरेसा^मरेनि^मसा, नि^मध, नि^मसा, ग, मरेप, नि^मधसां, सां^मध-
निप, मप, मग, म, रेमपधमप, ग^ममरेसा ।
- (२) सा, नि^मधनि^मसा, धनि^मप, सा, मरेप, नि^मधनि^मप, गम, रेम-
पधमप, मरेसा ।
- (३) मरेसा, पग^ममरेसा, नि^मधसां, धनि^मपग^ममरेसा, नि^मधसा, रेप,
रेम, रेमपधमप, गम, निप, निमप, ग^ममरेसा ।
- ४) प, मप, मरेप, नि^मधनि^मप, सां^मधनि^मप, निसां^मरेंधनि^मप, मप-
निसां^मरेंगं, मं, रेंसां, धनि^मसां, मप, गम, पमनि^मप, रेमपध-
मप, मरे सा ।
- (५) म, ग^मम, पग^मम, निप, ग^मम, सां^मधनि^मप, ग^मम, रेमरेप, ग^मम,
रेंसां, धनि^मसां, मपग^मम, रेमपधमप, मरेसा ।
- (६) म, मप, निपसां, सां, निसां, निसां^मरेंधनि^मप, पधनि^मसां,
धनि^मप, मगम, निपसां, धनि^मप, धमप, रेमरेप, मरेसा ।
- (७) पनि, ध, निसां, रेंगं^ममं, रेंसां, निसां^मरेंध, निप, गम, गमप,
रेंध, निप, मरेपमनि^मप, रेमपधमप, मरेसा, रेनि^मसा ।
- (८) सां, निसां, नि, धनि^मसां, मरेसां, रेंपं^मगं, मरेसां, सां^मध,
निप, मप, गम, रेमपधनि^मसां, निप, निमप, ग, म, धमप,
मरेसा ।

- (९) मरेसारेनिसा, रेपगमसारेनिसा, रेपमनिपसांधनिसांधनिमप-
गमरेसा, रेपमपनिधसांनिरेसांमंगंमंसारिंधनिपमपगमरेसा ।
- (१०) निसारेसा, निसारेग, मरेसा, निसारेमपधमपगमरेसा, निसा-
रेमपनिधनिसांधनिपगमरेसा, निसारेमपनिधनिसारिंंगं, मरे-
सांधनिसांधनिपमपग, मरेसा ।

(३९) चरजूकी मल्लार—स्वरविस्तार.

- (१) सा, मरे, निसा, रेमरेप, धप, सां, निधप, गरे, गसा ।
- (२) सा, निसा, रेमरे, प, धप, गरे, मरेप, सांनिधप, गरे, मरे,
प, धप, निधप, गरेगसा ।
- (३) मप, धप, सांनिधप, रेगरेसां, निसारिंमरेसां, सांनिधप,
मपधप, मरे, मप, धप, रेमरे, पगरे, गसा ।
- (४) मरेसा, निधपगरेगसा, निसारेमपनिधप, रेमपसां, निधप,
मप, गरे, गसा ।
- (५) निसारेमपनिधप, रेमरेप, सांनिधप, गरेगंसां, निधप,
मपधप, गरे, गसा ।
- (६) मपनिसां, सां, रेनिसां, गरेगंसां, सांनिधप, धपसां,
निधप, मरेमप, धप, गरेगसा ।

- (७) ग॒रेग॒सा, म॒रेप॒मध॒प, ग॒रेग॒सा, म॒रेप॒मनि॒पसांनि॒धप, ग॒रेग॒सा,
म॒रेप॒मनि॒पसांनि॒रेसां॒ग॒रेग॒सा, नि॒धप, ग॒रेग॒सा ।
- (८) नि॒सारे॒मरे, नि॒सारे॒पम॒रे, नि॒सारे॒मप॒सांनि॒धप॒मरे, नि॒सारे॒मप॒-
नि॒सारेंसांनि॒धप॒मरे, नि॒सारे॒मप॒निसां॒रेंग॒सांनि॒धप॒ग॒रेग॒सा ।

(४०) चंचलसस मल्लार—स्वरविस्तार.

- (१) सा, रेप, म॒रे, नि॒सा, रेसा, नि॒, प, म॒प, नि॒सा, रेग,
म, रेसा ।
- (२) सा, म॒पनि॒सा, रेप, म॒रे, म, सा॒रे, म, नि॒प, म, प, म॒रे,
सा
रेग, म, रेसा ।
- (३) म॒रेसा॒रेसा, रेप॒म॒रेसा॒रेसा, म॒रेप॒मनि॒प, म॒रेसा, नि॒सा, रेग,
म॒रेसा ।
- (४) सा॒रेग, म॒रेसा, सा॒रेप॒म, रेग, म॒रेसा, म॒रेप, नि॒, प, म॒रे,
सा॒रेग, म॒रेसा, म॒रेप, म॒पसां, नि॒प, ग, म॒रे, सा ।
- (५) सा॒रेनि॒सा, सां, म॒पनि॒सां, नि॒, म॒प, म॒रेप, म॒पसां, रेंसां,
रेंग, म॒रेंसां, नि॒सारेंनि॒सां, प॒नि॒मप, म॒रेप, म, रे, ग, म॒रेसा ।

(६) नि॒सार॑मरे॒सा, नि॒, प॑, नि॒सा, रे॒प, म॑रे, प, म॒पसां, म॑, म॒प,
 म
 रे॒प, नि॒प, म॑रे, ग॒, म॑रे॒सा ।

(७) म॒पसां, नि॒मप॑सां, रेँ, सां, म॑रेँसां, रेँनि॒सां॒पनि॒मप॑रेम, नि॒म-
 प, रे॒ग, म॑रे॒सा ।

(८) नि॒सार॑मरे॒सा, नि॒सार॑रे॒ग, म॑रे॒सा, नि॒सार॑पम॒पम॑रे॒सा, नि॒सार॑-
 पम, नि॒मप॑रे॒ग, म॑रे॒सा, नि॒सार॑म॒पनि॑सां, नि॒म, प॑रे॒ग,
 म॑रे॒सा ।

(९) सा॒मरे॑पम॒निप॑सां, नि॒मप, म, रे॒ग, म॑रे॒सा, सा॒मरे॑पम॒निप॑सां
 नि॑रेँसां॒रेँनि॒सा॒पनि॒मप॑रे॒ग, म॑रे॒सा, सा॒मरे॑पम॒निप॑सां॒नि॑रेँसां॒रेँगं, ॐ
 मंसां॒रेँनि॒सां॒पनि॒मप॑रे॒ग, म॑रे॒सा ।

(१०) ग॒, म॑रे॒सा, नि॒पम, रे॒ग, म॑रे॒सा, सां॑रेँसां॒नि, म॒पम, रे॒ग,
 म॑रे॒सा, म॑रेँसां॒रेँनि॒सां, म, प॑म॒रे, ग॒, म॑रे॒सा, नि॒सा, म॑रे,
 प, म॒पनि॑सां, म॑रेँपं, रेँगं, म॑रेँसां, प॒नि, म, प॑सां, म॑रे॒ग,
 म॑रे॒सा ।

(४१) धूँडियामल्लार-स्वरविस्तार.

(१) म॑रेम॒प, म॒नि॒धनि॒मप, म॒पसां, रेँनि॒सां, सां॑नि॒धप, म॑रे,
 रे सा
 ग॒, रे, म॒मप ।

- (२) प, मरे, मप, मनिधनिप, सां, निधप, मरे, पमरे, ^{रेसा} गरे, ममप ।
- (३) मरे, मनिधनि, म, प, सां, निसारिमरेसां, मरेप, मपसां, म, ^{रेसा} निधनिमप, मरे, गरे, मप ।
- (४) मरे, पमरे, मपसां, निधप, मरे, मपनिरेसां, मनिधनिमप, मरे, निसा, मरे, मरेनिसां, निमप, ^{रेसा} मरे, गरे, मप ।
- (५) ^{रेसा} गरे, मप, ^{रेसा} निधनिमप, ^{रेसा} गरे, मपसां, निधप, ^{रेसा} गरे, मपनिसारिं, सां, ^{रेसा} निमप, ^{रेसा} गरे, मपनिसारिमरेनिसां, निमप, ^{रेसा} गरे, मप ।
- (६) ममपमपसां, निसां, निसारिं, रेगंसारिं, निसां, निधनिमप, ^{रेसा} सां, निमपमरे, गरे, मप ।
- (७) मपसां, रेमरे, सां, मरेप, मरे, निसां, रेगरेसां, निसां, रे, सां, मपनिसां, ^{रेसा} नि, मप, गरे, ममप, सां, निधप, मरेमप ।
- (८) मप, निधप, मरेसा, मपसां, रेसां, पनिधप, मरे, मपनिसां, रेमरेसां, पनिसारिं, सां, मनिधनिप, रेम, ^{मसा} सारे, गरे, मप, म, रे, सा ।

(९) ममरेसानि॒सा, नि॒निपमरे॑सानि॒सा, रेरे॑सांनि॒मपनि॑धपमरे॒सा,
 नि॒सारेमपनि॑सांरे॒मरे, पंमं, सांरे॑सां, नि॒मपनि॑धप, रे॒मरेसा,
 नि॒सा^{रेसा}रे, ग॒रे, मप, नि॒धनि॑मप ।

(१०) सा॒रेमरे॑मपनि॒पनि॑सां, रे॒गं, रे, म॑रेसां, नि॒सांरे॑सांनि॒मपसां,
 नि॒^{रेसा}, मप, ग॒रे, मप, नि॒धनि॑प ।

(४२) रूपमंजरी मल्लार—स्वरविस्तार.

(१) नि॒^{रे सा}सा, मे॒रेप, मगम, रेसा, नि॒धप, ग॒रे, ममप, पम, नि॒ध,
 नि॒प, मपमग, रे, सा, रेपमगरे, सा, नि॒धप, सा ।

(२) सा, रेसा, नि॒धप, मे॒रेप, मगम, रेसा, नि॒धप, मे॒रेपम,
 नि॒धप, मपमगरे, सा, रेपमगरे, सा नि॒, ध, प, सा ।

(३) ^{रे सा}ग॒रे, मप, पमनि॒धनि॑प, सांनि॒धनि॑धप, म, पमग, ^{रे}ग गसा,
 नि॒धनि॑प, मपसा ।

(४) सा, मे॒रेप, मगरे, सा, नि॒धनि॑प, मगरे, सा, सां, नि॒धप,
 मगमरे, सा, रे, मप, मनि॒धप, सां, धनि॑प, मग, म,
 रे॒गसा॒रे, म, रेप, मगरे, सा, नि॒धनि॑प, सा ।

- (५) प, मप, निधनिप, रेप, निसारेप, मरे, प, मनिधनिप, मप-
मगमरे, सा, रेप, मगरे, सा, सां, निधप, मगरे, सा,
निधनिप, सा ।
- (६) मरे मप, सां, निसां मरेंसां, निधनिप, मगरे, प, मप, सां,
निधप, मगमरे, प मरे, सा, निधनिप, सा ।
- (७) रे, मम, प, निधनिमप, सां, रें, मं, गरें, सां, रेंपमंगमरें,
सां निधप, रेगसारे, ममप, पमनिधप, मपमगरे, सा, रेप,
मगरे, सा, निधनिप, सा ।
- (८) मपसां, निसां, मरेंसां, निधनिप, सांनिधप, निधप, म,
पम, निधनिप, मपमगरे, सा, रेप, मगरे, सा,
निधनिप, सा ।
- (९) रेसा, रेपमगमरेसा, निधनिप, मपमगमरेसा, ^{रे सा} गरे, मप,
सांनिधप, मगमरेसा, रेमपसां, मरेंसां, निधनिप मपमग-
मरे, सा ।
- (१०) सारेपमगरेसा, सारेमपनिधनिपमगरेसा, सारेमपसांनिध-
निपमगरेसा, सारेमपसां, रेंमरेंसां, निधनिपमगरेसा,
सारेमपसां, रेंपमंगरेंसां, निधनिपमगरेसा ।

(४३) श्रीरंजनी—स्वरविस्तार.

(१) सा, रे, ग॒रेसा, ध॒नि॒सा, ध॒नि॒सारे॒ग, रे, म, ध॒म॒ग, रे,
ग॒रे, सा, नि॒ध॒नि॒सा ।

म

(२) सा, ध, ग॒रे, म॒ग॒रे, म, ध, सा॒रे॒ग॒म, ध॒नि॒सा, रे॒म॒ग, रे,
ग॒रेसा, ध॒नि॒सा ।

(३) म, नि॒ध, म, ग॒रेम, ध॒नि॒सां, सा॒रे॒ग॒म, ध॒नि॒सां, रे, ग॒म,
म॒ग॒रेसा, नि॒ध॒नि॒सा ।

(४) ध, नि॒ध, नि॒सां॑नि॒ध, म॒ध, रे॒ग॒म, सा॒रे॒ग, ध॒नि॒सा,
रं॒ग॒रेसा, नि॒ध, सा ।

(५) म॒ग॒रेसा, नि॒ध॒म॒ग॒रेसा, रे॒म॒ग॒रेसा, ध॒सां॑नि॒ध॒म, रे॒म॒ग॒रेसा,
ध॒नि॒रं॑ग॒रेसां, नि॒ध, रे॒म॒ग॒रे, ग॒रेसा, नि॒ध, सा ।

(६) ग, म॒ग, सा॒रे॒म॒ग, म॒ध॒म॒ग, सां, नि॒ध॒म॒ग, ध॒सां॑नि॒ध,
म॒ग, सा॒ग॒रेम, ग॒रेसा, ध॒नि॒सा ।

(७) नि॒ध॒नि॒सां, नि॒सां, रं॑ग॒रेसां, ध॒रेसां॑नि॒ध, रं, नि॒ध, ध॒नि॒सां॑मं॒ग॒रें, नि॒सां॑नि॒ध, म॒ध, ग॒रे, ग॒रेसा॑रे॒नि॒साध॒नि॒सा ।

(८) म, नि॒ध॒नि॒सां, रं॑ग॒मं॒ग॒रेसां, नि॒ग॒रेसां, नि॒ध, म॒ध॒म॒सा,
सा रे
रे॒ग॒म, सा॒रे, रे॒ग, ग॒म, ग॒रेसा, ध॒नि॒सा ।

(९) ग॒रेसा॑नि॒ध॒नि॒रे॒ग॒म॒ध॒नि॒ध॒म॒ग॒रेसा, म॒ग॒रे॒ग॒म॒ध॒नि॒सां॑गं॒रेसां॑नि॒ध॒म॒ग॒रेसा,
मं॒ग॒रेसां॑रे॒नि॒सां॑ध॒नि॒म॒ध॒ग॒म॒रे॒ग॒सा॑रे॒नि॒सा ध॒नि॒सा ।

- (१०) सागरेमगरे, मनिधसांनिधमगरे, मनिधसांनिरेंसांगुरेंनिसां-
निधमगरे, मनिधसांनिरेंसांमंगुरेंसांनिधमगरे, मगरेसा,
धनिसा ।
- (११) सारेगम, रेगम, रेम, सारेगमध, रेगमधनि, गमधनिसां,
धनिसारेंगमंगुरेंसांनिधमगरेसा ।

(४४) आभोगी—स्वरविस्तार.

- (१) गुरेसा, धसा, रेगम, धमग, रेसा, गमधसां, धसांधम,
गुरेसा, धधसा ।
- (२) सारेगुरेसा, धग, मगुरेसा, मधसा, रेगम, धसां, मधसां,
सांधम, ग, रेसा, धधसा ।
- (३) म, गम, धग, म, मधसां, धसांधम, रेगम, धसां, धम,
ग, धग, रेग, धसा ।
- (४) ग, मग, धग, मधसां, धसांधग, धसारेंगुरेंसां, धसां, धग,
मगुरेसा
- (५) ध, मध, सारेगमध, सांध, रेंध, गुरेंसांधसां, ध, मंगुरेंसां,
धसां, ध, मधसांधसां, धग, मगुरेसा, धधसा ।
- (६) सांधम, रेंसांधसांधम, मंगुरेंसांधसां, धम, सारेगमधसां,
धम, रेगमध, सांधम, धग, मगुरेसा, धसा ।

- (७) सारेसा, मगरेसारेसा, धमगरेसारेसा, साधमधमगरेसारेसा,
^म
 गमधसारिं^मगरेसां, धसांधमग, रेसारेसा, धमधसां, मधग,
 मगरेसा ।
- (८) सागमध, मधसां, मंगरेसां, रेधसां, मधमसां, धसां, धम,
^म ^म
 धग, रेगमध, मधसां, ग, मगरेसा ।
- (९) सा, ध, मधसां, गरेसां, मंग, मंगरेसां, गमधसां, रेसां,
^{सा} ^म
 धसांधम, धम, गम, मगरेसा ।
- (१०) गरेसा, मगरेसा, धधमगरेसा, सांसांधमगरेसा, रेसांधसांध-
^म
 मगरेसा, गरेसांमंगरेसांधसांधमधग, मगरेसा ।
- (११) सागम, गमधमधसां, धसांमंगरेसां मधसांधमग, सांधमग,
 मधमग, मगरेसा ।
- (१२) सासारेरेसासा, ममधधगग, धधसांसांधध, गंगमंगंगं,
 मंगरेसां, धसारिंधसांधम, मधसांधमग, मगरेसा ।

(४५) चंद्रकौंस—स्वरविस्तार.

- (१) मगसा, निसा, धनिसा, म, गमध, मधनिध, मग, मगसा ।
- (२) नि, धनिसा, मग, सा, निधमग, मग, सा, सागमध,
 मधनि, धनिसां, मंग, सां, सांनिधमग, मगसा ।
- (३) सागमगसा, सागमध, ग, मग, सा, गमध, मनि, धसां,
 निसां, गंसां, सांनिध, मधनिध, मग, मग, सा ।

(४) ^मगसा_१निध_२नि_३सा, म, ग_४मध, सांनिध, निध, निगं, सां, निसांनिध, मधनिसां, गंमंगंसां, निधम, ग_५म, साग_६म, निसाधनि_७साम, ग_८म, निधम, ग, सा ।

(५) ^मम, धम, निधम, मधनिसां, गंमंगंसां, निध, म, सां, निधम, मग, मगसा, निसागसा, निधनि_१सा ।

(६) साग_१मधनिसां, गंसां, धनिसांगंसां, निगंसांगंमंगंसां, गंसां, नि, धनिसां, ग, मग, सा ।

(७) मगसा, धमगसा, निधमग, सांनिधमगसा; गंसांनिधमगसा, मंगंसांनिधमगसा, ^मनि_१सागम, धसां, ग, सागमगसा, निधनि_२सा ।

(८) साग_१सामग_२धमनिधसांनिगसांमंगंमंसांगंनिसांधनिमधगमसा गनि_३साधनि_४सागमधनिसां, ग, मगसा ।

(९) मगमनिध, निसां, गंमं, मंमंगंसां, गंनिसां, धनिसां, सांनिध, गमसा, निसागमधसां, निध, मग, मगसा ।

(१०) सागमगसा, सागमधमगसा, सागमधनिधमगसा, सागमधनिसां, निधमगसा, सागमधनिसांमंगंसां, सांनिधमग, मगसा ।

(११) ममगमगसा, निनिधनिधमगमगसा, सांनिधनिधमगमगसा, मंमंगंमंगंसां, गंसां, निसां, धनिसांगंसां, निध, मग, मगसा ।

(४६) गौड-स्वरविस्तार.

- (१) सा, मरेसा, ग, मरेप, धप, पग, म, रेप, मपधरेसां, धनिप,
मपधसां, निप, मपग, मरेसा ।
- (२) मरेसा, पग, मरेसा, मरेप, धनिप, मपधसां, निप, मपग,
म, रेप, निमप, धसां, धनिप, पग, मरेसा ।
- (३) सारेसा, रेप, ग, मरेसा, मरेप, धसां, धनिप, मपधरेसां,
धनिप, मपधसां, निप, मपग, मरेसा ।
- (४) धनिप, मप, निधसा, रेमरेप, मपधसां, निप, म, प, धप,
धनिप, पग, मरेपमनिप, धसांधनिप, ग, मरे, सा ।
- (५) सा, निधसा, रेसा, मरेसा, पग, मरेसा, निप, मपधसां,
निप, ग, मरेसा ।
- (६) प, धप, धसां, धनिप, मपधरेसां, धनिप, मरेसां, धनिप,
गंमपंगं, मरेसां, धनिप, ध, ध, निप, मपधसां, मप, ग,
मरेसा ।
- (७) म, मप, ग, म, पनिधसां, निप, म, मपधसां, मपम, गम,
निप, रेमरेप, मप, ग, मरेसा ।

(८) सा, नि^{मं}सा, मरेप, प^मनिध, सां, धनिप, धरेसां, धनिप, मप-
धसां, गुंमरेसां, रे^मधनिप, मपसांधसां, निप, रेप, पग,
मपधनिप, गु, मरे, सा ।

(९) ममरेसा, पपगमरेसा, नि^मधनिपगमरेसा, सांधनिप, ग^मरेसा,
रेसांधनिप, मपधसां, निप, ग^ममरेसा, मंमरेसां, धसां, निप,
मपधसां, निप, गु, मरेसा ।

(१०) पप, नि^{मं}धसां, निसां, रे, सां, गुं, मरेसां, निसारे^{मं}धनिप,
सांधसां, निप, मपधनिप, धसां, धनिप, गु, म, निप, गु,
म, मरेप, पग, मरेसा ।

(११) नि^मधसां, सां, रेसां, मरेसां, पंग, मरेसां, धरेसां, मपधरेसां,
निप, म, रे, प, धसां, धनिप, धप, मपधनिप, पग मरेसा ।

(१२) सामरेसा, सामरेपगमरेसा, सामरेपमनिधसांधनिमपगमरे,
सा, सामरेपमनिधसांनिरेनिसांधनिमपगमरेसा, सामरेप,
मनिधसांनिरेसांमंगुंसांरेनिसाधनिमपगमरेसा, मपधसां, ध-
निप, पग, मरेसा ।

(४७) देसी (दोन्ही धैवत घेणारा प्रकार)—स्वरविस्तारः.

(१) सा, नि॒सा, रेप॒ग, रे, नि॒, सा, रेम॒प, प, म॒प, ध॒प, ग॒रे,
म॒ री
प॒ग॒रे, नि॒सा ।

(२) नि॒सारेप॒ग, प॒म॒प, नि॒ध॒प, म॒प, ग॒रे, प॒ग, रे, नि॒सा, नि॒प,
म॒ री
म॒प, ग॒रे, नि॒, सा ।

(३) सा, नि॒सा, नि॒प, सा, रेम॒परेम॒प, ध॒प, नि॒ध॒प, रेम॒, नि॒ध॒प,
म॒ म॒ री
म॒प॒ग, रे, प॒ग॒रे, नि॒सा ।

(४) सा, नि॒सा, रेनि॒सा, म॒पनि॒सा, रे, म॒ग॒रे, प॒ग, रे, सा, प,
नि॒ म॒ सा म॒ री
म॒प, ध॒प, म॒प॒ग॒रे, नि॒सारेप॒, ग, रे, नि॒सा ।

(५) प, म॒प, ध॒प, ग॒रे, नि॒ध॒प, रेम॒पनि॒ध॒प, म॒प॒ध॒प, ग॒रे,
सा म॒ री
नि॒सा, रेप॒ग, रे, नि॒सा ।

(६) सा, रेम॒, प, प, ध॒प, सां, नि॒सां, प॒ध॒प, रेम॒पनि॒ध॒प, ध॒प,
म॒ री सा
म॒प, ग॒रे, नि॒सारेप॒ग, रे, नि॒, सा॒नि॒सा, प॒नि॒सा, म॒प॒नि॒सा,
म॒ री नि॒ नि॒ नि॒ म
रेसा, ग, रे, नि॒सा, ध॒प, सां, प, म॒प, ध॒प, म॒प॒ध॒म॒प, ग॒रे

^{सा} नि॒सा, ^{री} रेप॒ग, रे, नि॒, सा॒मम॒प, सां, सां, नि॒सां, रें, सां,
^{मां} ^{सां} ^प ^म
 ग॒रेंसां, नि॒सां, प, नि॒धप, म, म, रे॒म, म, प, नि॒धप,
^म ^प ^{नि} ^म ^{री} ^म ^{री}
 म॒पग॒रे, रेंसां, नि॒प, म॒पध॒प, ग॒रे, नि॒सा, रेप॒ग, रे, नि॒, सा ।

देसी (कोमल धैवत घेणारा प्रकार) .

^{री} ^म ^{री} ^म ^{नि}
 (१) सा, रे॒नि॒सा, रेप॒ग, रे॒ग, रे॒नि॒सा, सा, रे॒म, प, प, ध॒परे,
^{नि} ^प ^म ^{नि} ^म ^{री} ^म ^{री}
 ध॒प, नि॒धप, रे॒मप, ध॒प, ग॒रे, नि॒सा, रेप॒ग, रे, नि॒सा ।

^{री} ^{नि} ^प ^{नि} ^म ^म
 (२) सा, रे॒नि॒सा, ध॒प, म॒प, नि॒धप, ध॒प, सा, रे॒ग, रे, प॒ग,
^म ^म ^म ^{री} ^म
 रे॒नि॒प, सां॒प, नि॒धप, रे॒मप॒धम॒पग, रे, नि॒सा, रेप॒ग,
^{री}
 रे, नि॒, सा ।

^{नि} ^{सां} ^{नि} ^म
 (३) म॒म, प, प, ध॒प, सां, नि॒सां, रेंसां, ध॒प, रे॒मप, ग॒रेंसां,
^म ^{नि} ^म ^{री}
 रेंसां, नि॒धप, रे॒मप, ध॒प, म॒पग, रे, नि॒सा ।

^म ^{नि} ^{नि} ^म ^प
 (४) प॒रे, म॒प, प, ध॒, प, म॒प, सां, प, म॒पध॒प, म॒पग॒रे, नि॒धप,
^म ^म ^{री}
 म॒प, ग॒रे, रे॒गरे, नि॒सा ।

(५) मपसां, सां, ^{सां}गरेसां, ^{सां}निसां, ^मप, ^मनिधप, ^मरेमनिधप, ^मगरे,
^मपगरे, ^मनिसा, ^{री}रेपग, रे, नि, सा ।

(४८) गांधारी-स्वरविस्तार.

(१) ^{निनि}सासासा^मधध, ^{सा}प, ^{निनि}धग, ^धरेम, प, प, ^धधप, मप, ^धध, सा,
^{गुगग}निसा, ^मरीरीरी, सा, सा, साध, ^गपधमप, ^गग, रे, सा ।

(२) ^{नि}मपध सां, सां ^{नि}सांगरें, सां, ^{सां}निसारेंध, ^{नि}ध, प, मप, प, ^{निनि}धध,
^{नि}ध, प, ^पप, प, सां, सां, मप, प, ^मग, ^{गुग}रेरे, सा ।

(३) ^{सा}सा, ^{मसा}निध, प, ^मधम, ^गगरेमप, प, सां, ^मरेंरेसां, ^गरेसांनिध, प,
^मपधम, प, ^गग, ^गरेरे, सा, रेम, प, ^मनिधप, ^गधमप, ^{नि}निध, प ।

(४) ^{नि}सारे, मप, प, ^{नि}ध, प, ^{नि}निधप, ^{नि}सांरेंरेसां, ^{नि}रेनिध, प, मप-
^{नि}निध, प, ^{नि}सारेमप, ^{नि}निध, ^पपधमपग, ^गरेरे, सा ।

(५) ^{निनि}साधध, प, ^{मसा}निध, प, ^गगरेमप, ^गगरेसां, ^{नि}रेनिध, प, मपसां,
^गनिध, ^गनिधपमगरे, ^गरेसा ।

(६) म^{नि}प, ध^{नि}निसां, निसां, ध, सां, रीगं, रेंसां, रेंनिधप, मपनि-
धप, मपध, रेंसां, रेंनिध, प, निसां निध, प, धमप, निधप ।

(४९) देवगांधार (प्रकार १ ला)—स्वरविस्तार.

(१) सा, ध^{नि}धप, म, प, ध^मपमप, ग, री, पग, रीसारी, ध, सा,
सा, नि, सारीग, म, प^मधमप, ग, री, सा^मनिनि, सा ।

(२) सा, रीमप, मप, नि^पधप, ध^ममप, ग^मरी, गम, गमपधमप,
ग, रीसारी, पग, री, सा, नि^मनिसा ।

(३) सा, ध, प, म^{नि}पध, सा, नि, सारीग, म, गमप, नि^{नि}धप,
सांनि^पधप, ध^ममपग, रीसा, नि^मनि, सा ।

(४) प, मप, ग^मरीमप, ध^{नि}धप, नि^पधप, सां, निसां^{नि}रीधप, ग, रीग,
म, नि^मधप, मपग, रीसा, नि^मनिसा ।

(५) सा, ग^मरीसा, म^मगरीसा, रीगम, प^मधमप, ग, रीसा, नि^मधप,
ध^ममपगरीसा, गंरींसां, निसां, धप, मपधनिसां, धप, ग,
रीगम, प^मनि^मधपमपग, रीसा, नि^मनिसा ।

(६) प, प, ध, प, सां, निंसां, रींसां, गंरींसां, रींगंमं, गंमंपंगं,
रींसां, गंरींसां, रींनिधप, मग, म, रीमपनिधप, पध, मपग,
सा सा
रीसा, निनि, सा ।

(७) प, प, मपध, सां, गंरींसां, मंगंरींसां, रींगंमं, पंगंरींसां,
म
निंसांध, मपधनिंसांधप, सारीग, म, प, पधमपगरीसा,
सा सा
निनि, सा ।

(८) सारीसा, मगरीसा, सारीगमपधमपग, रीसा, ममपनिधप-
सा सा
मपगरीसा, मपधनिंसांनिधप, मपगरीसा, निनिंसा ।

(९) सांनिधप, निधपधमप, ग, रीसारीग, म, निधपमपगरी,
सा सा
मपधनिंसां, निंसां, पध, मपगरीपग, रीसा, निनिंसा ।

(१०) सां, निंसां, ममपधनिंसां, रीमपधमपधनिंसा, सांरींगं,
सा सा
मपधमप, सांनिधपमगरीसां, निनिंसा ।

(५०) राग देवगांधार (प्रकार दुसरा)—स्वरविस्तार.

(१) मपध-प, सां-, नि-सांरीं-धप, पगगमप-, रीं-सां, निप,
सा सा
गमपग-, मगरीसा, निनि, सा ।

- (२) सा, म, गमप, निधप, मप, ग-रीसा, गमपनिधप, ग-रीसा,
सा सा
निनि, सा ।
- (३) सा-, मगरीसा, निध-, प, सागमप, मपधमपगरीसा,
सा सा
निनि, सा ।
- (४) प-, मप-, धप-, सांनिधप-, गमप, रींसांरींनिधप, मप-
सा सा
गं-रींसां, रींनिधप, मपधमपग, मपग-, रीसा, निनि, सा ।
- (५) मपध-, पसां-, निसां-, रींसां-, गंरींसां-गमपंगंमंगंरींसां,
सा सा
निसां, धप, धमप, गरी-सा, निनि, सा ।
- (६) प, मपसां, रेंसां, रेंनिधप, मपगमप, रेंसां, रेंनिधप, निधप,
ग, म, पधमप, सां, धप, धमपग, रे, सा, निनि, सा ।
- (७) मपनिधपमगमपनिधपम, गमपनिसांरेंनिधपम, पनिसांमं-
गंरेंनिसांरेंनिधपमगम, गमपनिधपधमपग, मगरेसा ।
- (८) पमपसां, गमपसां, निसागमपधमपसां, मपरेंसां, गंरेंसां,
मंगंरेंनिसां, निसांरेंनिधप, गमपसां, पधमपग, मगरेसा ।
- (९) सांनिधपमगरेसा, रेंरेंसांनिधपमगरेसा, मंगंरेंसांनिधपमग-
म म
रेसा, गमपरें, सां, निसां, पधमपग, पग, मगरेसा ।
- (१०) मगममगरेसा, सांनिसांसांनिधपमगरेसा, रेंसांरेंरेंसांनिधप-
मपनिसांमंगंरेंसांगंरेंसांनिरेंसांनिधपमगरेसा ।

(५१) खट-स्वरविस्तार

सा म री मम नि मम
(१) नि॒सा, रे॒मप॒गग॒म, रे, सा, प॒ध॒प, नि॒ध॒प, ग॒ग॒म, रे॒सा ।

सा म नि
(२) नि॒सा, रे॒नि॒सा, ग, म, प, प, ध॒ध, नि॒प, ध, सां, नि॒ध॒प,
म म म
मप, ग, ग, म, प॒ग, म, रे॒सा ।

सा नि॒नि॒नि
(३) नि॒सा॒ग, म, प॒ग॒म, ध॒ध॒ध, नि॒ध॒प, सां, नि॒ध॒प, रे॒सां॒नि॒ध॒प,
म म म
मप॒ग, ग, मप॒ग, मरे॒सा ।

म म म नि नि॒नि
(४) प॒ग, मप॒ग, सा॒ग, मप, ध॒प, नि॒ध॒प, सां॒ध॒ध, नि॒प, सा॒सा-
म म
ग, मप, ग, म, रे॒सा ।

नि॒नि॒नि॒नि नि॒नि
(५) म, म, मप, प, ध॒ध॒ध॒ध, सां, ध॒ध, प, ध॒ध, प, मप॒ग॒मरे,
गमप, मग, रे, सा ।

म म नि प मम
(६) पे॒रे, रे॒प, प, मप, मप॒ध॒ध, सां, नि॒ध॒प, नि॒प, ग॒ग, म, नि-
ध॒प, मप, ग॒मप, ग॒म, रे॒सा ।

म म म म म म म
(७) नि॒सा॒ग, ग, प॒ग, ध॒प॒ग, नि॒ध॒प, ग, सां, नि॒ध॒प, ग, रे॒सां,
म
गे॒रेंसां, नि॒ध॒प, ग, मप॒ग, ग, मरे॒सा ।

- (८) मप, ^{नि नि नि}धध, सां, सां, रेंसां, ^{म म}गंरेंसां, ^{म म}धधसां, निधप, ^{म म}गंरेंसां,
 रेंसां, ^{नि नि नि}धध, निप, सां, निधप, मपग, ^{नि}ग, रेसा, मम, प,
 प, ^{नि नि नि}धध, निध, प, सां, ^{नि}ध, प, पग, ^{म म म म}ग, मपग, ^{म म}ग, रेसा ।
- (९) मप^{नि नि}धध, सां, सां, सांरेंसां, ^{नि नि नि}गंरेंसां, ^{नि नि नि}धध, सां, ^{नि नि}धध, निधप,
 प^{नि नि नि}गंरेंसां, रेंसां^{म म म}धध, निपमप, ^{म म म}ग, ग, ग, रेसा ।

(५२) जंगला-स्वरविस्तार.

- (१) सा, ^{नि}ध, प, ^मगरेग, ^{सा}रे, म, प, ^{नि}धनिध, प, ^मधम, मपनिधप-
 मगरेसा, रेम, प, ^{नि}धनिधप, प ।
- (२) प, ^मधपमप, ^{नि}रेमपधपमप, ^{नि}गरेग, सारे, ^{नि}ममप, पसांध, प,
 नि, ^{नि}धनि, ^{पम रे सा}धनिसां, ^{नि}धप, मपनि, ^{पम रे सा}धप, ^{नि}ग, रे, म, प,
^{नि}धनिध, प ।
- (३) म, ^{नि}धपमगरेसा, रेमप^{नि}धमपधपमगरेसा, रेमप^{नि}धसांनिधप,
 निधपमगरेसा, रेम, रेमप, ^{नि}धनिध, प ।
- (४) प, मप^{नि}धप, मपनिसारें, ^{नि}निसारें, सांनिधप, ^{नि}धपधमप,
 धमप, रेगसारे, ममप, ^{नि}धनिध, प ।

- (५) रेगुसारे, मगरेसा, निसा, धप, मपनिसारे, मगरे, रेमपध-
 म सा
 मपग, रे, ममप, धनिध, प ।
- (६) सां, निधनि, पधमप, मपनिसारें, सारेंगुरेंसां, निसां, धनि,
 पधप, मपनिधपमगरेगसा, रे, ममप, धसां, प ।
- (७) प, धम, मपनिसारें, निसारें, रेंगुरेंसां, निरेंसांनिधप,
 मधपमगरेगसा, रेममप, धनिसां, धप ।
- (८) धधपमगरेगसा, निनिधपमगरेगसा, रेंगुरेंसांनिधपमगरे-
 गसा, सारेम, रेमप, मपध, पधनि, ध, प ।
- (९) धप, सांनिधप, गुरेंसांनिधप, मध, धनि, धनिसां, धप,
 रेमपनिधपधमप, गुरेगसा, रेरेममप, धनिधप, प ।
- (१०) सारेगुसारेमपधमपनिसारेंनिसारेंमंगुरेंगुंसारेंनिसांधनिपधम-
 पगरेगसा, रेममप, धनिध, प ।

(५३) झीलफ-स्वरविस्तार

- (१) सा, नि^{।न}साग, मप, पधनिसारें, सां, ध, प, निनिसां, रेंसां,
 नि म
 ध, प, निधप, गमप, मग, रे, सा ।
- (२) सा, प, निधप, सां, रेंसांनिध, प, मपनिधप, मपधनिसां,
 निधप, गमपग, मग, रेसा ।

(३) सा, रेसा, ध^{नि}सां, धप, गमपनिधप, रेंसां, धप, निध-
पग, मप, गमगरेसा ।

(४) सा, ग, मप, गं, मप, निधप, सां, रेंसां, धप, मपध,
निसां, रेंसांनिध, प, पधनिसां, धप, गमप, ग, मगरेसा ।

(५) पपध, निध, निसारेंसां, ध, गं, मंगरेंसां, ध, पधनिसां,
म नि म
ध, प, निधपग, मप, गमपधनिधपग, मगरेसा ।

(६) मगरेसा, निधपग, मगरेसा, सां, रेंसांनिध, प, ग, मगरेसा,
म
मंगरेंसां, निसारेंसां, ध, प, ग, मगरेसा ।

(७) मप, ध, निसां, निनिसां, निसारेंसां, निसांधनिप, म,
म
गम, प, परेंसां, रेंनिसां धानेप, गम, पानिधप, ग, मगरेसा ।

(५४) गोपिका वसंत—स्वरविस्तार.

(१) सा, ध^{नि}सा, म, गमप, गम, मप, ध, निसां, ध, प, सां,
धनिधम, पग, गमपधनिसां, म, पग, मग, सा ।

(२) गसा, ध^{नि}सा, ध^{नि}धप, मप, ध, सा, गम, पग, मग, सा ।

(३) सा, म, गम, सागमप, गमध, निध, प, सां, धनिधम,
प, गम, निधम, पग, मग, सा ।

(४) सागमध, निधप, गमप, सागमप, सां, धनिध, मप, गम, पधनिसां, धनिधम, निधम, पग, मग, सा ।

(५) सा, ध, ध, निध, म, गमप, सां, धनिधम, गमप, धनि-
मं
सांगमंगसां, धप, सांनिधम, पधनिसां, म, पग, मग, सा ।

(६) पमगमगसा, निधमपगमगसा, सांनिधमपगमगसा, गमप-
धनिसां, मंगसां, धनिधपगमगसा, निसागमपधनिसां,
निधमपगमगसा ।

(७) मप, ध, धसां, निसां, गंसां, धप, मंगसां, धनिधप, मप-
गम, पधनिसां, म, गमपग, मग, सा ।

(८) सागमप, निधमप, सांनिधमप, धनिसांगंसांनिधमप, गम-
पधनिसांमंगंसांनिधमप, सांनिधम, निधमग, मपग, मगसा ।

(९) निधमगमपमगसा, सांनिधपमगसा, धनिसांगंमंगंसांनिधप-
मगसा, सागमपधनिसांगंमंगंसांनिधपमगसा ।

नि

(१०) गमध, धसां, गंसां, गंमं, गंमंगसां, धनिसांनिधमप, गम-
धनिसांगंमंगंसांनिधप, गमपधनिसां, म, पग, मग, सा ।

(५५) सिंधभैरवी-स्वरविस्तार.

(१) सा, पधसा, निसारे, निसा, निधनि, पधप, मपधनिसा,
गरे, निसा ।

- (२) प, नि, पधप, पधसा, धनि, पधप, मपनिसारे, निसा, नि,
पधप, पगरेमगरेसानिरेसानिधप, धसा, निनि, रेसा ।
- (३) गरेगरेगरेमगरेसा, गरेनिसारेनिसानिधप, पधमपधगरे, निसा,
निनि, सा ।
- (४) सा, गरेसा, रेमगरेसानिरेसा, रेगमपनिधपमगरेसानिरे,
सानिधप, पधमपधसा ।
- (५) गसागमप, मपधपमगरे, निरेगमरेगरेसा, निरेसानिधप,
पधसा, निसा ।
- (६) निधसानिधप, गरेसानिधनि, पधप, ममपमगरे, रेमगरेसा-
निधप, पधमपधसा, गरे, निसा ।
- (७) पपधप, निधनिधनि, पधप, रेगमप, निधप, धपमगरे,
निसारेमगरेसानिधप, पधनिसा ।
- (८) पधनिसारे, पमगरे, पमधपमगरे, निरे, गप, मगरे, मगरे-
मगरेसानिधप, पपधसा, गरे, निसा ।
- (९) पसानिरेसागरेमगपमधपनिधपमगरेगपमधपमग रेगपमगरे-
मगरेसानिरेसानिधप, पधसा, ग, रे, निसा ।
- (१०) प, धपमगरे, रेमपनिधपमगरे, पमधपनिधनिपधमपगमरे-
गसारे, पमगरेसानिधप, धसा, गरे, निसा ।

(५६) बिलासखानी तोड़ी-स्वरविस्तार.

- (१) सारे^{नि}नि, सा, रे^गग, ग, रे, सा, सा, रे^धध, ध^गगरे^गरे, सासा
निसारे, सा ।
- (२) सा^धध, सारे^{सा}सा^धध, ध^गग, रे^गग, म^गगरे, सा, प^धध, म^गगरे^गग, रे,
सा, रे^{नि}निसारे^गग ।
- (३) सा, रे, सा, ग^{रे}रे, सा, रे^{नि}निध, प^धध, ग, रे^{रे}रेग^मग, रे^गग,
सा
रेसा, निसारे^गग ।
- (४) ध^{नि}निध, सा, ग^{रे}रे, सा, प^गग, रे^गग, ध^ससारे^गग, प^धधसारे^गग,
रे^गग, रे, सा ।
- (५) ध^धध, नि^धध, प^धधनि^धध, सा, रे^{नि}निध, सा, ग, म^गग, प^धध,
ग
मग, मग, रे^गग, रेसा ।
- (६) सा, रे^गग, रे^गग, म^गग, ध^पप, ग, नि^धध, सां, नि^धध, प, म^गग,
रे^गग, रे, सा, निसारे^गग ।
- (७) प, प, ध^धध, सां, ध^{सां}सां, रे^{नि}निरे^{सां}सां, ग^गगरे^{रे}, ग^{रे}रे, सां, सांनि^{सां}सां,
प
रे^{नि}निध, नि^धध, प, गं, मं^गगरे^{रे}, सां, रे^{नि}निध, प, प^धध, म^गग,
रे^गग, म^गग, रे, सा, सा, नि, सारे^गग ।

(८) सासाध, प, पधमग, ग, रेसा, धनिरेगरेसा, ध, ग, मग,
रे, सा, धनिसारेग, पध, मग, रेगमगरे, सा ।

(९) पध, रीध, सां, रेनिसारिगं, मंगरे, सां, सारिनिध, धमग,
रेगमग, रेसां, धनिसारिगं, पधमग, रेग, मगरे, सा ।

(५७) मोटकी—स्वरविस्तार

(१) सा, धनिपसा, ग, मरे, सा, निसाग, मपधनि, निग, रे,
सारेपग, रे, सा, निनि, सा ।

(२) प, ध, पसा, म, म, गमपधनिगं, रे, सारेप, ग, रे, सा,
निसारेसा, ध, पसा ।

(३) प, मप, ग, मपधनि, ग, मप, निनिसां निध, प, मपधम
पग, मपधनि, ग, मग, रे, सा ।

(४) मगरेसा, निध, ग, मरे, सा, धनिपसा, म, मपगमपधनि,
धमपधग, मरे, साधनिपसा ।

(५) निसागमपधनिसां, ममपग, मरे, सा, सां, धनिपसां, गं,
मरे, सां पधमपग, मपधनि, ग, ग, मरे, सा ।

(६) निनिसां, सांनिनिसां, निनिसारिंसां, निधप, मपग, मपध-
निसां, निधप, धग, गमरेसा ,

(७) सा, गमरेसा, निधपगपधग, मरेसा, निनिंसांनिधपमपधग,
मरेसानिसागमपधनि ।

(५८) भूपालतोडी-स्वरविस्तार.

- (१) सा, रेग, रेसा, रेग, प, पध, प, ग, प, रेग, रे, सा, ध,
सा, रेग, रेसा ।
- (२) सा, रेग, प, पध, प, रेगप, सारेग, परेग, प, ध, प, सां,
रेंसां, ध, प, ग, रेगप, रेगरेसा ।
- (३) सा, ध, प, रे, सा, ध, प, रे, सारेग, रेग, प, रेग, सारे-
गप, ध, प, रेग, प, धसां, रें, सां, ध, प, रेगप, रेग, रे,
सा, धधसा, रेग, रेसा ।
- (४) प, प, रेगप, ध, प, सां, ध, प, रें, सां, ध, प, रेगप,
पध, रें, सां ध, प, धपरेगप, रेग, रे, सा, सासारे, सा ।
- (५) सा, ध, रे, पधरे, गरे, परे, गप, धसां, रेंगरेसां, रें,
पधसां, ध, रेग, रे, सा, सासारे, सा ।
- (६) सारेगपरेगरेसा, सारेगपधपरेगरेसा, सारेगपधसांधपगरेग-
रेसा, सारेगपरेगपधसां, धप, रेगरेसा, सारेगपधसारिंगरेसां,
धप, रेगरेसा, सासारे, सा ।
- (७) प, परेगप, ध, सां, रेंगपरेसां, ध, रें, सां, धप, रेगपधसां,
धप, रेगरेसा, सासारे, सा ।
- (८) सांसांधपरेगरेसा, सांसारेंसांधपगरेगरेसा, सांसारिंगरेसांधप-
गरेगरेसा, सांसारिंगपरेगरेसां, धप, रेगपरेगरेसा ।

(५९) उतरी गुणकली-स्वरविस्तार.

- (१) मगमप, ध, प, धमपग, मरे, सा, रेनिसारेगमपधनिसां,
निधपम, पधनिसां, ध, पग, गमरे, सा ।
- (२) सा, गमप, निधप, मपधनिसांध, प, निधपगम, म, गमध-
निसां, ध, प, ग, मरे, सा ।
- (३) सा, पमपग, मधनिसां, ध, प, सां गरेसां, ध, प, पधमप,
ग, मरे सा ।
- (४) सा, रेनि, सा, म, म, पग, म, पधनिसा, ध, प, मपध-
नि
मपग, निधपग, मपसां, ध, प, मपग, मरेसा ।
- (५) सा, म, म, निधप, म, गमपनिध, प, धमपग, सां, ध,
प, धमपग, गमरे, सा ।
- (६) निसागमपगमरे, सा, ममपधनिसां, ध, प, गमरे, सा, साम,
मप, पध, धसां, गरेसां, रेनिसां ध, प, सां, धप, धमपग,
गमरेसा ।

(६०) वसंतमुखारी-स्वरविस्तार.

- (१) सा, ग, मप, ध, प, पधनिसां, धनिधप, पनिधप, धपम-
पमग, मनिधप, गमरे, सा ।
- (२) सा, रे, सा, म, गमप, धनिसानिधप, निधप, म, गम,
मपनिधपमगम, सांनिधप, मग, मरे, सा ।

- (३) सा, गम, रेसा, निधनिसानिधप, गम, मप, पधनिसां, रसां, निसां, निधप, म, गम, गमनिधपम, गम, रे, सा ।
- (४) सा, पमगमरे, सा, निसागम, मप, गमपधनिसां, निधप, मपमग, मनिधप, मग, पमग, मरे, सा ।
- (५) सा, ध, ध, प, धनिसां, निधप, धपमग, मपधनिसां, निधप, मग, मनिधप, गम, रे, सा ।
- (६) मगरेसा, धपमगमरे, सा, सांनिधपमगमरे, सा, रेसां, धनिधपमगमरे, सा, मंगरेसां, धनिधपमगमरे, सा, निसागमपधनिसां, रेसां, पनिधपमगमरे, सा ।

(६१) गुर्जरीतोडी—स्वरविस्तार.

- (१) ग, रेसा, निसा, रेग, मंगधमंग, रेग, रेसा, निरेसा, निनिसारेग, मरेग, मंध, निधमंग, रेग, मंधनिसानिध, निधमंग, रेग, रेसा, निरेसा ।
- (२) निसागरेसा, नि, रेनिध, मंधनिसा, धनिसा, रे, ग, मंग, धमंगनिधमंग, रेग, रेसा ।
- (३) सारेग, निधमंग, रेग, मंग, मंधनिधमंग, निधमंग, सां, निधमंग, निधमंग, मंधनिधमंग, गरेसामंगमंध, निधमंग, रेनिधमंग, मंधनिसानिधमंधमंग, धमंग, मंग, रे, सा ।
- (४) मंगमंध, रे, सांनि, सांरेसां, निनिसांरेनिध, गं, रे, सां, नि, सांरे, निध, मंध, सासागग, मंध, रे, निध, मंध, मंग, रेग, रेसा ।

(६२) लाचारी तोडी-स्वरविस्तार.

- (१) सा, म, गमपधमप, ग, रेग, रेनिंसा, ग, रेगम, गमपध-
 सां म सा
 निध, निप, मग, रेग, रेगम, गमपधमप, ग, रेग, रेनिंसा ।
- म साम सा
 (२) पग, रेग, रे, निंसा, रेग, रेगम, गमप, धनिप, सांनिधप,
 म
 मग, रेगम, पधमप, ग, रेनिंसा ।
- म
 (३) सा, नि, ध, प, सा, रेग, रे, निंसा, निंसारगम, गमप,
 म म
 निधनिध, म, रेगम, गमपध, मप, ग, रेग, रेनिंसा ।
- (४) प, धप, निधप, म, पम, ग, रेगम, गमप, ग, रेनिंसा,
 मगरेसा, रेनिंसा, प, धप, सांनिधप, म, पमग, रेगम,
 नि म
 पध, प, ग, रे, निंसा ।
- (५) सा, रेगम, गम, पधम, निप, म, सांनिधप, म, गमपध, प,
 म म साम
 धम, पसां, निंसां, पम, गमपधमप, ग, रेग, रे, निंसा ।
- (६) ग, रेनिंसा, रेगमगमपग, रेनिंसा, धपसांनिधप, ग,
 रेनिंसा, गंरेंसांनिधप, ग, रेनिंसा, मंगंरेंसां, पनिधप, गम,
 नि
 मपध, प, ग, रे, निंसा ।

- म
(७) म, पपसां, निसां, सांगुरेंसां, निधप, म, पमग, रेगम,
म
गमपसां, निधप, म, गमपग, रेनिंसा ।
- (८) गुरेनिंसा, मगुरेनिंसा, निधनिप, धमपगुरेनिंसा, सांगुरेंसां,
नि
पसां, गम, गमपधमपसां, निधप, म, गम, गमपध, प,
म
ग, रे, निंसा ।
-

(६३) लक्ष्मीतोडी—स्वरविस्तार.

- नि नि
(१) सा, रेग, म, मगप, प, ध, ध, निप, ग, मपग, मगुरेसा,
म
निंसा, ग, रे, सा ।
- नि नि नि
(२) सा, म, मप, पध, धध, सां, धप, निधपग, रे, सा ।
- नि
(३) सा, रेग, म, गम, मगप, निधप, सां, ध, प, म, गम,
नि नि
धं, धनिप, गगपग, मगुरेसा ।
- निनि
(४) पप, गम, ग, रेग, म, पपधध, सांध, निप, निधप, म,
म
मगप, निप, ग, रे, निंसा ।

(५) प^{नि}प^{सां}ध, ^{सां}धसां, नि^{नि}सां, नि^{नि}नि^{सां}सां, नि^{नि}सां, धप, ध, सां,
नि^{नि}सां, ध, प, नि^{नि}धप^धग, मग, रे, सा ।

(६) सा, रेग, म, ध^{नि}धनिप, मगम, प^{नि}धसां रेंसां, नि^{नि}सां, नि^{नि}धप,
मप, धनिप, सां, धप, गम, नि^{नि}धप, धग, गरे, रे, सा ।

(६४) ब्रह्मादुरीतोऽङ्गी-स्वरविस्तार.

(१) ध, प, म^धप^ध, म^धम^धधसा, ध^{नि}निसा, रेसा, सा^{नि}निध, रे^{नि}नि,
गरेग, मरेग, रेगम^धनिधग^मरेग, ध^{नि}निसारेगरेसा ।

(२) सा, नि^धध, ग, रेग^मरेग- नि^गरेग, प, म^धध, मरेग, ग^मगरे-
गरेसा, नि, सारेगरेसा ।

(३) सा, ग, रेग, म^धम^ग, रेग, रे^{नि}निग, म^गग, ध^{नि}निसारेग, नि^गग,
रे^{नि}निध, म^धध, निरेसाग, ध^ममग, रेग^मरेग, रेसा ।

(४) म^धध, ग^मम^ध, निध, ग^मरेगम^ध, म^गरेगम^ध, म^गग, म^गगरे,
गरेसा ।

(५) नि^{सा}ग, म^पप, ध, म^पम^ध, नि^{सां}निधप, मरे, सा, सांनि-
सांनिध, रेग^मधनिधम^गरेसा ।

(६) प, म^धध, नि^{सां} नि^{सां}ग^{रें}सां, नि^{सां}रेंसां, नि^{सां}निधप, रेग-
म^धनिध, रेग^मरेग, रेसा ।

(७) म^धसांनिधग^मरेगरेसा, नि^{रें}सांग^{रें}सांनिधग^मरेगरेसा, रेंग^म-
रेंग^{रें}सां, धनिधग^मधनिधम^गरेग, रे, रेसा ।

(६५) अंजनी तोडी-स्वरविस्तार.

- (१) सारेमप, सां, निसां, ^{नि}धप, मपग, रे, मगरे, गसा, सा, मरे-
मप, निधप, निनिसां, रेंनिधप, रेगसारे, म, प, सां, ^{नि}धप ।
- (२) रेगसारे, मप, रेमप, निधप, सां, रेंनिधप, सां, ^{नि}धप, मप,
ग, रे, मगरेगसा, रेम, रेमप, पसां, ^{नि}ध, प ।
- (३) प, मप, रेमप, ^{म सा}ग, रे, मप, निधप, सां, रेंनिधप, मंगरेंसां,
^{नि}धप, रेम. रेमप, ^मग, रे, ^मपग, रे, मगरे, गसा, निनि, सा ।
- (४) मगरेसा, पग, रे, गसा, रेमप, सां, गरेंसां, रेंनिधप, रेग-
सारेमप, रेमप, निधप, मपसां, निधप, पधमप, ^{म सा}ग, रे,
गसा, सारेमपसां, ^{नि}धप ।
- (५) मध, निसां, सां, मधनिसां, गंगरेंसां, ^{नि}ध, प, सां, रेंनि,
धम, पनिसारिंनि, ^पधम, सारेमपसां, ^{नि}धप ।
- (६) सां, ^पधनिसां मधनिसां, गरेंसां, मंगरेंसां, रेंनिधमप, पनि-
सारिनि, धम, सारेमप, सां ।

(७) सां, सां, निंसां, निधप, ग॒रेग॒रेसा, साम, मप, पनिसां,
निधप ।

नि नि सां
(८) मध, सां, ध, सां, रें, निंसां, ध, प, सां, रेंनिध, मपसां,
म सा सा सा
रेंनिधम, प, पग, रे, ग॒सा, निंनि, सा ।

(६६) मालगुंज—स्वरविस्तार.

(१) सा, म॒ग॒रेसा, निं॒ध, निं॒सा, ध॒नि॒सारेग, म, मध, निं॒ध, म,
प
म, रेगम, गमध, निंसां, रेंसां, निधसां, धप, म, मग,
म॒ग॒रेसा ।

(२) सा, गम, ग॒रेसा, ध॒नि॒सारेग, म, निं॒ध, प, म, गमध-
निंसां, सांनिध, पध, पम, गम, ध॒नि॒सारेग, म, ग॒रेसा ।

(३) म, गम, रेगम, ध॒नि॒सारेगम, गमध, म, सांनिध, पम,
गमनिधसां, रेंसां, धनिध, म, ग, रेगम, गम, ग॒रेसा ।

म म
(४) ग, रेग, ध॒नि॒सारेग, रेगमधनिधपमग, सां, निं॒ध, निधप,
मग, रेगम, ध॒नि॒सारेगम, ग॒रेसा ।

(५) सारेग॒रेसा, मधनिधमग, म॒ग॒रेसा, सांनिधप, म, ग, रेगम,
गमध, म, ग, म॒ग॒रेसा, निं॒धनिं॒सा, रेग म ।

- (६) मगरेसा, सांनिधपमग, मगरेसा, रेंसांनिध, धनिसां, निधप,
 म सा
 म, ग, रेगम, निधपम, ग, रे, सा ।
- (७) मधनिसां, धनिसां, रेंसां, निध, धनिसारेंगं, मं, मंगरेंसां,
 निसारेंसां, निध, मधनिसां, धनिधपम, ग, रेगम, मग-
 रेसा, निध, निसा, रेग, म ।
- (८) निधमगमपमगरेसा, रेंसांनिधमगमगरेसा, गंरेंसांनिधपम-
 गमगरेसा, धनिसारेंगंमं, पंमंगरेंसांनिधम, गमधनिधपमग,
 मग, रे, सा, निनि, सा ।
-

चीजांची रागानुक्रमानें सूचि

(एकंदर चीजा २३७; एकंदर राग ६८)

(टीपः—या सूचींत, प्रत्येक थाटांतील राग वर्णानुक्रमानें दिले असून,
प्रत्येक रागांतील चीजाही वर्णानुक्रमाप्रमाणें दिल्या आहेत.)

मारवा थाट (राग ११) पृष्ठ

पृष्ठ

जैत

भंखार (चाल)

कलस ज्योत लागी रहे	२४	रव गुन गा रे तूं	५८
मोरे राजा आनौंद करो	२२	साजन आये मोरे घरे	५९
मोरे राजा आनौंद करो	२३		

मालीगौरा

पंचम		अहि यो मुने पीर चेरी	१५
गोकुल गांवके बसैया	४८	ए रस रास रसुर	१३
प्रथम गुण बिचार करिये	४३	कर याद प्रभूको आज	११
माधवा माधवा माधवा	४६	तेरा चोला दुलरा	१४
मारुव समाख्यात मेलन	४२	मेरे मन लाग रही	१२
रामनाम ले ले मनमे	४४	राजा सिरिराम रामचौंद्र	१७

पूर्य्या

एकपल हू न जाने न देहो	४	ललितागौरी	
मौंदर बाजे बाजे रे	५	ए मुरलीवाले सांवरे	६७

पूर्वकल्याण

वराटी (बरारी)

होवन लागी सांझ	८	तूं झकझोर झकझोर	३०
		बिरहन बावरी बेग	२८
		सुमरन करले जिया	२९

भटीयार

उचट गई मोरी नौंद	५४		
निसदिन नबि सुमरन	५२		
बरनी न जाये मोसें	५३	कांस्कुवरवा जाइल हमरा	३४
भेरो मन हर लीनो	५५	मैं तोहे धाऊं अब पीरे	३८

भंखार

ए रुठ मा हे कारी कतली	६०	मोरारे मीत पियरवा सुरजन	३६
		रबाको नाम सुमर मना	३३

	पृष्ठ		पृष्ठ
सो अब मोरे सुरजनवा	३६	दानव दलन काज	२१५
हरि भज रे तू मनुजा	३३	दुरगे हरनी दोष दारीद्र	२१४
साजगिरी		रतिया बीत गयी	२१२
ए री आजे आनौंद	६३	धनाश्री	
चंगे काम होये	६४	आज कृपा करे आये	९९
काफी थाट (राग ३६)		शास्त्रसुमत राग गाय	९८
श्रीरंजनी		सास सदन मदन कदन	१००
गुनिजन करत मेल जब	२८१	धानी	
आभोगी		अब मान मना हरि सुमरन	१०४
खरहरप्रिया मेल जब	२८४	धूँडिया मल्लार	
चरन धर आये री	२८६	आज धरतीले दुलहा	२७५
जयति सिरि राधिके	२८५	नटमल्लार	
कौंसी कानडा		नजरे नहिं आंदाने	२६७
किर्पा करे जोगिडा हमपर	२२२	पियु लिख ना पठावे	२६६
मैं जब देखी री गोपाल	२२१	बनवारी बिन मोको आलि	२६८
राजनके सिर ताजा राजा	२२३	नायकीकानडा	
गौड		ए मग वारन वारुं	२००
इयाम छबी धर फिरे	२९२	ए मध मौंडल निरतत	२०९
चरजूकी मल्लार		दौंपति राज रहे परयंक	२०३
हमे बोली बोलले का परतीत	२७३	पापि हरि मुख बोल	१९९
चंचलसस मल्लार		बनरा मोरा प्यारा ब्याहन	२०१
ए री माई पियाके आवन	२७४	बिंबोठन कुंडल गोल कपोल	२०६
चंद्रकौंस		लाल लाडली खेल निकसे	२१०
प्रेमनगरकी डगर कठिन है	२८९	सजन बिन भई निरास हूं	१९८
देवसाख		सुखकर आई रे पियाके	२०२
अखियां लाग रही मोरी	२१३	सुंदर बिन सुख सदन	२०२

	पृष्ठ		पृष्ठ
पलासी		ऐसी सरदाई खसखानकी	१२०
चौद्रसो आनन खंजन	११३	ढपकी धुकारे बाजत	१२४
पटमंजरी		मधमाद सारंग औडव	११८
अपनी बिथाको आली	१५२	लिखत मधमाद बुध	११७
पतिया रे लिख भेजूं पिया	१५३	सखि ब्रिजके खिलैया	१२३
पंजाबी बरवा		मालगुज	
जोगी जगत्याग हम	९३	आपहि होत आद अंत	४१४
प्रदीपकी		मियाकी सारंग	
अरि बिरआ पिया घर	१०६	कामको दमामे बाजे	१४५
पिया घर नाही कैसे के	१०७	दयानिध दया कर दीजे	१४४
बडहंस सारंग		प्यारे वाको कांहां	१४२
आज बालम सुपनेही मिले	१३५	मांगत पना इशबरसे	१४२
ताल सुरके भेद गुनियनकी	१३३	मीराबाईकी मल्लार	
धूप परत आली जिया अकलाय	१३२	तुम घनसे घन गरजे	२७२
मेरो मन सखी हरन कीनो	१३१	मेघ मल्लार	
लाल हमीसो अब काहे बात	१३६	आये घेर घेरे कारे	२३८
बरवा		आयो अब बरखा रुत	२४२
आये सावन सोहावन	९१	उमंड धुमंड मेघ गगन	२२७
ए री मैको नाहीं परे चैन	९०	गरज घटा घन कारे री	२२९
गावत रागनि गुनिजन बरवा	८७	चमक बिजरिया बरस मेहरवा	२३१
नहि मानत नारि गुमान भरी	८८	तू लागी मान करनको	२४१
मोपे रंग डारो री	९२	तेरो सुमरन करूं तूही	२२८
सोच समझ मन	८७	धूम आये बदरिया भरे	२३२
हमारी को ना सुने आलि	८९	प्रबलदल साज जग जूमजा	२३५
मध्यमादि सारंग		मगन रहो रे दालिद्र भये	२३३
अपने अपने घरकी	१२१	राधे आये मेघ हरिको घर	२३७
आज अंजन दियो	११९		

पृष्ठ		पृष्ठ
	रामदासी मल्लार	तोरे गरजवा हां रे पिया १७३
ऐसो खेलन बदाँगी २६३		दैया पीयाबिन मैका १७०
तेरोहि छेल मोसों करत २६१		पायल रुमझुम बाज १७४
सकल बनहु लाये भूम हरियल २६२		बल्मा रे चूनरिया मैका १७२
	रूपमंजरी मल्लार	बार बार बार बार १७४
बरस्वारुत आगम पिया २७८		सुंदर नवेली अलवेली १८२
	लंकदहन सारंग	हुकुमकी बांधी साहेबके १७६
गुलाल रंग भरार्क न डारो १४८		हो मटकी मोरी रे (मध्यलय) १७८
		हो मटकी मोरी रे (मध्य-विलंबित) १७९
	शहाना	
अवगुन भयों सकलहूं १९०		सुहा-सुघराई
आछी निभातसों खेले १९४		सहेलरिया आई रे सब १८५
कूँजन उडत है गुलाल १९३		
गूँद ला मालन फुलोंदा १९१		सुरमल्लार
जाने दे मैका सुनो १८९		अब घटही देख डरी २५१
		आये गरजत बादरवा अतही २५६
	शुद्ध सारंग	गावो गुनी सकल २४७
माई री मैं कासे कहूं १२७		घोर घोर घोर घोर २५३
सब बिध काज १२७		दानि तोम्ता तोम्ता ना ना ना २५४
	सामंत सारंग	बरस्वारुत बैरि हमारे २४८
सामंत सारंग बिलसत १३९		बरसनके बादर कारे २४९
	सिंदूरा (सैंधवी पहा)	बादवा बरसनको आये २५२
	सिंध	हरिसों इतना कहियो जाय २५७
आज सलोनेनै रातमें ८५		सूहा
	सुघराई	अक कक कक कक १६१
अधगभुजतवा करि हो १७१		आज रे बधावा बने लाडले १६०
करम कर करीम रहीम १८०		ए री मैं कासे कहूं जाय वेतो १६६
धुंघट खोल बनी देखो १८३		कनकबैंदी उलटे रही १६५
जाने ना देउंगी पियाको १७७		करहार प्रिय ठाठ १५६
		का करूं हो काहां करूं १५८

	पृष्ठ		पृष्ठ
पल न सोहाय हररंग	१५९	कान्हर कारो नन्द दुलारो	३४२
रथकी गरुर धूर असमान	१६२	कौन खेले तोसे होरी	३५६
सोहत गलबीच बैजौंती माला	१५७	तेरो कान मानत नाहीं	३५७
हरी हरि कूँजनमें	१६३	नखनपर रतन लख कूँजपर	३५४

सधवी (सिंदूरा)

आज नन्दलाल मुखचन्द नैनन	७५	मुकुट माथे धरे खोर चंदन	३४८
उन बिन कल नहि एक घरी	७४	गव रे नौंद छल छंद कीनो	३४९

ए रां दैया अब ना जाऊं ब्रिजर्म ८१

ए री मेरे मुखपर ७९

ए री मैतो जब जानूं ८२

कौन हरे दुख मो मनको ७३

पीतकि रीत न जानी ७८

बिघन बिनाशना चतुरभुजा ७३

लोचन विशाल बनमाल ७६

होरी खेले सौत ८०

हंसकंकणी

करता सो पौंडित मानो ११०

तेंडरे घोल घाल १११

धन हंसकंकनी १०९

आसावरी थाट (राग १०)

कोमल देसा

गोकुल धूम मचाई ३१९

खट

आज नन्दलाल मुखचौंद ३५०

आज ब्रिजराजकी सरस ३४५

आहो गोबिंद ब्रिजचौंदसा ३४६

उठो प्यारे भोर भई जगत ३४४

ए री आज सखी बनतें बने ३४३

खट-तोडी

धत्तेते धेतले द्रे नांद्र ३५८

गांधारी

कहियो उधो तुम ३२६

कान्ह जु कान सुनी आंखन ३२९

जोगी काके मीत भइलवा ३२५

नवरिया झांझरी आन परी ३२४

बीरे बटोई मेरी झ्यामसों ३२८

मारत पिचकारी दैया ३३१

सुनो ननन्दिया तोरा ३२३

होरीम कैसे करत चतुराई ३३०

गोपिका वसंत

ए काहे हो मोहे मनावो ३७४

धाता बिधाता त्रैलोकनाथा ३७२

बिद्यादानी दयानी बिद्यादानी ३७३

जंगला

भूप सखी री मिल काहे को ३६३

शंकर धम मचाइ ३६१

झीलफ

दिर दिर तोम्ना दिर दिर ३६६

मैं तो ऐसो रंग और नहीं ३६७

हजरत अली घर आनौदे	३६८	बिलासखानी तोडी	
द्वगाधार		अनहत शब्द उपज्यो मो	३८५
देवगांधार सब मानत	३३५	अब मोरे कौंथा एक पल	३८३
रेनके जागे आये पियरवा	३३५	ए मोरी अगिया दरकी	३८६
लाडील बनाबन आया सो	३३७	जबंत मनमोहन देखिला	३८४
देसी		नीके घूंगरिया ठुभकत	३८२
अवधपुर नगरीके राजा	३१३	भूपाल तोडी	
गुंद गुंद लावो रे मालनिया	३०१	सुगौंध मलयागरमें सुवास	३९२
उडौंडन बाजे उलछा मुरारे	३०५	मोटकी	
चतर बालमवा भयो परदेसी	३००	मोह लियो मन सखि गिरधारी	३८९
जिन छवो मोरा अचरवा	३१८	वसंतमुखारी	
निरौजन कीजे मलमूक्त मेरे	३०३	मेल बकुलाभरन करत	३९६
नेनां लगे री आली उनसं	३०७	तोडी थाट (राग ५)	
नैया मोरी भई पुरानी	३१०	अंजनी तोडी	
पिया हम वारी तोरे ब्रिज	३११	निद्रा हू नहीं आवे री	४११
बालम हमरे विदेस गये	३१६	गुर्जरी तोडी	
मितवा बालमुवा गैला	२९९	नारायन हर तूही करतार	४०२
मेरा मन हार लीनो रे	३१०	बहादुरी तोडी	
सखि ठाडो सुंदर सांवरो	३१७	वारूं मुखचंद्र चंद्रिका	४०८
सखि मैका चेन न आवे	३०९	लक्ष्मी तोडी	
साचि कहत है अदारंग	३०२	मान मनावन आयो	४०७
सिंध भैरवी		रूपवौति गुणवौति	४०६
ग्यान गुन दाता रब माता	३७७	लाचारी तोडी	
मंदर पंचम खरज समगहत	३७८	लागो हि आवे मोसों	४०४
भैरवी थाट (राग ५)			
उतरी गुणकली			
ताना नादिर द्रि तोम्तानाना	३९४		

चीजांची वर्णानुक्रमाप्रमाणें सूची.



पृष्ठ

पृष्ठ

अ

अक कक कक कक (सूहा) १६१
अखियां लाग रही मोरी (देवसाख) २१३
अधगभुजतवा करिहों (सुधराई) १७१
अनहत शब्द (बिलास. तोडी) ३८५
अपनी बिथाको आली (पटमंजरी) १५२
अपने अपने घरकी (मध्य. सारंग) १२१
अब घटही देख (सुरमल्लार) २५१
अब मान मना हरि (धानी) १०४
अब मोरे कौंथा (बिलास. तोडी) ३८३
अरि बिरआ पिया (प्रदीपकी) १०६
अवगुन भयों सकल (शहाना) १९०
अवधपुर नगरीके राजा (देसी) ३१३
अहि यो मुने पीर (मालीगौरा) १५

आ

आछी निभातसों खेले (शहाना) १९४
आज अंजन दियो (मध. सारंग) ११९
आज कृपा करे आये (धनाश्री) ९९
आज धरतीले (धूडियामल्लार) २७५
आज नन्दलाल मुखचंद (सिंदूरा) ७५
आज नन्दलाल मुखचौंद (खट) ३५०
आज बालम (बडहंस सारंग) १३५
आज ब्रिजराजकी सरससूं (खट) ३४५
आज रे बधावा बने (सूहा) १६०
आज सलोनेनें रातमें (सिंध) ८५
आपहि होत आद अंत (मालगुंज) ४१४

आयं गरजत बादरवा (सुरमल्लार) २५६
आये घर घोरे कोर (मेघमल्लार) २३८
आये सावन सोहावन (बरवा) ९१
आयो अब बरखा (मेघमल्लार) २४२
आहो गोबिंद ब्रिजचौंद (खट) ३४७

उ

उचट गई मोरी नींद (भटियारी) ५४
उठो प्यारे भोर भई जगत (खट) ३४४
उढौंढन बाजे उलल्ला मुरारे (देसी) ३०५
उनबिन कल नहीं एक (सिंदूरा) ७४
उमंड घुमंड मेघ (मेघमल्लार) २२७

ए

एकपल हूं न जाने न देहों (पूरब्या) ४
ए काहे हो मोहे (गोपीवसंत) ३७४
ए मग वारन (नायकी कानडा) २००
ए मध मौंडल (नायकी कानडा) २०९
ए मुरलीवाले (ललिता गौरी) ६७
ए मोरी अंगिया (बिलास. तोडी) ३८६
ए रस रास रसुर सोरे (मालिगौरा) १३
ए री आज सखी बनतें (खट) ३४३
ए री आज आनौंद (साजगिरी) ६३
ए री दैया अब ना जाउं (सिंदूरा) ८१
ए री माई पियाके (चंचल. मल्लार) २७४
ए री मेरे मुखपर डारी (सिंदूरा) ७९
ए री मैं कासे कहूं (सूहा) १६६
ए री मैका नाही परे (बरवा) ९०

ए री म ता जब जानूँ (सिंदूरा) ८२
ए रुठ मा हे कारी कतली (भंखाग) ६०

ऐ

ऐसी सरदाईं खसखानकी
(मधमादसारंग) १२०
ऐसी खेलन बढाँगा अनोखे
(रामदासी मल्लार) २६३

क

कनकबैँदि उलटे रही (सूहा) १६५
करता सो पौंडित (हंसकंकणी) ११०
करम कर करीम रहीम (सुधराई) १८०
कर याद प्रभूको आज (मालीगौरा) ११
करहार प्रियठाठ सुध राग (सूहा) १५६
कलस ज्योत लागी रहे (जेत) २४

क

कहीयो उधां तुम जा (गांधारी) ३२६
का करूँ हो काहां करूँ (सूहा) १५८
कान्ह जु कान सुनी (गांधारी) ३२९
कान्हर कारो नंद दुलारो (खट) ३४२
कामको दमामे (मियांकी सारंग) १४५
कांस्कुवरवा जाइल हमरा (विभास) ३४
किर्पी करे जोगिडा (कौंसीकानडा) २२२
कूँजन उडत है गुलाल (शहाना) १९३
कौन खेले तोसे होरी (खट) ३५६
कौन हरे दुख मो मनको (सिंदूरा) ७३

ख

खरहरप्रिया मेल जब (आभोगी) २८४

ग

गरज घटा घन कोरे (मेघमल्लार) २२९
गावत रागनि गुनिजन बरवा (बरवा) ८७
गावो गुनी सकल राग (सुरमल्लार) २४७
गुनिजन करत मेल (श्रीरंजनी) २८१
गुलाल रंग भरकि न (लंक.सारंग) १४८
गूंद गूंद लावो रे मालनिया (देसी) ३०१
गूंद ला मालन फुलौंदा (शहाना) १९१
गोकुल गांवके बसैया (पंचम) ४८
गोकुल धूम मचाई (कोमल देसी) ३१९
ग्यान गुन दाता (सिंध भैरवी) ३७७

घ

घोर घोर घोर घोर (सुरमल्लार) २५३
घुंघट खोल बनी देखो (सुधराई) १८३

च

चतर बालमवा भयो परदेसी (देसी) ३००
चमक बिजरिया बरस (मेघमल्लार) २३१
चरन धर आये रि मोपर (आभोगी) २८६
चंगे काम होये (साजगिरी) ६४
चौंद्रसो आनन खंजन (पलासी) ११३

ज

जबतें मनमोहन (बिलास. तोडी) ३८४
जयति सिरि राधिके (आभोगी) २८५
जाने दे मैका सुनो (शहाना) १८९
जाने ना देऊंगी पियाको (सुधराई) १७७
जिन छुवो मोरा अचरवा (देसी) ३१८
जोगी काके मीत (गांधारी) ३२५
जोगी जगत्याग (पंजाबी बरवा) ९३

पृष्ठ

पृष्ठ

ट

ढपकी धुकारे बाजत (मध्य.सारंग) १२४

त

तानाना दिर दिर तोम्तानाना

(उतरी गुणकली) ३९४

ताल सुर के भेद (बडहंस सारंग) १३३

तुम घनसे घन गरजे

(मीराबाईकी मल्लार) २७२

तूं झकझोर झकझोर (बरारी) ३०

तूं लागी मान करनको (मेघमल्लार) २४१

तेरा चोलरा दुलरा (मालीगौरा) १४

तेरो समरन करूं (मेघमल्लार) २२८

तेरोहि छेल मोसों (रामदासी

मल्लार) २६१

तेरो कान मानत नाहीं (खट) ३५७

तेढेरे घोल घोल घती (कंकणी) १११

तोरे गरजवा हां रे पिया

(सुघराई) १७३

द

दयानिध दया कर दीजे

(मियाँका सारंग) १४४

दाता बिधाता त्रैलोकनाथा

(गोपीवसंत) ३७२

दानव दलन काज (देवसाख) २१५

दानि तोम्ता तोम्ता (सूरमल्लार) २५४

दिर दिर तोम्ना दिर (झीलफ) ३६६

दुरगे हरनि दोष (देवसाख) २१४

देवगांधार सब मानत (देवगांधार) ३३५

देया पीयाबीन मैका (सुघराई) १७०

दाँपति राज रहे (नायकी कानडा) २०३

ध

धन हंसकंकनी (हंसकंकनी) १०९

धाता बिधाता त्रैलोकनाथा

(गोपीवसंत) ३७२

धूप परत आली (बडहंस सारंग) १३२

धूम आये बदरिया भंर (मेघमल्लार) २३२

धेत्ते धेतले द्रे नाद्रे (खट-तोडी) ३५८

न

नखनपर रतनलख (खट) ३५४

नजर नही आंदाने (नटमल्लार) २६७

नवरिया झांझरी आन (गांधारी) ३२४

नहिं मानत नारि गुमान (बरवा) ८८

नारायण हर तूंही (गुर्जरी तोडी) ४०२

निद्रा हुं नही आवे (अंजनीतोडी) ४११

निरौंजन कीजे मलमुक्त (देसी) ३०३

निसदिन नबि सुमरन (भटियार) ५२

नीके धुंगरिया (बिलास तोडी) ३८२

नैनां लगे री आली (देसी) ३०७

नैया मोरी भई पुरानी (देसी) ३१०

प

पतिया रे लिख भेजूं (पटमंजरी) १५३

पल न सोहाय हररंगके (सूहा) १५९

पापी हरिमुख बोल रे तूं

(नायकीकानडा) १९९

पायल रुमझुम जाजे (सुघराई) १७४

पिया घर नांहा कैसे (प्रदीपकी) १०७

पिया हम वारी तोरे (देसी) ३११
 पियु लिख ना पठाये (नटमल्लार) २६६
 पीताकि रीत न जानी (सिंदुरा) ७८
 प्यारे वाको कांहां पाऊं रे

(मियांकी सारंग) १४२
 प्रथम गुन बिचार करिये (पंचम) ४३
 प्रथम सुध ठाट नटभैरवी (खट) ३४१
 प्रबलदल साज जग (मेघमल्लार) २३५
 प्रेमनगरकी ढगरकठिन (चंद्रकौंस) २८९

ब

बनरा मोरा प्यारा ब्याहन
 (नायकी कानडा) २०१
 बनवारी बिन मोको आली
 (नट मल्लार) २६८

बल्मा रे चूनरिया मैका (सुधराई) १७२
 बरस्वारुत आगम रुपमंजरी २७८
 बरस्वारुत बैरी हमारे (सूरमल्लार) २४८
 बरनी न जाये मोसें (भटियारी) ५३
 बरसनके बादर कारे (सूरमल्लार) २४९
 बादरवा बरसनको (सूरमल्लार) २५२
 बार बार बार बार (सुधराई) १७४
 बालम हमरे विदेस गये (देसी) ३१६
 बिघन बिनाशना चतुर (सिंदूरा) ७३
 बिद्यादानी दयानी (गोपीवसंत) ३७३
 बिंबोठन कुंडल गोल कपोल

(नायकी कानडा) २०६
 बिरहन बावरी बेग सुघले (बरारी) २८
 बीरे बटोई मेरी श्याम (गांधारी) ३२८

भ

भूप सखी रि मिल काहे (जंगला) ३६३

म

मगन रहो रे दालिद्र (मेघमल्लार) २३३
 मधमाद सारंग औडव (मधमाद
 सारंग) ११८

मंदर पंचम खरज (सिंध भैरवी) ३७८
 माईरी मै कासे कहूं (शुद्धसारंग) १२७
 मांगत पना इश (मियांकीसारंग) १४२
 माधवा माधवा माधवा (पंचम) ४६
 मान मनावन आयो (लक्ष्मीतोडी) ४०७
 मारत पिचकारी दैया (गांधारी) ३३१
 मारुव समाख्यात मेलन (पंचम) ४२
 मितवा बालमुवा गैला (देसी) २९९

म

मुकुट माथे धरे खोर (खट) ३४८
 मेरा मन हार लीनो (देसी) ३१०
 मेरे मन लाग रही (मालीगौरा) १२
 मेरो मन सखि (बडहंस सारंग) १३१
 मेरो मन हर लीनो इन (भटियार) ५५
 मेल बकुलाभरन (वसंत मुखारी) ३९६
 मैं जब देखी री (कौंसी कानडा) २२१
 मैं तो ऐसो रंग और नहिं (झीलफ) ३६७
 मैं तोहे धाऊं अब पीरे (विभास) ३८
 मोपे रंग डारो री अधक (बरवा) ९२
 मोरा रे मीत पियरवा (विभास) ३६
 मोरे राजा आनौद करो (जेत) २२
 मोरे राजा आनौद करो (जेत) २३

४४

४४

मोह लियो मन साखि (मोटकी) ३८९

मौंदर बाजे बाजे रे (पूरबा) ५

र

रतिया बीत गई करुं (देवसाख) २१२

रथकी गरूर धूर असमान (सूहा) १६२

रबगुन गा रे तूं समझ (भंखार) ५८

रबाको नाम सुमर मना (विभास) ३३

राधे आये मेघ हरिको (मेघमल्लार) २३७

राजनके सिर ताजा राजा

(कौंसी कानडा) २२३

राजा सिरिराम राम (मालीगौरा) १७

राम नाम ले ले मनमें (पंचम) ४४

राव रे नौंद छल छंद (खट) ३४९

री ठप बाजन लागे (मालीगौरा) १८

रूपबौंती गुणबौंती भागवौंती

(लक्ष्मीतोडी) ४०६

रेनके जागे आये (देवगांधार) ३३५

ल

लागोही आवे मोसों करत

(लाचारी तोडी) ४०४

लाडील बनाबन आया (देवगांधार) ३३७

लाल लाडली खेल निकसे

(नायकी कानडा) २१०

लाल हमीसों अब काहे बात

(बडहंस सारंग) १३६

लिखत मधमाद बुध ओडव

(मधमाद सारंग) ११७

लोचन बिशाल बनमाल (सिंदूरा) ७६

व

वारुं मुखचंद्र (बहादुरी तोडी) ४०८

श

शास्त्र सुमत राग गाय (धनाश्री) ९८

शंकर धूम मचाई हेरी (जंगला) ३६१

श्याम छवी घर फिरे (गौंड) २९२

स

सकल बन हूं लाये भूम

(रामदासी मल्लार) २६२

सखी ठाडो सुंदर सांवरो (देसी) ३१७

सखी ब्रिजके खिलैया

(मधमादसारंग) १२३

सखी भेका चैन न आवे (देसी) ३०९

सजन बिन भई निरास हूं

(नायकी कानडा) १९८

सबबिध काज हमरे सम्हारे

(शुद्ध सारंग) १२७

सहेलरीया आई रे (सुहा-सुधराई) १८५

साचि कहत अदरंग यह (देसी) ३०२

साजन आये मोरे घरे (भंखार) ५९

सामंत सारंग बिलसत चतुर

(सामंत सारंग) १३९

सास सदन मदन कदन (धनाश्री) १००

सुखकर आई रे पियाके

(नायकी कानडा) २०२

सुगौंध मलयागरमें (भूपाल तोडी) ३९२

सुंदर नवेली अलबेली (सुधराई) १८२

सुखकर आई रे (नायकी कानडा) २०९

पृष्ठ

सुनो ननंदिया तोरा बीर (गांधारा) ३२३ हमे बोली बोल (चरजूकी मल्लार) २७३
 सुमरन करले जिया (बरारी) २९ हरिसों इतना कहियो (सुरमल्लार) २५७
 सो अब मोरे सुरजनवा (विभास) ३६ हरी हरी कूंजनमे हरी (सूहा) १६३
 सोच समझ मन अब मान (बरवा) ८७ हुकुमकी बांधी साहबके (सुघराई) १७६

स

सोहत गलबीच बैजौंति (सूहा) १५७

ह

हजरत अली घर आनौंद (झीलफ) ३६८
 हमारी को ना सुने आली (बरवा) ८९

हो मटकी मोरी रे इयाम (सुघराई) १७८
 हो मटकी मोरी रे इयाम (सुघराई) १७९
 होरी खेले सौंति सुजाने (सिंदूरा) ८०
 होरीमें कैसे करत चतुराई

(गांधारी) ३३०

होवन लागी सांझ चेतो (पूर्वकल्याण) ८

शुद्धिपत्र

पृष्ठ. पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ. पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
पृष्ठ पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध			
४ १०	SS	SS	२१ ४	रे गसा	रे गसा
६ ३	निजठि	निज ठि		नि	नि
७ ७	सांसां	सांसां	४ ४	सा	सा
१० ८	निंसां	निंसां	२३ ५	मौ	नौ
	सा प	सा प	५ ५	नि	नि
११ ३	म म	म म	२४ १२	म S	न S
	मं	मं		नि	नि
८ ८	ग	ग	२५ १	सां	सा
	ग	सा		री	री
८ ८	निंरी सा सा	निंरी सा सा	२९ १	ग	ग
	ध	ध	८ ८	ले	ले
१२ ७	निं	निं	३५ २	रे -	रे S
	म	मं	४० १०	आयेहे	आरोहे
१६ ५	प	प	४२ १६	दी	ही
१३ ११	सां	सा	३ ३		
	ग	सा	४५ १०	S	-
१४ १२	निं	निं		सा	सां
	ध	ध	४८ ७	ध	ध
१४ १४	मं ध	मं ध	५३ १०	SSत	SSतै
	ग	ग	१४ १४	तैसा	तैसो
१४ १४	निंरी	निंरी		तS	Sद
१५ ७	घSS री	घSS री	५४ २	तली	ल्ली
	ध	ध	६० ६	ग	ग
	निं	निं		मम	मग
१७ ५	प	प	१० १०	कोमलर्षभा	कोमलर्षभः
			६१ ९	मंघम	मंघमं
			६२ १२		

पृष्ठ	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
		धु	धु			नि	नि
६३	९	मं	मं	८७	१०	ब	ब
६५	११	सा	सा	८९	११	कोऽ	कोऽ
		नि	ध	९५	४	वर्जितर्षभ	वर्जितर्षभ
६६	१६	मपम	मपमं			मं	म
६७	३	ध	धु	१०१	६	म प	म प
	१३	कि	कि	१०६	६	रऽ	रऽऽ
		प	म			नि	नि
७३	३	री	री		१२	धप	धप
७५	२	रे	रे				
७७	१२	स	सां	१०७	२	इ	ड
	१३	म	भा			री	नि
७८	४	पीन	पीत	११३	१४	प	प
८२	६	ए	ए			मं	मं
	८	नू	नू	११७	१०	रीं	रीं
	१०	लै	ल		११	मे	मे
	१२	खे	खे	११९	५	आ	सा
	१४	ए	ए			प	प
८३	३	न	न	१२४	१३	विध	निध
	५	बो	बो	१३२	१७	मों	मों
	७	पा	पा			मध	मध
	९	ए	ए	१३५	५	नि निपम	नि निपम
८५	८	सा	सा	१४२	९	हुंड,	हुंडदि
			सा			री	
८६	३	सवद	संवद			म	री सा
	१३	दोन्ही कृषम	दोन्ही गांधार	१४६	८	येऽऽ हीऽ (स्था.प्र.)	
				१४९	४	आ	आं
						प	प
				१५३	१३	नि, सानि	नि, सानि

पृष्ठ. पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ. पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
	प	प			
१५७	१ नि	नि	२७०	११ पधमप	पधमप
	सा	सा		१२ सांनिधप	सांनिधप
१५९	५ रीरी	री री		मम सां	मम सा
१६०	११ सु	सु	२७१	५ गुगुमरे	गुगुमरे
	रीं	रीं	२७२	३ - री	सारी
१६६	९ नि	नि		सां	सां
१८५	१५ लऽऽ मा	लऽऽ मं	२७४	१२ री	री
२०७	९ कं	कुं	२७७	४ मल्लाराच्या	या मल्लाराच्या
२१८	१६ साज्जैः	स्तज्जैः		री	री
२२३	१ नि सा	नि सा	२७८	१६ ,गग	,गग
			२८१	३ ग	ग
२२६	४ सा नि प	सानिप	२८३	११ मगमध	मगमध
२३९	५ - सा	सा -		ध	ध
	६ ऽ है	है ऽ	२८५	१ सा सा	सां सां
	१० नि सां	नि सां	२८६	३ सां	रीं
२५१	४ व	व	२९१	७ निधसां,सा,	निधसां,सां,
	सां	सां	२९४	१० म म	ग म
२५५	५ नि सा	नि सां	२९७	१२ असावरी	आसावरी
	७ री नि	री नि		म	म
२५८	७ ने	नै	२९९	७ री - म प	री म म
	७ छ	क्ष		१२ सारी	सारीं
	प	प	३०१	२ अगदऽ	अगदऽ
२६३	९ सां सां(सां)	सां सां(सां)		म म	म म
२६५	७ छा	च्छा	३०२	३ प ग -	प ग री
२६६	८ ने	वे	३०३	१ री सां	रीं सां
२६७	१० ने	वे		नि	नि
	१२ ण	पां	३०४	८ ध	ध
	१४ रे	रें		नि	नि
			३०४	१० ध	धु

पृष्ठ.	पंक्ति.	अञ्चद.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.	अञ्चद.	शुद्ध.
		म	म	३३५	१६	रे ऽ	रे ऽ
३०५	११	धु	ग	३३६	४	रे,	रे ऽ
		नि	नि			सां	सां
३०६	१३	धुप-	धुपप		८	री	री
		सां	सां		१३	रेनके	रेनके
३०९	१२	रीसा	रीसां				म
		सां	सां	३३७	५	पग	पग
	१२	निसा	निसां			नि	नि
		निसा	निसा		७	नी	नी
	१४	री री	री री		१३	री	री
		मम	रीम	३४१	४	नठ	नट
३११	१	,पप	,पप	३४२	१०	ने	नै
		री	री		१०	नि	न
	४	ग	गं			प	म
		मम	रीम	३४३	९	मनिप	मनिप
	८	पप	पप				निध प
३१४	९	ठे	ठै	३४५	७		उठां ऽ
		म	म			स	सां
३१५	१	मग	पग	३४७	१४	नि	नि
		सां	सां			नि नि	नि नि
	६	ग	गं	३४८	७	पधध	मधध
		म	म			सां	सां
३१९	८	मपग	पपग	३५०	४	ग	गं
	१३	धूम	धूम			म	म
		सां	सां	३५४	७	गं	ग
३२८	७	गरी	गंरी			मम	म
	१३	हु	उ	३५६	७	गग	- ग
३३३	३	धुवमेह	धुवमिह		७	प-म-	प-प-
३३४	३	धुम	धुप		९	सां	सां

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
	१२	दि	रि			ध	ध
३५९	२	लौ	लौ	३८३	५	पध	पध
	२	लौ	लौ			सा	सा
३६४	३	धप	धप		७	ध	ध
	७	ऽध	- ध			ध	ध
३६५	१६	मपग	मपग		१०	पध	पध
३६६	७	ध	ध		१०	रीध	रीध
	९	ध	ध	३८५	१०	ऽध ट	ऽध ट
	९	(मरी	(मग			३	३
३६७	२	सग	सग	३९१	११	वर्ज्य आहे	वर्ज्य आहेत
३७०	४	हं	हू	३९३	१०	रें	रें
३७२	४	दा	धा	४०१	३	पंचमो	पंचमो
		म	म		११	मध्यम	मध्य व
३७७	९	ग	ग	४०३	७ व ८	दोन्ही धैवत व	दोन्ही
	१०	सा	सा			दोन्ही	
	११	ऽ	र			ग	
		री	री	४०५	९	मप	मप
३७८	१	सां	सा			(	(
	१२	धनि	धनि	४०६	४	नि	नि
३८२	७	रीनि--	रीनि			प	प
	८	ऽऽऽऽ	ऽऽ	४०७	८	निध	निध
	१३	निया	जिया			नि	नि
		री	री	४०८	८	धध	धध
१४	नि	नि	नि		१२	ध-म	ध-प
				४०९	८	का-	काऽ
				४१२	८	सां-सां-	सां-सांसां

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, पुस्तकालय
Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration Library

मुससुरी
MUSSOORIE

अवाप्त स०

Acc. No.....

कृपया इस पुस्तक को निम्नलिखित दिनांक या उससे पहले वापस
कर दें ।

Please return this book on or before the date last stamped
below.

दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.

GL H 780
RAM



H

780

राजभा

अवाप्ति सं० ~~16696~~

ACC. No.....

वर्ग सं.

पुस्तक सं.

Class No..... Book No.....

लेखक राजभा

Author.....

शीर्षक स्वदेशी शास्त्र

H

780

राजभा

16696

LIBRARY

LAL BHADUR SHASTRI

National Academy of Administration

MUSSOORIE

Accession No. 125883

1. Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
2. An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
4. Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
5. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

Help to keep this book fresh, clean & moving